Bachelor of Arts

HIST-201

Political History of India

(Option-I)

Directorate of Distance Education

Guru Jambheshwar University of Science & Technology, HISAR-125001

CONTENTS

B.A. HISTORY – PART IInd YEAR, SEMESTER-IIIrd

HIST-201: POLITICAL HISTORY OF INDIA (1526-1857 A.D.)

(भारत का राजनीतिक इतिहास – 1526–1857 ई0)

Sr. No.	Title Name	Author and Update	Pages No.
	Unit -(इकाई) -I		
1.	मुगल साम्राज्य (Mughal Empire)	Sh. Mohan Singh Baloda	4
2.	औरंगजेबः साम्राज्य का विस्तार एवं धार्मिक नीति (Aurangzeb: Expension of Empire and Religious Policy)	Sh. Mohan Singh Baloda	41
	Unit -(इकाई) -II		
3.	राजपूतों के साथ मुगलों के संबंध (Relations of Mughals with the Rajputs)	Sh. Mohan Singh Baloda	65
4.	मुगल प्रशासन (Mughal Administration)	Sh. Mohan Singh Baloda	92
	Unit -(इकाई) -III		
5.	भारत में फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के बीच प्रतिद्वंद्विता (Rivalry between the French and the British in India)	Sh. Mohan Singh Baloda	108

6.	प्लासी एवं बक्सर का युद्ध (Battles of Plassey and Buxer)	Sh. Mohan Singh Baloda	131
7.	सहायक संधि एवं व्यपगत का सिद्धान्त या हड़प नीति, पंजाब का विलय (Subsidiary and Doctrine of Lapse, Annexation of Punjab)	Sh. Mohan Singh Baloda	151
8.	1857 ई0 का विद्रोह (Uprising of 1857 A.D.)	Sh. Mohan Singh Baloda	172
	Unit -(इकाई) -IV		
9.	1526 में भारत की राजनीतिक स्थिति, अकबर एवं औरंगजेब की मृत्यु पर मुगल साम्राज्य (Political conditions of India in 1526, Mughal Empire at the Death of Akbar and Aurangzeb)	Sh. Mohan Singh Baloda	196
10.	1856 तक ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार (Expansion of British up to 1856)	Sh. Mohan Singh Baloda	216

B.A HISTORY PART- IInd YEAR SEMESTER-IIIrd	
COURSE CODE: 201 LESSON NO. 01	AUTHOR – MOHAN SINGH BALODA
मुगल साम्राज्य (Mughal Empire)	

अध्याय संरचना (Structure Lesson)

1.1. अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

1.2. परिचय (Introduction)

1.3. विषय वस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text)

- 1.3.1 बाबर (1526 ई0–1530 ई0) बाबर का जीवन परिचय (Life History of Babur)
- 1.3.2 शेरशाह सूरी (1540 ई0–45 ई0) का जीवन परिचय (Life History of Sher shah suri)
- 1.3.3 अकबर (1556 ई0–1605 ई0) का जीवन परिचय (Life History of Akbar)

1.4. विषय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण (Further Main Body of the Text) :-

- 1.4.1. बाबर के मुख्य युद्ध (Main Battle of Babur)
- 1.4.2.बाबर की उपलब्धियों या सफलताओं के कारण (Causes of achievements of Babur)
- 1.4.3. बाबर का चरित्र तथा मूल्यांकन (Character and Estimate of Babur)
- 1.4.4. शेरशाह सूरी का शासन – प्रबन्ध तथा सुधार (Sher shah suri Administration and Reforms)
- 1.4.5 शेरशाह सूरी का चरित्र एवं सफलताएं (Character and achievements of Sher shah suri)
- 1.4.6. शेरशाह अकबर का अग्रसर (Sher shah is a Fare rumer of Akbar)
- 1.4.7. अकबर की नीतियॉ (Policy's of Akbar)
- 1.4.8. अकबर की विजय (Conquests of Akbar)

1.4.9. अकबर का व्यक्तित्व (Personality of Akbar)

1.5. प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

1.6. सारांश (Summary)

1.7. संकेत–सूचक (Key-Words)

1.8. स्व–मूल्याकंन परीक्षा (Self Assessment Test)(SAT)

1.9. प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to check your Progress)

1.10. संदर्भ ग्रंथ एवं सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Reading)

1.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives) :–

- जब आप इस अध्याय को समझ पाएंगे तो आप इस योग्य हो जाएंगे (बन जाएंगे)।
- हमारा अतीत किस प्रकार पाठकों को प्रभावित करता है।
- मुगल कालीन व्यवस्था सें शिक्षार्थियों को अवगत करवाना।
- भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना एवं संगठन काल के दौरान राज्य करने वाले शासकों की उपलब्धियों व कमजोरियों से पाठकों को परिचित करवाना।
- वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता से अवगत करना।
- इतिहास सिर्फ इतिहास नहीं है। यह वर्तमान को भी प्रभावित करता है।
- उस समय भारत की स्थिति से अधिगमकर्ताओं को रूब–रूबरू करवाना।

1.2 परिचय (Introduction) :-

मुगल राजवंश (1526–1707 ई०) का इतिहास में अपना एक अलग वर्चस्व रहा है। 'मुगल' शब्द की उत्पत्ति मंगोल शब्द से हुई है। 16वीं शताब्दी के आरम्भ में भारत में दिल्ली सल्तनत का पतन हो गया तथा उसके खण्डहरों पर मुगल साम्राज्य की नींव रखी गई। मुगल राजवंश में कुल 19 शासक हुए। इनमें से प्रथम 6 शासक प्रमुख थे। मुगल वंश का सस्थापक जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर था। वह मध्य एशिया की तुर्क तथा मंगोल जातियों से

संबंध रखता था। उसने 1526 ई० में पानीपत के मैदान में दिल्ली के अन्तिम पठान सुल्तान इब्राहिम लोधी को हरा दिया और बाबर ने उसकी हत्या कर दी। उसके बाद उसने दिल्ली तथा आगरा पर अपना अधिकार कर लिया। इस प्रकार बाबर ने भारत में एक नये वंश की स्थापना की, जो मुगल–वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस वंश के राजाओं के हाथो में भारत की बागडोर लगभग तीन सौ वर्ष तक रही और इस दौरान भारत की राजनीति, समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले। इस परिवर्तनों को लाने वाले प्रथम 6 प्रमुख शासक इस प्रकार से थे – 1. बाबर (1526–30 ई०), 2. हुमायूं (1530–40 ई०) तथा (1555–56 ई०), 3. अकबर (1556–1605 ई०), 4. जहांगीर (1605–1627 ई०), 5. शाहजहां (1627–58 ई०), 6. औरंगजेब (1658–1707 ई०) मुगल साम्राज्य की दरबारी भाषा फारसी थी।

बाबर के आक्रमण के समय भारत अनेक छोटे–छोटे स्वतंत्र राज्यों में बँटा हुआ था, जिनमें राजनीतिक एकता की कमी देखने को मिलती थी। सभी राज्यों के शासक एक दूसरे के राज्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। अतः इस कमजोर राजनीतिक स्थिति का लाभ उठाने के लिए जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर ने भारत पर आक्रमण करने का जल्दी निर्णय लिया। उसने 21 अप्रैल, 1526 ई. को पानीपत के मैदान में दिल्ली सल्तनत के अन्तिम सुल्तान इब्राहीम लोदी को हराने के बाद दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया इस प्रकार भारत में दिल्ली सल्तनत का अन्त करके मुगल राजवंश की नींव रखी परन्तु उसके द्वारा स्थापित किया गया साम्राज्य लम्बे समय तक कायम नहीं रह सका। 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने कन्नौज तथा बिलग्राम की लड़ाई में बाबर के पुत्र हुमायूँ को पराजित करके मुगल वंश के स्थान पर द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना कर डाली, जो 1555 ई. तक कायम रही। इसके बाद अकबर ने बैरमखाँ की सहायता से दोबारा मुगल वंश की स्थापना की। मुगल राजवंश का काल लगभग 1526 ई० से 1707 ई० तक माना गया है। परमात्मा शरण ने लिखा हैः "तत्कालीन संसार के अन्य साम्राज्यों में मुगल साम्राज्य कदाचित सबसे बड़ा एवं शक्तिशाली साम्राज्य था, जिसकी उपलब्धि न केवल कला एवं संस्कृति के क्षेत्रों में, वरन् एक सोत्साही, सुसंगठित राजनीतिक व्यक्तित्व की संरचना तथा हिन्दू और मुसलमान समाजों को एक राष्ट्र के अन्तर्गत सूत्रपात करने में, उसके विशाल नैतिक एवं भौतिक साधनों के अनुरूप थी। अपने सर्वोच्च उत्कर्ष–काल में उसने कार्यकुशलता के उस उच्च स्तर को प्राप्त किया, जिसके लिए कोई भी शासन उचित ही अभिमान कर सकता है।"[1] इस अध्याय में मुगल साम्राज्य पर विस्तार से चर्चा करेगें।

परमात्मा शरण, मुगलों का प्रांतीय शासन (1526–1658), दिल्ली, पृ0 432।

1.3 विषय वस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text)

1.3.1 बाबर का जीवन परिचय (Life History of Babur)

1. बाबर का जन्म – बाबर का जन्म 14 फरवरी, 1483 ई० को हुआ था। हिजरी संवत के अनुसार उसका जन्म मोहर्रम 6,888 में हुआ था। बाबर का मूल नाम जहीरूद्दीन मुहम्मद था। बाद में अपने पराक्रम व निडरता के कारण वह बाबर (बाघ) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बाबर के पिता का नाम उमर शेख था जो तैमूर वंशी थे और फरगना के एक छोटे से राज्य का स्वामी था।

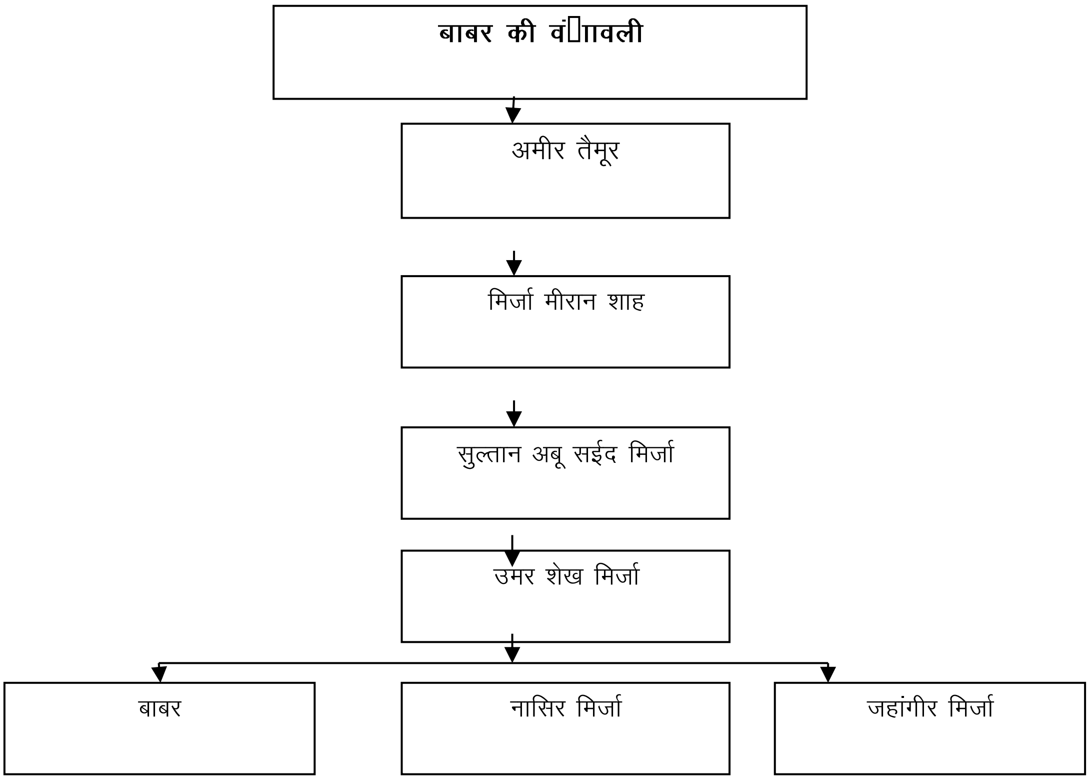

(2) बाल्यकाल एवं शिक्षा (Childhood and Education)– फरगाना के शासक का पुत्र होने के नाते बाबर का पालन–पोषण बहुत राजकीय ठाठ–बाट से हुआ। बाबर के प्रारंभिक जीवन पर उसके पिता उमरशेख मिर्जा तथा माता कुतलुग निगार खानम का बहुत प्रभाव पड़ा। बाबर की शिक्षा का विशेष प्रबंध किया गया। अति शीघ्र ही वह तुर्की, फारसी और अरबी भाषाओं का ज्ञाता बन गया। शेख मजीद उसका शिक्षक था। इसके अलावा, बाबर के जीवन पर उसकी नानी एहसान दौलत बेगम का भी बहुत प्रभाव पड़ा, जिसने उसमें साहस, आत्म–विश्वास और दृढ़ निश्चय के गुण कूट–कूट कर भर दिए। बाबर की दादी शाह सुल्ताना बेगम ने उसे कुशल व्यवहार तथा शिष्टाचार की शिक्षा प्रदान की। एम.ए.ए. रिजवी ने लिखा है, "उसकी माता कुतलुग निगार खानम, जिससे वह बहुत प्रभावित था, युनूस खाँ की पुत्री थी। उसे तुर्की एवं फारसी का बहुत ज्ञान रहा होगा। 1508 ई० तक वह बाबर का प्रत्येक कठिनाई में साथ देती रही। कुतलुग निगार खानम की माता एहसान दौलत बेगम से भी बाबर का

कुछ समय तक सम्पर्क रहा। बाबर की बड़ी बहन खानजादा बेगम, जो उससे 5 वर्ष बड़ी थी, बाबर के पूरे जीवन काल में उसका साथ देती रही और उसने बाबर के जीवन पर अनेक प्रकार के प्रभाव डाले।"[2]

. डॉ0 गोपाल प्रसाद ,, डॉ जयपााल , डॉ दीपीका यादव .. भारत का इतिहास (1200–1707 ई० तक) पृ0 116

8 जून 1449 ई० को कबूतर उड़ाते समय अपने महल की छत से गिरने से मृत्यु हुई। तब बाबर की आयु केवल 12 वर्ष थी। बाबर की माता कुतलुग निगार चंगेज खां के वंशज युनूस की पुत्री थी। माता की प्रेरणा से बाबर ने छोटी आयु में ही शासन को संभाल लिया। लेकिन शुरू में बाबर को अनेकों कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन बाबर ने अपनी बुद्धि से कार्य किया। वह निडर होकर आगे बढ़ता गया। बाबर की मृत्यु 1530 ई० में हुई।

14.1. बाबर के मुख्य युद्ध (Main Battle of Babur) :-

(1) पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई०) (First Battle of Panipat, 1526 A.D.)

(2) खानवा का युद्ध (1527 ई०) (Battle of Khanwa, 1527A.D.)

(3) चंदेरी का युद्ध (1528 ई०) (Battle of Chanderi)

(4) घाघरा का युद्ध (1529 ई०) (Battle of Ghaghara)

बाबर के प्रमुख युद्ध या विजय अभियान निम्न है जिनका वर्णन इस प्रकार से है :–

(1) पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई०) (First Battle of Panipat, 1526 A.D.) – पंजाब पर अपना अधिकार करने के बाद बाबर दिल्ली की ओर बढ़ा, परन्तु दिल्ली पर विजय पाना कठिन कार्य था। दिल्ली का सुल्तान इब्राहिम लोधी भी बाबर के दिल्ली की ओर बढ़ने की सूचना पाकर पंजाब की ओर बढ़ा। इसी समय इब्राहिम लोधी के कुछ असंतुष्ट सरदारों तथा संभवतः राणासांगा ने भी बाबर को सहायता का वचन दिया। 12 अप्रैल 1526 ई० को दोनों सेनायें पानीपत के मैदान में पहुंचकर डट गई। बाबर ने अपने सैनिक अनुभव का पूरा प्रयोग किया तथा उसने सेना की सुरक्षा वैज्ञानिक ढंग से की। उसने सेना के दाये पक्ष की रक्षा पानीपत के नगर द्वारा, बायें पक्ष की रक्षा खाइयों एवं कटीली झाड़ियों द्वारा मध्य भाग में उसने 700 तोप–गाड़ियां चमड़े की रस्सी से बांध कर लाइन में खड़ी करके की। गाड़ियों के पीछे उसने अपने प्रसिद्ध तोपचियों उस्ताद अली तथा मुस्तफा को खड़ा कर दिया। सेना को भी उसने तीन भागों में बांटा तथा दाये व बायें पक्षों से दूर दोनों तरफ तुलुगमा सैनिक टुकड़ियाँ खड़ी की। सेना के दायें भाग का संचालन हुमायूं तथा बायें भाग का संचालन मुहम्मद सुल्तान व मध्य भाग का नेतृत्व उसने स्वयं संभाला।

21 अप्रैल 1526 ई० को लोधी सेना द्वारा बिना किसी निश्चित योजना के युद्ध शुरू किया गया परन्तु शीघ्र ही बाबर की वैज्ञानिक व्यूह रचना व मुगल तोप खाने की मार से लोधी सेना के पैर उखड़ गये। इब्राहिम लोधी ने वीरतापूर्वक शत्रु का सामना किया। परन्तु वीरगति को प्राप्त हुआ। बाबर को निर्णायक विजय मिली। इस युद्ध के परिणामस्वरूप दिल्ली सल्तनत व लोधी वंश का अन्त हो गया तथा भारत में मुगल वंश की नींव रखी गई।

लेनपूल के अनुसार – पानीपत का प्रथम युद्ध दिल्ली के अफगानों के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ।

(2) खानवा का युद्ध (1527 ई०) (Battle of Khanwa, 1527A.D.) –विरोधी अफगान सरदारों को कुचलने के बाद बाबर ने मेवाड़ के शासक राणा सांगा अथवा संग्राम सिंह से निपटने का निश्चय किया। इससे पहले बाबर ने धौलपुर, बयाना तथा ग्वालियर के छोटे–2 राज्यों को धर्मयुद्ध के नाम पर अपनी तरफ मिला लिया। दोनों पक्षों के बीच पहली मुठभेड़ बयाना पर अधिकार के प्रश्न पर हुई जिसमें हसन खां मेवाती और राणा की संयुक्त सेनाओं को विजय मिली। परन्तु बाबर ने साहस एवं दृढ़ निश्चय से कार्य करते हुए अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाने के लिए शराब के सभी बर्तन तोड़ दिये। इस्लाम के अनुरूप चलने का वायदा किया। 16 मार्च, 1527 ई० के प्रारंभ में दोनों पक्षों की सेनाये फतेहपुर सीकरी के पास खानवा नामक स्थान पर आ डटी।

बाबर की व्यूह रचना वैसी ही थी जैसा पानीपत में। राणा की सेना में सुप्रसिद्ध राजपूत सरदारों के अतिरिक्त हसन खां मेवाती तथा कुछ प्रसिद्ध लोधी अफगान सरदार भी थे। काबुल से आये ज्योतिषी मुहम्मद शरीफ की भविष्यवाणी तथा राजपूतों की संयुक्त सेना के समाचार से मुगल सेना भयभीत हो गई परन्तु बाबर ने ओजस्वी भाषण द्वारा सैनिकों में उत्साह का पुनः संचार किया। प्रथम आक्रमण में राजपूत सेना को विजयी मिली परन्तु मुगलों की तोपो की मार से शीघ्र ही राजपूत सेना छिन्न–भिन्न हो गई। अपमानित तथा घायल राणा की जनवरी 1528 ई० में मृत्यु हो गई। बाबर ने विजय के उपलक्ष में शहीद राजपूतों के सिरों का बुर्ज बनवाया तथा 'गाजी' की उपाधि धारण की। खानवा के युद्ध के परिणामस्वरूप भारत में राजपूतों का संघ खत्म हो गया तथा उनके सम्मान को भी भारी धक्का लगा।

(3) चन्देरी का युद्ध (1528 ई०) (Battle of Chanderi) – चन्देरी पर मेदिनी राय का अधिकार था। 29 जनवरी, 1528 ई० बाबर व मेदिनीराय के मध्य युद्ध हुआ। जिसमें राजपूतों और मेदिनीराय ने मिलकर बाबर के विरूद्ध लड़ाई लड़ी लेकिन मेदिनीराय को पराजय का सामना करना पड़ा और बाबर की विजय हुई।

(4) घाघरा का युद्ध (1529 ई०) (Battle of Ghaghara) – बाबर ने 1529 ई० इब्राहिम लोदी के भाई महमूद लोधी और उसके समर्थकों के साथ युद्ध किया। बाबर से युद्ध करने के लिए महमूद लोधी चुनार की तरफ बढ़ा। वह घाघरा नदी को पार करके बाबर को पराजित करना चाहता था। लेकिन इस युद्ध में भी बाबर की विजय हुई।

1.4.2. बाबर की उपलब्धियों या सफलता के कारण (Causes of Achivements of Babur) –

बाबर के साम्राज्य व उसकी उपलब्धियों या सफलताओं के निम्न कारण है –

1. बाबर का अच्छा व्यक्तित्व – बाबर अन्दर से अत्यन्त वीर, साहसी, कुशल योद्धा, ह्रस्ट–पुष्ट शरीर, साहस, आत्मविश्वास, निडरता, कुशलता व विपरीत परिस्थितियों का सामने करने की योग्यता, क्षमता आदि गुणों से भरपूर था। इन्हीं गुणों के कारण उस ने अनेकों सफलताएं प्राप्त कीं।

लक्ष्मी पब्लिकेशन – भारत का इतिहास (1526–1857) PP A3- A4

2. कुषल सेनानायक –बाबर उस समय एक अच्छा और कुशल सेनानायक था। उसके अन्दर नेतृत्व की एक अद्‌भुत क्षमता थी। बाबर एक अनुभवी योद्धा था। वह अपने सैनिकों को समय पर अभिप्रेरित करता रहता था। इसके साथ वह अपने सैनिकों को प्रशिक्षण भी देता रहता था। समय–2 पर अपने विचारों के माध्यम से उन्हें युद्ध की प्रेरणा देता रहता था।

3. भारतीय शासकों में एकता की कमी – भारत में सभी शासक एक जुट नहीं थे। प्रत्येक शासक ने अलग–अलग युद्ध किया। इस का लाभ बाबर को मिला और बाबर ने सफलता प्राप्त कर ली।

4. बाबर की तोपखाना नीति – बाबर द्‌वारा युद्ध में तोपों का प्रयोग करना उसकी सफलता का मुख्य कारण था। बाबर के दो कुशल योद्धा उस्ताद अली एवं मुस्तफा थे जिन्होंने तोपखाने का उचित प्रयोग विरोधी सेनाओं के छक्के छुड़ा दिए थे। जिसमें बाबर को सफलता मिली।

5. बाबर का कुषल सैन्य संचालन व व्यूह रचना – बाबर एक कुशल सेनापति था उसको युद्ध का काफी अनुभव था। उसने युद्ध से पहले ही अपनी सेना को मोर्चो पर तैनात कर दिया था। बाबर ने अपनी सेना को दोनों तरफ से आक्रमण करने का परीक्षणदिया। सामने से तोपों से तेज हमला किया। बाबर ने युद्ध से पहले ही सुरक्षा के काफी प्रबंध कर लिए थे।

6. बाबर की राजनीतिक महत्वाकांक्षा – बाबर बहुत महत्वाकांक्षी शासक था। उसने विशाल साम्राज्य स्थापित करने की तीव्र अभिलाषा थी। बाबर ने अपनी आत्मकथा में भी लिखा हैः "मुझे विजय एवं विशाल साम्राज्य स्थापित करने की अभिलाषा थी, इसलिए एक या दो पराजयों से मैं निराश होने वाला नहीं था।"

7. एक वृद्ध महिला से प्रेरणा – बाबर को एक वृद्ध महिला से भारत की विजय की प्रेरणा प्राप्त हुई थी। 1505 ई० में एक दिन उसे दिखकाट नामक गाँव में ठहरने का अवसर मिला। वहां उसकी उस गांव की मुखिया 111 वर्षीय महिला से भेंट हुई, जिसने भारत पर तैमूर के आक्रमण की गाथा सुनाकर बाबर के हृदय में भारत विजय की

अभिलाषा उत्पन्न कर दी। इसके बाद उसने भारत पर निश्चय ही अपने पूर्वज की गाथा को दोहराने के लिए भारत पर आक्रमण की कहानी को दोहराने का पक्का मन बना लिया।

8. गुप्तचर विभाग बनाना – बाबर ने छोटे–2 गुप्तचर विभाग बना रखे थे। वे समय–समय पर बाबर को विभिन्न प्रकार की सूचनाएं भेजते रहते थे। बाबर उसी के आधार पर सेना का प्रबंधन करके रखता था। बाबर की तुलुगमा पद्धति का ज्ञान अन्य शासकों को नहीं थ। युद्ध संचालन में बाबर बहुत सावधानी बरतता था।

9. नवीन युद्ध प्रणाली – बाबर का सैनिक संगठन काफी उच्च कोटि का था। बाबर ने भारत में 'तुलुगमा युद्ध–प्रणाली' का सफल प्रयोग किया था जिसमें विरोधी सेना को तीन ओर से घेरा जाता था। भारतीय सेना और अन्य सेना इस प्रणाली से परिचित नहीं थी।

1.4.3. बाबर का चरित्र (Character of Babur)– बाबर मध्य एशिया के सबसे प्रतिभाशाली शासकों में से एक था, जिसने अपनी योग्यता, उच्च व्यक्तित्व, कुशल सेनापतित्व, कुशल प्रशासक एवं कूटनीतिज्ञ जैसे गुणों के बल पर इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया। डा.वी.ए. स्मिथ ने उसे मध्य एशिया के शासकों में सबसे योग्य बताया है। वह बहुत आकर्षक, साहसी, दयालु स्वभाव, दृढ़ संकल्प, प्रकृति प्रेमी तथा कला प्रेमी व्यक्ति था। उसके गुणों के विषय में ईष्वरी प्रसाद ने लिखा हैः "मध्यकाल के इतिहास में बाबर सबसे अधिक आकर्षक व्यक्तियों में से एक था। शासक, सेनापति तथा विद्वान के रूप में वह सबसे महान मध्यकालीन शासकों के मध्य जगह पाने का अधिकारी है।"

3. Ishwari Prasad, A Short History of Muslim Rule in India, Allahabad 1955, P. 291.

बाबर के चरित्र की प्रमुख विषेषताएँ इस प्रकार थीं –

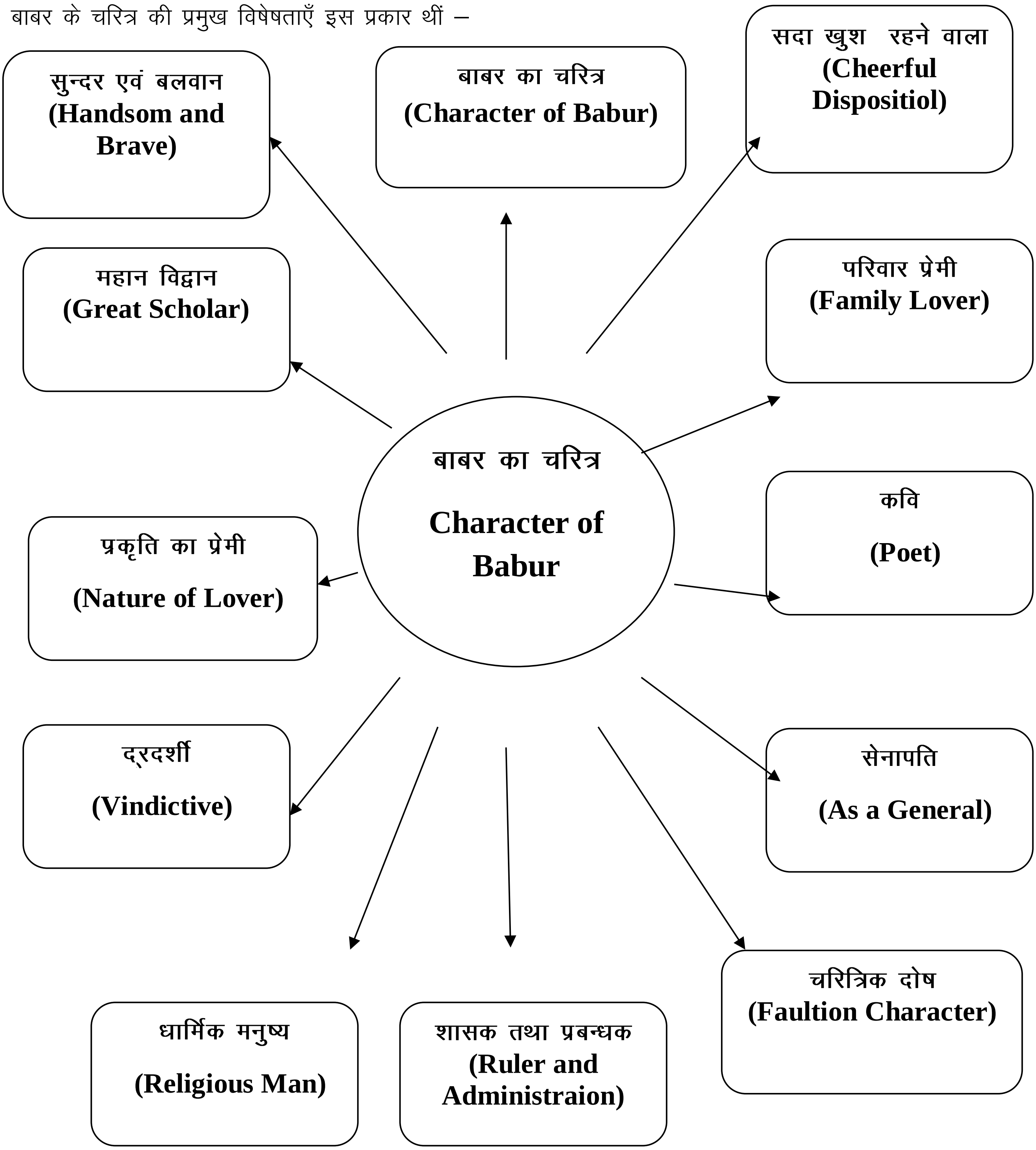

(i) सुंदर एवं बलवान् (Handsom and Barave) – बाबर सुंदर एवं साहसी व्यक्ति था। उसका शरीर बलिष्ठ, कद में मझला तथा रंग में गोरा था। वह इतना बलवान था कि दो व्यक्तियों को अपनी बाजुओं के बीच में दबाकर बड़ी आसानी से किले की दीवार पर दौड़ता था। उसकी आंखें मंगोलों की भांति छोटी तथा पैनी दृष्टि की थीं। उसका चेहरा गोल एवं उसकी नसों में मध्य एशिया के दो महान सेनापतियों का रक्त बहता था, जिसके कारण वह इतना साहसी बन गया था कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपना हौंसला नहीं खोता था।

(ii) शासक तथा प्रबंधक (Ruller and Administrator) – बाबर ने साम्राज्य की स्थापना के पश्चात् एक कुशल प्रशासक होने का परिचय दिया। उसकी आत्मकथा में उसके प्रधानमंत्री सहित अनेक मंत्रियषें के नाम मिलते हैं। रशब्रुक विलियम्स के अनुसार, बाबर को एक विजेता के अलावा एक मुगल साम्राज्य के संस्थापक के तौर पर भी स्वीकार करना चाहिए। उसके अतिरिक्त, बाबर ने अपने राज्य में शांति एवं व्यवस्था स्थापित की और आम जनता की चोरों और डाकुओं से रक्षा की। उसने पानीपत तथा सम्भल इत्यादि स्थानों पर मस्जिदों का निर्माण करवाया और अनेक बाग भी लगवाए। हालांकि कुछ इतिहासकार बाबर के एक कुशल प्रशासक नहीं मानते। उन्होंने बाकर पर आरोप लगाया है कि उसने अपने शासनकाल में न तो प्रशासनिक संस्थाएं स्थापित कीं और न कोई नए कानून बनाए। उसने अपने जीते हुए क्षेत्रों की व्यवस्था जागीरदारों को सौंप दी। यहाँ तक कि उसने भारत में एक अच्छी भू–राजस्व व्यवस्था एवं न्यायप्रणाली भी स्थापित नहीं की। उसने इब्राहिम लोदी से प्राप्त खजाने को भी लुटा दिया था। उसने आम जनता तथा सरकारी कर्मचारियों पर अनेक कर थोप दिए। उसके शासनकाल में नौकरियाँ भी बिकती थीं। परंतु राधेश्याम जैसे इतिहासकार इन आरोपों को सही नहीं मानते।

(iii) सेनापति के रूप में (As a General) – बाबर एक उच्चकोटि का सेनापति तथा कुशल शासक था। हिंदुस्तान की विजय में वह अपने कुशल और अद्भुत नेतृत्व शक्ति और सैन्य संगठन का परिचय दे चुका था। वह छोटी–सी आयु में ही एक कुशल घुड़सवार तथा तलवारबाज बन गया था। फरगाना का शासक बनने के पश्चात् उसने तुर्कों तथा उजबेगों की युद्ध संचालन विधि का ज्ञान प्राप्त किया। उसने हिंदुस्तान के अफगानों की शक्ति एवं सैन्यसंचालन को भी अच्छी तरह से सीख लिया था। उसने भारत विजय के कार्य में पग–पग पर अपने कुशल नेतृत्व का परिचय दिया। यहाँ तक कि वह पराजय और घोर संकटों के समय भी अपना धैर्य नहीं खोता था। कन्वाह के युद्ध में जब उसक सैनिकों ने राणा सांगा की सेनाओं से लड़ने से इंकार कर दिया तो उसने अपने सैनिकों को एक जोशीला भाषण देकर

और युद्ध को धार्मिक जामा पहनाकर काफिरों के विरूद्ध लड़ने से इंकार कर दिया तो उसने अपने सैनिकों को एक जोशीला भाषण देकर और युद्ध को धार्मिक जामा पहनाकर काफिरों के विरूद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया। परिणामस्वरूप, उसने मात्र 40000 सैनिकों के बल पर राणा सांगा की दो लाख की सेना को पराजित कर दिया।

(iv) धार्मिक व्यक्ति (Religious Man) – बाबर अल्लाह में विश्वास रखने वाला कट्टर सुन्नी मुसलमान था। वह हमेशा अपनी सफलता का श्रेय ईश्वर को देता था। उसका मानना थः "ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। इसलिए उसके समक्ष अपने आप को समर्पित करके आगे बढ़ना चाहिए।" वह साधारण मुसलमान की तरह नमाज पढ़ता था और रोजे रखता था। वह हाजिब द्वारा कुरान का पाठ भी सुनता था। वह पीरों और फकीरों का बहुत आदर करता था। उसके धार्मिक विचारों में बहुत उदारता थी। हालांकि उसने खानवा तथा चंदेरी की लड़ाइयों में जेहाद का नारा दिया और दोनों विजयों के पश्चात् राजपूतों की कटी हुई खोपड़ियों के बुर्ज बनवाए। परंतु यह बात ध्यान देने योग्य है कि बाबर ने शांति के समय हिंदुओं के प्रति धार्मिक सहनशीलता की नीति ही नहीं अपनाई, बल्कि उन्हें अपनी मर्जी से अपने त्योहार एवं रीति रिवाजों को मनाने की अनुमति भी प्रदान की।

(v) दूरदर्शी (Vindictive):– बाबर बहुत दूरदर्शी सेनापति था। वह शत्रु की वास्तविक शक्ति एवं कमजोरी को तुरंत पहचान जाता था। उसने पानीपत की लड़ाई से पहले ही जान लिया था कि भले ही इब्राहीम लोदी के सैनिकों की संख्या अधिक है, परंतु उनका न तो लड़ने का ढंग अच्छा है और न ही इब्राहीम लोदी का कुशल नेतृत्व। इसी प्रकार उसने राणा सांगा की शक्ति का सही अनुमान लगाया। उसने इन दोनों युद्धों में वैज्ञानिक व्यूह रचना की और सफलता प्राप्त की।

बाबर अपनी सेना को अनुशासन में रखता था। सभी युद्धों में उसके सैनिक पूरी तरह अनुशासन में रहे, क्योंकि वह आवश्यकता पड़ने पर दण्ड देने से भी नहीं हिचकिचाता था। वह अपने सैनिकों का हर सुख–दुख में साथ देता था। उसने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि उसे एक बार अपने सैनिकों के साथ एक पर्वतीय गुफा में ठहरने का अवसर मिला। उस समय जबरदस्त बर्फबारी हो रही थी। गुफा इतनी छोटी थी कि उसमें बाबर के सैनिक नहीं आ सकते थे। बाबर ने अपने हाथ से गुफा पर पड़ी बर्फ को हटाकर बैठने का स्थान बना दिया और अपने सैनिकों को उसके अंदर भेज दिया और स्वयं बाहर आ कर बैठ गया। उसके सैनिकों ने उसे बार–बार अंदर आने को कहा, परंतु बाबर वहीं बैठा रहा।

(vi) प्रकृति का प्रेमी (Lover of Nature) – बाबर को प्रकृति से बहुत लगाव था। वह पर्वतों, झीलों, नदियों, बागों, फूलों इत्यादि को देखकर बहुत प्रसन्न होता था। उसने अपनी आत्मकथा में भी अनेक प्राकृतिक दृश्यों का उल्लेख किया है। उसने विभिन्न प्रकार के जानवरों, पक्षियों, फूलों इत्यादि का भी वर्णन किया है। उसने फरगाना के तरबूजों एवं काबुल के अनारों की भी दिल खोलकर प्रशंसा की है। उसने अनेक बागों का भी निर्माण कराया और, जिसमें काबुल के बाग–ए–वफा, बाग–ए–कला और आगरा में रामबाग एवं जोहरा बाग भी शामिल थे।

(vii) सदा खुश रहने वाला (Cheerful Disposition) – बाबर के चरित्र की एक विशेषता यह थी कि वह हर हाल में प्रसन्न रहता था। पिता की मृत्यु के पश्चात् उसके जीवन में अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं। उसने भारत की विजय से पहले अनेक कष्ट भी झेले। कई बार उसे भोजन भी मांग कर खाना पड़ा और नंगे पैर दुर्गम रास्तों से गुजरना पड़ा। परंतु उसने कभी भी अपने मस्तिष्क पर उदासी नहीं आने दी।

(viii) परिवार प्रेमी (Family Lover) – बाबर स्वभाव से बहुत दयालु तथा परिवार प्रेमी था। वह अपने माता–पिता से बहुत प्रेम करता था। इसके अलावा, उसे अपने संबंधियों और परिवार के सदस्यों से बहुत लगाव था। वह अपनी माता, दादी तथा नानी का बहुत ख्याल रखता था। वह अपनी पत्नियों से अपने भाइयों से भी अच्छा लगाव रखता था। जब उसके सरदारों ने उसे अपने विद्रोही भाई जहांगीर का वध करने का परामर्श दिया तो उसने उत्तर दिया कि छोटे वह बड़े भाइयों अथवा संबंधियों का वध करना उसके स्वभाव में नहीं है। इसलिए वह अपने भाई का वध नहीं कर सकता चाहे इसके लिए उसे कितनी भी बड़ी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। इसके अतिरिक्त, वह अपनी पुत्रियों, पुत्रों, मित्रों, सरदारों से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करता था। उसकी दयालुता का इसी बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि जब उसे बचपन में अपने एक मित्र की मृत्यु का समाचार मिला तो वह काफी समय तक रोता रहा।

(ix) कला का प्रेमी (Art of lover) – बाबर भवन निर्माण, चित्रकला और संगीतकला में बहुत रूचि लेता था। उसे नए–नए भवन बनवाने का बहुत शौक था। हालांकि, वह ग्वालियर के दुर्ग के भीतर बने राजपूतों, (मानसिंह तथा विक्रमजीत) के भवनों को देखकर प्रभावित हुआ था। भारत के मुगल साम्राज्य की स्थापना के पश्चात् उसने आगरा, सीकरी, बयाना, धौलपुर तथा ग्वालियर के भवनों के निर्माण पर 1491 व्यक्ति लगाए। उसके समय आगरा में 680 कारीगर प्रतिदिन भवन बनाने का कार्य करते थे। लेकिन निरंतर युद्धों में लीन रहने के कारण अपने भवनों को पूरा नहीं कर सका। इसके बावजूद,

उसने पानीपत की मस्जिद तथा सम्भल की जामा मस्जिद का निर्माण कार्य पूरा करवाया। इसके अतिरिक्त बाबर की चित्रकला के भी रूचि थी उसने अपनी आत्मकथा के कुछ भागों को चित्रित भी कराया था। बाबर संगीत में भी बहुत रूचि रखता था। उसने अनेक कविताओं और गीतों की रचना की। उसे कवियों और संगीतकारों की संगति बहुत पसंद थी।

(x) कवि (Poet) :- बाबर एक उच्चकोटि का कवि भी था। उसने तुर्की और फारसी में अनेक कविताओं की रचना की। वह अमीर अली शेर के पश्चात् सबसे उच्चकोटि का कवि माना जाता था। उसे कविताएँ सुनने का भी बहुत शौक था। वह अपने विजय अभिमानों में भी समय निकालकर कवियों की कविताएं सुनता था। वह स्वयं भी अपने सैनिकों एवं अमीरों को कविताएँ पढ़कर सुनाता था। उसने मसनवी–ए–मुनीब नामक काव्य संग्रह की रचना की। कुछ इतिहासकारों का मत है कि उसने एक नई लिपि प्रचलित की थी, जिसे खत–ए–बाबरी के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा, वह मुशायरों में भी भाग लेता था। उसने अनेक शायरों तथा विद्वानों को संरक्षण दे रखा था। बाबर अपने समय का एक महान विद्वान था। उसकी आत्मकथा आज भी अमूल्य ऐतिहासिक स्त्रोत मानी जाती है।

डॉ0 गोपाल प्रसाद, डॉ जयपाल सिंह, डॉ दीपीका यादव – भारत का इतिहास (1200–1707 ई0 तक) PP 132-134

कार्यकलाप I–

बाबर के मुख्य युद्ध कौन–से थे तथा बाबर के चरित्र की प्रमुख विशेषताएं कौन सी हैं। इस पर चर्चा करें।

1.3.2 शेरशाह सूरी का जीवन परिचय (Life History of Sher shah suri) :-

शेरशाह का जन्म 1472 ई० में हुआ था। शेरशाह का वास्तविक नाम फरीद खां था। शेरशाह के पिता हसन बिहार में जमींदार थे। शेरशाह की माँ हसन की चार पत्नियों में से पहली पत्नी थी। शेरशाह ने 1494 ई० में जौनपुर जा कर शिक्षा प्रारंभ की थी। शेरशाह ने अरबी तथा फारसी का गहन अध्ययन किया। बाद में उसकी सौतेली मां ने उसके पिता और शेरशाह के बीच मतभेद उत्पन्न करवा दिया। तब वह 1518 ई० में इब्राहिम लोदी की शरण में आगरा चल गया। इब्राहिम ने हसन की जागीर शेरशाह को सौंप दी। लेकिन उसके सौतेले भाई सुलेमान तथा चांद ने उसे वहां से हटा दिया। तब वह बिहार के शासक बहार खाँ की शरण में गया और उसका अच्छा मित्र बन गया बाद में अपने मित्र की शेर से रक्षा करने के कारण बहार खां ने उसे 'शेर खां' की उपाधि प्रदान की। शेरशाह ने 1530 ई० में कूटनीति के सहारे चुनार पर अधिकार कर लिया। 1538 ई० में बिहार तथा बंगाल का शासक बन गया। 17 मई, 1540 ई० में कन्नौज के युद्ध में हुमायूं को पराजित करके मुगल साम्राज्य का अंत कर दिया। शेरशाह मुगल साम्राज्य पर शासन करने वाला पहला अफगान मूल का सुल्तान था।

1.4.4 शेरशाह सूरी का शासन–प्रबंधन तथा सुधार (Shershahsuri Administration and Reforms) –शेरशाह एक महान विजेता होने के साथ–2 एक कुशल प्रशासक भी था।

(1) मंत्री (Ministers) –शेरशाह के मन्त्री पर उनके विभाग –

(i) दीवान–ए–विजारत (ii) दीवान–ए–अर्ज (iii) दीवान–ए–इंशा (i) दीवान–ए–रखालत

(i) दीवान–ए–विजारतः – यह वित्तयी विभाग से संबंधित था, जिसका प्रधान वजीर होता था। यह विभाग लगान तथा लेखा–जोखा संबंधित था।

(ii) दीवान–ए–अर्जः – यह सैनिक विभाग था, जिसके प्रधान को आरिज–ए ममालिक कहा जाता था।

(iii) दीवान–ए–इंशाः – इसका स्वरूप सचिवालय जैसा था, जिसमें शाही आदेशों को जारी किया जाता था। इसको दवीर कहा जाता था।

(iv) दीवान–ए–रसालतः – इसके प्रधान को खद्र कहा जाता था तथा इस का कार्य धार्मिक एवं विदेशी मामलों की देखभाल करना था।

2. सैन्य प्रबंधन (Militry Administration) –शेरशाह ने सैन्य प्रशासन को मजबूत बनाने के लिए एक सेना केन्द्र का निर्माण जिसमें 25 हजार पैदल सेना, एक लाख घुड़सवार, 6 हजार हाथियों को शामिल किया। शेरशाह ने घोड़ों को दागने की प्रथा 'दाग–औ हुलिया' की शुरूआत की तथा इसके साथ–2 सैनिकों को नगद वेतन, सेना के लिए अलग छावनियों का प्रबंधन किया।

3. न्याय व्यवस्था (Judcial System) – शेरशाह के शासन में जनसाधारण को पूरा सम्मान तथा उचित न्याय और कठोर दण्ड की व्यवस्था की गई। जिससे अपराध कम हुआ तथा क्षेत्र में शांति की व्यवस्था बनी रही। इसके प्रत्येक प्रांत, सरकार, परगने आदि में न्याय अधिकारियों की नियुक्ति की गई।

4. पुलिस तथा गुप्तचर व्यवस्था (Police and Espoinage System) – शेरशाह के काल में अपने–अपने क्षेत्रों में विभिन्न सैनिक अधिकारी ही 'पुलिस' का कार्य करते थें। पुलिस का कार्य आन्तरिक शान्ति तथा व्यवस्था स्थापित करना था। पुलिस व्यवस्था 'स्थानीय उत्तरदायित्व' की प्रथा पर आधारित थी। प्रत्येक अधिकारी का कर्त्तव्य था कि वह अपराधी का पता करे। यदि किसी क्षेत्र में चोरी, डाका, हत्या आदि का पता न चलता तो संबंधित अधिकारी को ही दण्ड दिया जाता था। एक एतिहासकार के अनुसार एक बूढ़ी औरत अपने सिर पर आभूषणों की टोकरी रखकर

यात्रा कर सकती थी। शेरशाह ने षड्यन्त्रों तथा विद्रोह का पता लगाने के लिए एक निपुण गुप्तचर विभाग स्थापित किया था।

5. राजस्व व्यवस्था (Revenue System) – शेरशाह के शासनकाल की सर्वप्रथम विशेषता थी। उसके द्वारा कर प्रणाली में सुधार किया जाना। शेरशाह ने कृषकों की समस्या को सुलझाया। शासक बनने के पश्चात् भूमि कर व्यवस्था में सुधार के लिए उसने अनेक उल्लेखनीय कार्य किए। उसने अहमद खां के निरीक्षण में राज्य की समस्त भूमि का वास्तविक माप करवाया ज्ञातव्य है कि शेरशाह के पूर्व किसी शासक ने भूमि की माप की व्यवस्था नहीं की थी।

माप की गई भूमि की बीघे के आधार पर बांटा गया। माप के लिए सिकंदरी गज (32 अंक) आधार बनाया गया। प्रत्येक किसान के साथ राजस्व या उत्पादन कर के लिए करार किया गया। जिसे 'इकरारनामा' या 'कबूलियत' कहते थे। प्रत्येक कृषक के इकरारनामे पर लगान की दर लिखी रहती थी। लगान सामान्यतः उत्पादन का 1/3 भाग लिया जाता था।

शेरशाह के राजस्व–प्रबंध में बिचौलियों अथवा जमींदारों का कोई स्थान नहीं था। उस राजस्व–व्यवस्था की तुलना आधुनिक रैयतवारी बंदोबस्त से की जाती है। शेरशाह के भू–राजस्व प्रबंध में टोडरमल ने विशेष योगदान दिया।

6. आर्थिक समृद्धि – शेरशाह ने आर्थिक विकास के लिए पूरे राज्य में एक समान मुद्रा प्रणाली एवं माप– तौल के नियमों को लागू किया। उसने शुद्ध चांदी के सिक्के जारी किए तथा व्यापार को विकसित करने के लिए चुंगियों की दर निर्धारित की।

7 शेरषाह के प्रजा हितकारी कार्य Public Welfare works of Shershah) – शेरशाह ने जन सुविधा हेतु चार मुख्य सड़कों का निर्माण करवाया –

(i) सुनार गाँव से पेशावर तक ग्रांड ट्रंक रोड।

(ii) आगरा से बुरहानपुर, दिल्ली– मुल्तान तक का मार्ग।

(iii) मुल्तान से लाहौर तक का मार्ग।

(iv) मांडू से आगरा तक का मार्ग।

उसके शासनकाल में डाक व्यवस्था का भी परिचालन हुआ तथा सड़कों के किनारे यात्रियों के लिए सराय, वृक्ष, जल–कूप, छावनी आदि की व्यवस्था की गई।

8 शेरषाह सूरी कालीन धर्म एवं संस्कृति – शेरशाह ने अपने शासनकाल में हिन्दू तथा मुस्लिम प्रजा में कोई भेदभाव नहीं किया। उसने सेना, प्रशासन तथा राजस्व सभी विभागों में हिन्दुओं की नियुक्ति की। ब्रहमजीत गौड़ उसका सेनाध्यक्ष था, जो हिन्दू था। शेरशाह ने अपने शासनकाल में स्थापत्य कला के मिश्रित स्वरूप का नमूना प्रस्तुत किया। रोहतासगढ़ का किला, सासाराम का मकबरा तथा दिल्ली का पुराना किला शेरशाह द्वारा ही निर्मित हैं। शेरशाह के शासनकाल में अवधी के साथ–साथ हिन्दी भाषा को भी मान्यता प्राप्त थी। जायसी का पद्मावत और मंझन का मधुमालती समकालीन रचनाएं हैं।

1.4.5. शेरषाह सूरी का चरित्र एवं सफलताएं (Character and achievements of Shershahsuri) – शेरशाह सूरी मध्यकालीन भारत के उन चुनिन्दा शासकों में से एक था, जो एक साधारण परिवार से उठकर सुल्तान के पद तक पहुंचा। शेरशाह के चरित्र एवं सफलताओं का वर्णन इस प्रकार है –

1. राजपद का उच्च आदर्ष –शेरशाह ने राजपद के उच्च आदर्श की स्थापना की उसने अपने राजस्व के सिद्धांत को कठोरता, अनुशासन, कर्तव्यपरायणता, सार्वजनिक कल्याण एवं संगठन पर आधारित किया।

2. योग्य षासन– प्रबंधक – शेरशाह सूरी एक महान शासन प्रबंधक एवं सुधारक था। उसने अपनी पिता की जागीरों के प्रबंध के समय प्रशासनिक ज्ञान प्राप्त किया। उसने अपने प्रशासन को केन्द्र, प्रांतों, सरकारों तथा परगनों में विभाजित किया। गाँव उसके प्रशासन की सबसे छोटी ईकाई थी।

उसने जनसाधारण जनता को भी पूर्ण सुरक्षा प्रदान की। वह कृषकों की भलाई की ओर भी बहुत ध्यान देता था। उसने अपने सैनिकों को आदेश दे रखा था कि वे सैनिक अभियानों के समय जानबूझ कर कृषकों को परेशान न करें। यदि कोई सैनिक ऐसा करता था तो शेरशाह उसे कठोर दण्ड देता था। वह प्राकृतिक आपदा के समय किसानों के भू–राजस्व कम कर देता था या माफ कर देता था। इस प्रकार शेरशाह तक तानाशाह होते हुए भी उदार तथा प्रजापालक शासक था। डा. ईश्वरी प्रसाद के अनुसार : "शेरशाह की सरकार यद्यपि निरकुंश थी, फिर भी वह एक जागृत एवं जोशीली सरकार थी।"

3. उदार शासक – शेरशाह सूरी एक उदार तथा सहनशील शासक था। वह प्रथम मुसलमान था, जिसने राजनीति को धर्म से अलग रखा। उसका मानना था कि राजनीति तथा धर्म दोनों अलग–अलग चीजें हैं, इसलिए राजनीति को धर्म से अलग रखना चाहिए। वह राजनीति में धर्म अर्थात इस्लाम का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करता था। वैसे भी, वह धर्म को व्यक्तिगत विषय मानता था। उसने हिंदुओं पर इस्लाम थोपने का प्रयास

नहीं किया। उसने न केवल हिंदुओं को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की, बल्कि सेना और प्रशासन में भी उन्हें उचित स्थान दिया। उसने टोडरमल को राजस्व विभाग का कार्य सौंप दिया। ब्रह्मजीत को सेनानायक का पद दिया गया। इसी प्रकार राजाराम भी द्वितीय अफगान प्रशासन में उच्च पद पर नियुक्त था। शेरशाह ने हिंदू जनसाधारण जनता के साथ भी सहनशीलता का व्यवहार किया। उसने हिंदुओं को पूरी आजादी प्रदान की। उसने हिंदुओं के मंदिरों एवं मूर्तियों को तोड़ने का भी प्रयास नहीं किया। उसके समय हिंदू अपनी मर्जी से अपने देवी–देवताओं की उपासना करते थे और त्योहारों को मनाते थे। यहाँ तक कि उसने सरायों में भी हिंदुओं के ठहरने की उचित व्यवस्था कर रखी थी। उसके समय राजस्व संबंधी रिकार्ड फारसी और हिंदी भाषा में रखे जाते थे। मजूमदार, रायचौधरी एवं दत्त के अनुसार : यद्यपि शेरशाह एक धर्मपरायण मुसलमान था, परंतु सह कट्टर धर्मान्ध नहीं था। उसने हिंदुओं को राज्य के महत्वूपर्ण पदों पर नियुक्त किया।

इसके बावजूद शेरशाह को पूरी तरह से धार्मिक सहनशील शासक नहीं माना जा सकता। यह सत्य है कि उसने किसी हिंदू मंदिर तथा मूर्ति को नहीं तुड़वाया था, परंतु जोधपुर की विजय के पश्चात् उसने वहां के दुर्ग में स्थित हिंदू मंदिर को मस्जिद में परिवर्तित करा दिया था। उसके राजपूत राज्यों पर आक्रमण भी कहीं न कहीं धार्मिक कारणों से ही प्रेरित थे।

4. न्याय प्रेमी शासक – शेरशाह एक न्यायप्रिय शासक था। वह स्वयं भी कहता था : "न्याय धार्मिक कर्तव्यों में सर्वोच्च संस्कार है तथा हिंदू और मुसलमान दोनों ही राजा इसे स्वीकार करते हैं।" शेरशाह न्याय करते समय अमीर–गरीब, ऊँच–नीच इत्यादि का भेद नहीं करता था। उसने अपने साम्राज्य में अनेक अदालतों की स्थापना की, जिनमें काजी न्याय देने का कार्य करते थे। वह गरीबों की अपेक्षा अमीरों तथा उच्च अधिकारियों से अधिक कठोर व्यवहार करता था। उसने अपने भतीजे को भरे दरबार में कठोर दण्ड दिया था, क्योंकि उसने स्नान करती हुई सुनारिन स्त्री पर पान का पीक फेंक दिया था। सरदारों की प्रार्थना पर भी उसने अपने भतीजे का दण्ड क्षमा नहीं किया। इसी प्रकार उसने मालवा के गवर्नर शुजात खाँ को कठोर दण्ड दिया। इसके अलावा, जो अधिकारी हत्यारों और चोरों का पता लगाने में असफल रहता, शेरशाह द्वारा उसे भी कठोर दण्ड दिया जाता था। इस प्रकार शेरशाह की न्यायप्रियता से चोरों और डाकुओं का भय समाप्त हो गया था।

5. महान सेनानायक – शेरशाह एक कुशल सैनिक तथा योग्य सेनानायक था। उसमें एक विजेता के सभी गुण विद्यमान थे। उसमें विशाल साम्राज्य की स्थापना की अभिलाषा शुरू से ही देखने को मिलती थी। उसने बंगाल के शासक को सूरजगढ़ की लड़ाई में बुरी तरह से हराया। चौसा और कन्नौज के युद्धों में भी इसी प्रकार की वीरता तथा अद्भुत कुशलता का परिचय दिया। अफगान सैनिकों का उस पर पूरा विश्वास था और वे उसके प्रत्येक संकल्प पर मर मिटने को तैयार रहते थे। कानूनगो के अनुसारः शेरशाह के चरित्र

में शेर जैसी वीरता तथा लोमड़ी जैसी कूटनीतिज्ञता थी। शक्तिशाली शत्रु को हराने के लिए वह कूटनीति तथा धोखे का सहारा लेता था, जबकि दुर्बल शत्रु पर वह शेर की भांति झपट पड़ता था। रोहतास, मारवाड़ तथा रायसिन की विजय उसने धोखेबाजी से ही प्राप्त की। इसके अतिरिक्त वह अपने सैनिकों से बहुत प्रेम करता था। वह कहता था : "मुगल अफगानों से न युद्ध में श्रेष्ठ है और न ही द्वन्द्व में, किंतु अफगानों ने अपने आंतरिक झगड़ों के कारण हिंदुस्तान का साम्राज्य अपने हाथों से निकल जाने दिया।" इससे उसके सैनिकों में न केवल एकता की भावना जागृत हुई, बल्कि उनमें अपने स्वामी के प्रति विश्वास की भावना भी उत्पन्न हो गई। हालांकि उसने सैनिकों के कठोर अनुशासन पर बहुत बल दिया। कानूनगो ने लिखा हैः "उसकी (शेरशाह) गणना सबसे अधिक दयालु विजेताओं में की जाती है। यद्यपि वह बहुत कठोर था, फिर भी कोई ऐसा सेनानायक नहीं हुआ जो अपने सैनिकों का इतना प्रिय रहा हो।"

6. प्रजा हितैषी – शेरशाह एक प्रजा हितैषी शासक था। वह जनहित को अपना कर्तव्य समझता था। वह ऐश्वर्य में अपना समय व्यर्थ नहीं करता था और रात–दिन एवं सोते–जागते समय वह प्रजा की भलाई में लीन रहता था। उसने अपनी जनता की सुविधा के लिए चार सड़कें बनवाई और उनके दोनों ओर छायादार वृक्ष लगवाए। उसे यात्रियों और व्यापारियों की सुविधा के लिए 1700 सरायों का निर्माण कराया। इन सरायों में यात्रियों एवं व्यापारियों को पूर्ण सुरक्षा प्रदान की जाती थी। इसके अतिरिक्त, वह गरीबों की सूची तैयार करवाता था, जिससे उनके जीवन निर्वाह का इन्तजाम किया जा सके। उसने गरीबों, साधु–संतों इत्यादि को मुफ्त भोजन कराने के लिए लंगर प्रथा आरम्भ की। उसने उपद्रवियों के साथ क्रूर व्यवहार करके प्रजा को पूर्ण सुरक्षा प्रदान की। परमात्मा शरण के अनुसार , "शेरशाह ने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि शासक का काम केवल सुरक्षा कायम रखना और राजस्व की वसूली मात्र ही नहीं था, अपितु उसका सबसे मुख्य काम जनता की साधारण स्थिति को सुख–सुविधापूर्ण बनाकर उसके लिए उन्नति के साधन प्रस्तुत करके उसकी सेवा करना था।"

7. भवन निर्माता – शेरशाह सूरी एक उच्चकोटि का भवन निर्माता था। उसे नए–नए भवन बनवाने का बहुत शौक था। उसने अपने साम्राज्य की उत्तर पश्चिमी सीमा पर रोहतासगढ़ नामक दुर्ग का निर्माण कराया। उसने दिल्ली में भी पुराना किला नामक भवन का निर्माण कराया। उसने इस किले के भीतर एक ऊँची मस्जिद भी बनवाई, जिसमें हिंदू एवं मुस्लिम कला की स्पष्ट छाप देखने को मिलती है। इसके अलावा, उसने बिहार में सहसराम का मकबरा भी बनवाया। यह शेरशाह की प्रतिभा एवं वास्तुकला का शाश्वत परिचायक माना जाता है। यह मकबरा आयताकार तालाब के किनारे पर इस प्रकार बना हुआ है कि इसकी बनावट ऊपर की ओर पिरामिड के आकार की पतली होती हुई दिखाई देती है। इस पर एक

अर्द्ध वृत्ताकार गुम्बद बनी हुई है। हालांकि, भवन की कुर्सी और छत चौकोर है, परंतु मकबरा अष्टकोणात्मक है। इसके भीतर एक मेहराबदार बड़ा कमरा बना हुआ है और मकबरे में प्रवेश के लिए एक मार्ग सीढ़ियों से होकर जाता है। कनिंघम ने इसकी तुलना ताजमहल से की है। डॉ. वी.ए. स्मिथ के अनुसार, "इसका बाहरी भाग शेरशाह की भांति कठोर दिखाई देता है, जबकि इसके भीतर का भाग उसकी उदारता को दर्शाता है।"

अंत में कहा जा सकता है कि शेरशाह सूरी एक परिश्रमी व्यक्ति, शक्तिशाली योद्धा, कुशल सेनापति तथा महान शासक–प्रबंधक था। उसने अपनी प्रतिभा के बल पर एक कल्याणकारी शासन स्थापित किया। उसने कला और शिक्षा को भी बहुत प्रोत्साहन दिया। अब्बास खाँ सरवानी के अनुसार : "शेरशाह दूसरा हैदर था। थोड़े ही समय में उसको देश का राज्य प्राप्त हो गया। उसने मुख्य मार्ग सुरक्षित कर दिए। राज्य का शासन और सैनिक तथा लोगों के सुख का प्रबंध कर दिया। नेकी को ईश्वर देखता है।"

8. शिक्षित तथा योग्य –शेरशाह एक शिक्षित व योग्य शासक था। उसने 'गुलिस्तां', 'बोस्तां और सिकन्दर–नामा' को कण्ठस्थ कर लिया था।

1.4.6. शेरशाह अकबर का अग्रगामी (अग्रसर) (Shershah as a fore-runner of Akbar) :-

कुछ इतिहासकारों ने शेरशाह सूरीको अकबर का अग्रगामी माना है। शेरशाह शासन–प्रबंध के प्रत्येक क्षेत्र में जिन आदर्शों, नीतियों तथा प्रजाहितकारी कार्यों का प्रतिपादन किया, अकबर ने उन्हीं का अनुसरण किया। डॉ. कानूनगो के अनुसारः "शेरशाह का अकबर से वही राजनीतिक संबंध है जो चन्द्रगुप्त का अशोक से, जूलियस सीजर का आगस्टाइन से, हेनरी द्वितीय का एडवर्ड प्रथम से तथा हेनरी पंचम का लुई चौदहवें से है।" परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि अकबर में कोई प्रतिभा नहीं थी। वास्तविकता यह है कि अकबर ने शरेशाह द्वारा स्थापित किए गए शासन–प्रबंध में आवश्यकता के अनुसार अनेक सुधार किए। यहाँ तक कि उसने शेरशाह के कार्यों को अधिक अमलीजमा पहनाया। इस तरह से अकबर ने शेरशाह से कुछ बातें उधार लीं। कुछ बातों में उसने स्वयं की मौलिक प्रतिभा प्रदर्शित की। यही कारण था कि वह सुधारों के मामले में शेरशाह से कहीं ज्यादा आगे चला गया था। इसके बावजूद, शेरशाह को अकबर का अग्रगामी माना जाता है।

डॉ0 गोपाल प्रसाद, डॉ जयपाल सिंह, डॉ दीपिका यादव – भारत का इतिहास (1200–1707 ई0 तक) PP 160-161

1.3.3 अकबर का जीवन परिचय (Life History of Akbar) :-

(क) अकबर का जीवन परिचय – अकबर का जन्म अमरकोट में 15 अक्टूबर 1542 ई० को हुआ। उसका पूरा नाम मुहम्मद अकबर था। उसका पिता हुमायूं था तथा उसकी माता का नाम हमीदा बानो था। बाल्यकाल में अकबर का पालन–पोषण हुमायूं के भाई अस्करी के संरक्षण में हुआ। अकबर की धाय माता का नाम माहम अनगा था। 1545 ई० में अस्करी ने अकबर को काबुल में कामरान के पास भेज दिया। जहां बाबर की बहन खानजादा बेगम ने उसका पालन–पोषण किया। 1547 ई० के बाद से अकबर अपने माता–पिता के साथ रहने लगा।

अकबर के राजनीतिक जीवन की शुरूआत 1551 ई० में हुई। जब हुमायूं ने उसे गजनी का सूबेदार नियुक्त किया। अकबर का पहला विवाह हिंदाल की पुत्री रूकैया के साथ हुआ। हुमायूं ने 1555 ई० में अकबर को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। सरहिंद पर विजय प्राप्त करने के बाद हुमायूं ने अकबर को लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया। 1 जनवरी 1556 ई० को हुमायूं की मृत्यु की सूचना को 17 दिनों तक गुप्त रखा गया। अकबर का राज्याभिषेक कलानौर में ही 1556 ई० में हुआ और बैरम खां को वकील–ए–सल्तनत बनाकर उसका संरक्षक नियुक्त किया गया। यद्यपि अकबर मुगलवंश का तीसरा बादशाह था तथापि वास्तविक मुगल साम्राज्य की स्थापना उसी ने की। अकबर एक महान साम्राज्यवादी शासक था।

अकबर का शासनकाल भारत के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। 1566 ई० में हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् अकबर ने पानीपत के दूसरे युद्ध में विजय प्राप्त करके भारत में मुगल साम्राज्य की पुनः स्थापना की। बैरमखां ने 17 फरवरी, 1556 को दिल्ली में शानदार राज्यभिषेक–दरबार का आयोजन किया गया। अकबर को सोने के सिंहासन पर बैठाया गया। गद्दी पर बैठते ही अकबर ने उत्तरी और दक्षिणी भारत के अनेको प्रदेशो पर विजय प्राप्त करके बहुत बड़े साम्राज्य की स्थापना की। विजय अभियान का कार्य 1601 ई० तक लगातार चलता रहा। अपनी शक्ति को प्रदर्शित करने के लिए राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए और उन्हें उच्च पदों पर नियुक्तियां दी। अकबर ने सभी धर्मों के प्रति सहनशीलता की नीति अपनाई। 1528 ई० में दीन–ए–इलाही नामक धर्म की नीति चलाई ताकि लोग एक सरल धर्म को अपना सके। इस प्रकार अकबर ने सम्पूर्ण साम्राज्य में राष्ट्रीय एकता स्थापित करने का भरपूर प्रयास किया। डॉ० ए०एल० श्रीवास्तव के अनुसार, "उसने पूर्णतया अपने को भारतीय बना लिया था और इस देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास और वृद्धि मं उसी प्रकर दत्तचित्र होकर भाग लिया, जैसे वह मूलतः भारतीय वंश और धर्म परम्परा का अनुयायी हो संगठित भारत के रूप में वह राजसत्ता के स्वप्न देखता था।"

(ख) अकबर के दरबार के कुछ प्रसिद्ध व्यक्ति (अकबर के दरबार के नवरत्न) –

अकबर के दरबार के नौ रत्न इतिहास में प्रसिद्ध है। इनसे जिनकी गणना की जाती है, वे है –

1 बीरबल – बीरबल एक राजपूत सरदार था और स्वेच्छा से अकबर की सेवा में आया। अकबर ने उसे 'राजा' की उपाधि प्रदान की तथा बाद में उसकी कविताओं से प्रभावित होकर 'कविप्रिय' की उपाधि प्रदान की। अपनी वाकपटुता तथा चातुर्य के बल पर उसने प्रसिद्धि प्राप्त की। यूसूफजाई कबीले पर आक्रमण के समय वह मारा गया।

2 टोडरमल – टोडरमल को पहले शेरशाह का सरंक्षण प्राप्त था, परंतु उसकी मृत्यु के बाद 1573 ई. में अकबर की सेवा में आ गया। अकबर ने उसे वितमंत्री बनाया तथा 'राजा' की उपाधि प्रदान की। भूमि की माप के आधार पर लगान की वैज्ञानिक पद्धति का विकास टोडरमल ने ही किया। सेनापति के रूप में टोडरमल ने 1576 ई. में बंगाल पर विजय प्राप्त की तथा 1580 में बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की सूबेदारी प्राप्त की।

3 तानसेन – अकबर के दरबार में तानसेन संगीतकार के रूप में प्रसिद्ध था। उसका संबंध मूलतः ग्वालियर से था और मान सिंह के शासनकाल में ग्वालियर में ही उसने संगीत की शिक्षा ली थी। तानसेन जैसा सदृश्य गायक आज तक नहीं हुआ। अकबर ने 1562 ई. में तानसेन का एक रंगीन चित्र बनवाया था।

4 मुल्ला दो प्याजा – नौ रत्नों में यह भी एक प्रसिद्ध रत्न था। यह अपनी वाकपटुता के लिए तो प्रसिद्ध था ही, प्याज का प्रेमी होने के कारण यह मुल्ला दो प्याजा के नाम से जाना गया।

5 अब्दुर्रहीम खान–ए–खाना – मूल नाम अब्दुर्रहीम था और अकबर ने 'खान–ए–खान' की उपाधि प्रदान की थी। यह भी कवि के साथ–साथ सेनापति भी था। इसके पिता बैरम खां अकबर के संरक्षक थे।

6 हकीम हुकाम – अकबर का दरबारी होने के साथ–साथ यह रसोई का भी प्रमुख था।

7 अबुल फजल – वह एक प्रसिद्ध साहित्यकार था और इसने 'अकबरनामा' तथा 'आइने–ए–अकबरी' नामक दो प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की।

8 राजा मान सिंह –अकबर के शासनकाल का सर्वाधिक प्रसिद्ध सेनापति राजा मान सिंह था।

9 शेख अबु अल–फैज "फैजी" – वह एक विद्वान कवि व साहित्यकार था। इसने 'लीलावती' का फारसी भाषा में अनुवाद किया।

1.4.7. अकबर की विजयें (Conquests of Akbar) – अकबर का साम्राज्य काफी बड़ा था अकबर के विजय अभियान से उसने बहुत शासकों पर विजय प्राप्त की उनमें से कुछ मुख्य विजय अभियानों की चर्चा करेंगे वो निम्न प्रकार से है –

1. मालवा (Malwa)(1561–62 ई०) – मालवा पर विजय प्रापत करने के लिए अकबर ने अधम खाँ को भेजा। इस समय मालवा का शासक बाज बहादुर था। उसकी पत्नी रूपमती थी। दोनों संगीत प्रेमी एवं संगीत के ज्ञाता थे। अधम खाँ ने मालवा पर विजय प्राप्त की। इसी समय बाज बहादुर के पक्ष में मालवा में विद्रोह हो गया। अधम खाँ ने नायव वजीर की हत्या कर दी थी। अकबर इससे क्रोधित हुआ और उसे छत से नीचे फेंक दिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। फिर 1562 ई0 में अकबर ने मालवा को जीत लिया।

2. मेड़ता (Medta)(1562 ई०) – मेड़ता मेवाड़ के शासक उदय सिंह के जागीरदार जयमल के अधीन था। अकबर ने 1562 ई0 में इस पर विजय प्राप्त कर ली। जयमल भागकर मेवाड़ चल गया।

3. आमेर (Amer) (1562) – अकबर मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के दर्शन के लिए जा रहा था, रास्ते में उसकी मुलाकात आमेर के शासक भारमल बिहारी मल से हुई। भारमल ने अपनी पुत्री के विवाह की इच्छा प्रकट की। बाद में उसकी पुत्री हरखा बाई या मरियम उज्जमानी से अकबर का विवाह हुआ। इसी से जहाँगीर का जन्म हुआ था।

4. गोण्डवाना या गढकटंगा अभियान (Gondwana) (1564 ई.) – गोण्डवाना की राजधानी जबलपुर के पास स्थित चौरागढ़ थी। इसकी शासिका पहोवा की चन्देल राजकुमारी दुर्गावती थी। गढकटंगा राज्य की स्थापना अमनदास ने की थी। इलाहाबाद के गर्वनर आसफ खां ने 1564 ई. में गोण्डवाना पर चढ़ाई की। पराजित होने के बाद दुर्गावती ने आत्महत्या कर ली। बाद में अकबर ने इसमें हस्तक्षेप किया और गोण्डवाना का राज्य वापस कर दिया। केवल मालवा की सीमा पर स्थित कुछ किलों को अपने अन्तर्गत रखा।

5. चितौड़ पर अधिकार, (1567–68 ई.) – गोंडवाना की विजय के पश्चात अकबर ने मेवाड़ राज्य पर विजय प्राप्त करने की सोची। वह विशेषतः चित्तौड़ के सुदृढ़ दुर्ग पर अपना अधिकार करना चाहता था। इस समय तक कई राजपूत सरदारों ने मुगल–साम्राज्य का अधीनता स्वीकार कर ली थी, परन्तु मेवाड़ के राणा उदय सिंह ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया था। उसने मुगलों के शत्रु बाज बहादुर को भी शरण दी थी। अतः 1567 ई. में एक बहुत बड़ी सेना–सहित अकबर ने चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। राणा उदय सिंह तो पहाड़ियों की ओर भाग कर छिप गया, परन्तु मेवाड़ के राजपूतों ने जयमल और फत्ता के नेतृत्व में शत्रुओं का बड़ी वीरता से मुकाबला किया।

6. मेवाड़ (Mewar) (1576 ई.) – अकबर ने चितौड़ का घेरा डाल वहाँ पर शासक उदयसिंह सामन्तों की सलाह पर किले का भार जयमल और फता (फतेह सिंह) पर सौंपकर खुद जंगलों में छिप गया। जयमल और फता से प्रभावित होकर दोनों की हाथी पर सवार प्रतिमा को आगरे कार्यालय में मुख्य द्वार पर स्थापित कराया।

7. रण थम्भौर (1569 ई.) – रणथम्भौर की विजय की यहाँ का शासक सुरजन हाड़ा पराजित हुआ।

कालिंजर (1569 ई.) के राजा रामचन्द्र ने आत्मसमर्पण कर दिया।

जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर (1507 ई.) यहाँ के शासकों ने 1570 ई. में आत्म समर्पण किया।

8. गुजरात अभियान (1572–73 ई.) –गुजरात विजय के कारण निम्न थेः

(i) गुजरात पश्चिमी देशों से व्यापार का केन्द्र– स्थल था।

(ii) मक्का की यात्रा करने वाले मुस्लिमों को यही से जाना पड़ता था।

(iii) यहाँ के शासक मुजफ्फर खां ने अकबर के विद्रोही सम्बन्धी मिर्जाओं को शरण दी थी।

गुजरात का शासक मुजफ्फर खाँ तृतीय पराजित हुआ। मिर्जा अजीत कोका को सूबेदार बनाकर अकबर वापस आ गया। अकबर आगरा पहुंचा ही था कि गुजरात में विद्रोह हो गया। अकबर ने फतेहपुर सीकरी से गुजरात की 450 मील की दूरी मात्र 9 दिनों में पूरी की।

स्मिथ महोदय ने अकबर के इस अभियान को इतिहास का सबसे द्रुतगामी आक्रमण माना है।

9. कश्मीर की विजय (1586 ई.) –अकबर ने उत्तर पश्चिम की सुरक्षा को ध्यान में रखकर 1586 ई. में कश्मीर का अभियान किया।

10. खानदेश विजय (1591 ई.) –खानदेश का शासन राजा अली खाँ वफादारी पूर्वक मुगलों की तरफ से अहमदनगर के युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया। अली खां के लड़के मीरन बहादुर शाह ने मुबल आधिपत्य को मानने से इन्कार कर दिया तथा अपने पिता से की गई मुगलों की सन्धि को ठुकरा दिया। अहमदनगर से युद्ध चल ही रहा था कि खानदेश ने स्वतन्त्रता के रूख को अपना लिया। 1599 ई. में स्वयं अकबर ने खानदेश की राजधानी बुरहानपुर पर आक्रमण किया और जीत लिया।

11. बिहार और बंगाल की विजय (1574–76) –1574 ई० में अकबर ने बिहार तथा बंगाल के स्वतन्त्र राजा दाउखां तथा टोडरमल के नेतृत्व में मुगल सेना भेजी और कुछ समय के बाद वह स्वयं और इसके उपरान्त बंगाल के सब प्रदेशों को जीत लिया गया। दाऊद खां उड़ीसा की ओर भाग गया। मुनीम खां ने उसका पीछा किया। दाऊद खां को मुगलों की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी।

12. राजपूत रियासतों की अधीनता (1570–71 ई०) – अकबर ने चितौड़, रणथम्भौर और कालिंजर की विजय के पश्चात् राजपूताना के छोटे–छोट राजपूत शासकों के पास संदेश भेजा कि वे उसकी अधीनता स्वीकार कर चुका था। 1570 ई० में भगवानदास के प्रयासों से मारवाड़ और बीकानेर के शासकों–चंद्रसेन और राय कल्याणमल ने भी

अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। इसके पश्चात् जैसलमेर के शासक हरराय ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।

13. काबुल को मुगल–साम्राज्य में मिलाना (1885 ई० में)– काबुल में अकबर का सौतेला भाई मिर्जा मुहम्मद हकीम राज्य करता था। 1581 ई० में उसने अकबर के विरूद्ध विद्रोह कर दिया, परन्तु सम्राट ने उसे करारी हार दी। उसके बाद में क्षमा मांगने पर काबुल का राज्य उसी के पास रहने दिया।

14. अहमद नगर विजय (1597–1600 ई०) – 1595 ई० में अकबर ने अब्दुर्रहीन खान–खाना व राजकुमार मुराद के नेतृत्व में सेना भेजी। चाँद बीबी 1596 ई0 में मुगलों के साथ सन्धि करने को मजबूर हुई। इस सन्धि के अनुसार अकबर को बरार का क्षेत्र मिला और अकबर ने बहादुरशाह को शासक मान लिया।

1597 ई० में मुराद की मृत्यु हो गई और शहजादा दनियाल को पुनः खानाखाना के साथ भेजा गया। 1599 ई० दौलताबाद पर अधिकार कर लिया गया। 1600 ई० में अकबर ने अहमदनगर के किले को जीत लिया।

1.4.8 अकबर का व्यक्तित्व (Personality of Akbar) :-

अकबर भारत के सबसे महान् एवं आकर्षक सम्राटों में से एक हुआ हैं। उसमें एक वीर योद्धा, कुशल शासन–प्रबन्धक, योग्य राजनीतिज्ञ, श्रेष्ठ सुधारक तथा उच्च कोटि के मनुष्य के गुण विद्यमान थे। उसका व्यक्तित्व असाधारण रूप से प्रभावशाली था। क्या अमीर और क्या गरीब, क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, क्या भारतीय और क्या विदेशी, कोई भी उसके गुणों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था।

(क) अकबर के चरित्र के गुण या विशेषताएँ निम्नलिखित हैंः–

(i) शक्ल सूरत (Physical Appearance)– अकबर शक्ल–सूरत से बहुत प्रभावशाली था। उसका शरीर सुन्दर तथा सुडौल था। उसका कद न तो बहुत लम्बा था और न ही बहुत छोटा (लगभग 5 फुट 7 इंच)। उसकी छाती चौड़ी तथा बाजू लम्बे थे। उसकी टांगें कुछ अन्दर को झुकी हुई थीं और वह बाई टांग को कुछ घसीट कर चलता था। उसके नाक के नीचे बाईं ओर एक मस्सा था, जोकि एक शुभ चिन्ह माना जाता था। उसकी आंखें काली और रंग गंदमी था। उसकी आवाज़ जोरदार थी और उसमें विशेष रोअब था। वह अपने रंग–रूप से ही सम्राट प्रतीत होता था।

(ii) खाना, पहरावा तथा व्यवहार (Food, Dress and Manners)– इतना महान् सम्राट होते हुए भी अकबर दिन में एक बार सादा–सा खाना खाता था। आरम्भ में वह मासांहारी था, परन्तु बाद में उसने माँस खाना बिल्कुल छोड़ दिया था। वह रेशमी वस्त्र पहनता था, जिन पर हीरे–मोती जड़े हुए होते थे। अकबर का लोगों के साथ

व्यवहार प्रशंसनीय था। वह अमीर–गरीब सब व्यक्तियों को प्रेम से मिलता था। "सच तो यह है कि वह महान् लोगों के साथ महान और छोटे लोगों के साथ छोटा बन जाता था।"

(iii) परिवार प्रेमी तथा सच्चा मित्र (Affectonate Family Member and Sincere Friend)– अकबर अपने सम्बन्धियों के लिए गहरा स्नेह तथा सहानुभूति रखता था। उसका अपने माता–पिता, पत्नियों, भाइयों तथा पुत्रों से बहुत प्रेम था। अपने सौतेले भाई मिर्ज़ा हकीम के विद्रोह करने पर भी उसने उसे क्षमा कर दिया। इसी प्रकार अपने पुत्र सलीम के विद्रोह को ध्यान में न रखते हुए उसने उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। अकबर अपने मित्रों का भी सच्चा मित्र था। बीरबल तथा अबुल फ़ज़ल की मृत्यु पर वह कई दिन आंसू बहाता रहा।

(iv) निपुण शिकारी तथा निशानेबाज (Expert Hunter and Shooter)– अकबर को बचपन से ही शिकार खेलने का बहुत शौक था और बड़ा होने पर वह निपुण शिकारी और निशोनबाज बन गया। वह जंगली पशुओं और शेरों का अद्भुत वीरता और साहस से मुकाबला कर सकता था और बिगड़े हुए हाथियों को पूर्ण रूप से अपने नियन्त्रण में ला सकता था। वह एक कुशल घुड़सवार तथा योग्य निशानेबाज था।

(v) अनपढ़ परन्तु बुद्धिमान (Illiterate but Intelligent)– अकबर एक अनपढ़ व्यक्ति था। अपनी अनपढ़ता के पक्ष में वह प्रायः कहा करता था : "सभी पैगम्बर अनपढ़ थे।" परन्तु वास्तव में उसे अनपढ़ कहना ठीक प्रतीत नहीं होता। वह एक बुद्धिमान व्यक्ति था, जो आंखों से पुस्तकों को पढ़ने की अपेक्षा कानों से सुनकर ज्ञान प्राप्त करता था। उसको इतिहास, राजनीति तथा दर्शन–शास्त्र का अद्भुत ज्ञान प्राप्त था। उसने बड़े–बड़े विद्वानों के साथ वाद–विवाद में भाग लेकर भी अपने ज्ञान में बहुत वृद्धि कर ली थी। कोई भी व्यक्ति सम्राट को बातचीत करते हुए देख कर यह नहीं कह सकता था कि वह अनपढ़ थ।

(vi) ईश्वर पर विश्वास रखने वाला (A Man of Faith)– अकबर एक सच्चा मुसलमान था। बदायूनी का विचार कि उसने इस्लाम धर्म को छोड़ दिया था, ठीक नहीं है। वह दिन में पांच बार नमाज़ पढ़ता था। ईश्वर पर तो उसका अटल विश्वास था। अबुल फज़ल के कथनानुसार, "सम्राट अपने जीवन का प्रत्येक क्षण आत्म–परीक्षा अथवा ईश्वर की भक्ति में व्यतीत करता है।" जहांगीर ने भी कहा है कि उसका पिता क्षण–भर भी ईश्वर को नहीं भूलता था।

(vii) उदार धार्मिक दृष्टिकोण (Liberal Religious Outlook)– अकबर एक उदार मुसलमान था, जो दूसरे धर्मों का भी बहुत सम्मान करता था। उसने इबादत–खाना में पारसी, जैन, हिन्दू तथा ईसाई धर्म के प्रतिनिधियों को बुला कर उनसे वाद–विवाद किया और इन सब धर्मों के कुछ सिद्धान्तों को अपनाने का प्रयत्न किया। उसने इन सब धर्मों के अनुयायियों को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की। उसने सभी धर्मों में भेद–भाव दूर करने और लोगों में

सामाजिक मेल–जोल बढ़ाने के उद्देश्य से ही दीन–ए–इलाही की स्थापना की। यह उसकी उदारता का सर्वोत्तम उदाहरण है।

(ख) अकबर के कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य –

क्रम संख्या	कार्य	वर्ष
1	दास प्रथा का अंत	1562 ई०
2	अकबर की 'हरमदल' से मुक्ति	1565 ई०
3	तीर्थ यात्रा कर समाप्त	1563 ई०
4	जजिया पर समाप्त	1564 ई०
5	फतेहपुर सीकरी की स्थापना एवं राजधानी का आगरे से फतेहपुर स्थानान्तरण	1571 ई०
6	इबादत खाने की स्थापना	1575 ई०
7	इबादत खाने में सभी धर्मों के लोगों के प्रवेश की अनुमति।	1578 ई०
8	'महजर' की घोषणा	1579 ई०
9	दीन–ए–इलाही की घोषणा	1582 ई०

कार्यकलाप –II

अकबर की धार्मिक नीति के बारे में आप क्या जानते है? अपने शब्दों में एक नोट लिखिए।

(ग) अकबर के चरित्र की कमियॅा/दोष/अवगुण निम्नलिखित हैं:–

(i) अकबर रंगीला सम्राट था। उसमें भोग विलासता की प्रवृत्ति अधिक थी अर्थात् काम वासना की अधिकता थी।

(ii) अन्य सम्राटों की तरह उसके चरित्र में अनेकों अवगुण थे इसलिए उसने भी अन्य सम्राटों की तरह बहुत सी स्त्रियों से विवाह किए हुए थे।

(iii) उसके शाही हरम में उसकी रिश्तेदार तथा नौकरानियों समेत 5,000 स्त्रियां थी।

(iv) आरम्भ में अकबर शराब भी काफ़ी पीता था, परन्तु बाद में उसने यह बुरी आदत छोड़ दी थी।

(v) सुरा तथा सुन्दरी के दोषों के अतिरिक्त, उसमें एक अवगुण और भी था। जहां वह बहुत दयालु था, वहां कई बार क्रोध में आकर वह बहुत कठोर दण्ड देने लग जाता था।

(vi) समकालीन लेखकों के अनुसार जब वह क्रोध में आता था तो प्रायः आपे से बाहर हो जाता था तथा उसकी आँखें लाल–पीली हो जाती थीं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उसमें काम, क्रोध का अवगुण अधिक था।

(घ) सेनानायक के रूप में

अकबर एक महान् सेनानायक था। 1560 ई० में जब उसने राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली तो उसके पास केवल पंजाब, दिल्ली, ग्वालियर, आगरा और जौनपुर के प्रदेश थ। परन्तु 1602 ई० तक उसने समस्त उत्तरी भारत तथा दक्षिणी भारत के कुछ प्रदेशों पर भी विजय प्राप्त कर ली थी। यह उसके कुशल सेनानायक होने का ही परिणाम था। यह ठीक है कि आसफ़ खां, भगवानदास, मानसिंह, टोडरमल और अब्दुर्रहीम आदि सरदारों ने उसकी विजयों में महत्त्वपूर्ण भाग लिया, परन्तु अकबर को इन विजयों के श्रेय से वंचित नहीं किया जा सकता। कई बार तो वह स्वयं लड़ाई के मैदानों में चला जाता और बड़ी वीरता तथा योग्यता के साथ लड़ता था। 1567 ई० में वह चित्तौड़ को विजय करने के लिए स्वयं गया था। राजपूतों ने डट कर शत्रुओं का मुकाबला किया। अकबर ने दृढ़ निश्चय तथा योग्य नेतृत्व के कारण ही अन्त में मुग़लों को विजय प्राप्त हुई। सम्राट ने स्वयं अपनी गोली से जयमल को मार गिराया था। गुजरात पर विजय प्राप्त करने के लिए अकबर ने स्वयं कूच किया। जब विजय प्राप्त करने के पश्चात् वह आगरा लौटा तो वहां फिर विद्रोह हो गया। मुग़ल सम्राट बड़ी फुर्ती के साथ 600 मील की यात्रा को नौ दिनों में पूरा करके फिर गुजरात जा पहुँचा और विद्रोहियों की शक्ति को उसने बुरी तरह कुचला। दक्षिणी भारत के प्रदेशों की विजय में भी सम्राट ने स्वयं भाग लिया था। इसके अतिरिक्त, यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रत्येक अभियान सम्राट की देख–रेख में ही भेजा जाता था। अकबर ने एक योग्य सेनानायक की तरह अपनी सेना को बड़े अच्छे ढ़ंग से संगठित किया था तथा सैनिकों को अनुशासन में रहने की शिक्षा दी। डॉ० वी० ए० स्मिथ उसकी प्रशंसा में लिखते हैं, "अकबर एशियाई ढंग से एशियाई शत्रुओं के विरूद्ध एक योग्य सैनिक तथा अत्यन्त सफल सेनानायक था।"

(ङ) शासक तथा राजनीतिज्ञ के रूप में

अकबर उच्च कोटि का शासक तथा राजनीतिक माना जाता है। अन्य महान् शासकों की तरह वह प्रजा की भलाई के लिए कार्य करना अपना प्रमुख कर्त्तव्य समझता था। उसने केन्द्रीय, प्रान्तीय, सरकार और परगने के शासन–प्रबन्ध का बड़े अच्छे ढंग से संगठन किया। उसने भूमि–कर व्यवस्था में सराहनीय सुधार किये। उसका न्याय–प्रबन्ध सन्तोषजनक था। उसने समाज की कुरीतियों को दूर करने के प्रयत्न किये और बहुत से लोक–हित कार्य किये। शिक्षा के प्रसार के लिए उसने कई मदरसे खोले और फ़ारसी, संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य की विकसित किया। उसके समय में भवन–निर्माण कला, संगीत–कला और चित्र–कला ने भी अद्‌भुत उन्नति की।

अकबर ने एक चतुर राजनीतिज्ञ की तरह राजपूतों को मुग़ल–साम्राज्य के शत्रुओं से मित्रों में परिवर्तित कर दिया और हिन्दुओं के प्रति धार्मिक सहनशीलता की नीति अपना कर उनके हृदय में साम्राज्य के लिए गहरा प्रेम उत्पन्न कर दिया। उसमें एक सफल शासक के सब गुण पाये जाते थे। इसी कारण वह भारत में दृढ़तापूर्वक मुग़ल–साम्राज्य की स्थापना कर सका।

सारांश यह है कि "अकबर एक सहासी योद्धा, एक महान् सेनानायक, एक योग्य शासक प्रबन्धक, एक प्रजा–हितकारी शासक तथा मानव चरित्र को परखने में तीव्र बुद्धि वाला व्यक्ति था। वह मनुष्यों का एक जन्म–जात नेता था तथा इतिहास के सबसे शक्तिशाली सम्राटों में स्थान प्राप्त करने का अधिकारी है।"

(च) अकबर एक राष्ट्रीय सम्राट् के रूप में

अकबर मध्यकालीन भारत का निस्सन्देह एक महान राष्ट्रीय सम्राट था। उसने लगभग समस्त भारत पर विजय प्राप्त करके न केवल एक विशाल साम्राज्य की नींव ही रखीं अपितु साम्राज्य के प्रत्येक प्रान्त में लोक–कल्याण पर आधारित एक जैसा शासन प्रबन्ध, एक जैसे सिक्के, एक जैसे कानून तथा एक जैसे नाप–तोल के साधन भी स्थापित किये। सबसे बढ़ कर, उसने धर्म एवं जाति के भेद–भावों को ध्यान में रखते हुए सभी प्रजा–जनों को धार्मिक स्वतन्त्रता तथा एक समान नागरिक अधिकार प्रदान किये। डॉ० पी० सरन के शब्दों में, "अकबर का राज्य वास्तव में राष्ट्रीय राज्य था, एक ऐसा राज्य जो समस्त लोगों की सामान्य संस्कृति,सामान्य परम्परा तथा सामान्य देश पर आधारित था।" चाहे अकबर से पहले शेरशाह निर्माण का प्रयत्न किया था, परन्तु उसे इस कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई। मुग़ल सम्राट सूरी शासक से कहीं बहुत आगे चला गया तथा उसे सराहनीयता प्राप्त हुई। इसी लिए पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अकबर को 'भारतीय राष्ट्रवाद का पिता' कह कर सम्मानित किया है।

(i) समान नागरिक अधिकार (Equal Rights of Citizenships) – अकबर ने समस्त प्रजा को समान नागरिक अधिकार दिये। उससे पहले किसी भी मुस्लिम शासक ने हिन्दुओं को मुसलमानों के समान अधिकार नहीं दिये थे। दिल्ली के सभी सुल्तान तथा उसके पश्चात् बाबर, हुमायूं तथा शेरशाह भी हिन्दुओं से जज़िया कर लिया करते थे।

यह कर आम तौर पर बड़ी कठोरता से एकत्रित किया जाता था तथा वह हिन्दुओं के अपमान का चिन्ह माना जाता था। अकबर ने इस कर को अनुचित समझते हुए 1564 ई० में हटा दिया। इससे एक वर्ष पूर्व (1563 ई० में) उसने हिन्दुओं पर लगाया तथा तीर्थ–यात्रा कर भी समाप्त कर दिया था। इस प्रकार अकबर ने हिन्दुओं को मुसलमानों के समान अधिकार दिए। उसके शासन–काल के राज्य–प्रबन्ध के प्रत्येक मामले में हिन्दुओं तथा मुसलमानों में कोई भेद नहीं समझा जाता था। हिन्दुओं के साथ पूर्ण न्याय किया जाता था तथा उन्हें भूमि–कर सम्बन्धी मामलों में भी मुसलमानों के समान सहूलतें दी गई थीं। परिणामस्वरूप हिन्दू, जोकि बहु–संख्या में थे, मुग़ल साम्राज्य के भक्त बन गये।

(ii) सभी लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता (Religious Freedom to all)– अकबर ने हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों तथा अन्य धर्मों के लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की। उसके राज्य में सभी धर्मों के अनुयायियों को अपनी इच्छा के अनुसार मन्दिरों, मस्जिदों तथा गिरजा–घरों में पूजा करने का अधिकार प्राप्त था। उन सब को अपने–अपने धर्म का प्रचार करने की भी पूर्ण स्वतन्त्रता थी। अकबर ने यह आदेश जारी कर दिया कि किसी भी धर्म में विश्वास रखने वाले व्यक्ति को अन्य धर्म अपनाने के लिए विवश नहीं किया जा सकता। जिन लोगों को पहले बलपूर्वक मुसलमान बना लिया गया था, उन्हें फिर से अपना पुराना धर्म अपनाने की आज्ञा दे दी गई।

(iii) सभी धर्मों का आदर (Respect for all Religions)– सम्राट अकबर सभी धर्मों का आदर करता था। मुसलमान होते हुए भी वह हिन्दुओं के दीवाली, होली, बसन्त आदि त्यौहारों को जश्न–ए–नौरोज़ की भांति बड़ी धूम–धाम से मनाया करता था। जैन धर्म के प्रभाव में उसने मांस खाना छोड़ दिया था। वह अग्नि को उसी तरह पवित्र समझने लगा था जैसे कि पारसी समझा करते थे। वह ईसा के चित्रों तथा ईसाइयों के पवित्र ग्रन्थ बाईबल का भी बहुत सम्मान किया करता था। वह सिक्ख गुरुओं का बहुत सम्मान करता था और उसने उन्हें न केवल अपने धर्म का प्रचार करने की छूट ही दी अपितु 500 बीघे भूमि भी दी जिस पर अमृतसर का नगर बसाया। धर्म के सिद्धान्तों पर अकबर का दृढ़ विश्वास था। वह कुरान के नियमों के भला कोई कार्य नहीं करता था। उसने कई मस्जिदों का निर्माण करवाया।

(iv) शासन–प्रबन्ध के मामलों में धर्म–निरपेक्ष नीति (Secular Policy in Administration)– शासन–प्रबन्ध के मामलों में अकबर ने धर्म निरपेक्ष नीति का पालन किया। वह सब छोटी–बड़ी सरकारी नौकरियां योग्यता के आधार पर दिया करता था तथा धर्म एवं जाति के भेद–भाव को ध्यान में नहीं रखता था। उसके शासन में मुसलमानों के साथ–साथ टोडरमल, भगवानदास, मानसिंह, बीरबल, राय सिंह आदि कई हिन्दू भी उच्च पदों पर नियुक्त थे। अकबर की नवीन भूमि–कर प्रणाली हिन्दुओं तथा मुसलमानों पर एक–समान लागू की गई और इस के

लाभ हिन्दू कृषकों तथा मुसलमान कृषकों दोनों को पहुंचे। अपराधियों को दण्ड देते समय भी न्यायाधीश धर्म के भेद–भाव की ओर कोई ध्यान नहीं देते थे। हिन्दू तथा मुसलमान व्यापारियों पर सरकार की ओर से एक–समान कर लगाये जाते थे। समाज के सभी लोगों के लिए एक समान कानून, एक–समान सिक्के, एक–समान नाप–तोल के साधन आदि निश्चित किए गए थे। इन सब के अतिरिक्त, सभी लोगों के लिए कुओं, अस्पतालों, सरायों आदि का निर्माण किया गया था। हिन्दू तथा मुस्लिम स्त्रियों की अवस्था को सुधारने का प्रयतन किया गया तथा सभी पुरुषों को मदिरा एवं वेश्याओं के कुप्रभाव से बचाने के लिए कई पग उठाए गए थे। स्पष्ट है कि अकबर ने एक ऐसा राष्ट्रीय साम्राज्य स्थापित किया, जो धर्म–निरपेक्ष सिद्धान्त के अनुसार समस्त प्रजा की भलाई पर आधारित था।

(v) हिन्दुओं तथा मुसलमानों में आपसी सांस्कृतिक मेल–जोल (Religious Freedom to all People)– अकबर ने हिन्दुओं तथा मुसलमानों में आपसी सांस्कृतिक मेल–जोल स्थापित करने के भी प्रशंसनीय यत्न किए। उसने फ़ारसी को समस्त साम्राज्य की सरकारी भाषा बना दिया। इसके फलस्वरूप साम्राज्य के हिन्दू तथा मुसलमान दोनों इस भाषा का अध्ययन करने लगे। अकबर द्वारा स्थापित किये गये अनुवाद–विभाग ने संस्कृत के विख्यात ग्रन्थों का फ़ारसी में अनुवाद करवाया, ताकि मुसलमान लोग अपने हिन्दू भाइयों के धर्म एवं विचारों को समझ सकें। साहित्य के क्षेत्र में हिन्दुओं तथा मुसलमानों का आपसी मेल–जोल इतना अधिक हो गया कि बहुत से हिन्दू फारसी तथा बहुत से मुलमान हिन्दी–संस्कृत पढ़ने लगे। दोनों जातियों के लोगों का सामाजिक लेन–देन भी बहुत बढ़ गया और वे एक–दूसरे के रीति–रिवाजों का आदर करने लगे।

अकबर के शासन–काल में कला की विभिन्न शाखाओं ने भी राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया। उसने आगरा तथा फ़तेहपुर–सीकरी में बहुत से भवनों का निर्माण करवाया। इन भवनों में हिन्दवी तथा मुसलमानी भवन–निर्माण कला का मिश्रण स्पष्ट दिखाई देता है। अकबर के समय में चित्रकला के राष्ट्रीय स्कूल का जन्म हुआ, जिसके विकास में अब्दुस्समद तथा सैयद अली नामक मुस्लिम कलाकारों तथा दसवन्त, बसावन आदि हिन्दू कलाकारों ने मिलकर भाग लिया। अकबर के दरबार के सबसे प्रसिद्ध 17 चित्रकारों में से 13 हिन्दू थे।

(v) दीन ए–इलाही की स्थापना – 1582 ई० में अकबर ने सभी धर्मों के मुख्य सिद्धान्तों को एकत्रित करके एक नवीन धर्म की नींव रखी जिसे 'दी–ए–इलाही धर्म का नाम दिया गया।

ए०सी० अरोड़ा, भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल PP 107-113.

1.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress) :-

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए (Fill in the blanks) :-

I. 'मुगल' शब्द की उत्पत्ति .... शब्द से हुई है।

II. बाबर का मूल नाम .... मुहम्मद था।

III. घाघरा का युद्ध .... में हुआ था।

IV. शेरशाह सूरी का जन्म .... ई. हुआ था।

V. चंदेरी का युद्ध 1528 ई. में बाबर व..................................... के बीच में हुआ।

VI. पानीपत का प्रथम युद्ध .... ई. मे बाबर व इब्राहिम लोदी के बीच लड़ा गया।

VII. अकबर का जन्म .... ई. में .... हुआ था।

VIII. बाबर की मृत्यु .... ई. को हुई थी।

भाग (ख) सत्य/असत्य कथनों (True/False) :–

(i) बाबर ने काबुल पर अधिकार 1507 ई. किया था। (सत्य/असत्य)

(ii) अकबर ने अम्बर की राजकुमारी जोधाबाई से 1562 ई. में विवाह किया। (सत्य/असत्य)

(iii) शेरशाह का वास्तविक नाम फरीद था और इसने 23 टकसाले बनवाई। (सत्य/असत्य)

(iv) पानीपत का दूसरा युद्ध बाबर और हेमू के बीच हुआ था? (सत्य/असत्य)

(v) अकबर ने जजिया कर को 1564 ई. में समाप्त किया था। (सत्य/असत्य)

(vi) शेरशाह 1540 ई. में दिल्ली की गद्दी पर बैठा था। (सत्य/असत्य)

(vii) बाबर के शासन काल में जायसी ने पद्मावत की रचना की थी (सत्य/असत्य)

(viii) मुगल राजवंश का शासन काल 1526 ई. से 1707 ई. था। (सत्य/असत्य)

भाग (ग) उचित मिलान (Matching Test) :–

I.	बाबर का पिता	(क) जायसी
II.	खानवा युद्ध	(ख) हसन
III.	शेरशाह का पिता	(ग) उमर शेख मिर्जा
IV.	तुसुक–ए–बाबरी की रचना	(घ) अकबर
V.	फतेहपुर सीकरी का निर्माण	(ड़) 1527 ई.
VI.	पद्मावत की रचना	(च) बाबर

1.6 सारांश (Summary)

बाबर, शेरशाह सूरी, अकबर के प्रमुख युद्ध

- पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई०) में बाबर व इब्राहिम लोदी के बीच लड़ा गया। इसमें बाबर की विजय हुई।
- खानवा का युद्ध (1527 ई०) में बाबर व राणा सांगा के बीच, इसमें बाबर की विजय हुई।
- चंदेरी का युद्ध (1528 ई०) में बाबर व मेदिनी राय के मध्य, बाबर की विजय हुई।
- घाघरा का युद्ध (1529 ई०) में बाबर व महमूद लोदी के मध्य, बाबर की विजय हुई।
- चौसा का युद्ध (1539 ई०) में हुमायूं एवं शेरशाह सूरी के मध्य, शेरशाह विजयी।
- कन्नौज या बिलग्राम का युद्ध (1540 ई०) में हुमायूं व शेरशाह सूरी के मध्य, शेरशाह विजयी, हुमायूं पूर्णतया परास्त।
- पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556 ई०) में अकबर और हेमू के बीच, अकबर विजयी हुआ।
- अकबर ने 1568 ई० चितौड़ की प्राप्त की। राणा उदयसिंह की हार हुई।
- अहमदनगर का युद्ध (1600 ई०) में अकबर की सेना व चांदबीबी के मध्य, इसमें अकबर की विजय हुई।
- अकबर ने 1573 ई० में मुजफ्फर शाह तृतीय को हराकर गुजरात पर विजय प्राप्त की।
- असीरगढ़ का युद्ध (1601 ई०) में अकबर व मियां बहादुर के मध्य, अकबर विजयी। यह अकबर का अंतिम सैन्य अभियान था।

- बाबर का जन्म 14 फरवरी 1483 को हिजरी संवत् के अनुसार 6,888 में हुआ था। 1494 ई० में बाबर ट्रांसऑक्सियाना की एक छोटी–सी रियासत फरगाना का शासक बना।
- 1518–19 ई० में बाबर ने भीरा के शक्तिशाली किलों को जीता।
- खानवा के युद्ध के समय बाबर ने राणा सांगा के खिलाफ जिहाद का नारा दिया।
- बाबर ने तुजुक–ए–बाबरी (बाबरनामा) नामक पुस्तक की रचना की। जिसकी भाषा तुर्की थी। अबुल फजल ने अकबरनामा और आइन–ए–अकबरी की रचना की ।
- खानवा के युद्ध में विजयी होने के बाद बाबर ने 'गाजी' की उपाधि धारण की।
- बाबर की आत्मकथा तुजुक–ए–बाबरी है।
- सूर साम्राज्य में उपज का 1/3 भाग राजस्व के रूप में वसूला जाता था।

- शेरशाह के शासनकाल में जायसी ने पद्मावत की रचना की।
- शेरशाह का जन्म 1472 ई० में होशियारपुर के निकट बजवाड़ा में।
- शेरशाह 1540 ई० में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- शेरशाह का वास्तविक नाम फरीद था।
- भूमि की पैमाईश के लिए शेरशाह ने 32 अंक वाले 'सिकन्दरी गज' एवं 'सत की डंडी' का प्रचलन करवाया।
- शेरशाह ने सिक्का ढ़लाई के क्षेत्र में चांदी का रुपया एवं तांबे का दाम जारी करवाया।
- अकबर का जन्म 1542 ई० में अमरकोट में हुआ था।
- अकबर की ताजापोशी 1556 ई० में हुई थी।
- अकबर ने 1580 ई० में दहसाला नामक नयी लगान प्रणाली लागू की।
- मुगल काल में भूमि की माप कर उपज की मात्रा के औसत के आधार पर निर्धारित किए जाने वाले लगान को जब्ती प्रणाली कहा जाता था।
- अकबर ने अम्बर की राजकुमारी जोधाबाई से 1562 ई० में विवाह किया।
- भूमि माप के बिना उत्पादित फसल के अनुमान पर निर्धारित लगान को गल्ला बख्शी या बटाई कहा जाता था।
- मुगल काल में जिस प्रणाली के अंतर्गत लगान नकद व फसल दोनों रूपों में वसूल किए जाते थे उसे कनकूत कहते थे।
- जब बाबर 12 वर्ष का था तब उनके पिता की मृत्यु 8 जून 1494 ई० में हुई।
- खानवा के युद्ध के समय बाबर ने राणा सांगा के खिलाफ 'जिहाद' का नारा दिया।
- मुगलकाल में जिस भूमि पर प्रत्येक वर्ष फसल का उत्पादन किया जाता था उसे पोलज कहते थे।
- वैसी भूमि, जो दो तीन वर्षों तक बिना बोए रखी जाती थी उसे चाचर कहते थे।
- बाबर की मृत्यु 25 दिसंबर, 1530 ई० को हुई।
- अकबर ने वजीर की जगह दीवान–ए–आला का प्रयोग किया।
- अकबर ने 1564 ई० में जजिया कर को समाप्त किया।
- अकबर ने आइन–ए–पाठशाला की स्थापना 1580 ई० में की।
- अकबर ने फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना का निर्माण 1574 ई० में किया।
- अकबर ने सभी धर्मों को मिलाकर तौहीद–ए–इलाही नामक एक नए धर्म की स्थापना की।

- अकबर ने धार्मिक सिद्धान्तों को जानने के लिए विभिन्न धर्मों के जिन प्रतिनिधियों के साथ विचार–विमर्श किया, वे थे पुरूषोतम और देवी (हिन्दू धर्म) अकाबीवा और मान्सरत (पुर्तगाली धर्मप्रचारक) मेहर जी राणा (जरथ्रष्ट धर्म) हरिविजय सूरी (जैन धर्म) आदि।
- अकबर के शासनकाल में विवाह की आयु लड़को के लिए 16 वर्ष तथा लड़कियों के लिए 14 वर्ष थी।
- अकबर ने भ्रष्ट और रिश्वतखोर काजी का नाम अब्दुलनबी था।

1.7 सूचक शब्द (Key Words)

शब्द (Words)	अर्थ (Meaning)	शब्द (Words)	अर्थ (Meaning)
• लगान –	कर	• इकरारनामा –	स्वीकारना
• सुरा –	शराब	• सुन्दरी –	सुन्दर स्त्री
• गाजी –	शहीद राजपूतों की उपाधि	• सिकन्दरी गज –	भूमि पैमाईश पैमाना
• फैखी	राजकवि	• हकीम–हुकाम –	अकबर का रसोइया
• वर्चस्व –	महत्व	• खाकान –	खानों का सरदार
• प्रासंगिकता –	उपयोगिता	• शाही हरम –	राजा की चहेती महिला का रहने का स्थान
• निशान – राजकुमार द्वारा दिया गया आज्ञा पत्र		• चाचर – दो या तीन वर्षों तक जिस पर फसल न बोई जाए खाली भूमि	

- वाजिव – फारसी शब्द

1.8 स्व मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self assessment Test) (SAT)

भाग (क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple choice Question) (MCQS)

(i) बाबर का जन्म

(a) 1583 ई० (b) 1683 ई० (c) 1483 ई० (d) 1383 ई० उ.(c) 1483 ई०

(ii) अकबर ने जजिया कर कब हटाया ?

(a) 1526 ई० (b) 1564 ई० (c) 1540 ई० (d) 1530 ई०उ.(b) 1564 ई०

(iii) बाबर द्वारा लड़े गए युद्धों और संबद्ध वर्षों का कौन–सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

(a) पानीपत का युद्ध 1526 ई० (b) खानवा का युद्ध 1527 ई०

(c) घाघरा का युद्ध 1530 ई० (d) चन्देरी का युद्ध 1528 ई०

उ. (c) घाघरा का युद्ध 1530 ई०

(iv) तुजके बाबरी निम्न में से किस भाषा में लिखित है?

(a) अरबी (b) तुर्की (c) उर्दू (d) फारसी उ.(c) उर्दू

भाग (ख) उचित मिलान कीजिए (Matching Test) :-

(a) अकबर का जन्म	(क) 14 फरवरी, 1483 ई०
(b) बाबर का जन्म	(ख) 15 अक्टूबर, 1542 ई०
(c) टोडरमल	(ग) शेरशाह सूरी
(d) दीवान–ए–विजारत	(घ) अकबर

भाग (ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Type Questions)

(i) अकबर के नव–नवरत्न से आप क्या जानते है?
(ii) शेरशाह के न्याय प्रबंधन और राजस्व व्यवस्था क्या अभिप्राय है?
(iii) मुगल वंश पर चर्चा कीजिए।
(iv) बाबर की सफलताओं के कारण कौन–2 से है?

भाग (घ) निबंधात्मक प्रष्न (Long answer type Questions) (LAQS)

(i) बाबर एक कुशल योद्धा है। उसकी उपलब्धियों की विस्तार से चर्चा करते हुए उसके मुख्य युद्ध कौन–2 से थे?

(ii) अकबर के साम्राज्य का विस्तार पूरक वर्णन करते हुए उसकी राजपूत निति और धार्मिक नीति का उल्लेख कीजिए।

(iii) शेरशाँह सूरी का परिचय देते हुए उसके प्रबंधन पर विस्तार पूरक चर्चा करें।

(iv) शेरशाह सूरी के चरित्र का मूल्यांकन कीजिए और उसकी कौन–2 सी सफलताएँ रहीं। वर्णन कीजिए?

(v) बाबर भारत में मुगल साम्राज्य का निर्माता था। व्याख्या कीजिए।

(vi) अकबर के चरित्र तथा व्यक्तित्व के बारे में आप क्या जानते है? वर्णन कीजिए।

(vii) अकबर को एक राष्ट्रीय सम्राट के रूप में जाना जाता है क्या आप इस कथन से सहमत है। इसकी विस्तार से चर्चा करें।

1.9. प्रगति समीक्षा हेतु प्रष्नोत्तर (Answers to check your Progress)

भाग (क):– (I) मंगोल (II) जहीरूद्दीन (III) 1529

(IV) 1472 ई.में) (V) मेदिनी (VI) 1526

(VII) 1542, अमरकोट (VIII) 25 दिसम्बर, 1530

भाग (ख):– (I) असत्य (II) सत्य (III) सत्य

(IV) असत्य) (V) सत्य (VI) सत्य

(VII) असत्य (VIII) सत्य

भाग (ग):– (i) ग (ii) ड़ (iii) ख (iv) च (v)घ (vi) क

1.10 सहायक ग्रंथ व संदर्भ ग्रंथ (Reference/Suggested Readings) :–

- सतीश चन्द्र – उत्तर मुगलकालीन भारत का इतिहास (1707–1740), मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ,1974।
- अविनाश चंद्र अरोड़ा – भारतीय इतिहास का इतिहास (1526–1857) प्रदीप पब्लिकेशंस, जालंधर,2007।
- बी० एल० ग्रोवर, अलका महता, यशपाल, – आधुनिक भारत का इतिहास :एक नवीन मूल्यांकन,एस0चंद, नई दिल्ली, 2015।
- डॉ० गोपाल प्रसाद, डॉ० जयपाल सिंह, डादीपिका यादव – भारत का इतिहास, लक्ष्मी पब्लिशिंग हाउस, रोहतक,2018।
- मध्यकालीन भारत खंड 2 – डॉ० हरिशचन्द्र वर्मा , हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, नई दिल्ली, 1993।
- मध्यकालीन भारत (1000–1761 ई०) एल०पी० शर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, नई दिल्ली 2018।
- मध्यकालीन भारत (1000–1761 ई0) डॉ0 वी0डी0 महाजन, एस चंद,नई दिल्ली।

- आधुनिक भारत का इतिहास – एम०एस० जैन, न्यू एज पब्लिशर्स,नई दिल्ली, 1993।
- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन, राजीव अहीर , नई दिल्ली 2018।
- यूनीक सामान्य अध्ययन – डॉ० विनय कुमार सिंह, यूनिक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

COURSE CODE: HIS 201 LESSON NO. 2	SUBJECT – HISTORY PART-2 SEMESTER – IIIrd AUTOR – MOHAN SINGH BALODA

औरंगजेबः साम्राज्य का विस्तार एवं धार्मिक नीति

(AURANZEB: EXPANSION OF EMPIRE AND RELIGIOUS POLICY)

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

2.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

2.2 परिचय (Introduction)

2.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

2.3.1 औरंगजेब का राज्याभिषेक (Coronation of Auranzeb)

2.3.2 औरंगजेब का साम्राज्य विस्तार (Expansion of Aurangzeb's Empire)

2.3.3 औरंगजेब की दक्षिण नीति (South Policy of Aurangzeb)

2.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

2.4.1 औरंगजेब के विरूद्ध हुए महत्त्वपूर्ण विद्रोह (Important Revolte against Aurangzeb)

2.4.2 औरंगजेब की राजपूत–नीति (Rajput Policy of Aurangzeb)

2.4.3 औरंगजेब की धार्मिक–नीति (Religious Policy of Aurangzeb)

2.4.4 औरंगजेब की असफलता के कारण (Causes of Aurangzeb's Failure)

2.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

2.6 सारांश/सक्षिप्तिका (Summary)

2.7 संकेत–सूचक (Key-words)

2.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

2.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

2.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

2.1 अधिगम उद्‌देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- उत्तराधिकारी के युद्ध के बाद औरंगजेब के राज्याभिषेक को विद्यार्थी समझ स्केंगे।
- पाठक औरंगजेब के साम्राज्य–विस्तार का उल्लेख कर सकेंगे।
- औरंगजेब की दक्षिण नीति पर विद्यार्थी चर्चा कर सकेंगे।
- शिक्षार्थी औरंगजेब के विरूद्ध हुए महत्त्वपूर्ण विद्रोहों को बता सकेंगे।
- विद्यार्थी औरंगजेब की राजपूत नीति व धार्मिक नीति को स्पश्ट कर सकेंगे।
- औरंगजेब की असफलता के कारणों पर प्रकाश डालने में समर्थ हो सकेंगे।

2.2 परिचय (Introduction) :-

जिंदापीर के उपनाम से प्रसिद्ध औरंगजेब का विकास एक कट्टर मुसलमान के रूप में हुआ था। शाहजहाँ तथा मुमताज महल की छठी संतान के रूप में 1618 ई. में उसका जन्म हुआ था। उसे कुरान तथा हदीस की शिक्षा मुहम्मद हाशिम से प्राप्त हुई थी। अपने पिता शाहजहाँ के शासनकाल में औरंगजेब ने अनेक महत्त्वपूर्ण सैनिक अभियानों में नेतृत्व किया और सफलता भी प्राप्त की। शाहजहाँ द्वारा उसे 1634 ई. में दस हजार का मनसब प्रदान किया गया था। यहाँ से उसके राजनीतिक जीवन की शुरूआत हुई। 1635 ई. में पहली बार उसने अपने पराक्रम के द्वारा बुंदेलों को युद्ध में पराजित कर दिया था। उसके इस पराक्रम से खुश होकर उसे 1636 ई. में दक्षिण भारत का मुगल सूबेदार नियुक्त किया गया। दक्षिण भारत में 1636 से 1644 ई. तक मुगल सूबेदार के रूप में उसने उद्‌गीर, औसा, बलगाना आदि दुर्गों पर मुगलों के आधिपत्य को स्थापित कर दिया था। इसके बाद उसकी राजनीतिक हैसियत व उसकी महत्त्वाकांक्षा बढ़ती गयी। 1645 ई. में औरंगजेब को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया गया। उसके पराक्रम को देखते हुए शाहजहाँ ने उसे 1647 ई. में बलख और बदख्शां का सूबेदार तथा प्रधान सेनापति के रूप में नियुक्त किया था। 1648 ई. से 1652 ई. तक उसको मुल्तान एवं सिंध के गवर्नर के रूप में

कार्य करने का अवसर मिला। इस दौरान उसने 1649 ई. तथा 1652 ई. में दो बार कंधार का घेरा डाला। इसके बाद 1652 ई. में औरंगजेब को दूसरी बार दक्षिण भारत का सूबेदार बनाया गया। दक्षिण भारत की दूसरी सूबेदारी के क्रम में उसने गोलकुण्डा तथा बीजापुर को विजित करने की कोशिश की, किंतु अपने पिता शाहजहाँ के हस्तक्षेप के कारण इसमें सफल नहीं हो सका। 1657 ई. में शाहजहाँ के रोगग्रस्त हो जाने के कारण उसके चारों पुत्रों – दारा, शुजा, औरंगजेब एवं मुराद में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष प्रारंभ हो गया। उत्तराधिकार के इस युद्ध में औरंगजेब को विजय मिली और वह मुगल साम्राज्य पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। 1657 से 1707 ई. तक छठा मुगल बादशाह के रूप में उसने भारत पर राज किया। औरंगजेब शाहजहाँ का तीसरा पुत्र था, लेकिन 1657 ई. में उत्तराधिकार के लिए छिड़े युद्ध में उसने बाकी तीनों भाइयों – दारा, शुजा व मुराद कोहरा दिया और अंतिम रूप से 1659 ई. आलमगीर की उपाधि से अपना राज्याभिषेक करवाया। साम्राज्यवादी व पराक्रमी मुगलवंश के शासक के अंतिम रूप से 1659 ई. आलमगीर की उपाधि से अपना राज्याभिषेक करवाया। साम्राज्यवादी व पराक्रमी मुगलवंश के शासक के रूप में औरंगजेब ने साम्राज्य के विस्तार के लिए कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए। इसके काल में इसकी नीतियों के कारण कई महत्त्वपूर्ण विद्रोह हुए जिनमें जाट विद्रोह, सिक्ख विद्रोह सतनामी विद्रोह व राजपूत विद्रोह प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त औरंगजेब को बुंदेलों के भी विद्रोहों का सामना करना पड़ा। औरंगजेब के काल में ही उधर दक्षिण भारत में शिवजी के उदय के कारण मराठा विद्रोह मुगल साम्राज्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गई। औरंगजेब को मराठा समस्या के समाधान में सफलता नहीं मिली। 1674 ई. में शिवाजी ने अपने पराक्रम व कूटनीति के द्वारा स्वतंत्र मराठा राज्य की स्थापना की। 1689 ई. में शिवाजी की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने शिवाजी के उत्तराधिकारी उनके ज्येष्ठ पुत्र शंभाजी को पराजित कर मार डाला। लेकिन, तब तक मराठा विद्रोह एक जन–विदोह का रूप ले लिया था, इसलिए औरंगजेब अनेक प्रयासों के बावजूद मराठों पर विजय प्राप्त नहीं कर सका। औरंगजेब के साम्राज्य विस्तार में उसकी दक्षिण नीति व धार्मिक नीति का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। अपनी नीतियों के कारण उसे कई विद्रोहों का सामना करना पड़ा। राजनीतिक दूरदर्शिता के अभाव में औरंगजेब स्थानीय विद्रोहों पर नियंत्रण स्थापित करने में असफल रहा और यही समस्या मुगल साम्राज्य के विघटन व पतन का मूल कारण बनी। मुगल वंश के इतिहास में महान शासकों की श्रेणी में औरंगजेब अंतिम शासक था। उसके बाद मुगल वंश के कई शासक हुए, लेकिन कोई भी योग्य शासक नहीं बन सका। इस दौरान ब्रिटिश ताकत में वृद्धि व दक्षिण में मराठा ताकत के मजबूती के कारण मुगल साम्राज्य विघटन से धीरे–धीरे पतन की ओर अग्रसर हो गया।

2.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

2.3.1 औरंगजेब का राज्याभिषेक (Coronation of Aurangzeb)

1657 ई. में शाहजहाँ के रोगग्रस्त होने के बाद उसके चारों पुत्रों – दारा, शुजा, औरंगजेब एवं मुराद में मुगल सत्ता पर अधिकार को लेकर संघर्ष प्रारंभ हो गया। शाहजहाँ की तीन पुत्रियों – जहान आरा, रोशन आरा एवं गोहन आरा में से सत्ता संघर्ष में जहान आरा ने दार का, रोशन आरा ने औरंगजेब का एवं गोहन आरा ने मुराद का समर्थन किया। शाहजहाँ ने अपने चारों पुत्रों में से सर्वाधिक उदार, शिक्षित एवं सभ्य दारा को ही अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इस घोषणा के बाद ही उत्तराधिकार का युद्ध आरंभ हो गया। उत्तराधिकार को लेकर होने वाले इन युद्धों के क्रम में प्रथम युद्ध शाहसूजा एवं दारा के लड़के सुलेमान शिकोह तथा आमेर के राजा जयसिंह बीच 1658 ई. को बहादुरपुर में हुआ। इस संघर्ष में शुजा पराजित हुआ। मुगल सत्ता पर अधिकार को लेकर दूसरा युद्ध औरंगजेब एवं मुरादबख्श तथा दार की सेना, जिसका नेतृत्व महाराजा जसवंत सिंह एवं कासिम खां कर रहे थे, के बीच 1658 ई. में धरमट नामक स्थान पर हुआ था। धरमट के इस युद्ध में दारा की हार हुई। इस जीत को यादगार बनाने के लिए औरंगजेब ने फतेहाबाद नामक नगर की स्थापना की। तीसरा युद्ध सामूगढ़ नामक स्थान पर 8 जून, 1658 को दारा एवं औरंगजेब के बीच लड़ा गया था। इस युद्ध को सामूगढ़ के युद्ध के नाम से जानते हैं। इस युद्ध में भी दारा को औरंगजेब से हार का सामना करना पड़ा। उत्तराधिकार को लेकर अंतिम लड़ाई देवराई की घाटी में 12 से 14 अप्रैल 1659 ई. को दारा एवं औरंगजेब के बीच लड़ी गयी। उत्तराधिकार के इस अंतिम युद्ध में दारा के पराजित होने के बाद उसके ऊपर इस्लाम धर्म की अवहेलना करने का आरोप लगाया गया और इसके अपराध में 30 अगस्त, 1659 को दारा का कत्ल कर दिया गया। बाद मे ंउसे हुमायूँ की कब्र के गुम्बज के नीचे एक तहखाने में दफना दिया गया। इस प्रकार औरंगजेब पहली बार 1658 ई. में सामूगढ़ के युद्ध के बाद आलमगीर की उपाधि से अपना राज्याभिषेक करवाया। लेकिन अंततः खजवा एवं देवराई के युद्ध में सफल होने के बाद उसने 15 मई, 1659 ई. को दिल्ली में प्रवेश किया। उसके बाद दिल्ली में शाहजहाँ के शानदार महल में जून 1659 में पूरी मजबूती के साथ एक बार फिर से अपना राज्याभिषेक करवाया। इस प्रकार 1659 से लेकर 1707 ई. तक औरंगजेब ने एक मुगल शासक के रूप में दिल्ली की सत्ता पर राज किया।

2.3.2 औरंगजेब का साम्राज्य विस्तार (Expansion of Aurangzeb's Empire)

साम्राज्यवादी प्रवृत्ति के शासक औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य के विस्तार के लिए कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये। अपने साम्राज्य विस्तार के अंतर्गत उसने सर्वप्रथम असम को मुगल साम्राज्य में मिलाने के लिए मीर जुमला को बंगाल का सुबेदार नियुक्त किया और उसे असम को जीतने की जिम्मेदारी सौंपी गई। मीरजुमला ने 1661 ई. में कूचविहार की राजधानी को विजित करके उसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया। कूचविहार की विजय से उत्साहित होकर मीरजुमला ने 1662 ई. में असम पर राज कर रहे अहोम जाति को परास्त कर दिया और गढ़गाँव को मुगल साम्राज्य में मिला लिया। 1663 ई. में मीरजुमला की मृत्यु के बाद बंगाल का सूबेदार शाईस्ता खाँ ने चढगाँव को

विजित करके उसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया। इस बीच 1667 ई. में असम के राजा चक्रध्वज ने राजधानी गुवाहाटी पर कब्जा करके मुगल साम्राज्य को चुनौती दी। परंतु आगे चलकर असम के आंतरिक संघर्ष का लाभ उठाकर मुगलों ने 1676 ई. में कामरूप के अतिरिक्त शेषअसम के क्षेत्र को मुगल साम्राज्य में मिला लिया। दक्षिण भारत में मुगल साम्राजय के विस्तार को लेकर औरंगजेब अंगतः राजनीतिक हित व अंशतः धार्मिक विचारों से प्रभावित रहा। साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का औरंगजेब दक्षिण के राज्यों को मुगल साम्राज्य में मिलाने के लिए सर्वप्रथम 1665 ई. में जयपुर के राजा जयसिंह के नेतृत्व में बीजापुर के शासक आदिलशाह द्वितीय को विजित करने के लिए भेजा। परंतु जयसिंह बीजापुर को जीतने में असफल रहा और वापस लौटते समय रास्ते में ही 1666 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी। इसके बाद 1685 ई. में शाहजादा आजम के नेतृत्व में मुगल सेनाओं ने बीजापुर को विजित करने का प्रयास किया किंतु वह भी असफल रहा। अंततः औरंगजेब के स्वयं ही बीजापुर के अभियान का कमान अपने हाथ में लेकर 1686 ई. में बीजापुर के शासक को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर दिया और इस प्रकार बीजापुर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

1656 ई. में गोलकुण्डा सुल्तान एवं मुगल सम्राट के बीच हुई संधि की अवहेलना करने मुगलों के साथ संघर्ष में बीजापुर एवं मराठों का सहयोग करने तथा हीरे–जवाहरात, सोने–चांदी के खानों की भरमार के कारण ही औरंगजेब गोलकुण्डा पर अधिकार करने को आतुर था। इसी उद्देश्य को लेकर औरंगजेब ने 1685 ई. में गोलकुण्डा के तात्कालिक शासक अबुल हसन के विरूद्ध मुअज्जम को खानजहाँ के साथ गोलकुण्डा पर अधिकार के लिए भेजा। मुगल शासक के डर से अबुल हसन ने सभी शर्तों को मानकर मुगलों से, संधि कर ली, परंतु बाद में संधि की अवहेलना करना प्रारंभ कर दिया जिस कारण औरंगजेब स्वयं आक्रमण की बागड़ोर अपने हाथ में लेकर 1697 ई. में गोलकुण्डा का पूर्ण रूप से मुगल साम्राज्य मे विलय कर लिया गया। सुल्तान को 50,000 रू. की वार्षिक पेंशन देकर दौलताबाद के किले में कैद कर दिया गया।

दक्षिण भारत में शिवाजी के उदय के कारण मराठा विद्रोह मुगल साम्राज्य के विस्तार में सबसे बड़ी चुनौती बन गई। औरंगजेब ने दक्षिण में शिवाजी की बढ़ती हुई शक्तिको समाप्त करने के लिए जयसिंह को नियुक्त किया। 22 जून, 1665 ई. को जयसिंह एवं शिवाजी के बीच पुरंदर की संधि हुई। इस संधि के तहत शिवाजी ने अपने पुत्र शंभाजी मुगल सेवा में भेजकर जयसिंह के कहने पर स्वयं 22 मई, 1666 ई. को आगरा किले के दीवाने आम में औरंगजेब के सामने प्रस्तुत हुआ। यही आगरा के किले से शिवाजी को कैद कर जयपुर भवन में रखा गया, जहाँ से चतुराई पूर्वक शिवाजी फरार हो गय। इसके बाद तीन वर्षों तक शिवाजी और औरंगजेब के बीच शांतिपूर्वक वातावरण कायम रहे। औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की उपाधि प्रदान की तथा बरार में एक जागीर दी तथा उनके पुत्र शंभाजीको पंचहजारी सरदार के पद पर नियुक्त किया। इस बीच उचित समय पाकर शिवाजी ने रायगढ़

में 16 जून, 1674 ई. को 'छत्रपति' की उपाधि के साथ अपना राज्याभिषेक करवाया। 14 अप्रैल 1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र शंभाजी मराठा शासक बना। 1689 ई. में एक संघर्ष में औरंगजेब ने शंभाजी को पराजित कर मार डाला। लेकिन तब तक मराठा विद्रोह एक जन विद्रोह में बदल गया था। इसलिए औरंगजेब अनेक प्रयासों के बावजूद मराठों को विजित नहीं कर सका। औरंगजेब को मराठों के संघर्ष में काफी धन–जन की हानि हुई और दक्षिण भारत में मुगलों की स्थिति कमजोर हुई।

साम्राज्य–विस्तार के क्रम में औरंगजेब की नीतियों के कारण उसके विरूद्ध कई महत्त्वपूर्ण विद्रोह हुए। इसमें जाट विद्रोह, सिक्ख विद्रोह, सतनामी विद्रोह, राजपूत विद्रोह, अफगानी विद्रोह आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

1669 ई. में मथुरा में जाट नेता गोकुला के नेतृत्व में प्रथम हिन्दू विद्रोह प्रारंभ हुआ था। यह विद्रोह औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता एवं किसान विरोधी नीतियों के कारण हुआ। यद्यपि इस विद्रोह को दबाने के प्रयास में मुगल सेनापति अब्दुला नवी मारा गया, फिर भी मुगल फौजदार हसन अली के नेतृत्व में मुगल सेना ने गोकला को पकड़ कर उसकी हत्या कर दी। इसके बाद जाट विद्रोह का नेतृत्व 1686 ई.त्र में राजाराम के द्वारा किया गया। बाद में राजाराम की मुगल–जाट संघर्ष में हत्या के बाद उसके भतीजे चूरामन ने जाट विद्रोह का नेतृत्व करते हुए स्वतंत्र भरतपुर राज्य की नींव डाली। औरंगजेब के अंतिम समय तक चूरामन जाट विद्रोह का नेतृत्व करता रहा। औरंगजेब के प्रति शिवाजी व जाटों के विद्रोह से उत्साहित होकर बुंदेला राजा छत्रसाल ने भी साहब के साथ मुगलों का सामना करते हुए पूर्वी मालवा में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की और इस प्रकार औरंगजेब के साम्राज्य–विस्तार को रोक दिया।

औरंगजेब के समय में नौवें सिक्ख गुरू, गुरू तेगबहादुर ने उसकी नीतियों का विरोध किया। इस कारण औरंगजेब ने गुरू तेगबहादुर को दिल्ली में कैदी बना लिया और इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं करने के कारण हत्या कर दी। इसके बाद भी दसवें व अंतिम गुरू गोविंद सिंह जी ने अपनी मृत्यु 1708 ई. तक मुगलों के साथ संघर्ष करते रहे।

1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद जब मुगल शक्ति कमजोर हो गयी तो इसका फायदा उठाते हुये सिक्खों ने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिये। औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता की नीति से व्यथित होकर राजपूतों ने भी औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। औरंगजेब मुगल सेना की सहायतासे अपनी मृत्यु 1707 ई. तक मारवाड़ व मेवाड़ को मुगल साम्राज्य में मिलाने की कोशिश करता रहा परंतु असफल रहा। अंततः औरंगजेब की मृत्यु के बाद 1709 ई. में बहादुरशाह प्रथम ने मारवाड़ को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्वीकृति दे दी।

साम्राज्य विस्तार के क्रम में औरंगजेब को पश्चिमोत्तर सीमा क्षेत्र में भी अफगानों के विद्रोह का सामना करना पड़ा। यद्यपि मुगलों ने सीमा क्षेत्र का यह युद्ध सफलता के साथ अंत किया था, फिर भी यह अभियान

औरंगजेब के लिए काफी महंगा साबित हुआ। इस प्रकार औरंगजेब के काल में मुगल साम्राज्य का विस्तार तो हुआ लेकिन इससे उपजी परिस्थितियों ने मुगल साम्राज्य के विघटन के मार्ग को प्रशस्त करते हुए उस मजबूत साम्राज्य को पतन की ओर अग्रसर कर दिया।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 1707 ई. में अपनी मृत्यु से पहले औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य का विशाल रूप दे दिया था जो उत्तर में हिमालय पर्वत से लेकर उत्तर–पश्चिम में हिन्दूकुश पर्वत (कंधार को छोड़कर तथा पश्चिम में अरब सागर तक फैला हुआ था। अकबर के काल में मुगल साम्राज्य के अंतर्गत सूबों (प्रांतो) की संख्या 15 थी जो जहांगीर के समय 18 हो गई तथा शाहजहाँ ने इसे बढ़ाकर 20 तक किया था वहीं औरंगजेब के मृत्यु के समय सूबों (प्रांतों) की संख्या 21 थी। औरंगजेब के समय में ये 21 प्रांत थे – दिल्ली, आगरा, काबुल, काश्मीर, लाहौर, मुलतान, अजमेर, अवध, इलाहाबाद, बिहार, बंगाल, सिन्ध, मालला, अहमदाबाद, उड़ीसा, खानदेश, अहमदनगर, बरार, बीदर, बीजापुर तथा गोलकुण्डा।

2.3.3 औरंगजेब की दक्षिण नीति (South Policy of Aurangzeb)

मुगल शासकों में सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी औरंगजेब ने उत्तर एवं दक्षिण संपूर्ण भारत को मुगल साम्राज्य में मिलाने की नीति अपनायी थी। अपने पिता शाहजहाँ के काल में औरंगजेब को 1636–1644 तक तथा 1652–57 तक दो बार दक्षिण की सूबेदारी के पद पर कार्य करने का अवसर मिल चुका था। इस दौरान औरंगजेब ने अहमदनगर पर पूर्ण विजय प्राप्त की थी और बीजापुर तथा गोलकुण्डा की राजनीतिक शक्ति को सीमित कर दिया था। मुगल शासक के रूप में उसने दक्षिण भारत के सभी राज्यों को अपने प्रत्यक्ष नियंत्रण में लेने का प्रयास किया। इस प्रकार औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य के विस्तार को लेकर दक्षिण भारत में जो नीति अपनायी के विस्तार को लेकर दक्षिण नीति के नाम से जानते हैं। 1665 ई. में औरंगजेब के मुगल सेना को जयसिंह के नेतृत्व में बीजापुर के विरूद्ध अभियान चलाने के लिए भेजा तथा जयसिंह को शिवाजी की बढ़ती हुई शक्ति को भी कुचलने का आदेश दिया। 1665 ई. में ही जय सिंह ने शिवाजी को परास्त करके पुरंदर की संधि के द्वारा बीजापुर के शासक अली आदिलशाह के विरूद्ध सैनिक अभियान में सहयोग करने के लिए मजबूर कर दिया। परंतु जयसिंह को बीजापुर के सुल्तान के विरूद्ध सफलता नहीं मिली। इससे औरंगजेब नाराज होकर जयसिंह को वापस बुला लिया। वापस लौटते समय बुरहानपुर में जयसिंह की मृत्यु 1666 ई. में हो गई। उधर बीजापुर के शासक अली आदिलशाह की मृत्यु हो गई और उसके चार वर्षीय पुत्र सिकंदर आदिलशाह को सुल्तान बनाया गया। इसके उपरांत बीजापुर में सत्ता को लेकर दो गुटों – अफगानों तथा अबीसीनियासी सामंतों के बीच संघर्ष छिड़ गया। इसका फायदा उठाकर 1676 ई. में मुगल सूबेदार बहादुर खां ने बीजापुर पर आक्रमण कर दिया, परंतु इसमें वह असफल रहा।

बहादुर खां की असफलता के बाद औरंगजेब ने दिलेर खां को दक्षिण की सूबेदारी सौंपते हुए 1679 ई. में बीजापुर पर आक्रमण करने के लिए भेजा। इस अभियान में मराठों ने बीजापुर की सहायता की और दिलेर खां बीजापुर को विजित करने में असफल रहा। अंततः औरंगजेब ने उसे भी वापस बुला लिया और स्वयं बीजापुर के अभियान का नेतृत्व किया। यद्यपि मराठों एवं गोलकुण्डा की नियमित सहायता बीजापुर को मिल रही थी फिर भी औरंगजेब अंतिम रूप से 1686 ई. में सिंकदर आदिलशाह की सेना को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर दिया। औरंगजेब ने सुल्तान सिकंदर आदिलशाह को एक लाख रुपये वार्षिक का पेंशन देकर दौलताबाद के दुर्ग में कैदी बना लिया और बीजापुर को पूरी तरह से मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

बीजापुर पर विजय के बाद औरंगजेब ने सोने, चांदी, हीरे–जवाहरात की खानों के लिए प्रसिद्ध गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में मिलाने के लिए अपना ध्यान केंद्रित किया। गोलकुण्डा का शासक अबुल हसन अयोग्य व बिलासी प्रवृत्ति का था व शासन का कार्यभार दो ब्राह्मण मंत्रियों – मदन्ना व अकन्ना के हाथों में था। सुन्नी संप्रदाय में विश्वास रखने वाला कट्टर औरंगजेब को शासन में ब्राह्मणों की प्रधानता तथा मराठों के साथ गोलकुण्डा की मित्रता पसंद नहीं थी। 1685 ईत्र में उसने एक विशाल मुगल सेना शाहजादा मुअज्जम के नेतृत्व में गोलकुण्डा पर आक्रमण के लिए भेजी। यद्यपि मुअज्जम युद्ध में असफल रहा, फिर भी कूटनीति का सहारा लेकर अबुल हसन को आत्मसमर्पण व संधि के लिए मजबूर कर दिया। परंतु औरंगजेब इस संधि से संतुष्ट नहीं था। वह गोलकुण्डा को पूर्ण रूप से मुगल साम्राज्य में मिलाना चाहता था। इसी उद्देश्य से उसने 1687 ई. में एक विशाल सेना के साथ गोलकुण्डा पर आक्रमण कर दिया।

इस आक्रमण का नेतृत्व स्वयं औरंगजेब कर रहा था। कठिन संघर्ष के बाद गोलकुण्डा के दुर्ग रक्षक अब्दुर्रज्जाक की मृत्यु हो गयी और मुगल सेना की विजय हुई। गोलकुण्डा के सुल्तान को 50 हजार रुपए वार्षिक का पेंशन देकर दौलताबाद के दुर्ग में उसे कैद कर दिया गया और गोलकुण्डा को पूरी तरह से मुगल साम्राजय में मिला लिया गया।

औरंगजेब की दक्षिण नीति में सबसे महत्त्वपूर्ण उसका अपने शासनकाल में मराठों के विरूद्ध नियमित रूप से संघर्ष है। इस क्रम में सबसे पहले उसने शाइस्ता खां को दक्षिण का सूबेदार बनाकर शिवाजी की शक्ति को कुचलने के लिए भेजा। प्रारंभिक सफलता के बाद भी शाइस्ता खां को शिवाजी के विरूद्ध सफलता नहीं मिली। इसके बाद 1665 ई. में शिवाजी के विरूद्ध अभियान के लिए जयसिंह को भेजा गया। जयसिंह ने शिवाजी को पराजित करके आगरा में मुगल दरबार में उपस्थित होने के लिए राजी कर लिया जहाँ शिवाजी को बंदी बना लिया गया। बाद में शिवाजी औरंगजेब के कैद से छूटने में सफल रहे और छापामार युद्ध के मुगलों को परेशानी में डाल दिया। इस कारण औरंगजेब को शिवाजी के साथ संधि करनी पड़ी और उसे स्वतंत्र शासक मानना पड़ा। औरंगजेब

ने शिवाजी को राजा की उपाधि भी प्रदान की। इस बीच शिवाजी को राजा की उपाधि भी प्रदान की। इस बीच शिवाजी अपनी शक्ति बढ़ाते रहे। 1670 ई. में संधि का उल्लंघन करते हुए शिवाजी ने मुगलों पर आक्रमण करना प्रारंभ कर दिया तथा पुरंदर की संधि के दौरान खोए सारे प्रदेश फिर से प्राप्त कर लिए।

इस बीच औरंगजेब ने शिवाजी की शक्ति को दबाने के लिए बहादुर खां को भेजा। बहादुर खां के लगभग 5 वर्षों तक संघर्ष के बावजूद पराजय का सामना करना पड़ा। शिवाजी अपनी शक्ति को बढ़ाते हुए 1674 ई. में रायगढ़ के किले में छत्रपति की उपाधि से मराठा साम्राज्य की स्थापना में सफल रहे।

के उत्तराधिकारी राजाराम को औरंगजेब ने पराजित कर दिया और 1698 ई. में र्जिजी पर अपना अधि1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी मुगलों का प्रतिकार करने में असफल रहे। औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर द्वितीय को शंभाजी ने शरण देकर मुगलों को हस्तक्षेप करने का मौका दे दिया। इसके बाद 1689 ई. में औरंगजेब की सेना ने शंभाजी को कैद कर लिया तथा उसका वध कर दिया। इसके बाद शंभाजी ाकार कर लिया। 1700 ई. में राजाराम की मृत्यु के बाद ताराबाई के सरंक्षण में मराठों ने मुगलों के साथ कड़ा संघर्ष किया। मराठों ने एक बार फिर संगठित होकर अहमदाबाद, मालवा तथा बरार के क्षेत्रों को मुगलों से छीन लिया। औरंगजेब अपने जीवन के अंतिम वर्षों तक मराठों से संघर्ष करता रहा, परंतु उसे निश्चित सफलता नहीं मिल सकी।

औरंगजेब के पहले के शासकों ने दक्षिण भारत में सीमित रूप में विस्तार की नीति अपनायी थी, किंतु औरंगजेब ने पूर्ण अधिग्रहण की नीति अपनायी जिसमें वह एक सीमा तक सफल भी रहा। परंतु उसकी यह व्यक्तिगत सफलताओं ने मुगल साम्राज्य को विघटन की ओर ले गया तथा बाद में पतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। मुगलों को मराठों के संघर्ष में काफी धन–जन की हानि सहनी पड़ी। इसीलिए औरंगजेब की दोषपूर्ण दक्षिण नीति के संबंध में नेपोलियन प्रथम कहा करता था – 'स्पेन के फोड़े ने मेरा नाश किया वैसे ही दक्षिण के फोड़े ने औरंगजेब का नाश किया, औरंगजेब के पतन के साथ–साथ इसने मुगल साम्राज्य के पतन का मार्ग भी प्रशस्त कर दिया।

2.4.1 औरंगजेब के विरूद्ध हुए महत्त्वपूर्ण विद्रोह (Important Revolts against Auranzeb)

औरंगजेब की नीतियों के कारण इसके काल में इसके विरूद्ध कई महत्त्वपूर्ण विद्रोह हुए जिसमें जाट विद्रोह, सिक्ख विद्रोह, सतनामी विद्रोह, बुंदेल तथा राजपूत विद्रोह, अफगान विद्रोह आदि प्रमुख है। इसके अलावा उधर दक्षिण भारत में शिवाजी के उदय के कारण मराठा विद्रोह मुगल साम्राज्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गई।

धार्मिक असहिष्णुता एवं किसान विरोधी औरंगजेब की नीतियों के कारण ही मथुरा में 1669 ई. में जाट नेता गोकला के नेतृत्त्व में जाट विद्रोह प्रारंभ हुआ। इस विद्रोह को कुचलने के प्रयास में मुगल सेनापति अब्दुल नवी मारा गया। इसके बाद हसन अली खां के नेतृत्व में मुगल सेना ने जाट नेता गोकला की हत्या कर दी। जाट नेता गोकला की मृत्यु के बाद राजाराम ने जाट विद्रोह का नेतृत्व किया और राजाराम की संघर्ष में मृत्यु हो जाने पर राजाराम के भतीजे चुरामन ने जाट विद्रोह का नेतृत्व संभाला। जाट नेता चुरामन औरंगजेब के अंतिम समय तक जाट विद्रोह का नेतृत्व करता रहा और स्वतंत्र रूप से भरतपुर राज्य की नींव डाली।

औरंगजेब की नीति के विरूद्ध दूसरे सशस्त्र विरोध की नेतृत्व बुन्देला राजा छत्रसाल ने किया। बुंदेला राजा छत्रसाल शिवाजी की भांति साहस व स्वतंत्रता का जीवन अपनाने का संकल्प किया था। इसको पूरा करने के लिए उसने मुगलों पर कई विजय प्राप्त की तथा पूर्वी मालवा में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना करने में भी सफलता पायी।

1672 ई. का सतनामी विद्रोह एक सतनामी किसान और एक पैदल सैनिक के छोटे से झगड़े से शुरू हुआ। सतनामियों ने एक स्वतंत्र सरकार भी बनाई किंतु मुगल सेना ने उसे दबा दिया। सतनामियों के केंद्र नारनोल एवं मेवात क्षेत्र में स्थित थे। सिक्खों के नौवें गुरु गुरू तेगबहादुर ने औरंगजेब की नीतियों का विरोध किया, जिसकी वजह से उन्हें दिल्ली में कैद कर इस्लाम न स्वीकार करने के कारण 1675 ई. में हत्या कर दी गई। सिक्खों के दसवें व अंतिम गुरु, गुरु गोविंद सिंह ने औरंगजेब की नीतियों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। सिक्खों के सैनिक कार्यों को उचित ठहराया। उन्होंने सिक्खों में खालसा की शुरुआत की और उन्हें सिंह का उपनाम दिया। मुगल सेना की एक टुकड़ी ने आनंदपुर में सिक्खों की सेना की रसद पानी को रोक रखा था। गुरु गोविंद सिंह ने किला छोड़ दिया किंतु उनके दो बेटे, सरहिंद के फौजदार वजीर खान द्वारा मारे गए। सिक्खों की सेना औरंगजेब की मृत्यु तक लड़ती रहीं। 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद क्रमशः मुगल शक्ति कमजोर होती चली गयी और सिक्ख सरदारों ने इस अवसर का लाभ उठाकर छोटे–छोटे स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए।

औरंगजेब के विरूद्ध राजपूतों के विद्रोह के पीछे उत्तराधिकार की समस्या सबसे बड़ा कारण था। इसके अलावा औरंगजेब का हिन्दू धर्म के प्रति असहिष्णुता की भावना भी राजपूतों में असंतोष को जन्म दिया। जिसमें 1679 ई. में दोबारा जजिया कर लगाना, तीर्थयात्रा कर पुनः वसूलना, बड़ी संख्या में हिन्दू मंदिरों को तोड़वाने का आदेश, नवीन मंदिरों एवं पुराने मंदिरों के निर्माण पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना आदि की भी राजपूतों में औरंगजेब के प्रति विरोध को जन्म देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

इन सबके बावजूद औरंगजेब को सबसे बड़ी समस्या का सामना 1678 में करना पड़ा जब उत्तर पश्चिम क्षेत्र में राजा जसवंत सिंह की मृत्यु हो गई। उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं था। उसके मरने के बाद उसके पुत्र

अजीत सिंह का जन्म हुआ। उत्तराधिकारी के अभाव में औरंगजेब ने बलपूर्वक महाराजा की सारी संपत्ति पर कब्जा कर लिया और पूरे मारवाड़ को 'खालिसा' घोषित कर दिया। इसके बाद जसवंत के एक भांजे इंद्र सिंह राठौर को जोधपुर का राजा बना दिया गया। अजीत सिंह को दिल्ली में उसके घर में ही बंदी बनाकर रखा गया था, किंतु राठौरों ने उसे वहां से निकालकर मारवाड़ पहुंचाया। मेवाड़ का महाराजा राजसिंह जसवंत की प्रमुख रानी हाड़ी में जा मिला और उन्हें अजीत सिंह के हक के लिए प्रेरित किया।

इस बीच औरंगजेब ने 1679 में अपने चौथे बेटे अकबर को मारवाड़ पर आक्रमण के लिए भेजा, किंतु 1681 में अकबर ने राजपूतों की सहायता अपने को सम्राट घोषित कर दिया। अपने पुत्र अकबर के इस व्यवहार से व्यथित होकर औरंगजेब स्वयं उससे निपटने के लिए स्वयं आगे बढ़ा और राठौर नेता दुर्गादास को अकबर को संबोधित करते हुए पत्र भिजवा दिया। इससे राजपूतों ने अकबर का साथ छोड़ दिया और इसके बाद अकबर मारवाड़ से शिवाजी के पुत्र शम्भाजी के पास चला गया जहां पर 1704 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी।

औरंगजेब ने इस परिस्थिति में कूटनीति का सहारा लेकर राणा राजसिंह की मृत्यु के बाद बने मेवाड़ के शासक राणा जयसिंह के साथ संधि कर ली। संधि के शर्तों के अनुसार औरंगजेब ने मेवाड़ पर जयसिंह के अधिकार को मान लिया तथा जजिया कर को भी हटा दिया और इसके बदले में राणा जयसिंह ने औरंगजेब को आदलपुर तथा बेदनोर का क्षेत्र दे दिया। इस प्रकार मेवाड़ एवं मुगलों के बीच दोस्ती कायम हो गयी। परंतु मारवाड़ के अजीत सिंह एवं दुर्गादास तथा औरंगजेब के बीच लगभग 30 वर्षों तक संघर्ष चलता रहा किंतु कोई सफलता नहीं मिली। अंततः 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु हो गई। औरंगजेब की मृत्यु के बाद 1709 ई. में बहादुरशाह प्रथम ने अजीत सिंह को मारवाड़ के स्वतंत्र शासक के रूप में स्वीकार कर लिया।

पश्चिमोत्तर सीमा क्षेत्र में औरंगजेब के विरूद्ध अफगानों के विद्रोह के पीछे एक अलग अफगान राज्य बनाने की भावना कार्य कर रही थी। इस कार्य को पूरा करने के लिए 1667 ई. में अफगानी युसुफजाइयों ने भांगु नामक अपने एक नेता के नेतृत्व में सशस्त्र विद्रोह कर दिया। यद्यपि औरंगजेब इस विद्रोह को शांत करने में सफल रहा किंतु इसका प्रत्यक्ष परिणाम साम्राज्य के लिए घातक सिद्ध हुआ। पश्चिमोत्तर सीमा क्षेत्र का यह अभियान औरंगजेब के लिए काफी मंहगा पड़ा, धन–जन की काफी हानि हुई और दक्षिण भारत में मुगलों की स्थिति कमजोर हो गई।

दक्षिण भारत में औरंगजेब ने शिवाजी की बढ़ती शक्ति को कुचलने के लिए पहले शाइस्ता खां को फिर शिवाजी को और अंततः स्वयं मराठा विद्रोह का नेतृत्व किया। परंतु इसमें पूरी तरह सफल नहीं हो सका और अंततः मराठा संघर्ष एक व्यापक जन आंदोलन का रूप लेकर मुगल साम्राज्य को विघटन की ओर धकेल दिया। मुगल साम्राज्य का यह विघटन साम्राज्य को पतन की ओर अग्रसर कर दिया।

इस प्रकार औरंगजेब के काल में हुए प्रमुख विद्रोहों – जाट विद्रोह, राजपूत विद्रोह, सतनामी विद्रोह, सिक्ख विद्रोह, बुंदेलों का विद्रोह, मराठा विद्रोह आदि में औरंगजेब अपनी मृत्यु तक उलझा रहा और इसके बाद के शासक भी इनसे निपट नहीं पाये और मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया।

2.4.2 औरंगजेब की राजपूत–नीति (Rajput Policy of Aurangzeb)

औरंगजेब ने अपने शासनकाल के प्रारंभिक समय में अपने पूर्ववर्ती शासकों की ही तरह राजपूत नीति को अपनाया। परंतु बाद के शासनकालों में उसने अपनी राजपूत नीति में बदलाव करते हुए शत्रुतापूर्ण नीति का सूत्रपात किया। सर्वप्रथम औरंगजेब ने 1678 ई. में राजपूत राज्य मारवाड़ में हस्तक्षेप किया था। औरंगजेब की राजपूत–नीति मुख्य रूप से उत्तराधिकार की समस्या को लेकर ही केंद्रित थी। मारवाड़ के शासक राजा जसवंत सिंह की मृत्यु हो जाने के बाद वहाँ उत्तराधिकार का संघर्ष शुरू हो गया। इस स्थिति का फायदा उठाकर औरंगजेब ने मारवाड़ को मुगल साम्राज्य के अधीन कर लिया और वहाँ पर मुगल अधिकारियों की नियुक्ति कर दी। औरंगजेब की इस राजपूत–नीति से क्षुब्ध होकर राजपूतों ने विद्रोह कर दिया और स्वयं औरंगजेब को इसके दमन के लिए 1679 ई. में अजमेर जाना पड़ा। इसके बाद उसने नागौर के शासक इंद्र सिंह को मारवाड़ का शासक नियुक्त किया।

1680 से लेकर 1707 ई. तक औरंगजेब और मारवाड के राजपूतों के बीच नियमित संघर्ष चलता रहा। 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद राजा अजित सिंह ने मुगलों की उपेक्षा करते हुए मुगल फौजदार जफर कुली को निष्कासित कर अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली। मेवाड़ पर मुगलों के अधिकार को लेकर औरंगजेब ने सर्वप्रथम 1679 ई. में हस्तक्षेप किया था। इसके लिए उसने अपने पुत्र शहजादा अकबर को भेजा। लेकिन शहजादा अकबर ने षडयंत्रपूर्वक औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह करके मेवाड़ में अपना राज्य स्थापित कर लिया। औरंगजेब स्वयं 1681 ई. में कूटनीतिपूर्वक राजपूत सरदार दुर्गादास के माध्यम से अकबर के विद्रोह का दमन करने के लिए आगे बढ़ा और शहजादा अकबर को वहाँ से भागने के लिए विवश कर दिया। शहजादा अकबर दक्षिण भारत भाग गया। इसके बाद परिस्थिति को देखते हुए औरंगजेब ने मेवाड़ के राजा जयसिंह के साथ संधि कर ली और 1698 ई. में जयसिंह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अमर सिंह द्वितीय ने भी संधि का पालन किया। इस प्रकार औरंगजेब की राजपूत नीति पर गहराई से विचार करने पर हम पाते हैं कि यद्यपि औरंगजेब ने राजपूतों पर अल्पकालिक विजय प्रापत की पर मुगलों की विजय का मार्ग सदा के लिए बंद कर दिया। उसने अपनी दोषपूर्ण नीति के द्वारा लंबे समय से मुगल सम्राट के प्रति कृतज्ञ रहे राजपूतों को अंसतुष्ट कर दिया और इस कारण बाद के अभियानों में उसे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और कोई अच्छी सफलता भी नहीं मिल पाई। अतः वास्तव में औरंगजेब की राजपूत नीति असफल रही और उसी के शासनकाल में 1679 ई. से राजपूत–मुगल संबंधों में शिथिलता आ गई।

2.4.3 औरंगजेब की धार्मिक नीति (Religious Policy of Aurangzeb)

मुगल शासकों में जिंदापीर के उपनाम से प्रसिद्ध औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुसलमान था। यद्यपि औरंगजेब के समय में हिंदू मनसबदारों की संख्या लगभग 33% थी जबकि शाहजहाँ के समय में यह प्रतिशत मात्र 24.7% था। फिर भी औरंगजेब को पूर्ववर्ती शासकों की अपेक्षा सर्वाधिक धार्मिक असहिष्णुता की नीति अपनाने वाला शासक के रूप में ही जाना जाता है। उसने इस्लाम के महत्त्व को स्वीकारते हुए कुरान को ही अपने शासन का आधार बनाया। उसने नौरोज उत्सव को मनाने पर प्रतिबंध लगा दिया तथा अकबर द्वारा शुरू किए गए झरोखा दर्शन को भी बंद करवा दिया। उसने अपने शासन काल के ग्यारहवें वर्ष में झरोखा दर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया तथा बारहवें वर्ष में तुलादान प्रथा पर भी प्रतिबंध लगा दिया। मुस्लिम शासनकाल से चली आ रही जिस जजिया कर को 1564 ई. में अकबर ने समाप्त कर दिया था उसको पुनः 1679 ई. में औरंगजेब ने लगा दिया था। इस प्रकार औरंगजेब ने अपने शासनकाल में हिंदुओं पर जजिया तथा अन्य विभेदक कर भी लगा दिए। उसने अपने शासनकाल में 1699 में हिंदू मंदिरों को तोड़ने का आदेश दिया। उसने धार्मिक भेदभाव की नीति अपनाते हुए सभी सरकारी पदों से हिंदुओं को बर्खास्त करना आरंभ कर दिया था। 1665 ई. में एक सरकारी फरमान के द्वारा हिंदुओं पर कई सामाजिक प्रतिबंध लगा दिए। राजपूतों को छोड़कर अन्य सभी वर्ग के हिंदुओं को हाथी, घोड़े अथवा पालकी पर सवारी करने से मना कर दिया। इतना ही नहीं इससे आगे बढ़ते हुए उसने हिंदुओं के पर्व त्योहारों एवं मेलों पर भी प्रतिबंध लगा दिया। बड़े–बड़े नगरों में औरंगजेब द्वारा सार्वजनिक सदाचार निरीक्षक के रूप में 'मुहतसिब' को नियुक्त किया गया था। औरंगजेब के शासनकाल की धार्मिक नीति की सर्वप्रमुख विशेषता यह रही कि उसने हिंदुओं को जबरदस्ती धर्म–परिवर्तन करवाया। उसने प्रलोभन देकर भी हिंदुओं को मुस्लिम धर्म अपनाने के लिए मजबूर किया। उसने शरीयत के विरूद्ध लिए जाने वाले लगभग 80 करों को समाप्त करवा दिया। औरंगजेब दारूलहर्ब को दारूल इस्लाम में परिवर्तित करने का मुख्य लक्ष्य भारत में अपने शासनकाल के दौरान मानता था। यद्यपि आधुनिक इतिहासकारों का मानना है कि औरंगजेब की धार्मिक नीति, धार्मिक कट्टरता से कम तत्कालीन राजनीतिक आवश्यकता से अधिक प्रभावित थी। फिर भी औरंगजेब की धार्मिक नीति के कई दुष्परिणाम देखने को मिलते हैं। उसकी इस नीति का मथुरा के जाट किसानों, सतनामी संप्रदाय तथा सिक्खों ने विरोध किया। बाद में यही सिक्खों का विद्रोह मुगलों के पतन का एक महत्त्वपूर्ण कारण बना। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि औरंगजेब की दोषपूर्ण धार्मिक नीति ने भारत में मुगलों के विरूद्ध ऐसा वातावरण बना दिया जिससे बाद के शासक नहीं निपट सके और भारतीय बहुसंख्यक की सहानुभूति प्राप्त नहीं कर सके।

2.4.4 औरंगजेब की असफलता के कारण (Causes of Aurangzeb's Failure)

शाहजहाँ के शासनकाल में ही औरंगजेब को 18 वर्ष की आयु में ही दक्षिण की सूबेदारी के पद पर नियुक्त किया गया था। 1636 से 1644 तक एवं पुनः 1652 से 1658 तक दक्षिण की सूबेदारी की पद को कुशलतापूर्वक निभाया। इस दौरान उसने दक्षिण भारत में मुगल आधिपत्य की स्थापना के लिए साहसपूर्ण प्रयास किया। उसने गोलकुण्डा एवं बीजापुर को भी विजित करने का प्रयास किया। दक्षिण की सूबेदारी के अतिरिक्त औरंगजेब को गुजरात, मुल्तान एवं सिंध का भी सूबेदार बनाया गया था। मुल्तान एवं सिंध के सूबेदार के रूप में उसने अपनी कूटनीति, योग्य शासक व साहस का परिचय देतु हुए 1649 से 1652 तक दो बार कंधार का घेरा डाला। इसके बाद शाहजहाँ के अचानक बीमार पड़ने पर हुए उत्तराधिकारी के युद्ध में हिम्मत के साथ अपने तीनों भाईयों को पराजित करके आलमगीर की उपाधि से मुगल सत्ता पर काबिज हो गया। इस प्रकार निश्चित रूप से एक शासक के रूप में औरंगजेब में कई उच्च कोटि के गुण थे किंतु फिर भी अपने शासनकाल में वह अपनी दोषपूर्ण नीतियों के कारण असफल रहा। कुछ स्थानों पर वह व्यक्तिगत रूप से सफल भी रहा परंतु उसकी नीति ने मुगल वंश को अंततः पतन की ओर प्रशस्त कर दिया। औरंगजेब की असफलता के कई प्रमुख कारण थे जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैं –

(i) धार्मिक असहिष्णुता की नीति (Intolerant Religious Policy)

औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता की नीति उसकी अफसलता का एक प्रमुख कारण था। उसने हिंदुओं के पवित्र मंदिर नष्ट कर दिये तथा कई विभेदक कर लगा दिये। उनके पर्व, त्योहारों व परंपराओं पर भी प्रतिबंध लगा दिये गये। इतना ही नहीं उन्हें बलपूर्वक मुसलमान बनाने के प्रयत्न किये गय। मुगल शासक औरंगजेब के इन अनुचित कार्यों से तंग आकर हिन्दू भड़क गये और मथुरा के जाटों, नारनौल के सतनामियों, पंजाब के सिक्खों, राजस्थान के राजपूतों तथा महाराष्ट्र के मराठों ने सशस्त्र विद्रोह कर दिये। इतना ही नहीं कट्टर सुन्नी शासक औरंगजेब शिया लोगों के विरोध भी अनेक कार्य किये और वे भी साम्राज्य के विरोधी बन गये। इस प्रकार औंरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता की नीति के कारण साम्राजय में अव्यवस्था फैल गयी और मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया।

(ii) दोषपूर्ण दक्षिण–नीति (Defective South Policy)

औरंगजेब अपनी साम्राज्यवादी प्रवृत्ति के कारण दक्षिण के राज्यों को जीतना चाहता था। दूसरी और दक्षिण में शिवाजी की बढ़ती ताकत को शिया मुसलमानों का सहयोग मिल रहा था, इस कारण भी औरंगजेब ने दक्षिण के राज्यों को कुचलना चाहा। क्योंकि औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुसलमान था। औरंगजेब दक्कन का वास्तविक जायजा लिये बिना ही दक्षिण में मुगल विस्तार के लिए चल पड़ा। उसने अपने सैनिक अभियान के द्वारा बीजापुर तथा

गोलकुण्डा के राज्यों को विजित करके अपने साम्राज्य में मिला लिया जिसे उसकी भारी भूल मानी जाती है। इससे मुगल साम्राज्य पर प्रशासन व नियंत्रण कठिन हो गया। बीजापुर व गोलकुण्डा पर मुगल विजय के बाद मुगलों का मराठों का निरंतर चलने वाला संघर्ष आरंभ हो गया। मराठों का यह संघर्ष मुगलों को पतन की ओर ले गया। इस प्रकार औरंगजेब की दोषपूर्ण नीति भी औरंगजेब की असफलता का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कारण है।

(iii) मूर्खतापूर्ण राजपूत–नीति (Unwise Rajput Policy)

औरंगजेब के पूर्व के शासकों ने राजपूतों के साथ मैत्रीपूर्ण नीति अपनाई थी। उन्होनें शासन कार्यों में राजपूतों का सहयोग प्राप्त किया। परंतु औरंगजेब ने अपनी मूर्खतापूर्ण नीति द्वारा राजपूतों को मुगल साम्राज्य के शत्रु बना लिया। इस कारण मारवाड़ तथा मेवाड़ के राजपूतों ने मुगलों के विरूद्ध सशस्त्र विद्रोह कर दिया। इस क्रम में यद्यपि औरंगजेब ने 1681 ई. में मेवाड़ के महाराणा के साथ समझौता कर लिया फिर भी मारवाड़ के राजपूतों ने दुर्गादास तथा अजीत सिंह के नेतृत्व में संघर्ष जारी रखा और अंत में मारवाड़ को स्वतंत्र करके ही दम लिया। इस प्रकार औरंगजेब की मूर्खतापूर्ण राजपूत–नीति के कारण मुगल साम्राज्य को बहुत बड़ा आघात पहुँचा जिससे बाद के शासक नहीं उबर पाये और मुगल वंश पतन की ओर बढ़ गया। इस प्रकार मूर्खतापूर्ण मुनफा नीति भी उसकी असफलता का बड़ा कारण बना।

(iv) प्रांतीय शासन–व्यवस्था की अकुशलता (Deterioration in provincial Administration)

अकबर के काल की कुशल प्रांतीय शासन व्यवस्था उसके बाद के शासक जहांगीर तथा शाहजहाँ के काल तक संतोषजनक स्थिति में चलती रही। औरंगजेब के काल में प्रांतों की संख्या 21 हो गई। उसके शासन–काल के अंतिम वर्षों में प्रांतीय शासन–व्यवस्था बिगड़ गई। क्योंकि औरंगजेब पूरी तरह से दक्षिण भारत में युद्धों में व्यस्त रहा। केंद्रीय शक्ति कमजोर हो गई। इस प्रकार साम्राज्य के विभिन्न भागों में अशांति तथा अव्यवस्था फैल गई। अंतः शासन व्यवस्था की अकुशलता औरंगजेब की असफलता का एक बहुत बड़ा कारण रहा।

(v) किसानों की दयनीय स्थिति (Miserable Condition of Farmers)

अकबर ने कुशल भूमि–कर प्रणाली के द्वारा किसानों की भलाई की और विशेष ध्यान दिया था और यह व्यवस्था किसी–न–किसी रूप में संतोषजनक रूप में जहांगीर तथा शाहजहाँ के काल में भी बनी रही। परंतु औरंगजेब के काल में यह कुशल व्यवस्था जाती रही जिससे कर्मचारियों, जमींदारों तथा जागीरदारों ने किसानों का खूब शोषण किया। जिससे किसानों में असंतोष फैल गया और उधर औरंगजेब इससे बेखबर दक्षिण में युद्धों में उलझा रहा। इसीलिए इतिहासकार इरफान हबील लिखते हैं कि किसानों की दयनीय अवस्था तथा उनका विद्रोहों में शामिल होना औरंगजेब की असफलता का एक कारण सिद्ध हुआ।

इस प्रकार औरंगजेब की असफलता के कई कारण थे। उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त औरंगजेब के शासनकाल के अंतिम 25 वर्षों में जागीरदारी प्रणाली की संकटपूर्ण स्थिति, उसका तानाशाही शासन, उसका शक्की स्वभाव व प्रजा की भलाई को लेकर उसकी उदासीन रवैया आदि औरंगजेब की असफलता के कारण बताये जाते हैं।

2.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress):

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks.)

(i) औरंगजेब ने अपना राज्याभिषेक .... उपाधि से करवाया।

(ii) औरंगजेब ने .... से .... तक राज किया था।

(iii) औरंगजेब .... का पुत्र था।

(iv) उत्तराधिकारी के .... युद्ध में अंतिम रूप से विजय प्राप्त करने के बाद औरंगजेब ने दूसरी बार 1659 ई. में अपना राज्याभिषेक करवाया।

(v) 1665 ई. में पुरन्दर की संधि जयसिंह और .... के बीच संपन्न हुई।

(vi) .... कहा करता था कि 'स्पेन के फोड़े ने मेरा नाश किया वैसे ही दक्षिण के फोडे ने औरंगजेब का नाश किया'।

(vii) औरंगजेब के काल में 1669 ई. में मथुरा में जाट विद्रोह का नेता .... था।

(viii) औरंगजेब के काल में सिक्खों के .... गुरू को फांसी की सजा दी गयी थी।

(ix) खालसा पंथ की स्थापना .... गुरू ने 1699 ई. में की थी।

(x) औरंगजेब के काल में सतनामी विद्रोह का केंद्र .... में स्थित था।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False Statements bases questions)

(i) औरंगजेब ने 1675 ई. में हिंदुओं पर दोबारा जजिया कर लगा दिया था। ( )

(ii) औरंगजेब के काल में हिन्दू मनसबदारों की संख्या शाहजहाँ के काल से अधिक था। ( )

(iii) 1681 ई. में राणा जयसिंह एवं औरंगजेब के मध्य मेवाड़ की संधि संपन्न हुई। ( )

(iv) 1709 ई. में औरंगजेब ने अजीत सिंह को मारवाड़ के स्वतंत्र शासक के रूप में स्वीकार कर लिया। ( )

(v) औरंगजेब सुन्नी संप्रदाय में अपना विश्वास व्यक्त करता था। ( )

(vi) औरंगजेब के चार पुत्र थे – मुहम्मद मुअज्जम, शाह आलम, कामबख्श और अकबर। ( )

(vii) शाहजहाँ के बीमार पड़ने पर उसके चारों पुत्रों – दारा शुजा, औरंगजेब एवं मुराद में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष प्रारंभ हो गया। ( )

(viii) घरमट व सामूगढ़ का युद्ध दोनों औरंगजेब व दाराशिकोह के मध्य लड़ा गया और दोनों ही युद्ध में औरंगजेब की विजय हुई थी। ( )

(ix) मुगल शासक अकबर ने 1563 ई. में हिंदुओं के तीर्थयात्रा करने पर कर को समाप्त कर दिया था और औरंगजेब ने पुनः 1663 ई. में इस कर को लगाया। ( )

(x) 1667 ई. इमें यूसुफजाइयों ने भांगु नामक अपने एक नेता के अधीन सशस्त्र विद्रोह किया था जिसे इतिहास में औरंगजेब के विरूद्ध अफगान विद्रोह के नाम से जानते हैं। ( )

2.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary):-

- औरंगजेब ने अपने सभी भाइयो को पराजित करने 1658 ई. में आलमगीर की उपाधि के साथ मुगल गद्दी पर बैठा।
- औरंगजेब ने लगभग 50 वर्षों तक 1658 से 1707 ई. तक शासन किया।
- सम्राट बनने के बाद औरंगजेब ने जनता के आर्थिक कष्टों को दूर करने के लिए आंतरिक पारगमन शुल्क 'राहदारी' और व्यापारिक चुंगियों 'पानदारी' को समाप्त कर दिया।
- औरंगजेब ने उलेमा वर्ग के अनुसरण में इस्लामी परंपरा के अनुसार शासन किया।
- उसने अकबर द्वारा प्रारंभ किये गये नौरोज उत्सव और झरोखा दर्शन को समाप्त कर दिया।
- अकबर द्वारा 1563 ई. में हिंदुओं के तीर्थयात्रा कर को समाप्त कर दिया था और औरंगजेब ने पुनः 1663 ई. में तीर्थयात्रा कर को लगा दिया।

- 1564 ई. में अकबर ने जजिया कर को समाप्त कर दिया था।
- औरंगजेब ने पुनः 1679 ई. में जजिया कर लागू कर दिया था।
- मुस्लिम शासकों द्वारा राज्य की गैर मुस्लिम जनता पर जजिया कर लगया जाता था।
- औरंगजेब ने हिन्दू त्योहारों को सार्वजनिक रूप से मनाए जाने पर प्रतिबंध लगा दिया। उसने राज्य में सार्वजनिक नृत्य व संगीत पर भी प्रतिबंध लगा दिया। यद्यपि वह स्वयं एक कुशल वीणा वादक था।
- शाहजहाँ के शासनकाल में औरंगजेब को सर्वप्रथम 1636 ई. में दक्षिण की सूबेदारी सौंपी गयी।
- औरंगजेब को दक्षिण की सूबेदारी के अलावा गुजरात (1645 ई.) मुल्तान (1640 ई.) एवं सिंध की भी सूबेदारी सौंपी गयी थी।
- औरंगजेब के शासनकाल में हुए विद्रोह :–

विद्रोह	प्रमुख नेता
जाट विद्रोहा	गोकला
अफगान विद्रोह	भागू
सिक्ख विद्रोह	गुरु गोबिन्द सिंह
बुंदेला विद्रोह	छत्रसाल

- सतनामियों का विद्रोह 1672 ई. में हुआ था।
- सतनामियों का केन्द्र नारनोल एवं मेवात (अलवर) में था।
- सतनामी मूल रूप में हिन्दू भक्तों के एक अनुपद्रवी सम्प्रदाय थे।
- बीजापुर को 1686 ई. में और गोलकुण्डा को 1684 ई. में मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
- शाहस्ता खाँ मुगल बादशाह औरंगजेब का मामा था। 1660 ई. में औरंगजेब ने उसे शिवाजी का दमन करने के लिए दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया था।
- 1663 ई. में शिवाजी ने पूना में रात्रि के समय शाइस्ता खाँ के निवास स्थान पर आक्रमण किया था।

- अफजल खाँ बीजापुर सल्तनत के आदिलशाही वंश का एक सेनापति था। बीजापुर के शासक ने अपने सेनापति अफजल खाँ को शिवाजी के विरूद्ध युद्ध करने के लिए भेजा किन्तु शिवाजी ने 1659 ई. में उसकी हत्या कर दी।
- 1674 ई. में रायगढ़ के दुर्ग में शिवाजी ने स्वयं को मगद्य राज्य का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया।
- शिवाजी 'छत्रपति' की उपाधि के साथ राजसिंहासन पर बैठे।
- शिवाजी को 'हैंदवधर्मोद्वारक' के उपनाम से भी जाना जाता है।
- शिवाजी का उत्तराधिकारी उनका ज्येष्ठ पुत्र शम्भाजी हुए।
- 1689 ई. में औरंगजेब ने एक संघर्ष में शम्भाजी की हत्या कर रायगढ़ पर अधिकार कर लिया था।
- मराठा साम्राज्य की सबसे बहादुर महिला राजाराम की विधवा ताराबाई थीं।
- मराठों ने छापामार गुरिला युद्ध पद्धति को अपनाकर मुगल सेनाओं को परेशान कर दिया।
- सिक्खों के आठवें गुरू हरकिशन के पुत्र तेग बहादुर ने औरंगजेब की नीतियों का विरोध किया।
- औरंगजेब ने गुरू तेगबहादुर (नौंवें गुरू) को दिल्ली में कैद कर इस्लाम न स्वीकार करने के कारण 1675 ई. में फांसी दे दी।
- दसवें व अंतिम गुरु, गुरू गोबिंद सिंह ने औरंगजेब के विरूद्ध सिक्ख विद्रोह का नेतृत्व किया था।
- गुरू गोबिंद सिंह ने पाहुल प्रणाली को प्रारंभ किया।
- पाहुल प्रणाली में दीक्षित होने वाला व्यक्ति खालसा कहलाता था।
- खालसा पंथ की स्थापना गुरू गोबिंद सिंह ने 1699 ई. में की थी।
- खालसा पंथ में दीक्षित होने वाले व्यक्ति को पंच ककार – केश, कंघा, कृपाण, कच्छ और कड़ा ग्रहण करना पड़ता था।
- गुरू गोबिंद सिंह के द्वारा ही नाम के अंत में 'सिंह' शब्द का प्रयोग प्रारंभ हुआ।

- औरंगजेब ने गुरु गोबिंद सिंह के दो पुत्रों – जोरावर सिंह व फतेह सिंह को 27 दिसंबर 1704 ई. को जिंदा दीवार में चुनवा दिया था।
- शाहजहाँ की मुमताज द्वारा उत्पन्न 14 संतानों में 7 जीवित थीं।
- जिनमें 4 लड़के – दारा, शुजा, औंरगजेब एवं मुराद थे।
- 3 लड़कियां – जहानआरा, रोशन आरा एवं मोहन आरा थी।
- शाहजहाँ के अचानक बीमार पड़ने पर उसके चारों पुत्र दारा, शुजा, औरंगजेब एवं मुराद में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष प्रारंभ हो गया।
- उत्तराधिकार का युद्ध :–

  – प्रथम युद्ध 24 फरवरी 1658 को बहादुरपुर में लड़ा गया। यह युद्ध शाहशुजा एवं दारा के लड़के सुलेमान शिकोह तथा आमेर के राजा जयसिंह के मध्य लड़ा गया था। इस संघर्ष में शुजा पराजित हुआ।

  – दूसरा युद्ध औरंगजेब एवं मुरादबख्श द्वारा दारा की सेना, जिसका नेतृत्व महाराजा जसवन्त सिंह एवं कासिम खाँ कर रहे थे के बीच 25 अप्रैल, 1658 को घरमट नामक स्थान पर हुआ। इसमें दारा की हार हुई।

  औरंगजेब ने विजय की स्मृति 'फतेहाबाद' नामक नगर की स्थापना की।

  – तीसरा युद्ध दारा एवं औरंगजेब के मध्य 8 जून, 1658 को सामूगढ़ में हुआ। इसमें भी दारा को पराजय का सामना करना पड़ा।

  – उत्तराधिकार की अंतिम लड़ाई दारा एवं औरंगजेब के मध्य 12 से 14 अप्रैल, 1659 को देवराई की घाटी में लड़ी गयी। इस युद्ध में पराजित होने के उपरांत दारा को इस्लाम धर्म की अवहेलना करने के अपराध में 30 अगस्त, 1659 को कत्ल कर दिया गया।
- 31 जुलाई, 1658 को आगरा में औरंगजेब ने पहली बार आलमगीर की उपाधि से अपना राज्याभिषेक करवाया था।
- 1659 ई. में दारा के खिलाफ अंतिम रूपसे विजय के बाद औरंगजेब ने दिल्ली स्थित शाहजहाँ के शानदार महल में दूसरी बार राज्याभिषेक करवाया था।

- 1665 ई. में पुरंदर की संधि जयसिंह ने शिवाजी के साथ की थी।
- औरंगजेब के काल में जाट नेता चूरामन ने भरतपुर राज्य की स्थापना की थी।
- औरंगजेब द्वारा सार्वजनिक सदाचार निरीक्षक के रूप में 'मुहतसिब' की नियुक्ति बड़े–बड़े नगरों में किया गया था।

- औरंगजेब के समय में हिन्दू मनसबदारों की संख्या लगभग 33% थी जबकि शाहजहाँ के समय यह प्रतिशत मात्र 24.7% था।
- मुगल साम्राज्य के अंतर्गत अकबर के समय में सूबों (प्रांतों) की संख्या 15 थी।
- जहाँगीर के समय में सूबों की संख्या 18 थी।
- शाहजहाँ के समय में सूबों की संख्या 20 थी।
- औरंगजेब के समय में सूबों की संख्या बढ़कर 21 हो गई।
- औरंगजेब की मृत्यु 1707 ई. में हुई थी।
- औरंगजेब को दौलताबाद (महाराष्ट्र) में दफनाया गया।

2.7 संकेत–सूचक (Key-words):-

- मनसब = पद या औहदा का सूचक।

अकबर द्वारा मुगलकाल में आरंभ की गयी शासन पद्धति मनसबदारी पद्धति थी।

- सूबेदार = गवर्नर
- सतनामी = बीरमान नामक एक संत द्वारा 1657 ई. में नारनौल (हरियाणा) में स्थापित एक संप्रदाय। (सत्य एवं ईश्वर में विश्वास रखने के कारण वे अपने को सतनामी पुकारते थे।)
- अबीसीनिया = उत्तर पूर्वी अफ्रीका में स्थित एक छोटा सा राज्य जिसे वर्तमान में इथोपिया के नाम से जाना जाता है।
- सामंत = अधीनस्थ शासक
- प्रतिकार = बदला/रोकना

- क्षुब्ध = परेशान
- झरोखा दर्शन = भारत में मध्यकालीन शासकों के किलों और महलों में झरोखे से सार्वजनिक रूप से प्रजा को संबोधित करने का अभ्यास।
- दारूलहर्ब = काफिलों का देश
  इस्लाम को नहीं मानने वालों के लिए मध्यकाल में इसका प्रयोग करते थे।
- दारूल इस्लाम = इस्लाम का देश

2.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT):-

भाग (क) (Part-A) बहुविकल्पी प्रश्न (Multiple Choice Questions MCQS)

(i) औरंगजेब को यह किसने लिखा था कि – ''हम शिवा को एक वृत्त के केन्द्र की तरह बांध लेंगे।''

(क) जयसिंह (ख) शाहस्ता खाँ (ग) अफजल खाँ (घ) मुअज्जम

(ii) शिवाजी औरंगजेब के आगरा दरबार में कब उपस्थित हुए ?

(क) 1665 (ख) 1666 (ग) 1667 (घ) 1664

(iii) शिवाजी को 'राजा' की उपाधि किसने प्रदान की थी ?

(क) बीजापुर के शासक ने (ख) अहमदनगर के शासक ने

(ग) औरंगजेब ने (घ) महाराजा जयसिंह ने

(iv) अकबर द्वारा हटाये गये जजिया कर को औरंगजेब ने पुनः किस वर्ष लगा दिया था ?

(क) 1679 (ख) 1682 (ग) 1687 (घ) 1685

(v) मराठा साम्राज्य की सबसे बहादुर महिला कौन थी ?

(क) ताराबाई (ख) येसूबाई (ग) साई बाई निम्बालकर (घ) सोयराबाई

(vi) औरंगजेब ने किस मराठा छत्रपति की हत्या कर उसके शरीर के टुकड़े–टुकड़े कर कुत्तों के सामने डलवा दिया था ?

(क) राजाराम (ख) शाहू (ग) शम्भाजी (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(vii) औरंगजेब के समय मारवाड़ को स्वतंत्र करवाने के लिए निम्नलिखित राजपूत सरदार ने सफलतापूर्वक संघर्ष किया।

(क) दुर्गादास (ख) जयसिंह (ग) अमर सिंह (घ) जगत सिंह

(viii) औरंगजेब ने मेवाड़ के महाराजा जयसिंह के साथ उदयपुर की संधि कब की थी ?

(क) 1679 (ख) 1681 (ग) 1685 (घ) 1688

(ix) औरंगजेब के साम्राज्य के प्रांतों की कुल संख्या थी –

(क) 12 (ख) 15 (ग) 18 (घ) 21

(x) औरंगजेब ने दरबार में ईरानियों के .... त्योहार को मनाने की मनाही कर दी थी।

(क) ईद–उल–फितर (ख) नौरोज (ग) ईद–उल–जहा (घ) मुहर्रम

भाग (ख) (Part-B) निबंधात्मक/दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer Type Question)

(i) औरंगजेब की राजपूत नीति की इसके परिणामों सहित आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

(Critically discuss the Rajpur policy of Aurangzeb with its results?)

(ii) शासक के रूप में औरंगजेब की असफलता के क्या कारण थे ?

(What were the causes of the failure of Aurangzeb as a ruler)

(iii) मुगल साम्राज्य के पतन में औरंगजेब की भूमिका का आलोचनात्मक–वर्णन कीजिए।

(Critically examine Aurangzeb's role for the downfall of the Mughal Empire.)

(iv) औरंगजेब के विरूद्ध हुए प्रमुख विद्रोहों का वर्णन करें।

(Describe the important revols against Aurangzeb).

भाग (ग) (Part-C) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Question)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें (Write down short notes on the followings) :-

(i) सतनामी विद्रोह (Satnami Revolt)

(ii) उत्तराधिकार संघर्ष (Succession-Conflict)

(iii) औरंगजेब का राज्याभिषेक (Coronation of Aurangzeb)

(iv) औरंगजेब की धार्मिक नीति (Religious Policy of Aurangzeb)

(v) पुरंदर की संधि (Treaty of Purandar)

(vi) साम्राज्य का विस्तार (Extent of the Empire)

(vii) खालसा पंथ (Khalsa Panth)

(viii) ताराबाई (Tarabai)

(ix) गुरूल्लिा युद्ध (Gurilla War)

(x) औरंगजेब की दक्षिण नीति (South Policy of Aurangzeb)

2.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रष्नोत्तर (Answers to Check your progress):-

2.5 भाग (क) उत्तर :– (i) आलमगीर (ii) 1658–1707 ई. तक (iii) शाहजहाँ (iv) देवराई का युद्ध (v) शिवाजी (vi) नेपोलियन प्रथम (vii) गोकला (viii) नौंवे गुरु, गुरू तेगबहादुर (ix) दसवें गुरू, गुरू गोबिंद सिंह (x) नारनौल

2.5 भाग (ख) का उत्तरः–(i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) असत्य (v) सत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii) सत्य (ix) सत्य (x) सत्य

2.8 भाग (क) उत्तर :– (i) क (ii) ख (iii) ग (iv) क (v) क (vi) ग (vii) क (viii) ख (ix) घ (x) ख

2.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References):-

- अरोड़ा अविनाश चन्द्र–भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिशकाल, संस्करण : 1998, प्रदीप।
- चन्द्र सतीश – मध्यकालीन भारत सल्तनत से मुगल काल तक (1526–1761), संस्करणः
- सामान्य अध्ययन, समन्वयक– सिंह, डॉ सुरेन्द्र, संस्करण : 2022, MC Graw Hill Education (India) Private Limited

<table>
<tr><td colspan="2">B.A HISTORY PART- IInd YEAR SEMESTER-IIIrd</td></tr>
<tr><td>COURSE CODE: 301
LESSON NO. 03</td><td>AUTHOR – MOHAN SINGH BALODA</td></tr>
<tr><td colspan="2">राजपूतों के साथ मुगलों क संबंध।(Religious of Mughal's Relationship with Rajput's)</td></tr>
</table>

अध्याय संरचना (Structure Lesson)

3.1. अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

3.2. परिचय (Introduction)

3.3. विषय वस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text)

- 3.3.1 औरंगजेब का राजपूतों के साथ संबंध (Aurangzeb's Relationship with Rajput's)
- 3.3.2 औरंगजेब की धार्मिक नीति (Religious Policy of Aurangzeb)
- 3.3.3 मुगलों के साथ सिक्खों का संबंध (Mughal's Relationship with Siksh's)

3.4. विषय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण (Further Main Body of the Text)

- 3.4.1. मुगलों की दक्षिण (डेक्कन) नीति (Deccan Policy of the Mughak)
- 3.4.2. अकबर की दक्षिण (डेक्कन) नीति (Deccan Policy of the Akbar)
- 3.4.3. जहांगीर की दक्षिण (डेक्कन) नीति (Deccan Policy of the Jahangir)
- 3.4.4. शाहजहां की दक्षिण (डेक्कन) नीति (Deccan Policy of the Shah Jahan)
- 3.4.5. औरंगजेब की दक्षिण (डेक्कन) नीति (Deccan Policy of the Aurangzeb)
- 3.4.6. औंरगजेब की दक्षिण (डेक्कन) नीति के परिणाम (Relationship the Deccan policy of Aurangzeb)

3.5. प्रगति समीक्षा (Check your progress)

3.6. सारांष (Summary)

3.7. संकेत–सूचक (Key-Words)

3.8. स्व–मूल्याकंन परीक्षा (Self Assessment Test)(SAT)

3.9. प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to check your Progress)

3.10. संदर्भ ग्रंथ एवं सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Reading)

3.1. अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives):-

- जब आप इस अध्याय को समझ पाएंगे तो आप इस योग्य हो जाएंगे (बन जाएंगे)।
- औरंगजेब का राजपूतों के साथ संबंध व उसकी धार्मिक नीति से शिक्षार्थियों को अवगत करवाना।
- औरंगजेब का राजपूतों के साथ संबंध व धार्मिक नीति ने मुगल साम्राज्य के विस्तार को किस प्रकार प्रभावित किया इसकी विवेचना करना।
- औरंगजेब का राजपूतों के साथ संबंध का राजपूत शासकों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- मुगलों के साथ सिक्खों के संबंध का मुगल साम्राज्य व सिक्ख शासकों पर पड़ने वाले परस्पर प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन।
- मुगल शासकों की दक्षिण नीति के तुलनात्मक अध्ययन से अधिकर्ताओं को अवगत करवाना।
- मुगल शासकों की दक्षिण नीति ने दक्षिण भारत में मुगल साम्राज्य के विस्तार को किस प्रकार प्रभावित किया।
- मुगल शासकों का राजपूतों व सिक्खों के साथ संबंध, धार्मिक नीति तथा दक्षिण की नीति का उस समय के भारत पर पड़ने वाले प्रभाव तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता पर जिज्ञासु पाठकों के बीच चर्चा करना।

3.2. परिचय (Introduction):-

इसके अतिरिक्त इस अध्याय में हम शिक्षाथियों के मानसिक स्तर के विकास के लिए क्रमबंध रूप से उपरोक्त विषयों पर विस्तार पूर्वक तथ्यों को प्रस्तुत करेगें। इन तथ्यों व मुख्य बिन्दुओं से जिज्ञासुओं को लाभान्वित करवाएंगे।

औरंगजेब का जन्म 34 अक्टूबर, 1618 ई. को दोहाद नामक स्थान पर हुआ था। उसके पिता का नाम शाहजहां और माता का नाम मुमताज महल था। शाहजहां के चार पुत्र थे – दारा, शुजा, औरंगजेब तथा मुराद। इनमें औरंगजेब तीसरे नंबर का था। उसका कुरान का ज्ञान तथा मुहम्मद पैगम्बर के हदीस संबंधी अध्ययन गंभीर और सम्पूर्ण थे। वह फारसी और अरबी के साथ–साथ हिन्दी भी अच्छी तरह बोल लेता था। आम भाषा में वह हिन्दी की लोकप्रिय कहावतों का प्रयोग करता था। वह बचपन से ही निडर एवं बहादुर था। कहा जाता है कि एक बार वह अपने भाइयों के साथ आगरा में यमुना नदी के तट पर हाथियों की लड़ाई देख रहा था। अचानक ही सुधाकर नामक हाथी ने उस पर हमला कर दिया। उसने निडर होकर हाथी के सिर पर अपना भाला फेंका और अपनी तलवार से उसका सामना किया। इसी समय शाहशुजा और राजा जयसिंह उसकी सहायता के लिए पहुंच गए। शाहजहां ने उसकी वीरता से प्रसन्न होकर उसे अपने गले से लगा लिया और उसे 'बहादुर' की उपाधि से विभूषित कर दिया।

शाहजहां ने दिसम्बर, 1634 ई. को औरंगजेब को 10,000 सवार का शाही मनसब प्रदान किया। 1635 ई. में उसे बुन्देला युद्ध में मुगल सेना का सेनापति बनाकर भेजा गया। 14 जुलाई, 1636 ई. को उसे दक्षिण सूबों का गवर्नर अर्थात् सूबेदार बनाकर औरंगाबाद भेजा गया। वह 1644 ई. तक इस पद पर रहा। 1648–1653 ई. तक वह मुलतान और सिंध का सूबेदार रहा। 1653 ई. में उसे पुनः दक्षिण की सूबेदारी प्रदान कर दी गई।

1657 ई. के अन्त में शाहजहां दिल्ली में गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और उसके बचने की आशा नहीं रही। उसने दरबार लगाना और झरोखा दर्शन देना भी बंद कर दिया। हालांकि नवम्बर, 1657 ई. में सम्राट की तबीयत में कुछ सुधार हुआ और उन समस्त बातों को, जो तब तक उसे नहीं बताई गई थी वह सुनने के योग्य हो गया। परंतु इसी समय उसकी मृत्यु की अफवाह फैल गई। इस अफवाह को सत्य मान लिया और उत्तराधिकार युद्ध की तैयारी करने लगे। वैसे भी, चारों शहजादों का स्वभाग अलग–अलग था। इनमें औरंगजेब सबसे अधिक महत्वाकांक्षी था। मुगलशाही परिवार में ऐसा कोई निश्चित नियम नहीं था कि पिता की मृत्यु के पश्चात् उसका सबसे बड़ा पुत्र ही गद्दी पर बैठेगा। ऐसी स्थिति में सभी राजकुमार शासक बनने का प्रयास करने लगते थे।

लम्बे समय से बिमार होने के कारण शाहजहां की मृत्यु का समाचार मिलते ही शुजा ने बंगाल में और मुराद ने गुजरात में स्वयं को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। इस दौरान औरंगजेब भी सैनिक तैयारी करता रहा। जनवरी, 1658 ई. में शुजा एक शक्तिशाली सेना लेकर आगरा की ओर बढ़ा। दारा ने शाहजहां की स्वीकृति से

अपने पुत्र सुलेमान शिकोह और जयसिंह के नेतृत्व में 33 हजार सैनिकों की एक सेना शुजा के विरुद्ध भेज दी। शाही सेनाओं ने शुजा को फरवरी, 1658 ई. में बनारस के निकट बहादुरपुर नामक स्थान पर हरा दिया। दूसरी ओर, मुराद ने गुजरात में अपना राज्याभिषेक करा लिया। और औरंगजेब से संधि कर ली, फिर दोनों की सेनाओं ने मिलकर एक साथ अप्रैल, 1658 ई. में उज्जैन के निकट धरमत नामक स्थान पर जसवंत सिंह के नेतृत्व में लड़ रहीं शाही सेनाओं को बुरी तरह से पराजित कर दिया। ए.एल. श्रीवास्तव के अनुसार, "धरमत के युद्ध में शाही सेना पराजित होने के फलस्वरूप लूट में प्राप्त सामग्री की अपेक्षा युद्ध में प्राप्त विजय के फलस्वरूप मिलने वाला यश ही औरंगजेब के लिए अधिक महत्वपूर्ण था। धरमत का यह युद्ध उसकी भावी सफलता के लिए एक शुभ शगुन बन गया। एक ही साथ में उसने ऊंचे चढ़े दारा को अपनी बराबरी का बना डाला और कुछ हद तक अपनी विजय द्वारा औरंगजेब ने उसकी हीनता भी सिद्ध कर दी।"

31 मई, 1658 ई. को औरंगजेब और मुराद की सेनाएँ ग्वालियर पहुँच गई। अगले ही दिन वे दारा के विरुद्ध आगे बढ़े। दूसरी ओर, 18 मई को दारा चम्बल नदी के तट पर पहुंचने में सफल हो गया ओर 33 मई को धौलपुर पहुँचकर चम्बल के सभी घाटों पर अधिकार कर लिया। इस समय उसके पास 50,000 सैनिक थे।

8 जून, 1658 ई. को आगरा के निकट सामूगढ़ नामक पर युद्ध हुआ। दारा ने औरंगजेब और मुराद की संयुक्त सेनाओं का बड़ी वीरता से मुकाबला किया, परंतु औरंगजेब ने अपने कुशल नेतृत्व से दारा को बुरी तरह से पराजित कर दिया। उसकी सेना ने दारा के हाथी को भी अपनी गोलियों का निशाना बना लिया। इस युद्ध में दारा के 10,000 सैनिक मारे गए। औंरगजेब ने दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् उसने अपने पिता शाहजहां और अपने साथी भाई मुराद को कैद कर लिया और 31 जुलाई, 1658 ई. उसने स्वयं को सम्राट घोषित कर दयिा। उसने अपना दूसरा राज्याभिषेक 15 जून, 1659 ई. में कराया। इससे पूर्व 9 जून, 1659 ई. को दारा को उसके छोटे पुत्र और दो पुत्रियों सहित कैद कर लिया गया। उन्हें अपमानित करके दिल्ली की सड़कों पर घुमाया गया। 30 अगस्त, 1659 ई. को ख्वासपुर के बंदीगृह में दारा के पुत्र का वध कर दिया गया। औरंगजेब के कहने पर उसके शव को हाथी पर रखकर पूरे नगर में घुमाया गया। अन्त में उसे हुमायूँ के मकबरे में दफना दिया गया। इसके बाद औरंगजेब ने शुजा को 5 जनवरी, 1659 ई. को शुजा को इलाहाबाद के निकट खजवा नामक स्थान पर हरा दिया। शुजा पराजित होकर मुंगेर की ओर भाग गया। 1661 ई. में उसका वध कर दिया गया। इस प्रकार उत्तराधिकार युद्ध में औरंगजेब सफल हुआ। इसके पश्चात् औरंगजेब ने अपने छोटे भाई मुराद को भी बंदी बनाकर पहले दिल्ली और फिर ग्वालियर भेज दिया, जहां 1661 ई. में उसका भी वध कर दिया गया।

औरंगजेब पक्का सुन्नी मुसलमान था। वह राजपूतों का अस्तित्व मिटाकर उनके राज्यों को मुगल साम्राज्य का अंग बनाना चाहता था। जब तक राजा जयसिंह और जसवन्त सिंह जीवित रहे, उसने राजपूतों के प्रति सूझ –बूझ

एवं कूटनीति से काम लिया। इनकी मृत्यु के बाद औरंगजेब ने राजपूतों के प्रति 'बदले की भावना' तथा 'रक्तपात' की नीति को अपनाया।

औरंगजेब ने अपने शासन काल में मंदिरों को तुड़वाया। हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया। उसने धार्मिक भेदभाव की नीति अपनाते हुए सभी सरकारी पदो से हिन्दुओं को हटा दिया था।

उत्तर भारत में साम्राज्य का विस्तार पूर्ण होने के बाद मुगल शासकों ने दक्षिण की ओर कदम बढ़ाया और अलग–3 शासकों के समय दक्षिण (डेक्कन) की नीति का स्वरूप भिन्न–भिन्न रहा। इस अध्याय में हम औरंगजेब का राजपूतों के साथ संबंध और धार्मिक नीति, मुगलों की दक्षिण नीति तथा मुगलों के साथ सिक्ख संबंधों का विशलेषण करेंगें।

डॉ० गोपाल प्रसाद, डॉ० जयपाल सिंह, डॉ० दीपिका यादव – भारत का इतिहास (1300–1707 ई० तक) PP 303–303

3.3 विषय वस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text) :-

3.3.1 औरंगजेब का राजपूतों के साथ संबंध (Aurangzeb's Relationship with Rajput's):-

(i) औरंगजेब ने राजपूतों के प्रति धर्म के क्षेत्र में अनुदरता की नीति अपनायी। कुरान का कट्टर समर्थक होने के नाते वह अन्य धर्मो मुख्यतः हिन्दू धर्म के प्रति बहुत असहिष्णु था। उसने 13 अप्रैल 1679 को हिन्दुओं पर दोबारा 'जजिया' कर लगा दिया। धार्मिक क्रिया–कलापो, त्यौहारों एवं उत्सवों को प्रतिबन्धित करते हुए औरंगजेब ने हिन्दुओं से 'तीर्थयात्रा कर' पुनः वसूलना शुरू कर दिया। बड़ी संख्या में हिन्दू मंदिरों को तुड़वाने का आदेश देकर नवीन मंदिरों एवं पुराने मंदिरों के निर्माण पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया। औरंगजेब की इन नीतियों का राजपूतों के ऊपर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

(ii) आधुनिक इतिहासकारों का मानना है कि औरंगजेब मुगल वंश के अन्य शासकों की तरह राजपूतों के प्रति मैत्री भाव रखता था। औरंगजेब ने जसवन्त सिंह को दारा का सहयोग करने के बाद भी पुराने मनसब को प्रदान कर गुजरात का सूबेदार बनाया। औरंगजेब के समय में हिन्दू मनसबदारों की संख्या लगभग 33% थी जबकि शाहजहाँ के समय में यह प्रतिशत मात्र 34.7% था।

फिर भी यह कहा जा सकता है कि राजपूतों के प्रति औरंगजेब की नीति सदैव सहिष्णुता की नहीं थी। राजपूतों के प्रति उसकी कठोर नीति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण था, राजपूत सरदारों द्वारा उत्तराधिकारी की

लड़ाई लड़ा जाना। मिर्जा राजा जयसिंह अपनी मृत्यु तक (1667 ई०) औरंगजेब का मित्र बना रहा। जयसिंह का पुत्र रामसिंह मराठों का कट्टर समर्थक था।

(iii) मारवाड़ पर अधिकार – मारवाड़ पर औरंगजेब की निगाहें काफी दिन से गड़ी थीं। 30 दिसम्बर, 1678 ई0 को 'जमरुद' में महाराजा जसवन्त सिंह की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने 'उत्तराधिकारी' के अभाव में मारवाड़ पर मुगल साम्राज्य का बहुत बड़ा कर्ज होने का आरोप लगा कर उसे 'खालसा' के अन्तर्गत कर लिया। औरंगजेब ने जसवन्त के भतीजे के बेटे इन्द्र सिंह राठौर को उत्तराधिकार शुल्क के रूप में 36 लाख रु. देने पर जोधपुर का राणा मान लिया। कालान्तर में महाराजा जसवन्त सिंह की विधवा से एक पुत्र पैदा हुआ जिसका नाम अजीत सिंह रखा गया। औरंगजेब की शर्त थी कि यदि अजीत सिंह इस्लाम धर्म ग्रहण कर ले तो उसे मारवाड़ सौंप दिया जायेगा। राठौर नेता दुर्गादास किसी तरह से अजीत सिंह एवं जसवन्त सिंह की विधवाओं को साथ लेकर जोधपुर भाग आने में सफल रहा। राठौर दुर्गादास की अपने देश के प्रति निःस्वार्थ भक्ति के लिए कहा जाता है कि 'उस स्थिर ह्रदय को मुगलों का सोना सत्यपथ से न डिगा सका, मुगलों के शस्त्र नहीं डरा सके। औरंगजेब ने 1679 ई० में तहब्बुर खां एवं शहजादे अकबर द्वितीय के नेतृत्व में एक मुगल सैन्य टुकड़ी को मारवाड़ पर आक्रमण के लिए भेजा, इस अभियान में मुगल सफल रहे। मारवाड़ के बाद मुगल सेना ने हसन अली खां के नेतृत्व में मेवाड़ के नरेश राजसिंह (राणा) पर आक्रमण किया। इस संघर्ष में दुर्गादास राठौर के सैनिक भी राणा के साथ थे फिर भी 1 फरवरी, 1681 ई0 को राणा पराजित हो गया। मेवाड़ मुगलों के अधिकार में आ गया। शाहजादा अकबर को वहां का शासन सौंप गया। परन्तु कुछ समय बाद राणा राजसिंह शाहजादा अकबर को पराजित करने में सफल रहा। अकबर की पराजय के बाद औरंगजेब ने आजम को चित्तौड़ भेजा। कालान्तर में उसके (औरंगजेब) तीन पुत्रों अकबर, आजम एवं मुअज्जम ने तीन ओर से मेवाड़ पर आक्रमण किया, परन्तु आंशिक सफलता ही प्राप्त कर सके।

इस बीच औरंगजेब के पुत्र अकबर ने दुर्गादास के बहकावे में आकर अपने पिता के खिलाफ विद्रोह की घोषणा करते हुए स्वयं को 11 जनवरी, 1681ई0 को भारत का सम्राट घोषित कर दिया। उस समय अजमेर में पड़ाव डाले औरंगजेब के पास इतने भी सैनिक नहीं थे कि वह विद्रोही शहजादे को दण्ड दे सके, परन्तु सौभाग्य ही था कि नवम्बर, 1680 में राणा राजसिंह की मृत्यु के कारण अकबर को वह सहयोग प्राप्त नहीं हो सका जिसकी अपेक्षा से उसने विद्रोह किया था। औरंगजेब कूटनीति के सहारे दुर्गादास को अकबर से अलग करने में सफल हुआ। राजपूतों के सहयोग के अभाव में अन्नतः अकबर के समर्थक मुगल सम्राट की सेना में मिल गये। यह सब 13 जनवरी, 1681ई0 को अजमेर के 'दोराहा' नामक स्थान पर हुआ, जहां पर दोनों ओर की सेनायें आमने–सामने थीं। अकबर राजपूतों की सहायता से निराश होकर अन्ततः शिवजी के पुत्र शम्भाजी के पास चला गया, जहां पर 1704 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

(iv) मेवाड़ के साथ संधि (1681 ई०) – राणा राजसिंह की मृत्यु के बाद राणा जयसिंह मेवाड़ का शासक हुआ। 34 जून, 1681 को राणा जयसिंह एवं औरंगजेब के मध्य एक संधि सम्पन्न हुई। संधि की शर्तों के अनुसार – औरंगजेब ने पूरा मेवाड़ जयसिंह को वापस कर दिया। जयसिंह ने राजपूतों पर 'जजिया कर' हटाने के बदले में औरंगजेब को 'आदलपुर' एवं 'बेदनोर' का क्षेत्र दे दिया। जयसिंह को मुगल दरबार में 5000 का मनसबदार बनाया गया। सारे मुगल सैनिक मेवाड़ से वापस आ गये। कालान्तर में औरंगजेब ने दक्षिण अभियान में जयसिंह के सहयोग देने के कारण उसे 'बेदनोर' और 'आदलपुर' के क्षेत्र को वापस कर दिया।

(v) मारवाड़ का स्वाधीन होना – मारवाड के अजीत सिंह एवं दुर्गादास तथा औरंगजेब के मध्य लगभग 'तीस वर्ष' तक संघर्ष हुआ फिर भी मुगल इन राजपूत वीरों को किसी सन्धि में बांध सकने में अक्षम रहे अन्ततः 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु के बाद 1709 ई० में बहादुरशाह प्रथम ने अजीत सिंह को मारवाड़ के स्वतन्त्र शासक के रूप में स्वीकार कर लिया।

(vi) औंरगजेब एवं पश्चिमोत्तर सीमा क्षेत्र का विद्रोह – इस क्षेत्र में हुए अनेक विद्रोहों का सामना औरंगजेब को करना पड़ा। उस प्रदेश के खेतों की अल्प उपज के कारण वहाँ की साहसी अफगान जातियाँ आम सड़कों पर डकैती तथा उत्तर पश्चिमी पंजाब के समृद्ध नगरों के लोगों को डराकर उनसे धन ऐंठती थी। 1667 ई० में युसुफजाइयों ने भांगु नामक अपने एक नेता के अधीन सशस्त्र विद्रोह कर दिया। उनकी एक विशाल सेना ने अटक से ऊपर सिन्धु को पार कर हजारा जिले पर आक्रमण कर दिया। औरंगजेब द्वारा भेजे गये कामिल खाँ, शमशेर खाँ एवं अमीन खाँ ने इस विद्रोह को शान्त किया।

1673 ई० मे अजमल खाँ के नेतृत्व में हुए विद्रोह को शान्त करने के लिए औरंगजेब स्वयं पेशावर के निकट हसन अब्दाल गया तथा कूट नीति एवं शस्त्रों के चतुर संयोग से बड़ी सफलता प्राप्त की। बहुत सी अफगान जातियों को भेंटें, पेंशनें, जागीरें एवं पद देकर अपने पक्ष में कर लिया। उत्तर पश्चिम के विद्रोह को दबाने मे औरंगजेब ने जहाँ अपनी पत्नी साहित जी के परामर्श के अनुसार मेलजोल वाली नीति का अनुसरण किया वहीं दो हड्डियों को आपस में टकराकर उन्हें तोड़ने की नीति का अनुसरण किया।

इसमें सन्देह नहीं कि मुगलों के सीमा युद्धों का अंत सफलता के साथ हुआ। परंतु उसका अप्रत्यक्ष परिणाम साम्राज्य के लिए घातक सिद्ध हुआ।

पश्चिमोत्तर सीमा क्षेत्र का यह अभियान औरंगजेब के लिए काफी महंगा पड़ा। धन, जन की हानि के साथ दक्षिण भारत में मुगलों की स्थिति कमजोर हुई। अपने जीवन के अन्तिम समय में औरंगजेब को अपने किये पर घोर पछतावा हुआ था, प्रायश्चित के साथ ही उसकी मृत्यु हो गई।

डॉ० विनय कुमार सिंह – यूनीक सामान्य अध्ययन PP. C /163-163

3.3.2 औरंगजेब की धार्मिक नीति (Religious Policy of Aurangzeb) :-

सम्राट औरंगजेब की धार्मिक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसके मन में इस्लाम के प्रति असीम आसक्ति थी इसलिए उसने इस्लाम धर्म के पाक ग्रन्थ कुरान को अपने शासन का आधार बनाया। औरंगजेब ने सिक्कों पर कलमा खुदवाया। उसने नौरोज का त्यौहार, भांग की खेती करने और गाने–बजाने आदि कार्यक्रमों पर रोक लगा दी। अकबर द्वारा शुरू किए गए 'झरोखा दर्शन' और तुलादान प्रथा पर प्रतिबन्ध लगा दिया। उसने अपने शासन के 33वें वर्ष 1679 ई. में हिन्दुओं पर पुनःजजिया कर लगा दिया। औरंगजेब ने बड़े–बड़े नगरों में मुहत्तसिब (सार्वजनिक सदाचार निरीक्षक, नियुक्त किए। उसने हिन्दुओं मंदिरों को तोड़ने के आदेश दे दिए। इसी क्रम में उसने बनारस मंदिर तथा मथुरा के 'केशव राय मंदिर' को तुड़वा दिया। औरंगजेब ने अपने शासन में सरकारी पदों पर नियुक्त अधिकारियों को इसी भेदभाव के कारण उनके पदों से बर्खास्त कर दिया। इसके अतिरिक्त 1655 ई. में एक सरकारी फरमान जारी कर हिंदुओं पर अनेक तरह के सामाजिक प्रतिबन्ध लगा दिए।

औरंगजेब ने राजपूतों को छोड़कर दूसरे वर्ग के हिन्दुओं पर हाथी, घोड़े तथा पालकी आदि की सवारी पर प्रतिबन्ध लगा दिया। उसने हिन्दुओं के त्योहारों, पर्वों एवं उत्सवों को प्रतिबन्धित कर दिया। धार्मिक कट्टरता के कारण अनेक हिन्दुओं का जबरन धर्म परिवर्तन करवाया और हिन्दुओं को इस्लाम धर्म अपनाने के लिए अनेक प्रलोभन भी दिए।

औरंगजेब की कट्टर धार्मिक असहनीय नीति के कारण मथुरा के जाट कृषक, सतनामी सम्प्रदाय और सिक्ख उसके विरोधी हो गए। आगे चलकर सिक्खों का यही विद्रोह मुगलों के पतन का प्रमुख कारण बना। औरंगजेब की कट्टर इस्लामिक नीति के कारण भारत में मुगलों के विरूद्ध ऐसे माहौल का निर्माण हुआ कि औरंगजेब के बाद मुगल शासकों को भी बहुसंख्यक वर्ग की सहानुभूति न प्राप्त हो सकी।

3.3.3 मुगलों के साथ सिक्खों का संबंध (Mughal's Relationship with Siksh's):- गुरू नानक देव सिक्ख धर्म के संस्थापक थे। गुरू नानक देव से लेकर चौथे गुरू रामदास तक सिक्ख धर्म एक धार्मिक सम्प्रदाय था इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नही था। इस कारण इनके काल में सिक्खों के मुगलों से सामान्य सम्बन्ध बने रहे कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी।

चौथे गुरू रामदास अकबरकालीन थे। इनका सम्बन्ध अकबर की उदारवादी नीतियों का कारण सौहार्दपूर्ण था। सिक्खों और अकबर के बीच व्यापारिक सम्बन्ध भी थे। पांचवें गुरू अर्जुन देव

(1581—1609) के समय से मुगलों और सिक्खों के सम्बन्ध में दरार पड़नी शुरू हो गई क्योंकि तब तक अकबर की मृत्यु हो चुकी थी। अकबर की मृत्यु के बाद मुगल सिक्ख सम्बन्ध परिवर्तित हो गए।

(1) जहॉगीर एवं सिक्ख (Janhagir and Siksh) :- मुगल सम्राट जहॉगीर के शासन काल से मुगल—सिक्ख सम्बन्ध बिगड़ने शुरू हो गए जिसका परिणाम औरंगजेब के शासनकाल में गुरू तेगबहादुर को मृत्यु दण्ड के रूप में परिलक्षित हुआ।

जहॉगीर के मुगल सिंहासन पर आरूढ़ होते ही उसके पुत्र खुसरों ने विद्रोह कर दिया। जब जहॉगीर ने उसे पकड़वाना चाहा तो वह अफगानिस्तान की और भाग निकला जहॉ तरनतारन में उसकी मुलाकात गुरू अर्जुनदेव से हुई। गुरू अर्जुनदेव ने उसका स्वागत करते हुए उसके सफलता की शुभकामनाएं की। इस बात से जहॉगीर आग बबूला हो उठा और अर्जुनदेव को सम्मन देकर लाहौर में आने का फरमान जारी किया। लाहौर में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और दण्डस्वरूप दो लाख रूपए का जुर्माना लगाया गया। इतना ही नहीं मुगल सेना ने गुरू अर्जुनदेव को प्रताड़ित भी किया। इस प्रकार जहॉगीर ने सिक्खों को षड्यन्त्र के लिए दण्ड देकर उनकी उभरती शक्ति को कुचलने का प्रयत्न किया। जहॉगीर ने गुरू अर्जुनदेव की हत्या करवाकर मुगल—सिक्ख संघर्ष की शुरूआत कर दी।

(2) शाहजहां व सिक्ख (Shahjahan and Sikhs) :- मुगल सम्राट शाहजहॉ के शासनकाल में तत्कालीन सिक्ख गुरू हरगोविन्द और मुगल सेना के साथ अनेक बार मुठभेड़ हुई। एक बार शाहजहॉ अमृतसर के निकट शिकार खेलने गया वहॉ उसका बाण उड़कर गुरू के शिविर में पहुंच गया। गुरू हरगोविन्द ने जब उसे बाण को लौटाने से इन्कार कर दिया तो 1638 में कई सैन्य टकराव हुए।

पायदा खॉ नामक पठान ने सिक्ख सेना का नेतृत्व कर मुगलों को सिक्ख शक्ति से परिचित करवाया। आगे चलकर वजीर खॉ ने शाहजहॉ व गुरू हरगोविन्द में सुलह कराकर संघर्ष को विराम दिया।

(3) औरंगजेब और सिक्ख (Aurangzeb and Sikhs) :- औरंगजेब के संकुचित विचारों और धार्मिक कट्टरता के कारण मुगलों और सिक्खों के सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न हो गया परिणाम स्वरूप सिक्खों ने मुगल साम्राज्य के विरूद्ध अनेक विद्रोह किए।

उत्तराधिकारी के युद्ध में दाराशिकोह सामूगढ़ में पराजित हो गया और पंजाब जाकर गुरू हरिराय से मद्द मांगी। औरंगजेब को यह भी शिकायत थी कि गुरूदेव हरिराय इस्लाम धर्म के विरूद्ध सिक्ख

धर्म के लिए चमत्कार कर रहे है। इसके लिए उसने हरिराय को अपने आचरण की सफाई देने के लिए दिल्ली बुलाया। औरंगजेब को गुरू हरिराय के आचरण में ऐसा कोई दोष नहीं दिखा कि जिसके लिए उन्हें दण्डित किया जाए लेकिन एहितियातन उसने गुरूपुत्र रामराय को दिल्ली में ही रोक लिया। प्रो0 ए0सी0 बैनर्जी ने लिखा है कि '' बादशाह सिक्खों के भावी गुरू को शाही दरबार में रखकर उन्हें मुगल प्रभाव के अनुकूल बनाना चाहते थे। '' गुरू हरिराय ने रामराय के स्थान पर उनके छोटे भाई हरिकिशन को गुरू नियुक्त कर दिया। उधर औरंगजेब रामराय को संरक्षण देते हुए देहरादून में उनके लिए जमीन की पेशकश की। औरंगजेब ने गुरू हरिकिशन को दिल्ली बातचीत के लिए बुलाया इससे पहले कि औरंगजेब गुरू पर अपनी इच्छाओं को लादता गुरू हरिकिशन की चेचक से मृत्यु हो गई।

अपनी मृत्यु से पहले ही गुरू हरिकिशन ने अपने पिता के चाचा गुरू तेगबहादुर को गुरू बनाने

के लिए घोषणा कर दी। गुरू हरिकिशन के मरणोपरान्त (1664–1674 ई.) गुरूतेगबहादुर सिक्खों के गुरू बने। गुरू तेग बहादुर ने राजा जयसिंह के पुत्र राजा राम सिंह का बिहार की यात्रा तथा असम के अभियान में उनका सहयोग किया। दुर्भाग्यवश गुरू तेग बहादुर भी औरंगजेब की धर्मांध कट्टरता के शिकार हुए और उन्हें 1675 ई में मृत्यु दण्ड दे दिया गया। औरंगजेब के द्वारा गुरू तेगबहादुर को मृत्युदण्ड देने का विषय अत्यन्त विवादास्पद रहा इस विषय में किसी भी फारसी विद्वान का कोई विवरण प्राप्त नहीं होता। सरकारी दस्तावेजों 'मआसिर–ए–आलमगीरि' में मुरतइदखॉ के विवरण से ज्ञात होता है कि कुछ कश्मीरी पंडितों ने गुरू से शिकायत की कि उन्हें इस्लाम कबूल करने के लिए प्रताड़ित किया जा रहा है। गुरू ने उन पर होने वाले अत्याचार का विरोध किया। इस्लाम कबूल करने से मना करने के कारण गुरू की हत्या कर दी गई। कुछ इतिहासकारों का कथन है कि गुरू तेगबहादुर ने हिन्दुओं तथा सिक्खों का मनोबल बढ़ाने के लिए मालवा की यात्रा की जिससे औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता का विरोध किया जा सके। मालवा से लौटते हुए आगरा में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उनके समक्ष चमत्कार दिखाने, इस्लाम कबूल करने और फांसी के फंदे पर चढ़ने के तीन विकल्प रखे गए। गुरू ने चमत्कार दिखाने तथा इस्लाम कबूल करने से मना कर दिया फलतः उनको फांसी चढ़ा दिया गया। संक्षेप में कहा जा सकता है कि औरंगजेब ने गुरू की बढ़ती शक्ति, समाज में पद–दलित वर्ग के संरक्षक के रूप में उन्नति को एक बड़ा राजनैतिक तथा सामाजिक खतरा माना सिक्खों की अनवरत बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए उनकी हत्या कर दी।

गुरू तेग बहादुर की हत्या के बाद उनके पुत्र गुरू गोविन्द सिंह (1675–1708 ई.) गुरू बने। उन्होंने 'आनन्दपुर ' को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया। गुरू बनने के पश्चात् उन्होंने सबसे पहले सिक्खों की सैन्य शक्ति में इजाफा करने का प्रयत्न किया। उन्होंने पहाड़ियों के राजाओं सिरमौर तथा गढ़वाल में सम्बन्ध स्थापित करवाये। उन्होंने सिक्खों को बाहरी हस्तक्षेप से बचाने के लिए एक इकाई के रूप में सिक्खों को संगठित किया। इसके लिए उन्होंने 1699 ई. में 'खालसा' या 'सैनिक भ्रातृत्व' की स्थापना की। उन्होंने खालसा के सदस्यों को शिक्षित किया तथा गुरू के लिए अपने प्राणों की बलि देने के लिए तत्पर किया। केश व कटार को धारण करना, मनोभिलाषाओं का त्याग, गुरू पद को खालसा पंथ और आदि ग्रंथ में स्थापित किया। पुराने रीति–रिवाजों को छोड़कर उन्नतिशील परंपराओं का सृजन करना या अपनाना आदि तत्वों का समावेश कर उन्होंने विशेष सामाजिक, धार्मिक भाई–चारे का संगठन किया। गुरू गोविन्द सिंह बढ़ते प्रभाव को देखकर कई पहाड़ी राजाओं ने उन पर आनन्दपुर में आक्रमण किया किन्तु विफल रहे। असफल राजाओं ने मुगल सम्राट औरंगजेब से आनन्दपुर पर आक्रमण करने की मदद मांगी परिणामस्वरूप औरंगजेब ने लाहौर के सूबेदार तथा सरहिन्द के फौजदार को पहाड़ी राजाओं की सहायता करने का हुक्म दिया। मुगलसेना और पहाड़ी राजाओं ने आनन्दपुर पर आक्रमण किया किन्तु असफल रहे। 1704 में मुगल सेना व पहाड़ी मित्र राजाओं ने आन्नदपुर को घेर लिया जब सिक्ख भूखे मरने की स्थितिं में आ गए तो गुरू किले का द्वार खोलने के लिए बाध्य हो गए। यद्यपि मुगल सेना ने सुरक्षित चले जाने का वचन दिया था किन्तु धोखे से आक्रमण कर दिया। गुरू तो सुरक्षित बचकर निकलनें में सफल हो गए किन्तु उनके दो पुत्रों जोरावर व फतह सिंह को बन्दी बना लिया गया। इस्लाम स्वीकार ने किए जाने पर उनकी हत्या कर दी गई। गुरू जी के दूसरे दो पुत्र अजीत व जुझार सिंह मुगलों से लड़ते हुए शहीद हो गए। इसके बाद गुरू तलवंडी में जाकर रहने लगे। 1706 ई. में गुरू जी ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। कुछ विचारकों ने लिखा है कि गुरू जी औरंगजेब से मिलकर उसे प्रसन्न करने के लिए आन्नदपुर वापस देना चाहते थे किन्तु इसी दौरान औरंगजेब की मृत्यु हो गई। गुरू जी ने एक नई सिक्ख परंपरा की नींव डाली जिसने सिक्खराज की स्थापना का मार्ग दिखाया। 1706 ई. में एक अफगान ने गुरू जी की हत्या कर दी तत्पश्चात् बन्दा बहादुर ने सिक्खों का नेतृत्व कर मुगलों का विरोध किया।

इस प्रकार कह सकते हैं कि जहॉगीर के शासनाध्यक्ष से शुरू हुआ सिक्खों का विद्रोह औरंगजेब के शासनकाल तक अनवरत चलता रहा जिसे समय–समय पर मुगलों ने कुचलने का प्रयत्न किया। शाहजहॉ और औरंगजेब के शासनकाल में तो स्थिति अत्यन्त गंभीर हो गई थी जिसका

परिणाम यह हुआ कि 'खालसा पंथ' सिक्खों के एक शक्तिशाली, राजनीतिक, धार्मिक संगठन के रूप में अभ्युदय हुआ। सिक्खों के इस संगठन को खड़ा करने का श्रेय औरंगजेब के धार्मिक कट्टर विचार धारा को दिया जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। सिक्खों के 10वें गुरू गोबिन्द सिंह के बाद भी सिक्खों का यह संघर्ष जारी रहा उसी के फलस्वरूप उत्तर पश्चिम भारत में एक विशाल सिक्ख राज्य की स्थापना हुई।

3.4 विषय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण (Further Main Body of the Text)

3.4.1. मुगल सम्राटों की दक्षिण नीति (डेक्कन) –

विन्धय पर्वत के दक्षिण में स्थित प्रदेशों को प्रायः दक्षिणी भारत अथवा दक्कन कहा जाता है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाये तो भारत का दो भागों में विभाजन राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से उचित प्रतीत नहीं होता। क्योंकि प्राचीन काल से वर्तमान काल तक उत्तरी भारत तथा दक्षिणी भारत का पारस्परिक घनिष्ट सम्बन्ध रहा। भारत के महान् सम्राटों ने समय–समय पर उत्तरी भारत के अतिरिक्त दक्षिणी भारत के प्रदेशों को भी विजय किया। गुजरात, मालवा तथा उड़ीसा जैसे राज्यों का सदा ही दक्षिणी भारत की राजनीति से सम्बन्ध रहा है। अतः यह अत्यन्त आश्चर्यजनक बात होती यदि मुगल साम्राज्य जिसमें ये राज्य सम्मिलित थे, दक्षिणी भारत से पृथक रहता।[1] डा० बेनी प्रसाद के कथनानुसार "मुगलों की दक्षिण नीति भारतीय इतिहास के पिछले दो हजार वर्षों की देन थी "यह भारत की भौगोलिक विशेषताओं का ही प्रत्यक्ष परिणाम था।"[3]

1. R.P Tripathi, Rise and Fall of the Mughal Empire, P. 313.

3. Beni Prasad, History of Jahanger P. 333.

सोलहवीं शताब्दी के पहले भाग में जब बाबर ने भारत पर आक्रमण करने आरम्भ किये तो उस समय दक्षिणी भारत में दो प्रमुख राज्य थे। बहमनी सल्तनत तथा विजयनगर साम्राज्य। बहमनी सल्तनत का भी उस समय तक व्यावहारिक रूप से विघटन हो चुका था तथा उसके खण्डहरों पर अहमदनगर, बीजापुर, बीदर, बरार और गोलकुण्डा नामक पाँच स्वतन्त्र राज्य स्थापित हो गए थे। इन पांचों राज्यों में शिया मुसलमान शासकों का शासन था जो प्रायः आपस में लड़ते–झगड़ते रहते थे। सुदूर दक्षिण में विजयनगर का प्रसिद्ध हिन्दू साम्राज्य था जो राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में उन्नति की चरम सीमा तक पहुँच गया था। उस समय कृष्ण देव राय इस साम्राज्य का शासक था जो एक शूरवीर योद्धा तथा सुयोग्य शासक था। पश्चिमी तट पर पुर्तगाली स्थायी रूप से बस गए थे तथा दिन–प्रतिदिन अपनी शक्ति में वृद्धि कर रहे थे। उत्तरी भारत दक्षिणी भारत की सीमा पर स्थित खानदेश में फारूकी वंश का स्वतन्त्र राज्य स्थापित था।

बाबर ने भारत में केवल चार वर्ष (1536–30 ई०) तक शासन किया। इन चार वर्षों में भी वह अफगानों तथा राजपूतों के विरूद्ध युद्ध करने में ही व्यस्त रहा। अभी उसने समस्त उत्तरी भारत को भी विजय नहीं किया था कि उसकी मृत्यु हो गई। इस लिए बाबर दक्षिणी भारत को अधीन करने के लिए कुछ न कर सका। हुमायूं को राजसिंहासन पर बैठने के तुरन्त पश्चात् अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसके शत्रु शेरशाह सूरी ने उसे पराजित करके उत्तरी भारत से भी बाहर निकाल दिया। शेरशाह सूरी अपने पाँच वर्षों के शासन काल (1540–45 ई०) में उतरी भारत के प्रदेशों की विजय करने तथा विजित प्रदेशों में कुशल शासन–प्रबन्ध स्थापित करने में ही लगा रहा।

ए०सी० अरोड़ा – भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल P. 169।

3.4.2. अकबर की दक्षिण नीति (Deccan policy of Akbar) :–

उत्तर भारत में साम्राज्य की स्थापना के बाद मुगल शासक अकबर का ध्यान दक्षिण की ओर गया, जहां वह दक्षिण के शासकों के आपसी मतभेदों का लाभ उठाना चाहता था। दक्षिण भारत की ओर अकबर के अभियान का कारण यह भी था कि अरब सागर के तट पर पुर्तगाली अपनी व्यापारिक शक्ति के साथ–साथ धर्म का भी प्रचार करने लगे थे और अकबर उनका दमन करना चाहता था।

अकबर के काल में दक्षिण भारत में प्रमुख राज्य अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा व खानदेश थे। अकबर ने 1591 ई. में इन सभी राज्यों में अपने दूत भेजे तथा उनसे अपनी अधीनता स्वीकार करने को कहा। खानदेश ने अकबर के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, लेकिन अन्य तीनों राज्यों ने ऐसा नहीं किया। अतः इन राज्यों पर आक्रमण के अतिरिक्त कोई उपाय शेष नहीं रह गया।

अहमदनगर पर आक्रमणः अकबर ने 1591 ई. में अब्दुर्रहीम खानखान व पुत्र मुराद के नेतृत्व में अहमदनगर पर आक्रमण के लिए सेना भेजी। मुगल सेना को अहमदनगर में चांदबीबी के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा और मुगल सेना संधि करने के लिए विवश हो गई। संधि के अनुसार बरार क्षेत्र मुगलों को दे दिया गया, लेकिन कालांतर में पुनः अहमदनगर वासियों ने बरार को अपने में मिला लिया। 1600 ई. में अकबर ने स्वयं अहमदनगर अभियान की शुरुआत की और उसे अपने अधीन कर लिया।

असीरगढ़ पर आक्रमणः असीरगढ़ एक दुर्ग था, जो खानदेश के अंतर्गत था। अली खां ने तो अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी, लेकिन उसके पुत्र मीर बहादुर ने 1599 ई. में खानदेश की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। 1599 ई. में अकबर की सेना ने खानदेश पर आक्रमण किया और बुरहानपुर पर अधिकार कर लिया। इसके बाद मुगल सेना ने 6 महीने तक असीरगढ़ दुर्ग को घेरे रखा, फिर भी मीर बहादुर ने हार नहीं मानी, लेकिन

अचानक दुर्ग में महामारी फैल गई और मीर बहादुर को आत्मसमर्पण करना पड़ा। 1600 ई. में अकबर ने असीरगढ़ पर भी अधिकार कर लिया।

3.4.3 जहांगीर की दक्षिण नीति (Deccan policy of Jahangir) :– जहांगीर ने दक्षिणी राज्यों के संबंध में अकबर की नीति का अनुसरण किया। उसके शासनकाल में दक्षिण राजनीति पर मलिक अम्बर का वर्चस्व था। मलिक अम्बर मूलतः अबीसीनिया का निवासी था और अहमदनगर राज्य का प्रधानमंत्री था। जहांगीर अहमदनगर के उन समस्त प्रदेशों पर अधिकार करने की कोशिश की जिन्हें मुगलों ने अकबर के समय अधिकृत कर लिया था। 1608 ई. में जहांगीर ने अब्दुर्रहीम खान–ए–खाना के नेतृत्व में एक सेना दक्षिण विजय के लिए भेजी, परंतु सफलता नहीं मिली। इसके बाद खान–ए–जहां लोदी तथा अब्दुल्लां खां को मलिक अम्बर के विरुद्ध अभियान के लिए भेजा गया, परंतु इन्हें भी मलिक अम्बर के हाथों पराजय ही मिली। इन परिस्थितियों में जहांगीर ने एक बार फिर अब्दुर्रहीम खान–ए–खाना के नेतृत्व में सेना भेजी, कुछ प्रारम्भिक सफलताओं को प्राप्त करने के बावजूद नूरजहां के हस्तक्षेप के कारण उसके स्थान पर खुर्रम को नेतृत्व सौंप दिया गया।

1616 ई. में शाहजादा खुर्रम को दक्षिण अभियान का भार सौंपा गया। 1617 ई0 में खुर्रम बुरहानपुर पहुंचा और वहां से मलिक अम्बर के साथ पत्र–व्यवहार किया। खुर्रम की शक्ति से भयभीत होकर मलिक अम्बर ने उसके साथ संधि कर ली। इस संधि के प्रावधानों के अंतर्गत बालाघाट का प्रदेश तथा अहमदनगर का दुर्ग मुगलों को प्राप्त हुआ। इसी सफलता के बाद जहांगीर ने खुर्रम को 'शाहजहां' की उपाधि दी थी। मलिक अम्बर पर कूटनीतिक विजय के बाद खुर्रम वापस लौट गया। बाद में मलिक अम्बर ने संधि को तोड़ते हुए फिर से अपनी शक्ति संगठित कर ली। उसने बुरहानपुर तक मुगल सेना को खदेड़ दिया। इस स्थिति में अब्दुर्रहीम ने सम्राट के पास खुर्रम को भेजने का संदेश भेजा। अंत में खुर्रम विशाल सेना के साथ दक्षिण भेजा गया। जल्द ही उसने अहमदनगर की राजधानी पर अधिकार कर लिया। पराजित होने के बाद मलिक अम्बर ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली, मुगलों से छीने गए सारे प्रदेश लौटा दिए और इसके अतिरिक्त 14 लाख के राजस्व वाला क्षेत्र भी मुगलों को सौंप दिया। अहमदनगर की इस विजय के बाद बीजापुर और गोलकुण्डा ने भी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। परंतु, इस विजय के बाद खुर्रम महत्वाकांक्षी हो गया और अपनी उत्तराधिकारिता को सुनिश्चित करने के लिए उसने 1633 ई. में शाहजादा खुसरो की हत्या करवा दी।

3.4.4 शाहजहां की दक्षिण नीति (Deccan policy of Shahjahan) :––

शाहजहां के शासनकाल में मुगलों ने दक्षिणी राज्यों की ओर अधिक ध्यान दिया। अपने पिता के शासनकाल में ही उसने दक्षिण अभियान में महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की थी। उसने 1630 ई. में अहमदनगर के निजामशाही

राज्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। मुगल सेना ने वरेंदा के किले का घेरा डाला, परंतु अनेक कारणों से यह घेरा उठा लेना पड़ा। बाद में अहमदनगर की आंतरिक अशांति का लाभ उठाकर अबुल हसन, आजम खां आदि के नेतृत्व में मुगल सेना ने अहमदनगर की सेना को परास्त कर दिया। मलिक अम्बर के बाद उसका पुत्र फतेह खां अहमदनगर का वजीर नियुक्त हुआ था, परंतु वह नितांत अयोग्य एवं अकुशल था। शाहजहां ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए फतेह खां को अपने साथ मिला लिया। फतेह खां ने अहमदनगर के शासक मूर्तजा खां को बंदी बनाकर उसका वध करवा डाला। फतेह खां ने अल्पवयस्क हुसैन शाह को अहमदनगर का शासक बनाया तथा स्वयं उसका सरंक्षक हो गया।

7 जून, 1631 ई. को एक ऐसी घटना घटी, जिसने शाहजहां को थोड़े समय के लिए विचलित कर दिया। इस दिन शाहजहां की पुत्नी मुमताज महल का निधन हो गया और शाहजहां को थोड़े समय के लिए राजधानी लौटना पड़ा। शाहजहां के लौटने के बाद फतेह खां ने बीजापुर के सुल्तान के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित कर लिए। फतेह खां के विश्वासघात से खिन्न होकर शाहजहां ने महाबत खां के नेतृत्व में एक विशालसेना दौलताबाद के दुर्ग की विजय के लिए भेजी। महाबत खां ने अद्भुत पराक्रम का परिचय देते हुए शीघ्र ही अम्बरकोट, महाकोट, दौलताबाद आदि दुर्गों पर अधिकार कर लिया। अंततः, फतेह खां ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली, अहमदनगर के सुल्तान हुसैन शाह को बंदी बनाकर ग्वालियर के दुर्ग में भेज दिया गया तथा फतेह खां को 3 लाख रुपए वार्षिक का पेंशनयापता बना दिया गया। इस प्रकार अहमदनगर राज्य मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

शासक बनने के बाद शाहजहां ने गोलकुण्डा राज्य को अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। उसने गोलकुण्डा के सुल्तान पर दबाव डाला कि वह मुगल सम्राट के नाम का खुतबा पढ़वाये तथा मुद्रा का प्रचलन करे। इसके लिए उसने गोलकुण्डा की सीमा पर सैन्य –शक्ति का प्रदर्शन कर शासक को भयभीत भी किया। 1636 ई. में गोलकुण्डा के शासक और शाहजहां के बीच एक संधि हुई, जिसके तहत गोलकुण्डा ने मुगलों की आंशिक अधीनता स्वीकार कर ली। शाहजहां अब गोलकुण्डा पर पूर्ण प्रभुत्व की स्थापना का प्रयास करने लगा। उसने 1653 ई. में औरंगजेब को दूसरी बार दक्षिण भारत का सूबेदार नियुक्त किया। इस समय से मुगलों और गोलकुण्डा के बीच संघर्ष की फिर से शुरुआत हो गई। गोलकुण्डा द्वारा कर्नाटक की सत्ता हस्तगत कर लेने, ईरानी मुहम्मद सैयद (मीर जुमला) को वजीर नियुक्त किए जाने और उसके बाद सुल्तान द्वारा मीर जुमला के पुत्र मुहम्मद अमीन सहित उसके पूरे परिवार को बंदी बनाए जाने के कारण मुगलों को गोलकुण्डा के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप का मौका मिला। मुहम्मद अमीन द्वारा सहायता की याचना करने पर औरंगजेब ने शाहजहां से अनुमति प्राप्त कर 1656 ई. में विशाल सेना के साथ गोलकुण्डा में प्रवेश किया। भयभीत होकर गोलकुण्डा के सुलतान ने मुहम्मद अमीन सहित उसके परिवार को मुक्त कर दिया, मीर जुमला की जब्त सम्पत्ति को लौटा दिया और अपनी पुत्री की शादी

औरंगजेब के पुत्र शाही मुहम्मद के साथ कर दी। बाद में शाहजहां ने औरंगजेब को वापस बुला लिया और गोलकुण्डा मुगलों के अधीन हो गया। औरंगजेब की सिफारिश पर मीर जुमला को मुगल दरबार में उच्च पद प्राप्त हुआ।

अहमदनगर और गोलकुण्डा के बाद शाहजहां ने अपना ध्यान बीजापुर पर केंद्रित किया। बीजापुर राज्य ने 1636 ई. में मुगलों के साथ संधि की थी और उसके बाद के 30 वर्षों तक उस संधि का पालन करता रहा था, जिससे मुगलों ने आक्रामक नीति नहीं अपनायी। 1656 ई. में मुहम्मद आदिलशाह की मृत्यु हो गई तथा अली आदिलशाह शासक बना। इस समय से बीजापुर में गुटबदियां शुरू हो गई। औरंगजेब बीजापुर पर आक्रमण की तलाश में था और असंतुष्ट सरदारों को अपने पक्ष में मिला लेने के बाद उसे यह मौका मिल गया। शाहजहां से अनुमति प्राप्त कर मीर जुमला की सहायता से उसने बीजापुर के विरूद्ध युद्ध की शुरुआत की। आरंभ में बीदर दुर्ग के रक्षक सिद्दी मरजान ने जोरदार संघर्ष किया, परंतु दुर्भाग्यवश दुर्ग में विस्फोट के कारण उसकी मृत्यु हो गई और 1657 ई. में बीदर दुर्ग पर मुगलों का अधिकार हो गया। इस बीच औरंगजेब को सूचना मिली कि बीजापुर का शासक अली आदिलशाह गुलबर्गा के आक्रमण की तैयारियां कर रहा है। उसकी तैयारियों को विफल करने के लिए उसने माबत खां के नेतृत्व में एक सैन्य टुकड़ी गुलबर्गा के लिए भेजी। महाबत खां के नेतृत्व में मुगल सेना बीजापुर की सेना को गुलबर्गा में पराजित करती हुई कल्याणी तक पहुंच गई। कल्याणी में 1657 ई. में बीजापुरी सेना बुरी तरह पराजि हुई। इसी बीच शाहजहां ने औरंगजेब को आदेश दिया कि युद्ध समाप्त कर दिया जाए। बीजापुर के सुल्तान ने मुगल बादशाह की अधीनता स्वीकार कर ली, एक करोड़ रुपए युद्ध का हर्जाना तथा बीदर, कल्याणी, परेंडा, कोंकण तथा बेसी के दुर्ग देना स्वीकार किया और मराठा सरकार शाहजी भोंसले को किसी भी प्रकार की सहायता नहीं देने का वचन दिया। इस प्रकार बीजापुर पर भी मुगलों का अधिकार हो गया।

3.4.5 औरंगजेब की दक्षिण नीति (Deccan policy of Aurangzeb) :––

मुगल शासकों में सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी औरंगजेब ही था। उसने उत्तर एवं सम्पूर्ण दक्षिण भारत पर आधिपत्य की नीति अपनायी। अपने 50 वर्षों के शासनकाल के अंतिम 35 वर्षों में तो उसने केवल दक्षिण भारत में ही कार्य किए। शाहजहां के शासनकाल में ही औरंगजेब ने अहमदनगर पर पूर्ण विजय प्राप्त की थी और बीजापुर तथा गोलकुण्डा की राजनीतिक शक्ति को सीमित कर दिया था। शासक बनने के बाद उसने दक्षिण भारत के सभी राज्यों को अपने प्रत्यक्ष नियंत्रण में लेने का प्रयत्न किया।

1665 ई. में औरंगजेब ने जयसिंह के नेतृत्व में बीजापुर के विरूद्ध अभियान के लिए एक विशाल सेना भेजी। जयसिंह को शिवाजी के दमन का भी आदेश दिया गया। 1665 ई. में ही जयसिंह ने शिवाजी को परास्त कर

उसके साथ पुरंदर की संधि कर ली। बाद में शिवाजी के सहयोग से उसने बीजापुर के विरूद्ध अभियान किया, परंतु अली आदिलशाह ने अपनी रक्षात्मक तैयारियों के द्वारा जोरदार संघर्ष किया और जयसिंह को खाली हाथ लौटना पड़ा। बाद में गोलकुण्डा ने बीजापुर के साथ मित्रता स्थापित कर ली। औरंगजेब ने खिन्न होकर जयसिंह को वापस बुला लिया। 6 सितम्बर, 1666 ई. को बुरहानपुर ने जयसिंह की मृत्यु हो गई। 34 नवम्बर, 1673 ई. को अली आदिलशाह की मृत्यु हो गई और बीजापुर की शक्ति का पतन होने लगा। अली आदिलशाह का चार वर्षीय अल्पवयस्क पुत्र सिंकदर आदिलशाह सुल्तान बनाया गया। इसके बाद बीजापुर में अफ़गानों तथा अबीसीनियाई सामंतों के दो गुट बन गये। इन दोनों गुटों में संघर्ष की स्थिति का लाभ मुगलों ने उठाया। 1676 ई. में मुगल सूबेदार बहादुर खां ने बीजापुर पर आक्रमण किया, परंतु उसे असफलता मिली। इसके बाद औरंगजेब द्वारा दिलेर खां को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया गया। सितम्बर, 1679 ई. में दिलेर खां ने बीजापुर पर आक्रमण कर दिया, परंतु इसी बीच मराठों ने बीजापुर की सहायता कर दी और दिलेर खां को भी असफलता झेलनी पड़ी। औरंगजेब ने उसे भी वापस बुला लिया और स्वयं बुरहानपुर में नवम्बर, 1681 ई. में डेरा डाला। औरंगजेब के नेतृत्व में भी आरंभ में मुगल सेना को असफलता ही हाथ लगी, क्योंकि मराठों एवं गोलकुण्डा राज्यों की नियमित सहायता बीजापुर को मिल रही थी।

13 जुलाई, 1686 ई. में औरंगजेब के नेतृत्व में मुगल सेना ने बीजापुर के लिए प्रस्थान किया। बीजापुर का लगभग एक महीने तक मुगल सेना ने घेरा डाले रखा और 13 सितम्बर, 1686 ई० को सिकंदर आदिलशाह की सेना को आत्मसमर्पण करना पड़ा। औरंगजेब ने सुल्तान सिकंदर आदिलशाह को एक लाख रुपए वार्षिक का पेंशनयाफ्ता बनाकर दौलताबाद के दुर्ग में भेज दिया तथा बीजापुर मुगल साम्राज्य का अंग बनाया गया।

बीजापुर पर विजय के बाद औरंगजेब ने अपना ध्यान गोलकुण्डा पर केंद्रित किया। गोलकुण्डा का तत्कालीन शासक अबुल हसन अयोग्य था। शासन का कार्य भार मदन्ना और अकन्ना नामक दो ब्राह्मण मंत्रियों के हाथों में था। इन दोनों ब्राह्मणों की शासन में प्रधानता तथा मराठों के साथ गोलकुण्डा की मित्रता औरंगजेब को पसंद नहीं थी। 1685 ई. में शाहजादा मुअज्जम के नेतृत्व में एक विशाल सेना गोलकुण्डा अभियान के लिए भेजी गयी। मुअज्जम को युद्ध में तो सफलता नहीं मिली, परंतु प्रलोभन देकर उसने गोलकुण्डा के सेनापति मोहम्मद इब्राहिम को अपने पक्ष में कर लिया। गोलकुण्डा का शासक हैदराबाद से गोलकुण्डा के दरबार में आ गया। बाद में मुअज्जम ने हैदराबाद पर अधिकार कर अबुल हसन को आत्मसमर्पण के लिए बाध्य कर दिया। उसने अबुल हसन के साथ संधि कर ली और गोलकुण्डा ने अधीनता स्वीकार कर ली। परंतु औरंगजेब पूर्ण रूप से गोलकुण्डा का अधिग्रहण करना चाहता था। 7 फरवरी, 1687 ई. को औरंगजेब एक विशाल सेना लेकर गोलकुण्डा में प्रविष्ट हुआ। इस समय उसे गोलकुण्डा के दुर्ग–रक्षक अब्दुर्रज्जाक के साथ कठिन संघर्ष करना पड़ा। 31 सितम्बर, 1687 ई. को

रज्जाक की मृत्यु हो गयी और मुगल सेना की विजय का मार्ग प्रशस्त हो गया। गोलकुण्डा की विजय करने के बाद औरंगजेब ने शासक अबुल हसन को 50 हजार रुपए वार्षिक का पेंशनयापता बनाकर दौलताबाद के दुर्ग में भेज दिया।

औरंगजेब ने अपने शासनकाल में मराठों के विरूद्ध भी नियमित रूप से संघर्ष किया। सर्वप्रथम उसने शाहस्ता खां को दक्षिण का सूबेदार बनाकर शिवाजी का दमन करने के लिए भेजा। उसने चकन और पूना के दुर्गों को जीत लिया तथा पूना में अपना सैनिक शिविर स्थापित किया। किंतु शिवाजी ने 15 अप्रैल, 1663 ई. को रात्रिकाल में आक्रमण कर शाइस्ता खां को घायल कर दिया गया तथा उसके महत्त्वपूर्ण सहयोगियों को मार डाला। 1665 ई. में जयसिंह ने शिवाजी को पराजित किया तथा उसे मुगल दरबार में उपस्थित होने के लिए राजी कर लिया। मुगल दरबार में जय सिंह के आश्वासन के विपरीत उसे अपमान का सामना करना पड़ा और उसे बंदी बना लिया गया। बाद में शिवाजी कारागार से छूटने में सफल रहे और अपने छापामार युद्ध से मुगलों को परेशानी में डाल दिया। परेशान होकर औरंगजेब को 1666 ई. में शिवाजी के साथ संधि करनी पड़ी और उसे स्वदेश शासक मानना पड़ा। 1670 ई. में संधि का उल्लंघन करते हुए शिवाजी ने मुगलों पर आक्रमण करना शुरू कर दिया तथा पुरंदर की संधि के दौरान खोए सारे प्रदेश फिर से प्राप्त कर लिए। इस बीच औरंगजेब ने बहादुर खां को शिवाजी के दमन के लिए भेजा। बहादुर खां के आगमन के पूर्व शिवाजी ने सूरत को दूसरी बार लूटा। लगभग पांच वर्षों तक संघर्ष करने के बाद बहादुर खां को भी पराजय का सामना करना पड़ा।

1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु हो गई और उसके उत्तराधिकारी मुगलों का प्रतिकार करने में असफल रहे। औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर को शंभाजी ने शरण दी और उसे हस्तक्षेप का मौका मिल गया। 1689 ई. में औरंगजेब की सेना ने शंभाजी को कैद कर लिया तथा बाद में उसका वध कर दिया गया। शंभाजी के भाई राजाराम को भी औरंगजेब ने पराजित किया और जिंजी को घेर लिया और अंततः 1698 ई. में जिंजी पर अधिकार कर लिया। 1700 ई. में राजाराम की मृत्यु के बाद ताराबाई ने सत्ता संभाली। ताराबाई के संरक्षण काल में मराठों ने मुगलों के साथ कड़ा संघर्ष किया। मराठों ने एक बार फिर से संगठित होकर अहमदाबाद, मालवा तथा बरार के क्षेत्रों पर फिर से अधिकार कर लिया और औंरगजेब कुछ भी नहीं कर सका। औरंगजेब अपने जीवन के अंतिम वर्षों तक संघर्ष करता रहा, परंतु उसे निश्चित सफलता नहीं मिल सकी।

औरंगजेब के पूर्ववर्ती शासकों ने दक्षिण भारत में सीमित अधिकारिता की नीति अपनाई थी, किंतु औरंगजेब ने पूर्ण अधिग्रहण की नीति अपनायी और अपने लक्ष्य की प्राप्ति में बहुत हद तक सफल भी रहा। परंतु उसकी व्यक्तिगत सफलताओं ने मुगलों की विफलताओं का मार्ग प्रशस्त कर दिया। औरंगजेब की दक्षिण नीति दोषपूर्ण थी, क्योंकि इससे मुगलों को जन–धन की हानि, सैनिक शक्ति में ह्रास, उत्तर भारत में अराजकता, साम्राज्य की प्रतिष्ठा

में कमी और कलात्मक तथा साहित्यिक अवनति को झेलना पड़ा। कुछ इतिहासकारों द्वारा ऐसा माना जाता है कि औरंगजेब की दोषपूर्ण दक्षिण नीति ही मुगलों के पतन का सर्वप्रमुख कारण है। जिस प्रकार मुहम्मद बिन तुगलक ने दक्षिण भारत में अधिग्रहण की नीति अपना कर दिल्ली सल्तनत के पतन का मार्ग प्रशस्त किया, ठीक उसी प्रकार औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त किया। यहां यह तथ्य भी ध्यातव्य है कि औरंगजेब के उत्तराधिकारी व्यक्तिगत रूप से अयोग्य थे और वे औरंगजेब द्वारा विस्तारित साम्राज्य का प्रशासन ठीक से संभाल नहीं सके।

स्पेक्ट्रम (Spectrum) पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन PP. 168–170।

कार्यकलाप–

मुगलों के साथ सिक्खों के संबंध के बारे में चर्चा कीजिए।

3.4.6. औरंगजेब की दक्षिण नीति के परिणाम (Results of the Deccan Policy of Aurangzeb)–

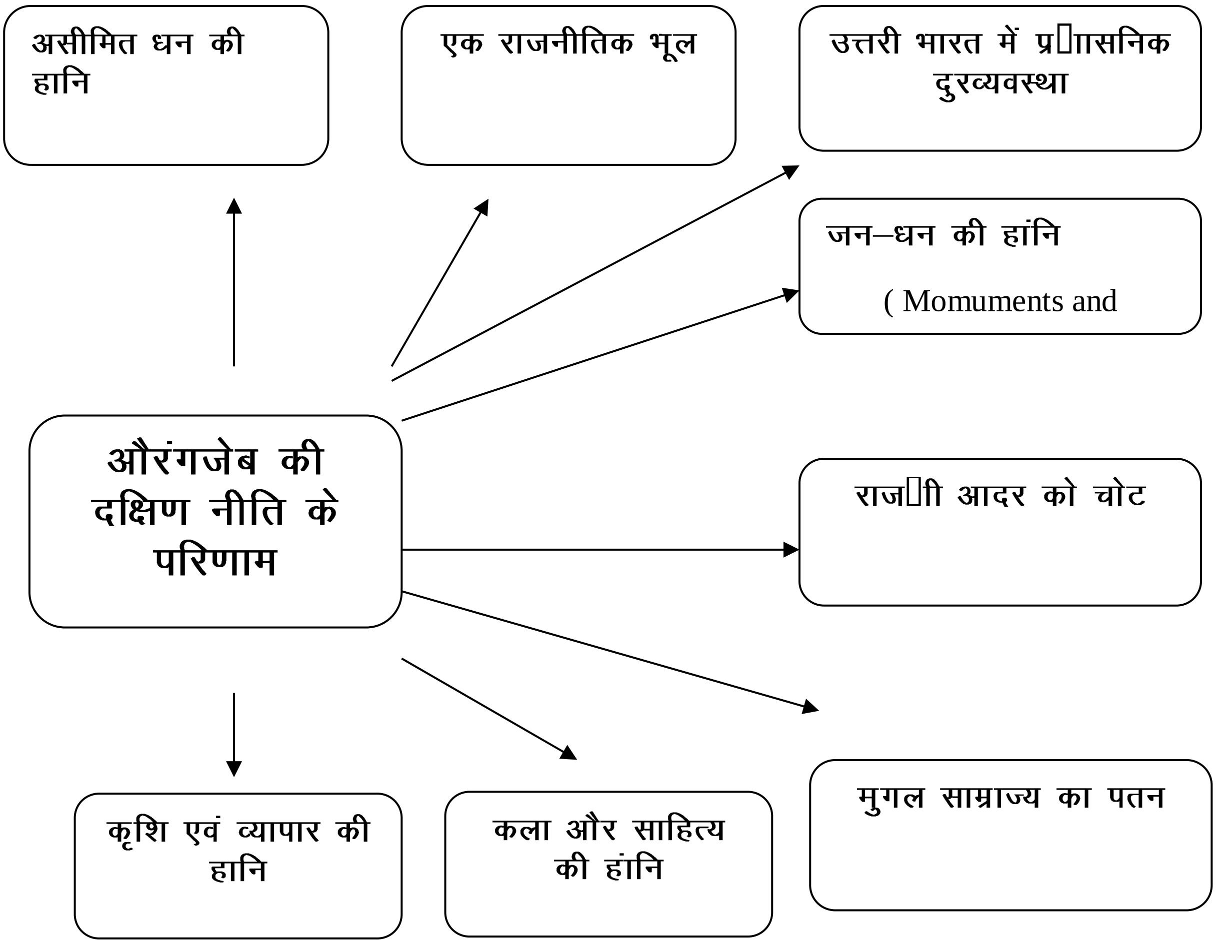

इतिहासकारों ने औरंगजेब की दक्षिण नीति की कड़ी आलोचना की है। उसकी नीति पूर्ण रूप से असफल रही। सम्राट ने अपने शासन काल के पिछले पच्चीस वर्ष दक्षिण के युद्धों में लगा दिए। परन्तु इन युद्धों से साम्राज्य को कोई लाभ न हुआ। इसके विपरीत, इन युद्धों के साम्राज्य के लिए अनेक हानिकारक परिणाम निकले। प्रो० जदुनाथ सरकार के कथनानुसार "ऐसा प्रतीत होता था कि औरंगजेब ने सब कुछ प्राप्त कर लिया था परन्तु वास्तव में वह सब कुछ खो बैठा था। इससे उसके अन्त का प्रारम्भ हुआ। उसके जीवन का सबसे दुखान्त एवं निराशाजनक काल प्रारम्भ हुआ। दक्षिण के युद्ध साम्राज्य के लिए घातक सिद्ध हुए और सम्राट की मृत्यु का कारण बने। डॉ. वी.ए. स्मिथ के शब्दों में "दक्षिण, जहां से वह कदापि न लौटा, उसके शरीर तथा मान दोनों के लिए कब्र सिद्ध हुआ"

(i) एक राजनीतिक भूल – बीजापुर तथा गोलकुण्डा के राज्यों को मुगल साम्राज्य में सम्मिलित करने से साम्राज्य इतना विशाल हो गया कि इसके सभी प्रदेशों पर भली–भांति नियन्त्रण रखना असम्भ्व हो गया। इन शिया राज्यों का मुगल साम्राज्य में विलय एक अन्य दृष्टि से भी राजनीतिक भूल थी। ये राज्य मुगलों तथा मराठों के मध्य एक उपयोगी रोक का काम कर रहे थे, परन्तु अब इस रोक के समाप्त हो जाने से इन दोनों शक्तियों के बीच सीधी टक्कर होने लगी। इन शिया राज्यों को नष्ट करने का एक परिणाम यह भी निकला कि इन राज्यों के बहुत से सैनिक मराठो के साथ मिल गये और इस प्रकार साम्राज्य के शत्रुओं की शक्ति में वृद्धि हुई।

(ii) धन की हानि – दक्षिण में पच्चीस वर्षों तक हुए युद्धों के परिणामस्वरूप जन–धन की हानि हुई। समकालीन विदेशी यात्री, मनूची, जिसने इन युद्धों का आंखों देखा वर्णन किया है। वह लिखता है कि प्रति वर्ष एक लाख सैनिक तथा तीन लाख पशु मौत का शिकार हो गये। 1703 ई० से 1704 ई० के बीच प्लेग के फूटने के कारण 30 लाख से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।

(iii) असीमित धन की आर्थिक हानि– दक्षिण के युद्धों से साम्राज्य को भारी आर्थिक हानि भी हुई और शाही कोष भी रिक्त हो गया। पच्चीस वर्षों से भी अधिक समय तक मुगल सरकार को विशाल सेना तथा सैनिक कर्मचारियों पर खर्च करना पड़ा। इसके अतिरिक्त, युद्ध के सामान तथा खाद्य–सामग्री पर भी अपार धन व्यय हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि युद्ध के अन्तिम वर्षों में शाही कोष में धन का इतना अभाव हो गया कि सैनिकों को तीन वर्ष तक वेतन न मिल सका। सरकार ने उन्हें वेतन के बदले जागीरें तथा अनुदान देने के वचन दिए परन्तु इन वचनों को पूरा न किया जा सका। इसलिए सैनिक असन्तुष्ट हो गए और उनमें से कइयों ने क्रोधित होकर वेतन देने वाले अधिकारियों को मारना–पीटना आरम्भ कर दिया।

(iv) राजशी आदर को चोट – बीजापुर तथा गोलकुण्डा पर अधिकार करने के पश्चात् मुगल सैनिक लगभग बीस वर्षों तक मराठों के विरूद्ध युद्ध करते रहे परन्तु विजय उनसे आगे ही आगे भागती गई। परिणामस्वरूप मुगल सैनिको का उत्साह मन्द पड़ गया और उन्हें ये युद्ध व्यर्थ प्रतीत होने लगे। मुगल सैनिक, अधिकारी एवं मनसबदार इन युद्धों से इतने तंग आ गये कि उनमें से एक ने वापिस दिल्ली जाने की आज्ञा प्राप्त करने के लिए सम्राट को एक लाख रूपये की रिश्वत पेश की। सैनिक संगठन दुर्बल पड़ गया और सेना में अनुशासन न रहा। कई वर्षों तक युद्ध करने के बावजूद मुगल सेना मराठों की शक्ति का दमन करने में असफल रही। इससे मुगल सेना की दुर्बलता प्रकट हुई और शाही सम्मान को गहरा आघात पहुँचा।

(v) कृषि एवं व्यापार की हानि – दक्षिण के युद्धों का कृषि तथा व्यापार पर भी बुरा प्रभाव पड़ा। 1,77,000 की विशाल मगुल सेना के अभियानों तथा मराठो की लूटमार के परिणामस्वरूप दक्षिण के बहुत से प्रदेश वीरान हो गए और वहाँ खेतों से हरी–भरी फसलों का नामोनिशान तक न रहा। मुगलों तथा मराठों ने कृषको का शोषण किया और उन बेचारों को भूख तथा अकाल का सामना करना पड़ा। लगातार युद्धों के कारण व्यापार की भी अवनति हुई, क्योंकि युद्ध की अवस्था में व्यापारियों के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर व्यापारिक सामान ले जाना सम्भव नहीं था। व्यापारी दक्षिण में जाने का साहस नहीं रखते थे और काफिले भी सैनिको के सरंक्षण में ही आ जा सकते थे। ऐसी अवस्था में घरेलू उद्योग को भी काफी हानि पहुँची।

(vi) उत्तरी भारत में प्रशासनिक दुरव्यवस्था –दक्षिणी युद्धों के कारण सम्राट तथा मुगल अधिकारियों को लगभग पच्चीस वर्ष तक राजधानी से दूर रहना पड़ा। साम्राज्य की आय का अधिकतर भाग भी इन युद्धों पर खर्च करना पड़ा। इन सब का परिणाम यह हुआ कि उत्तरी भारत में प्रशासनिक व्यवस्था बिगड़ने लगी। स्थानीय कर्मचारी लालची तथा अत्याचारी हो गये और वे निर्दोष लोगों को बलपूर्वक लूटने लगे। केन्द्रीय सरकार की दुर्बलता के कारण प्रान्तीय सूबेदार व्यावहारिक रूप से स्वतन्त्र हो गये। स्थिति का लाभ उठा कर मथुरा के जाटों, राजस्थान के राजपूतों, बुन्देलखण्ड के बुन्देलों, पंजाब के सिक्खों, मालवा तथा बंगाल के पठानो ने विद्रोह कर दिए जिन का दमन न किया जा सका।

(vii) कला और साहित्य की हानि – मुगल सम्राट तथा प्रमुख मुगल सरदारों के पच्चीस वर्षों तक दक्षिणी युद्धों में व्यस्त रहने के कारण कला एवं साहित्य के विकास की ओर ध्यान न दिया जा सका। औरंगजेब के समय में भवन निर्माण कला, चित्रकला, साहित्य आदि का विकास जिसके लिए औरंगजेब के पूर्वाधिकारी इतिहास में प्रसिद्ध हैं, रूक गया।

(viii) मुगल साम्राज्य का पतन – औरंगजेब की दक्षिण नीति मुगल साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण सिद्ध हुई। सर जदुनाथ सरकार के कथनानुसार जिस प्रकार का स्पेन का अभियान नेपोलियन प्रथम के लिए एक घातक फोड़ा सिद्ध हुआ। उसी प्रकार दक्षिण अभियान औरंगजेब के लिए घातक सिद्ध हुआ। वास्तव में औरंगजेब की दक्षिण नीति केवल उसके लिए ही नहीं बल्कि साम्राज्य के लिए भी एक घातक फोड़ा सिद्ध हुई। इसके परिणामस्वरूप साम्राज्य को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा, देश में अशान्ति तथा अव्यवस्था फैल गई और विभिन्न प्रदेशो में विद्रोह खड़े हो गए। इस प्रकार साम्राज्य का विघटन आरम्भ हो गया।

ए०सी० अरोड़ा – भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल PP 185–187।

3.5. प्रगति समीक्षा (Check your progress) :-

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए (Fill in the blanks) :-

IX. औरंगजेब का जन्म .... ई. .... नामक स्थान पर हुआ था।

X. मेवाड़ की संधि .... ई. में हुई थी।

XI. औरंगजेब की मृत्यु .... को हुई थी।

XII. .... को जिंदापीर के नाम से भी जाना जाता था।

XIII. जहॉगीर की मृत्यु .... को हुई।

XIV. शाहजहॉ का तीसरा बेटा .... था।

XV. गुरू तेगबहादुर की मृत्यु के बाद .... गुरू बने।

XVI. गुरू नानक का जन्म .... ई. में हुआ।

XVII. शाहजहॉ की मृत्यु .... में हुई थी।

XVIII. शिवाजी की मृत्यु .... ई. हुई।

भाग (ख) उचित मिलान (Matching Test) :-

(अ)	(ब)
(1) चांद बीबी का सम्बन्ध था।	(क) नूरजहॉ
(2) गुरू तेग बहादुर को मृत्यदंड	(ख) 1638 ई.
(3) महाराणा प्रताप सिंहासन बैठा	(ग) द्वितीय स्वर्णकाल

(4)	शाहजहॉ गद्दी पर बैठा	(घ) गुरू गोबिन्द सिंह
(5)	जहॉगीर ने विवाह किया	(ड़) 1573 ई.
(6)	सिक्खों के 10 वें गुरू थे	(च) औरंगजेब
(7)	शाहजहॉ के शासनकाल को	(छ) अहमदनगर

3.6. सारांश (Summary) :-

- औरंगजेब का जन्म 34 अक्टूबर, 1618 ई० में दोहाद नामक स्थान पर हुआ था।
- औरंगजेब शाहजहां का तीसरा पुत्र था। शाहजहां के चार पुत्र थे – 1. दारा 3. शुजा 3. औरंगजेब 4. मुराद
- 'ओरछा' के जुझार सिंह के विरूद्ध औरंगजेब को प्रथम युद्ध का अनुभव प्राप्त हुआ। 18 मई, 1637 को फारस के राज घराने की दिलरास बानो बेगम के साथ औरंगजेब का निकाह हुआ।
- औरंगजेब को 'जिंदापीर' के नाम से भी जाना जाता था।
- औरंगजेब ने सिक्कों पर कलमा खुदवाना, नौरोज त्यौहार मनाना, भांग की खेती, गाने बजाने आदि पर रोक लगा दी थी।
- औरंगजेब ने अपने शासन काल के ग्यारहवें वर्ष में 'झरोखा दर्शन' एवं बारहवें वर्ष में 'तुलादान' जैसी प्रथा को प्रतिबन्धित कर दिया, इन्होंने 1679 में पुनः 'जजिया कर' का आदेश दिया।
- औंरगजेब ने सिखों के नौवें गुरू तेग बहादुर का इस्लाम धर्म न स्वीकार करने के कारण कत्ल करवा दिया।
- औंरगजेब ने 'मुहतसिब (सार्वजनिक सदाचार निरीक्षक) नाम के अधिकारी की नियुक्ति की।
- मुगल काल में भूमि का वर्गीकरण पोलज, परती, छच्छर एवं बंजर भूमि में किया गया था।
- 1669 ई० में औंरगजेब ने बनारस के 'विश्वनाथ मंदिर' एवं मथुरा के केशव राय मंदिर को तुड़वा दिया। उसने शरीयत के विरूद्ध लिए जाने वाले लगभग 80 करों को समाप्त करवा दिया। इन्हीं में 'आबवाब' नाम से जाना जाने वाला 'शहदारी' (परिवहन कर) ओर 'पानडारी' (चुंगी कर) नामक स्थानीय कर भी शामिल थे। औरंगजेब 'दाकल हर्ब' (काफिरों का देश भारत) को 'दारूल इस्लाम' (इस्लाम का देश) में परिवर्तितत करने को ही अपना महत्वपूर्ण लक्ष्य मानता था।
- आधुनिक इतिहासकारों का मत है कि औरंगजेब की धार्मिक नीति, धार्मिक कट्टरता से कम तात्कालीन राजनीतिक आवश्यकता से अधिक प्रेरित थी।
- औरंगजेब के चार पुत्र थे – 1. मुहम्मद मुअज्जम 3. शाह आलम 3. कामबख्श 4. अकबर

- औरंगजेब की मृत्यु 4 मार्च, 1707 ई० को हुई। दौलताबाद में स्थित फकीर खुरहानुद्दीन की कब्र के अहाते में उसे दफना दिया गया।
- अकबर की दक्षिण नीति (डेक्कन नीति) के दो मुख्य उद्देश्य थे पहला – अकबर एक उच्च कोटि का साम्राज्यवादी था जो उत्तरी भारत को विजय करके संतुष्ट न हुआ अपितु अपने साम्राज्य का विस्तार दक्षिण भारत में भी करने की लालसा रखता था। दूसरा– वह दक्षिण भारत में पुर्तगालियों की बढ़ रही शक्ति को कुचलना चाहता था। क्योंकि वे दक्षिण के लोगों को काफी हानि पहुँचा रहे थे।
- 1574 ई० में अहमदनगर के शासक ने बरार को अपने राज्य में मिला लिया। इस प्रकार दक्षिण भारत में चार मुख्य राज्य रह गये – खानदेश, अहमदनगर, बीजापुर तथा गोलकुण्डा।
- अहमदनगर की विजय (1595–1600) और खानदेश की विजय (1600–1601) ।
- 1608 ई० में जहांगीर ने अब्दुर्रहीम खान–ए–खाना के नेतृत्व में एक सेना दक्षिण विजय के लिए भेजी, परंतु सफलता नहीं मिली।
- 1665 ई० में औरंगजेब ने जयसिंह के नेतृत्व में बीजापुर के विरूद्ध अभियान के लिए एक विशाल सेना भेजी। जयसिंह ने शिवाजी को परास्त कर उसके साथ पुरंदर की संधि कर ली।
- जहाँगीर की मृत्यु 39 अक्टूबर, 1637 ई0 को हुई।
- 1666 –शाहजहाँ की मृत्यु, मुगल दरबार में शिवाजी बंदी (मई), नजरबंदी से मुक्त (अगस्त)।
- अकबर की मृत्यु 16 अक्टूबर 1605, जहाँगीर गद्दी पर 34 अक्टूबर 1605 ई० को बैठा।
- चांद बीबी संरक्षिका थी – अहमदनगर के शिशु शासक की।

3.7. संकेत–सूचक (Key-Words)

शब्द (Words)	अर्थ (Meaning)
• आबवाब –	शहदारी या परिवहन कर।
• पानडारी –	चुंगी कर
• 'दारूल इस्लाम' –	इस्लाम का देश
• कूटनीति –	रणनीति या चालाकी

3.8. स्व–मूल्याकंन परीक्षा (Self Assessment Test)(SAT)

भाग (क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple choice question)(MCQS)

(i) औरंगजेब ने हिन्दुओं पर जजिया कर लगाने का फरमान जारी किया –

(a) 1664 ई० में (b) 1679 ई० में (c) 1684 ई० में (d) 1689 ई० में

(ii) औरंगजेब के आदेश पर सिक्खों के नौवें गुरू तेग बहादुर साहिब को शहीद कर दिया गया।

(a) 1665 ई० में (b) 1675 ई० में (c) 1686 ई० में (d) 1699 ई० में

(iii) औरंगजेब की धार्मिक असहनशीलता की नीति के कारण नारनौल में विद्रोह कर दिया।

(a)जाटों ने (b)राजपूतों ने (c)मराठों ने (d)सतनामियों ने

(iv) औरंगजेब ने दरबार में ईरानियों के इस त्योहार को मनाने की मनाही कर दी।

(a) ईद–उल–फितर (b) नौरोज (c) ईद–उल–जहा (d) मुहरम

(v) असीरगढ़ के दुर्ग को विजय किया?

(a) अकबर ने (b) जहांगीर ने (c) शाहजहां ने (d) औरंगजेब ने

(vi) चांद बीबी संरक्षिका थी।

(a) खानदेश के शिशु शासक की (b) बीजापुर के नाबालिग शासक की

(c) अहमदनगर के शिशु शासक की (d) गोलकुण्डा के शिशु शासक की

(vii) शाहजहा के शासन काल में दक्षिण के प्रदेशों का दो बार सूबेदार नियुक्त हुआ –

(a) राजकुमार द्वारा (b) राजकुमार मुराद (c) राजकुमार औरंगजेब (d) राजकुमार शुजा

(viii)बीजापुर तथा गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में सम्मिलित किया।

(a) अकबर ने (b) जहाँगीर ने (c) शाहजहां ने (d) औरंगजेब ने

(ix) शाहजहाँ की मृत्यु हुई ?

(a) 1666 ई० में (b) 1605 ई० में (c) 1707 ई० में (d) 1637 ई० में

(x) निम्न में शाहजहां का पुत्र कौन सा नहीं है ?

(a) दारा (b) शुजा (c) औरंगजेब (d) शाह आलम

उत्तर –(i) ख (ii) ख (iii) घ (iv) ख (v) क (vi) ग (vii) ग (viii) घ (ix) क (x) घ

भाग (ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type question)

प्र.1 अकबर और शाहजहाँ की दक्षिण नीति का विवरण दीजिए।

प्र.2 औरंगजेब के राजपूतों के साथ संबंध कैसे थे? औरंगजेब की दक्षिण नीति और धार्मिक नीति का संक्षिप्त में वर्णन करें।

प्र.3 औरंगजेब के शासन काल में मुगलों तथा सिक्खों के संबंधों का वर्णन कीजिए।

प्र.4 मुगलों की डेक्कन (दक्षिण) नीति पर चर्चा करें।

प्र.5 औरंगजेब के प्रारंभिक जीवन के बारे में आप क्या जानते है? औरंगजेब की दक्षिण नीति के परिणामों की व्याख्या करें।

प्र.6 (i) मुगल–सिक्ख संबंधों पर नोट लिखिए।

(ii) शाहजहाँ की दक्षिण नीति पर नोट लिखिए।

2.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to check your Progress) :-

भाग (क) :–

(I) 34 अक्टूबर, 1618, दोहाद (II) 1681 (III) 4 मार्च, 1707 ई.

(IV) औरंगजेब (V) 39 अक्टूबर, 1637 ई. (VI) औरंगजेब

(VII) गोविन्द सिंह (VIII) 1469 ई. में (IX) 1666 ई. (X) 1680

भाग ख :–

(1) छ (2) च (3) ड़ (4) ख (5) क (6) घ (7) ग

3.10. संदर्भ ग्रंथ एवं सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Reading)

- अविनाश चंद्र अरोड़ा – भारतीय इतिहास का इतिहास (1536–1857) प्रदीप पब्लिकेशंस, जालंधर,3007।
- यूनीक सामान्य अध्ययन – डॉ० विनय कुमार सिंह, युनिक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- डॉ० गोपाल प्रसाद, डॉ० जयपाल सिंह, डादीपिका यादव – भारत का इतिहास, लक्ष्मी पब्लिशिंग हाउस, रोहतक,3018।
- बी० एल० ग्रोवर, अलका महता, यशपाल, – आधुनिक भारत का इतिहास :एक नवीन मूल्यांकन,एस0चंद, नई दिल्ली, 3015।
- मध्यकालीन भारत खंड 3 – डॉ० हरिशचन्द्र वर्मा , हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, नई दिल्ली, 1993।
- सुमित सरकार – आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 3009।
- डा० आर० एल० शुक्ला – आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, नई दिल्ली, 3017 ।
- आधुनिक भारत का इतिहास – एम०एस० जैन, न्यू एज पब्लिशर्स,नई दिल्ली, 1993।
- मध्यकालीन भारत (1000–1761 ई०) एल०पी० शर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, नई दिल्ली 3018।
- J.F. Richards- The Mughal Empire- Cambridge University Press, 1996

<table>
<tr><td colspan="2">B.A HISTORY PART- IInd YEAR SEMESTER-IIIrd</td></tr>
<tr><td>COURSE CODE: 401
LESSON NO. 04</td><td>AUTHOR – MOHAN SINGH BALODA</td></tr>
<tr><td colspan="2">मुगल प्रशासन (Mughal Administration)</td></tr>
</table>

अध्याय संरचना (Structure Lesson)

4.1. अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

4.2. परिचय (Introduction)

4.3. विषय वस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text)

- 4.4.1 मुगल प्रशासन का स्वरूप (Nature of Mughal Administration)
- 4.4.2 केन्द्रीय – प्रशासन (Central Administration)
- 4.4.3 केन्द्रीय शासन व्यवस्था के दोष (Defects of Central Administration)

4.4. विषय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण (Further Main Body of the Text)

- 4.4.1 प्रांतीय राजस्व प्रणाली (प्रान्तीय प्रशासन) (Provincial Administration)
- 4.4.2 प्रान्तीय प्रशासन की कुशलता के कारण (Causes of the efficient Working of Provincial Administration)
- 4.4.3 सरकार या जिले का प्रशासन (Administration of Sarkar)
- 4.4.4 महल या परगना (अनुमण्डल) का प्रशासन (Administration of Pargana)
- 4.4.5 दीह या गांवों का प्रशासन (Administration of Village)
- 4.4.6 निष्कर्ष (Conclusion)

4.5. प्रगति समीक्षा (Check your progress)

4.6. सारांश (Summary)

4.7. संकेत–सूचक (Key-Words)

4.8. स्व–मूल्याकंन परीक्षा (Self Assessment Test)(SAT)

4.9. प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to check your Progress)

4.10. संदर्भ ग्रंथ एवं सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Reading)

4.1. अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives) :-

- जब आप इस अध्याय को समझ पाएंगे तो आप इस योग्य हो जाएंगे (बन जाएंगे)।
- हमारा अतीत किस प्रकार से हमें प्रभावित करता है।
- छात्रों को मुगल साम्राज्य की जानकारी देकर उसके प्रति रूचि विकसित करना।
- मुगल साम्राज्य के शासन –प्रबंधन से परिचित करवाना।
- मुगल शासन– प्रबंधन का स्वरूप क्या था ?
- केन्द्रीय और प्रांतीय शासन प्रणाली को विकसित रूप देने में अकबर की भूमिका से अवगत करवाना।
- वर्तमान समय में मुगल शासन प्रबंधन की प्रासांगिकता पर चर्चा करना।
- अकबर की समद्ध शासन प्रणाली को विभिन्न भागों में बांट कर अध्ययन करना।
- इतिहास सिर्फ इतिहास नहीं है। यह वर्तमान को भी प्रतिबिम्बित करता है।

4.2. परिचय (Introduction) :-

मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था का गठन इसके तीसरे बादशाह अकबर द्वारा किया गया, जिसकी शासन व प्रणाली अन्य राज्यों क शासकों से भिन्न व सुदृढ़ थी। क्योंकि मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर और उसके उत्तराधिकारी हुमायूं को आंतरिक तथा बाह्य संघर्षों से फुरसत नहीं मिली, इसके साथ–2 उनमें प्रशासनिक व्यवस्था के संगठन की समझ भी नहीं थी। मुगल शासन प्रणाली नौकरशाही पद्धति पर आधारित थी। इस प्रशासनिक व्यवस्था में केंद्रीय शासन के अतिरिक्त प्रांतीय शासन की भी व्यवस्था थी। मुगल शासन व्यवस्था वंशानुगत परंपरा पर आधारित थी। इसलिए आरंभ के छह शासकों ने योग्यता की बदौलत साम्राज्य का विस्तार किया, लेकिन उत्तरवर्ती शासकों में योग्यता की कमी होने के कारण मुगल साम्राज्य का पतन हो गया।

डॉ वी० ए० स्मिथ के अनुसार, "अकबर की प्रशासनिक संस्थाओं का न केवल ऐतिहासिक महत्त्व है अपितु वे अब तक प्रचलित शासन–प्रणाली का भी कुछ सीमा तक आधार हैं।"

अकबर पहला मुगल सम्राट् था जिसने कुशल एवं सुदृढ़ शासन– प्रबन्धन की नींव रखी थी। उसकी शासन प्रणाली दिल्ली के सुल्तानों की राज्य–प्रणाली से अलग तथा अत्यधिक श्रेष्ठ थी। इस अध्याय में अकबर की समद्ध शासन प्रणाली के विभिन्न भागों पर विस्तृत चर्चा के साथ मुगल साम्राज्य की शासन प्रणाली को अकबर ने किस प्रकार विभिन्न भागों में बांटा, इसकी जानकारी से विद्यार्थियों को अवगत करवाया जाएगा।

मुगलकालीन प्रशासन के बारे में कुछ महत्वपूर्ण कृतियों से जानकारी मिलती है – आईन–ए–अकबरी, दस्तूर–उल–अमल, अकबरनामा, इकबालनामा, जहाँगीरी, तबकाते– अकबरी, पादशाहनामा, तथा तुजुक–ए–जहाँगीरी, मुन्तखाब– उल –तवारीख आदि। इसके अतिरिक्त कुछ विदेशी पर्यटक जैसे रो, हॉकिन्स, वर्नियर, डिटेल एवं टेरी से भी मुगलकालीन प्रशासन के बारे में जानकारी मिलती हैं।

4.3. विषय वस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text) :-

4.4.1 मुगल प्रशासन का स्वरूप (Nature of Mughal Administration):-

मुगल कालीन शासन व्यवस्था अत्यधिक केन्द्रीकृत नौकरशाही व्यवस्था थी। इसमें भारतीय तथा विदेशी (फारसी–अरबी) तत्वों का सम्मिश्रण था। मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर ने दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों से अलग 'पादशाह' की उपाधि ग्रहण की। पादशाह शब्द के 'पाद' का शाब्दिक अर्थ स्थायित्व एवं स्वामित्व तथा शाह का अर्थ है मूल एवं स्वामी या शक्तिशाली राजा जिसे अपदस्थ न किया जा सके। मुगल साम्राज्य क्योंकि पूर्ण रूप से केन्द्रीकृत था, इसलिए 'पादशाह' की शक्ति असीम थी। नियम बनाना, उसको लागू करना, न्याय करना आदि उसके सर्वोच्च अधिकारी थे। मुगलकालीन शासको में बाबर, हुमायूँ और औरंगजेब ने अपने शासन का आधार कुरान को बनाया, परन्तु इस परम्परा का विरोध करते हुए अकबर ने अपने आपको साम्राज्य की समस्त जनता का शासक बताया, उसने राजा को मनुष्यों में उतम एवं पृथ्वी पर ईश्वर की छाया का प्रतिनिधि बताया। मुगल बादशाह की शासन की सम्पूर्ण शक्तियों को अपने में समेटे हुए पूर्णरूप से निरकुंश थे परन्तु स्वेच्छाचारी नहीं थे। इन्हें 'उदार निरकुंश' शासक भी कहा जाता था क्योंकि अकबर ने साम्राज्य सुदृढ़ एवं सुयोग्य शासन प्रणाली देकर इसकी अमिट छाप अन्य राज्यों के शासकों पर छोड़ी।

मुगलों ने भारत में आकर दिल्ली सल्तनत की प्रचलित शासन व्यवस्था में काफी परिवर्तन किया। मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था का गठन अकबर द्वारा किया गया, बाबर और उसके उत्तराधिकारी हुमायूं को आंतरिक तथा बाह्य संघर्षों से फुरसत नहीं मिली, इसके साथ उनमें प्रशासनिक व्यवस्था के संगठन की समझ भी

नहीं थी। इस प्रशासन में केन्द्रीय शासन के अतिरिक्त प्रांतीय शासन की भी व्यवस्था थी। मुगल शासन–व्यवस्था वशांनुगत परंपरा पर आधारित थी। मुगल शासन–व्यवस्था का ढ़ांचा निम्न प्रकार से है–

4.3.2 केन्द्रीय – प्रशासन (Central Administration):-

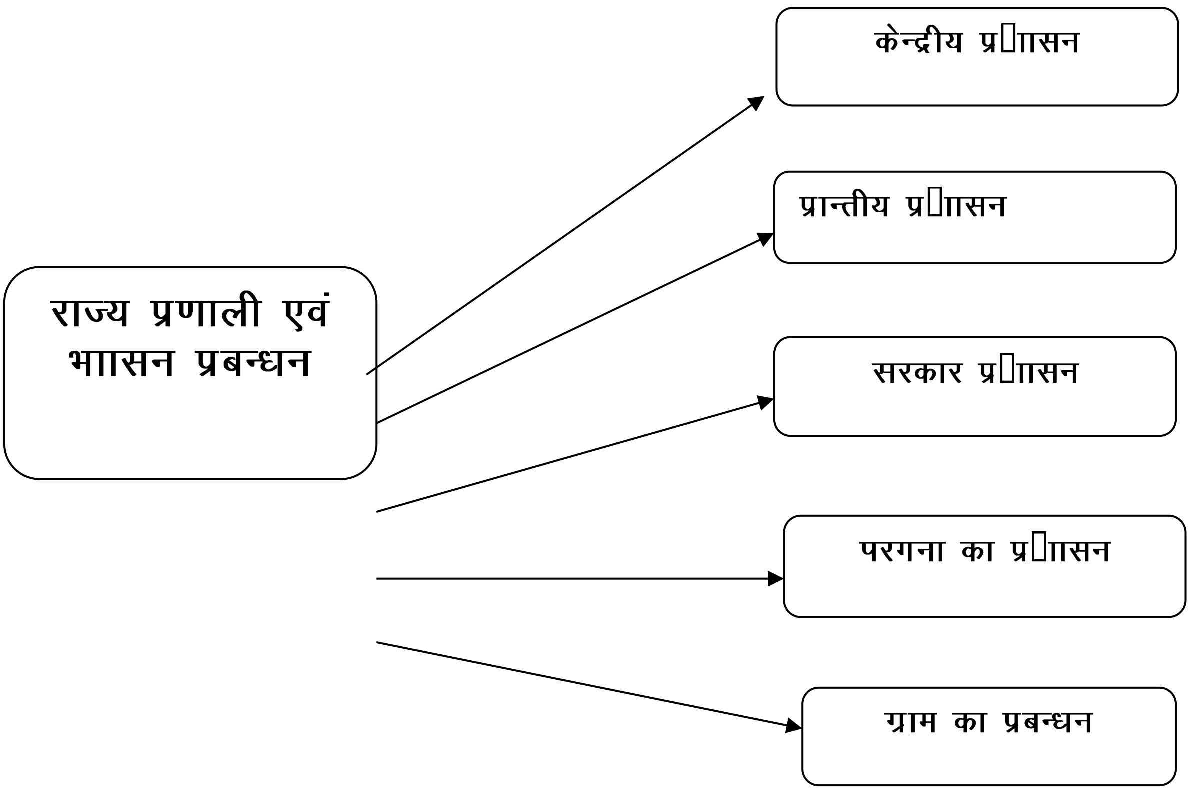

शासन–प्रबंध का मुखिया बादशाह अथवा सम्राट होता था उसके असीमित अधिकारी थे। केन्द्रीय शासन व्यवस्था का निर्माण मुगल साम्राज्य के केंद्रीय स्वरूप के संचालन के लिए किया गया था। इसे सुचारू रूप से चलाने के लिए कई अधिकारी होते थे। इन अधिकारियों में आधुनिक प्रधानमंत्री के समान एक प्रधान अधिकारी होता था जिसे 'वकील' कहा जाता था। केन्द्रीय प्रशासन के अन्तर्गत निम्न अधिकारी होते थे –

(1) वकील–ए–मुतलक – यह पद सम्राट के बाद दूसरा प्रमुख पद था इसकी नियुक्ति सम्राट द्वारा की जाती थी। यह पद वरिष्ठ सामंतो तथा सम्राट के विश्वासपात्रों को प्रदान किया जाता था। मुगल साम्राज्य के आरंभिक वर्षों में वकील (प्रधानमंत्री) को विशेष अधिकार प्राप्त थे, पर धीरे–धीरे इसकी शक्तियां सीमित कर दी गई। अकबर ने 1564 ई० में इस पद का सृजन किया था तथा पहला वकील मुनीम खां को बनाया गया था।

(2) दीवान–ए–आला या वजीर – यह वित्त विभाग का प्रधान होता था। इसका नियंत्रण राज्य के राजस्व एवं वित्त पर था। वजीर वेतन आदि मामलों के साथ–साथ सामानों का भी लेखा –जोखा रखता था इसके अधीन निम्नलिखित पदाधिकारी कार्य करते थे –

(i) दीवान–ए–तन – यह नकद तनख्वाहों से संबंधित पदाधिकारी होता था। इसके पास उन सभी व्यक्तियों का लेखा होता था, जिसे नकद वेतन दिए जाने का प्रावधान था। लेकिन इसकी गतिविधियों पर दीवान–ए–आला का नियंत्रण रहता था।

(ii) दीवान–ए–जागीर – राजस्व वसूली के कार्य में लगे अधिकारियों को वेतन प्रदान करना इसका कार्य था। वेतन का स्वरूप नकद तथा अन्य रूप में था जैसे–भूमि आदि।

(iii) दीवान–ए–बुयुतात – यह कारखानों की वित्तीय स्थिति की देखभाल करता था। इस पर दीवान–ए–आला के साथ–साथ मीर सामान का भी नियंत्रण रहता था।

(iv) दीवान–ए–सादात – इसके पास धार्मिक मामलों का लेखा–जोखा रहता था। मंदिरो को दी जाने वाली भूमि से वसूले गए तीसवें भाग के राजस्व का लेखा भी इसी के पास होता था।

(v) दीवान–ए–तबजीह – यह सैन्य मामलो का लेखा–जोखा रखता था।

(vi) दीवान–ए–खालसा – खालसा भूमि का लेखा–जोखा इसी के पास होता था। इनसे राजस्व आदि की वसूली वह दीवान–ए–आला के निर्देशानुसार करता था।

3. मीर बख्शी – यह सेना विभाग का अध्यक्ष था। इस पद की महत्ता मुगलो की मनसबदारी प्रथा के कारण और बढ़ गई, क्योंकि सभी मनसबदारों के वेतन की देखरेख वही करता था तथा दीवान–ए–आला द्वारा उसी की अनुशंसा पर वेतन का भुगतान किया जाता था। मीर बख्शी के अधीन दो मुख्य सहायक अधिकारी होते थे, जिन्हें 'बख्शिये– हुजूर' तथा 'बख्शिये –शाहगिर्द' कहा जाता था। मीर बख्शी के कार्यों में सैनिको की नियुक्ति सैनिको के वेतन की व्यवस्था, सैनिको का प्रशिक्षण एवं सैन्य व्यवस्था में अनुशासन बनाए रखना आदि शामिल था।

4. सद्र–उस–सुदूर या सद्रेजहां – यह धार्मिक मामलों का प्रधान होता था इसका कार्य धार्मिक मामलों में बादशाह को सलाह देना था। राज्य के द्वारा दरिद्रो, अनाथों, संतो एवं विधवाओं को दिए जाने वाले अनुदानो दानों एवं भूमिदानों की देखरेख करना इसका प्रमुख कार्य था। साम्राज्य के प्रमुख सद्र को सद्र–ए–जहां अथवा सद्र–ए–कुल या सद्र–उस–सुदूर आदि नामों से जाना जाता था।

5. काजी–उल–कुजात – यह न्याय विभाग का प्रधान होता था। इस पद पर कई बार सद्र–उस–सुदूर को भी आसीन कर दिया जाता था, क्योंकि शरीयत पर आधारित कानून की व्यवस्था धार्मिक अधिकारी अच्छी तरह कर सकता था। यह प्रांतों एवं नगरों में काजियों की नियुक्ति करता था। काजी–उल–कुजात की नियुक्ति सम्राट द्वारा की जाती थी। क्योंकि न्याय का सर्वोच्च अधिकारी सम्राट स्वयं होता था।

6. मीर सामान या खान–ए सामान – यह राजदरबार में काम आने वाली सभी वस्तुओं की आपूर्ति की व्यवस्था करता था। कालांतर में इसका पद मीर बख्शी के पद से महत्त्वपूर्ण हो गया, क्योंकि वह सीधे शाही व्ययों के ब्योरे पर स्वीकृति ले सकता था। मीर सामान के अधीन दीवान–ए–बयूतात, मुशरिफ दारोगा–ए–बयूतात तथा तहसीलदार आदि कार्य करते थे। साम्राज्य के सभी भण्डार और कोष उसी के अधीन थे।

7. मीर आतिश – यह शाही तोपखाने का प्रधान था। तोप चलाने वाले सैनिको तथा बंदूक चलाने वाले सैनिको पर नियंत्रण रखता था। इसे दारोगा–ए–तोपखाना भी कहा जाता था।

8. दारोगा–ए–टकसाल – यह विभिन्न टकसालो में ढाली जाने वाली मुद्राओं एवं सिक्कों की एकरूपता की जांच करता था।

9. दीवान–ए–अखबारात – सम्पूर्ण साम्राज्य में घटित होने वाली घटनाओं की सूचना इसके पास होती थी। वह उन सूचनाओं को सम्राट तक पहुंचाता था। औरंगजेब ने अपने शासनकाल में इस पद को समाप्त कर दिया।

10. दारोगा–ए–डाक चौकी – यह सूचना एवं गुप्तचर विभाग का अध्यक्ष होता था। यह राज्य की सभी गुप्त सूचनाओं को सम्राट तक पहुंचाता था। औरंगजेब ने अपने शासनकाल में पद को समाप्त कर दिया।

11. मीर मुंशी – यह शाही पत्रों को लिखने का कार्य करता था।

12. मीर बहर – आंतरिक जलमार्गों तथा छोटे जहाजो के निरीक्षण के लिए इस पद का सृजन किया गया था। यह चुंगी आदि का भी दायित्व संभालता था।

13. मुहतसिब – यह जनता के नैतिक मूल्यों का निरीक्षक था। इसका कार्य शरीयत के विरोधियों पर नियन्त्रण रखना तथा सार्वजनिक सदाचार को बनाए रखना था।

स्पेक्ट्रस पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन PP 172–174।

4.3.3 केन्द्रीय शासन व्यवस्था के दोष।

1) मुगलों की केन्द्रीय व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष यह था कि इसकी सफलता सम्राट पर निर्भर करती थी।

2) अगर सम्राट शक्तिशाली होता तो सब ठीक तरह से चलता परन्तु दुर्बल सम्राट के समय में देश में अशान्ति, षड्यन्त्र एवं अन्य गड़बड़ी होने लगती।

3) औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् इस व्यवस्था के दोष स्पष्ट होने लगे।

4) परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य पतन की तरफ अग्रसर होने लगा।

5) इस व्यवस्था का दूसरा दोष यह था कि नियुक्तियाँ, पदोन्नति एवं स्थानान्तरण में योग्यता एवं अनुभव पर सदा बल नहीं दिया जाता था। इस व्यवस्था ने दिन–प्रतिदिन मन्त्रियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों के गौरव में वृद्धि की। जिससे शासन एवं समाज में उनकी शक्ति बढ़ी।

6) अधिकारियों के अत्यधिक वेतनों ने उन्हें विलासी एवं लालची बनाया। इस प्रकार नौकरशाही की बढ़ती शक्ति साम्राज्य के पतन के लिए एक कारण बनी।

4.3. विषय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण (Further Main Body of the Text):-

4.4.1 प्रांतीय राजस्व प्रणाली (प्रान्तीय प्रशासन) (Provincial Administration):-

मुगलकालीन शासन प्रणाली में सम्पूर्ण साम्राज्य का क्रमिक स्तर इस प्रकार था।

→ साम्राज्य > सूबा या प्रांत > सरकार > परगना > दस्तूर ग्राम या मबदा या दीह

सूबा – अकबर के समय में पूरे मुगल साम्राज्य को 12 सूबों या प्रांतों में विभाजित किया गया था। सूबा राज्य के बाद दूसरी बड़ी ईकाई थी। 1581 ई. में सूबों की संख्या 12 तथा औरंगजेब के शासनकाल में सूबों की संख्या 21 थी। प्रांतीय शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रांतीय स्तर पर विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति की जानी थी।

सूबे में सामान्यतया निम्नलिखित अधिकारी होते थे –

1) सूबेदार – यह प्रांतीय शासन का प्रधान होता था। इसे नाजिम या सिपहसालार (अकबर के समय में) या साहिब– सूबा के नाम से भी जाना जाता था। इसकी नियुक्ति सम्राट द्वारा की जाती थी। इसका कार्य पूरे सूबे में कानून और व्यवस्थाओं की देखरेख करना तथा सुरक्षा का प्रबंध करना था। इसके कार्यों में सम्राट के आदेशों का प्रांतीय स्तर पर पालन करवाना और गुप्तचरों की सहायता से प्रांत की स्थिति की सूचना सम्राट तक पहुंचाना था। सूबेदार की सरकारी उपाधि 'नाजिम–' थी। इसके प्रमुख सहायक, दीवान, बख्शी, फौजदार, कोतवाल, काजी, सद्र, पोटदार आदि।

2) दीवान–ए–सूबा – प्रांत में वित्तिय मामलों की देखरेख करना इसका कार्य था। इसकी नियुक्ति केंद्रीय दीवान–ए–आला की अनुशंसा पर सम्राट द्वारा की जाती थी। यद्यपि प्रशासनिक कार्यों के लिए वह सूबेदार द्वारा सरकारी धन के दुरूपयोग को रोकने के अधिकार भी उसे प्राप्त थे। दीवान–ए–सूबा किसानों को ऋण और आर्थिक अनुदान भी दिया जाता था।

3) प्रांतीय बख्शी – मनसबदारों की देखभाल, सैनिकों की भर्ती तथा उनका वेतन– निर्धारण आदि के कार्यों के लिए प्रांतीय बख्शी की नियुक्ति की जाती थी। इसकी नियुक्ति केंद्रीय मीरबख्शी की अनुशंसा पर सम्राट द्वारा की जाती थी। यह सैनिको को वेतन के लिए प्रमाण–पत्र आदि देने का कार्य भी करता था। समय–समय पर मनसबदारों की कार्यकुशलता का विवरण यह सम्राट को भेजता था।

4) सद्र – प्रांतीय स्तर पर सद्र की सामान्यतया काजी का पद भी संभालता था। सद्र के रूप में वह मुसलमानों की धार्मिक गतिविधियों पर ध्यान रखता था तथा धार्मिक संस्थाओं को दान में दी जाने वाली भूमि पर उसका विचार अहम होता था।

5) कोतवाल – प्रान्तों की राजपतियों तथा बड़े नगरों में एक कोतवाल होता था। वह नगर का मुख्य पुलिस अधिकारी था। जिसका मुख्य कार्य शांति तथा व्यवस्था की देखभाल करना।

स्पेक्ट्रम (Spectrum) पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन PP. 174–174

4.4.2 प्रान्तीय प्रशासन की कुशलता के कारण (Causes of the efficient Working of Provincial Administration) :-

प्रान्तों में कुशल शासन प्रबन्ध की व्यवस्था करना अकबर की एक महान् तथा प्रशंसनीय सफलता मानी जाती है। उस युग में जबकि यातायात के साधन आधुनिक ढंग के नहीं थे, केन्द्रीय सरकार के लिए प्रान्तीय प्रशासन पर नियंन्त्रण रखना बहुत कठिन था। परंतु अकबर ने प्रान्तों में कार्यकुशलता बनाये रखने के लिए बड़ी सूझ–बूझ से अनेक उपाय किये जो संक्षेप में इस प्रकार है–

(1) प्रान्त के सूबेदार अथवा सिपाहसालार को शासन सम्बन्धी समस्त शक्तियां नहीं दी गई थी, अपितु प्रान्तीय प्रशासन के कुछ अधिकार दीवान तथा बख्शी को सौंप दिये गये। ये दोनों पदाधिकारी सीधे केन्द्रीय सरकार के अधीन रखे गये और उन्हें सूबेदार की शक्ति से स्वतन्त्र रखा गया। इस प्रकार ये तीनों अधिकारी एक दूसरे की शक्ति पर उपयोगी रोक का काम करते थे और उनमें से कोई भी विद्रोह नहीं कर सकता था।

(2) प्रान्तीय अधिकारियों को अधिक समय तक एक ही स्थान पर रहने की आज्ञा नहीं दी जाती थी। उन्हें प्रायः तीन वर्ष के पश्चात् एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदल दिया जाता था।

(3) प्रान्तीय अधिकारियों पर निर्भर रहने की अपेक्षा सम्राट प्रान्त के विद्रोहियों अथवा प्रान्त के आस–पास के स्वतन्त्र शासकों के विरूद्ध स्वयं सेना भेजता था।

(4) कई प्रान्तो के विशेष स्थानों पर केन्द्रीय सरकार ने अपने थानेदार नियुक्त किये थे जो प्रान्तीय सरकार के अधीन नहीं होते थे।

(5) प्रत्येक सरकार के फौजदार की नियुक्ति सम्राट द्वारा की जाती थी और वह उसी की आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार रहता था।

(6) प्रत्येक प्रान्त में केन्द्रीय सरकार के वाक्यानवीस तथा खूफियानवीस (गुप्तचर) होते थे जो गुप्त रूप से प्रान्त की सभी घटनाओं को सम्राट तक पहुंचा देते थे वे प्रान्तीय अधिकारी की गतिविधियों के बारे में भी समय–समय पर सम्राट को सूचित करते रहते थे।

(7) सम्राट स्वयं भी समय–समय पर विभिन्न प्रान्तों का भ्रमण करता रहता था और प्रान्तीय अधिकारियों के कार्यों का निरीक्षण करता था तथा लोगों की शिकायतें सुना करते थे।

(8) सम्राट नियमानुसार अपने फरमान सूबेदारों को भेजता रहता था। सूबेदार इन फरमानों को विशेष दरबार लगा कर बड़े सम्मानपूर्वक ढंग से स्वीकार करते थे।

(9) प्रान्तीय अधिकारियों के विरूद्ध की गई शिकायतों की जांच–पड़ताल करने के लिए सम्राट की ओर से कमीशन नियुक्त किये जाते थे और अपराधी अधिकारियों को कठोर दण्ड दिये जाते थे।

बुद्धिमान अकबर द्वारा स्थापित किया गया प्रान्तीय प्रशासन लगभग डेढ़ शताब्दी तक सफलतापूर्वक प्रचलित रहा। औरंगजेब के समय में उपर्युक्त उपायों में से कई समाप्त कर दिये गये जिससे प्रान्तीय प्रशासन बिगड़ गया और मुगल साम्राज्य के विघटन का एक कारण बना।

अविनाश चन्द्र अरोड़ा – भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल P 220।

कार्यकलाप–I

मुगल प्रशासन के स्वरूप के बारे में आप क्या जानते है ?

4.4.3 सरकार या जिले का प्रशासन (Administration of Sarkar):-

मुगलकालीन शासन प्रणाली में सूबों को सरकार या जिलों में बांटा गया था। जिला या सरकार के प्रशासन की देखभाल के लिए निम्न अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी –

1. फौजदार – यह सरकार या जिले की कानून और व्यवस्था को बनाए रखने का कार्य करता था।

2. अमलगुजार – वित्तीय मामलों एवं लगान वसूली के लिए इस की नियुक्ति की जाती थी।

4. कोतवाल – इसकी नियुक्ति सम्राट द्वारा मीर आतिश की अनुशंसा पर की जाती थी। इसका कार्य अपराधियों को दण्ड देने का था। यह जिले में घटित होने वाली सारी सूचनाऐं केंद्रीय शासन को भेजता था तथा इन घटनाओं के प्रति उत्तरदायी भी होता था।

कार्यकलाप–II

केन्द्रीय प्रबंधता (प्रशासन) से आपका क्या अभिप्राय है ?

4.4.4 महल या परगना (अनुमण्डल) का प्रशासन (Administration of Pargana):-

परगना स्तर पर निम्नलिखित पदाधिकारी नियुक्त किये जाते थे, जो वहां की प्रशासन व्यवस्था के लिए उत्तरदायी होते थे –

1) शिकदार – इसका कार्य परगना स्तर पर कानून और व्यवस्था की देखभाल करना तथा उसकी जानकारी प्रातीय सरकार को देना था। यह राजस्व वसूली में आमिल की सहायता करता था। इसे अपराधियों को दण्डित करने का अधिकार प्राप्त था।

2) आमिल – परगना स्तर पर राजस्व निर्धारित करने का कार्य आमिल करता था। इसे मुसिफ भी कहा जाता था। लगान की वसूली के लिए यह ग्रामीण स्तर पर किसानों से भी संबंध बनाये रखता था।

3) कानूनगो – इसका कार्य भूमि का सर्वेक्षण करना था। यह परगने के पटवारियों का अधिकारी होता था।

4) पोतदार – परगने की आय इसी के पास संचित होती थी। पोतदार को खंजाजी भी कहते थे।

5) कारकून – क्लर्क के रूप में कार्य करता था।

6) काजी – परगना स्तर पर भी प्रांतीय काजी के अधीनस्थ काजी की नियुक्ति की जाती थी। जो मुकद्मों का निपटारा करता था।

अविनाश चन्द्र अरोड़ा – भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल P 174।

4.4.5 दीह या गांवों का प्रशासन (Administration of Village):-

मुगल काल में गांव शासन की सबसे छोटी इकाई थी। मुगल शासकों ने गांव को स्वायत संस्था माना तथा उन्होंने गांव की परम्परागत व्यवस्था में कोई हस्तक्षेप नहीं किया। गांव के प्रशासन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण पदों का विवरण इस प्रकार है –

(i) ग्राम प्रधान – (मुकदमें, चौधरी, पटेल) यह ग्रामीण व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण पद था और यह गांव व सरकार के बीच कड़ी का कार्य करता है। यह पद वशांनुगत था तथा कभी–कभी खरीदा व बेचा भी जा सकता था।

(ii) पटवारी – ग्राम प्रधान के बाद पटवारी सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकारी था। भू–राजस्व उगाहना एवं उसे सरकारी खजाने में भेजना उसी का कार्य था।

(iii) महाजन – ग्राम प्रधान एवं पटवारी राज्य के प्रति उत्तरदायी थे परन्तु इनके अतिरिक्त गांव का एक अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति भी होता था जो व्यक्तिगत रूप से प्रभावशाली था। यह था महाजन। यह किसानो तथा राजकीय अधिकारियों के साधन जुटाने वाला व्यक्ति था।

लक्ष्मी पब्लिकेशन – भारत का इतिहास (1526–1857) P 79।

4.4.6 निष्कर्ष (Conclusion)

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नौकरशाही पद्धति पर आधारित मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था का केंद्रीय शासन से लेकर ग्रामीण स्तर तक पूर्ण नियंत्रण था तथा उनके क्रमिक स्तरों में सहयोगात्मक संबंधों के कारण पूरा प्रशासन या शासन तंत्र कुशलतापर्वूक कार्य कर रहा था। इसमें अकबर की अहम भूमिका थी।

4.5. प्रगति समीक्षा (Check your progress) :-

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए (Fill in the blanks) :-

XIX. मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक इकाई का गठन .... ने किया था।

XX. मुगल शासन व्यवस्था .... परंपरा पर आधारित थी।

XXI. दीवान–ए–तन .... से सम्बन्धित पदाधिकारी था।

XXII. फ्रांसीसी यात्री बर्नियर शाहजहॅा के साथ .... और............................ गया था।

XXIII. मनसबदारों को औसतन .... प्रतिवर्ष .... दिए जाते थे।

XXIV. अकबर ने 1582 ई. मुगल साम्राज्य को .... सूबों में बांट दिया था।

XXV. काजी–उल–कुजात .... विभाग का प्रधान होता था।

XXVI. मुगल काल में प्रशासन की सबसे छोटी ईकाई .... थी।

XXVII. क्लर्क के रूप में कार्य करने वाले को .... कहते थे।

XXVIII. अकबर ने बाद में मुगल साम्राज्य में .... सूबे जोड़ दिए।

भाग (ख) (Part B) : निम्न कथनों के उत्तर (हां/नहीं) (Yes/No) में दिजिए :–

I. बादशाह शब्द के 'पाद' का शाब्दिक अर्थ स्थायित्व एवं स्वामित्व। (हां/नहीं)

II. शाह का अर्थ है मूल एवं स्वामी या शक्तिशाली राजा जिसे अपदस्थ न किया जा सके। (हां/नहीं)

III. मुगल शासन प्रणाली वंशातुगत पर आधारित नहीं थी। (हां/नहीं)

IV. सैन्य मामलों का लेख–जोखा रखने वाले अधिकारी को दीवान–ए–सादत कहा जाता था। (हां/नहीं)

V. मुगल शासन प्रणाली में आधुनिक प्रधानमंत्री के समान एक प्रधान अधिकारी को वकील कहा जाता था। (हां/नहीं)

VI. भू–राजस्व उगाहना एवं उसे सरकारी खजाने में भेजना उसे महाजन कहा जाता था।(हां/नहीं)

VII. जिले की कानून और व्यवस्था बनाए रखने वाले अधिकारी को फौजदार कहा जाता था। (हां/नहीं)

VIII. कानूनगो–क्लर्क के रूप में कार्य करता था। (हां/नहीं)

IX. 1582 ई. में अकबर ने मुगल साम्राज्य को 12 सूबों में बांटा था। (हां/नहीं)

X. अकबर पहला मुगल सम्राट था जिसने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था को निश्चित रूप प्रदान किया। (हां/नहीं)

4.6. सारांश (Summary):-

1582 ई० में अकबर ने मुगल साम्राज्य को 12 सूबों में बांट दिया था – 1. इलाहाबाद 2. आगरा 4. अवध 4. अजमेर 5. अहमदाबाद 6. बिहार 7. बंगाल 8. दिल्ली 9. काबुल 10. लाहौर 11. मुल्तान 12. मलवा।

बाद में तीन सूबे और जोड़ दिए थे – अहमदनगर, खानदेश और बरार। इस प्रकार कुल 15 प्रांत हो गए थे।

- अकबर पहला मुगल सम्राट था। जिसने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था को निश्चित रूप प्रदान किया।

- अकबर का विचार था कि "राजा को न्यायप्रिय, निष्पक्ष, उदार, परिश्रमी, प्रजा का सरंक्षक एवं शुभचिंतक होना चाहिए।"
- डॉ० श्रीवास्तव ने लिखा है कि, "मंत्रियों को शासन नीति के निर्माण का अधिकार नहीं था।" अकबर ने मुनीम खाँ तथा मिर्जा अजीत कोका को अपना 'वकील' बनाया।
- प्रो० परमात्मा शरण ने लिखा है कि "सभी काजियों को ऐसे निर्देश दिये जाते थे कि वे ईमानदारी और निष्पक्षता पूर्वक मुकदमें सुनें और लोगों से भेंट न ले। परन्तु प्रो० जदुनाथ ने बताया है कि काजी विभाग में भ्रष्टाचार का बोलबाला था।
- संपूर्णता से देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि राज्य व्यवस्था को बनाने और उसकी नई पद्धतियों को लागू करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सक्षम विशेषज्ञों और अनुभवी लोगों को लगाकर अकबर ने साम्राज्य खड़ा करने का एक बहुत बड़ा कार्य किया। आवश्यकता पड़ने पर वह अपने से पहले के शासकों द्वारा किए गए उपायों को अपनाने में संकोच बिल्कुल भी नही करता था। लेकिन उनको अधिक स्वीकार्य, पारदर्शी और प्रशासन के लिए प्रभावशाली साधन बनाने के लिए अकबर ने दीर्घ सर्वेक्षणों और चर्चाओं के द्वारा इनको लागू किया ताकि उनका लम्बे समय तक शासन को प्रभावशाली व मजबूत बनाने में उपयोग किया जा सके। राजतंत्र का गठन विविधतापूर्ण सामाजिक समूहों ने, जिसके अंतर्गत एक स्पष्ट तौर पर अधीनस्थ और आपस में जुड़े हुए कुलीन वर्ग आते थे। इसका काम मुगल साम्राज्य की क्षेत्रीय अखंडता की देखभाल करना और उसे बनाए रखना था लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उसके उत्तराधिकारियों में न उसकी जैसी योग्यता थी और न ही वो दूरदृष्टि। उन्होंने मूल समस्याओं को चुनौती नहीं दी बल्कि ऐसे उपायों का सहारा लिया जो शासन चलाने की व्यवस्थाओं में थोड़ा बहुत सुधार कर सकते थे।
- मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था के गठन का श्रेय इसके तीसरे बादशाह अकबर को जाता है।

4.7. संकेत–सूचक (Key-Words) :-

शब्द (words)	अर्थ (Meaning)
• मुस्तौफी –	महालेखाकार
• हरकारा –	जासूस और संदेशवाहक
• खुफिया नवीस –	गुप्त पत्र लेखक
• मुशरिफ –	राजस्व सचिव

- दहसाला – विगत वर्षों की औसत पैदावार
- सूबा – प्रांत, परगना – मण्डल
- महाजन – गांव का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति या ग्राम प्रधान
- कानूनगो – सर्वेक्षण अधिकारी
- स्वानिष निगार – समाचार लेखक
- दिवान – वकील, काजी – न्याय करने वाला
- फतेदार – आय को संचित करने वाला
- कोतवाल – जिला स्तर पद दण्ड देने वाला अधिकारी
- सद्रेजहां – धार्मिक सलाहाकार
- फौजदार – सरकार का मुख्य अधिकारी
- कारकून – क्लर्क
- प्रतिबिम्बित – वर्तमान को दर्शाना
- दीह या ग्राम – गाँव
- मीर बहरी – जल सेना का प्रधान
- मवदा – गांव
- मीर–बर्र – वन अधीक्षक

4.8. स्व–मूल्याकंन परीक्षा (Self Assessment Test)(SAT)

भाग (क) उचित मिलान कीजिए। (Matching Test) :-

(i) कॉलम (अ) और (ब) का उचित मिलान कीजिए।

(अ)	(ब)
1. वकील–एक–मुतलक	(क) मुकदमें
2. प्रान्त का मुख्य अधिकारी	(ख) सूबेदार
4. परगने का मुख्य अधिकारी	(ग) प्रधानमंत्री

4. गाँव का प्रमुख अधिकारी (घ) फौजदार

5. सरकार का प्रमुख अधिकारी (ड़) शिकदार

भाग (ख) बहुविकल्पीय प्रश्न Objective Type Question)

(इनके उत्तर दायी और कोष्ठक में दिए हुए है।)

(i) मुगल सरकार के केन्द्रीय मन्त्रियों में निम्नलिखित नहीं होता था :–

(क) दीवान–ए–आला (ख) नाजिम

(ग) मुख्य सदर (घ) मीर बख्शी (ख)

(ii) अकबर के साम्राज्य में कुल प्रान्त थे :–

(क) 12 (ख) 15 (ग) 18 (घ) 10 (क)

(iii) दीह के प्रशासन में निम्न शामिल नहीं था –

(क) पोतदार (ख) पटवारी (ग) महाजन (घ) ग्राम प्रधान (क)

(iv) केन्द्रीय प्रशासन में निम्नअधिकारी नही आता है।

(क) मीर मुंशी (ख) सद्र (ग) मीर वहर (घ) ग्राम प्रधान (ख)

भाग (ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Question)(SAQS)

(1) मुगल प्रशासन के अधीन केन्द्रीय व्यवस्था की विवेचना कीजिए।

(2) अकबर ने प्रान्तीय शासन प्रबंधन को कुशल बनाने के लिए किन अधिकारियों की नियुक्ति की?

भाग (घ) निबंधात्मक प्रश्न (Long Answer types Question) (LAQS)

(1) मुगल शासन प्रबंधन से आप क्या समझते है? स्थानीय शासन–प्रबन्ध, परगना, गांवों के प्रबन्ध का स्पष्ट विवरण कीजिए।

(2) केन्द्रीय शासन प्रणाली के दोष, प्रान्तीय शासन व्यवस्था की विस्तृत चर्चा कीजिए।

4.9. प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to check your Progress) :-

भाग (क) :– (I) अकबर (II) वंशानुगत (III) वेतन और जागीरों (तनख्वाहों) (IV) लाहौर, कश्मीर (V) 240 रूपये, प्रतिसवार (VI) 12 (VII) न्याय (VIII) गॉव (IX) कारकून (IX) 4

भाग (ख):– (I) हां (II) हां (III) नहीं (IV) नहीं (V) हां (VI) नहीं (VII) हां (VIII) नहीं (IX) हां (X) हां

4.10. संदर्भ ग्रंथ एवं सहायक अध्ययन सामग्री (References /Suggested Reading):-

- अविनाश चंद्र अरोड़ा – भारतीय इतिहास का इतिहास (1526–1857) प्रदीप पब्लिकेशंस, जालंधर,2007।
- यूनीक सामान्य अध्ययन – डॉ० विनय कुमार सिंह, युनिक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- डॉ० गोपाल प्रसाद, डॉ० जयपाल सिंह, डॉ0 दीपिका यादव – भारत का इतिहास, लक्ष्मी पब्लिशिंग हाउस, रोहतक,2018।
- बी० एल० ग्रोवर, अलका महता, यशपाल, – आधुनिक भारत का इतिहास :एक नवीन मूल्यांकन,एस0चंद, नई दिल्ली, 2015।
- मध्यकालीन भारत खंड 2 – डॉ० हरिशचन्द्र वर्मा , हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, नई दिल्ली, 1994।
- सुमित सरकार – आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009।
- डा० आर० एल० शुक्ला – आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, नई दिल्ली, 2017 ।
- आधुनिक भारत का इतिहास – एम०एस० जैन, न्यू एज पब्लिशर्स,नई दिल्ली, 1994।
- मध्यकालीन भारत (1000–1761 ई०) एल०पी० शर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, नई दिल्ली 2018।
- J.F. Richards, The Mughal Empire- Cambridge University Press, 1996
- Ather Ali , The Mughal Nobility under Aurangzeb, Oxford University Press, New Delhi, 1997

<table>
<tr><td colspan="2">B.A HISTORY PART- IInd YEAR SEMESTER-IIIrd</td></tr>
<tr><td>COURSE CODE: HIST 201
LESSON NO. 05</td><td>AUTOR – MOHAN SINGH BALODA</td></tr>
<tr><td colspan="2">भारत में फ्रांसीसियों व अंग्रेजों के बीच प्रतिद्वंद्विता
(Rivalry between the Frech ad the British in India)</td></tr>
</table>

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

5.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

5.2 परिचय (Introduction)

5.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

5.3.1 यूरोपीय कंपनियों के बीच संघर्ष (Struggle among European Companies)

5.3.2 ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का विस्तार (Extension of the British)

5.3.3 भारत में फ्रांसीसी केंद्रों की स्थापना (Establishment of French Centres in India)

5.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

5.4.1 आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष (Anglo-French Conflict)

5.4.2 अंग्रेजों की सफलता के कारण (Causes of British Success)

5.4.3 फ्रांसीसियों की असफलता के कारण (Causes of French-unsuccess)

5.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

5.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

5.7 संकेत–सूचक (Key-words)

5.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

5.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

5.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

5.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन के पीछे छिपे उद्देश्यों को बता सकेंगे।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत में विस्तार को समझा सकेंगे।
- साम्राज्यवाद की स्थापना को लेकर यूरोपीय कंपनियों के बीच होने वाले संघर्षों की विद्याथ्री चर्चा कर सकेंगे।
- भारत में फ्रांसीसी केंद्रों की सूची बनाने में विद्यार्थी सफल हो सकेंगे।
- विद्यार्थी आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष के कारणों को गिना सकेंगे।
- विद्यार्थी आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष में अंग्रेजों की विजय व फ्रांसीसियों की पराजय के कारणों पर विद्यार्थी प्रकाश डाल सकेंगे।
- ब्रिटिश साम्राज्य में पंजाब विलय की घटनाओं को समझा सकेंगे।

5.2 परिचय (Introduction) :-

सर्वप्रथम 1498 ई. में पूर्तगाली वास्कोडिगामा एक गुजराती व्यापारी अब्दुल मजीद की सहायता से भारत के कालीकट (केरल) बंदरगाह पर पहुँचा था। इसने कालीकट के तत्कालीन हिंदू शासक जमोरिन से व्यापार का अधिकार प्राप्त किया। अपने इस व्यापार में वास्कोडिगामा जिस मसालों को लेकर अपने देश को लौटा वह पूरी यात्रा की खर्च के 60 गुना मूल्यों पर बिका। उसके इस आकर्षक लाभकारी घटना ने पुर्तगाली व्यापारियों समेत अन्य यूरोपीय व्यापारियों को भी भारत आने के लिए आकर्षित किया। यह बात स्पष्ट है कि भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। बहुत प्राचीन काल से ही भारत का यूरोप के देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध था। इतिहासकार पिलनी अपनी पुस्तक 'नेचुरल हिस्ट्री' में भारत का रोम के साथ होने वाले व्यापार का वर्णन करता है। जिसमें भारत को रेशम, मखमल के वस्त्रों, आभूषणों के बदले में बहुतायत में सोने प्राप्त

होते थे। इस प्रकार भारत प्राचीन काल से ही यूरोपीय देशों के साथ अत्यंत लाभकारी व्यापार से जुड़ा था। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए वास्कोडिगामा ने भारत के साथ व्यापार का एक नया समुद्री मार्ग आशा अंतरीप (केप ऑफ गुड होप) से अन्य पूर्तगाली व्यापारियों व यूरोपियों को अवगत कराया। इस कारण 16 वीं शताब्दी में पूर्तगालियों का भारत के साथ व्यापार बहुत बढ़ गया तथा उन्होंने पश्चिमी त टपर अनेक बस्तियां स्थापित कर लीं। पुर्तगालियों के उपरांत डचों, अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियों ने भी भारत के साथ व्यापारिक संबंध कर लिए और धीरे–धीरे उन्होंने भी अपनी–अपनी बस्तियां स्थापित कर लीं। इस प्रकार भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से पुर्तगाली, डच, अंग्रेज, डेनिस व फ्रांसीसी भारत आए। प्रारंभ में ये कंपनियाँ भारत के शासकों से व्यापार की आज्ञा लेकर एक विशेष क्षेत्र में कर अदा करके व्यापार का एकाधिकार प्राप्त करती थीं। परंतु समय के इन कंपनियों के व्यापारिक, महत्त्वाकांक्षा, साम्राज्य की स्थापना की महत्वाकांक्षा में बदल गयी। ये भारतीय राज्यों की आपसी ईर्ष्या एवं धन लोलुपता का लाभ उठाकर अपना अधिकार क्षेत्र बढ़ाने लगीं। इनमें अपने प्रभुत्व की स्थापना को लेकर होड़ आरंभ हो गई। 18 वीं शताब्दी तक एक तरह जहाँ ताकतवर मुगल शक्ति कमजोर हो चुकी थी, वहीं दूसरी ओर अन्य छोटे–बड़े राज्यों में भी लगभग केंद्रीय शक्ति का अभाव था। फलतः इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाने के लिए इन व्यापारिक कंपनियों में प्रभुत्व की स्थापना को लेकर हौड़ मच गई। यूरोपीय कंपनियों के इस संघर्ष क्रम में पुर्तगाली व डच कंपनियाँ जहाँ व्यापारिक व राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में प्रारंभ में ही अंग्रेजों से परास्त हो गई वहीं डेनिस कंपनी 1745 तक अपनी सारी संपत्ति ब्रिटिश ईस्ठ इंडिया कंपनी को बेचकर भारत से चली गई। अतः पर्याप्त व्यापारिक एकाधिकार प्राप्त दो कंपनियां–ब्रिटिश व फ्रेंच अब भारत में रह गयी थी। इस कारण इन दोनों के बीच प्रभुत्व की स्थापना को लेकर संघर्ष होना स्वाभाविक था। व्यापारिक प्रतिस्पर्धा व राजनीतिक प्रभुत्व को लेकर दोनों के बीच इतिहास प्रसिद्ध तीन युद्ध हुए, जिन्हें कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष में अंतिम रूप से अंग्रेजों को सफलता प्राप्त हुई।

5.3. अध्याय के मुख्य बिंदु (Main body of the Text)

5.3.1 यूरोपीय कंपनियों के बीच संघर्ष (Struggle among European Companies)

भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन के क्रम में पूर्तगाली, डच, ब्रिटिश, डेनिस, फ्रांसीसी व स्वीडीश आए। भारत के लाभकारी व्यापार से ये सभी प्रभावित थे। सर्वप्रथम 1498 ई. में वास्कोडिगामा नामक पूर्तगाली नाविक भारत के कालीकट बंदरगाह पर पहुँचा। उसने कालीकट के राजा जमोरिन से व्यापार का अधिकार प्राप्त किया। वास्कोडिगामा भारत से व्यापार में जिस मसालों को लेकर वापस अपने देश को लौटा, वह पूरी यात्रा की कीमत के 60 गुना दामों पर बिका। उसके इस लाभकारी व्यापार से प्रभावित होकर पुर्तगाली व्यापारियों का भारत आने का सिलसिला आरंभ हो गया। स्वयं वास्कोडिगामा 1502 ई. में दूसरी बार भारत आया। इसके बाद पूर्तगालियों ने भारत

के पश्चिमी तट पर व्यापारिक बस्तियां स्थापित किये। भारत में प्रथम पुर्तगाली वाययराय अल्मीडा ने भारत पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए मजबूत सामुद्रिक नीति का संचालन किया, जिसे ब्लू वाटर पॉलिसी अथवा शांत जल की नीति के नाम से जानते हैं। धीरे–धीरे पूर्तगालियों ने हिंद महासागर में होने वाले व्यापार पर एकाधिकार कर लिया। किंतु बाद में अंग्रेजों की कूटनीति व उसकी मजबूत जल शक्ति के समक्ष पूर्तगाली व्यापारिक व राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में नहीं टिक पाये। इसके अलावा पूर्तगालियों की धार्मिक असहिष्णुता की नीति, भारतीय व्यापारियों संग लूटपाट, भारतीय महिलाओं संग वैवाहिक नीति आदि का मराठों व मुगलों द्वारा विरोध किया जाना आदि प्रमुख कारणों से पूर्तगाली साम्राज्य पतन की ओर उन्मुख हो गई। अंततः अंग्रेजों ने पूर्तगालियों को पश्चिम में गोवा में अपने आप को सिमट जाने के लिए मजबूर कर दिया।

पुर्तगालियों के बाद भारत में डचों का आगमन हुआ। 1596 ई. में आने वाला प्रथम डच नागरिक कार्नेलिस डी हाउटमैन था। डचों ने 1602 ई. में अपनी कंपनी की स्थापना की थी। डचों का ध्यान शुरू में मसालों के व्यापार को लेकर इण्डोनेशिया पर केंद्रित था। जब इनका संपर्क भारत के साथ हुआ तो इन्होंने अपने व्यापार में सूती वस्त्र के व्यापार को भी शामिल किया। इस प्रकार डचों ने इंडोनेशिया से आगे बढ़ते हुए 1605 ई. में भारत में अपनी पहली फैक्ट्री मसूलीपंट्टनम में स्थापित की थी। व्यापारिक स्वार्थ से प्रेरित होकर डचों ने भारत में अपने व्यापारिक फैक्ट्रियों का विस्तार बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा तक करने लगे। भारत में उनकी महत्त्वपूर्ण फैक्ट्रियाँ पुलीकट, सूरत, कारिकल, कासिम बाजार, बड़ा नगर, पटना, बालासोर, नागपट्टनम, कोचीन आदि में थी।

इंडोनेशिया से अधिक जुड़ाव होने के कारण डचों की अधिकांश व्यापारिक फैक्ट्रियाँ पूर्वी तट पर थीं। डचों द्वारा भारत से नील, शोरा व सूती वस्त्र का निर्यात किया जाता था। डचों का ध्यान अत्यधिक रूप से दक्षिण–पूर्वी एशिया के द्वीपों पर था। इसलिए वे भारत में पिछड़ते जा रहे थे। दूसरी ओर अपने प्रतिद्वंद्वी अंग्रेजों की तुलना में डचों की नौसैनिक शक्ति कमजोर थी। इस कारण भी डच भारत में कमजोर पड़ रहे थे। इसके अलावा यह भी एक महत्त्वपूर्ण बात है कि डच कंपनी का नियंत्रण सीधे इच सरकार के हाथ में था। अतः डच कंपनी स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की स्थिति में नहीं थी। इन सब कारणों से आगे चलकर वे भारत में अंग्रेजों व फ्रांसीसियों के साथ निर्णायक प्रतिस्पर्द्धा में नहीं टिक सके। अंततः 1759 ई. में बेदरा के युद्ध के द्वारा अंग्रेजों ने डचों को भारत से बाहर कर दिया। इस प्रकार पुर्तगाली व डच कंपनियाँ व्यापारिक व राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में प्रारंभ में ही परास्त हो गई। जबकि डेनिस कंपनी 1745 तक अपनी सारी संपति ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को बेचकर भारत से चली गई। इसलिए अब व्यापारिक एकाधिकार व राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना को लेकर भारत में लड़ने वाले अंग्रेज व फ्रांसीसी ही रह गये। इन दोनों के बीच प्रभुत्व की स्थापना को लेकर तीन कर्नाटक युद्ध हुए। इस आंग्ल फ्रांसीसी

संघर्ष में अंतिम रूप से 1760 ई. के वांडिवाश युद्ध के द्वारा अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को हरा दिया और उसे पॉण्डिचेरी में सिमट जाने के लिए मजबूर कर दिया।

अतः प्रारंभ में पूर्तगाली, डच, ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी इन चारों कंपनियों के बीच व्यापारिक एकाधिकार को लेकर संघर्ष हुआ। अंततः इस संघर्ष में अंग्रेजों को सफलता मिली।

5.3.2 ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का विस्तार (Extension of the British)

1588 ई. में अंग्रेजों ने अपनी नौसैनिक श्रेष्ठता प्रमाणित कर पूर्वी क्षेत्र में व्यापार के लिए कदम बढ़ाया। इसी क्रम में 1599 ई. में मर्चेंट एडवेंचरर्स नाम से प्रसिद्ध कुछ व्यापारियों ने ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। प्रारंभ में इस कंपनी को 31 दिसंबर, 1600 को महारानी एलिजाबेथ प्रथम के एक रॉयल चार्टर द्वारा 15 वर्षों के लिए पूर्व के साथ व्यापार करने की अनुमति दी गई। आगे चलकर 1609 में सम्राट जेम्स प्रथम ने कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को अनिश्चित काल के लिए बढ़ा दिया।

1608 ई. में मुगल शासक जहाँगीर के शासन काल में केप्टन हॉकिन्स के नेतृत्व में अंग्रेजों के एक दल ने सूरत में प्रथम व्यापारिक केन्द्र की स्थाना के प्रयास के क्रम में मुगल शासक की अनुमति लेनी चाही जो उस समय नहीं मिली। अतः 1615 में एक बार फिर से इंग्लैंड के सम्राट जेम्स प्रथम का एक दूत सर टॉमस रो जहाँगीर के दरबार में आया। उसका उद्देश्य एक व्यापारिक संधि करना था। सर टॉमस रो ने मुगल शासक जहाँगीर से मुगल साम्राज्य के सभी भागों में व्यापार करने एवं फैक्ट्रियाँ स्थापित करने का अधिकार पत्र प्राप्त कर लिया। इस प्रकार जहाँगीर द्वारा स्थायी बस्ती की अनुमति प्राप्त होने पर सूरत में अंग्रेजों की प्रथम स्थायी बस्ती की स्थापना हुई। वैसे दक्षिण भारत में अंग्रेजों ने अपनी प्रथम व्यापारिक कोठी की स्थापना 1611 में मसूलीपट्टनम में की थी।

1623 तक अंग्रेजों ने सूरत, आगरा, अहमदाबाद, मसूलीपट्टनम तथा भड़ौच में अपनी व्यापारिक कोठियों की स्थापना कर ली थी। 1633 ई. में अंग्रेजों ने पूर्वी भारत में उड़ीसा के बालासोर में अपनी प्रथम व्यापारिक बस्ती की स्थाना की थी। 1651 में इन्होंने अपनी कूटनीति व चतुराई के द्वारा हुगली नगर में व्यापार करने की अनुमति प्राप्त की ली थी। इसके बाद अंग्रेजों द्वारा अपने व्यापार को फैलाने व गति प्रदान करने के लिए बंगाल, बिहार, पटना व ढाका में भी कारखाने खोले गए।

अंग्रेजों द्वारा 1639 में 'फोर्ट सेंट जॉर्ज' के नाम से किलेबंद व्यापारिक कोठों की स्थापना मद्रास में की गयी थी। अंग्रेज फ्रांसिस डे ने इस स्थान को चंद्रगिरी के राजा से पट्टे पर प्राप्त किया था। व्यापार के इस क्रम को आगे बढ़ाते हुए अंग्रेजों ने 1632 ई. में गोलकुंडा के सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह से एक 'सुनहरा फरमान' प्राप्त किया। इस फरमान के अनुसार कंपनी को गोलकुंडा राज्य में स्वतंत्रतापूर्वक व्यापार करने की अनुमति मिल गई।

1661 ई. में पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन का विवाह ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स द्वितीय से हो गया जिससे भारत में बंबई क्षेत्र अंग्रेजों को दहेज के रूप में मिल गया था। बाद में 1668 ई. में बंबई ईस्ट इंडिया कंपनी को ब्रिटिश सरकार से प्राप्त हो गया। जिससे पश्चिमी तट पर व्यापारिक दृष्टिकोण से सूरत के स्थान पर बंबई बंदरगाह एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया।

1698 में बंगाली सूबेदार अजीमुशान ने अंग्रेजों को सुतानती, गोबिंदपुर, कोलिकाता की जमींदारी प्रदान की। इन्हीं स्थानों को मिलाकर जॉब चार्नाक ने फोर्ट विलियम के नाम से एक किलेबंद बस्ती की स्थापना की जो आगे चलकर कलकत्ता नगर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस किले का प्रथम प्रेसिडेंट चार्ल्स आयर को नियुक्त किया गया। इसी कलकत्ता नगर को अंग्रेजों ने 1700 में प्रथम प्रेसिडेंसी नगर घोषित किया था जो 1774 से 1911 तक ब्रिटिश भारत की राजधानी बना रहा। 1717 ई. में मुगल शासक फर्रूखशियर ने कंपनी के एक डॉक्टर विलियम हैमिल्टन द्वारा किये गए अपने इलाज के बदले में अंग्रेजों को व्यापारिक सुविधा वाला एक शाही फरमान प्रदान किया। इस शाही फरमान के तहत उन्हें बंगाल में निःशुल्क व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गई। इसके साथ ही बंबई में कंपनी द्वारा ढाले गए सिक्कों के संपूर्ण मुगल राज्य में चलाने की आज्ञा मिल गई। ब्रिटिश इतिहासकार 'ओर्म्स' ने व्यापारिक सुविध्णा वाले इस फरमान को कंपनी का मैग्नाकार्टा (महाधिकार पत्र) के नाम से संबोधित किया है। इस प्रकार ब्रिटिश कंपनी भारत में अपने व्यापार को फैलाने के लिए व्यापारिक केंद्र की स्थापना करने जा रहे थे।

इनके द्वारा स्थापित व्यापारिक केंद्र को फैक्ट्री के नाम से जानते थे। भारत में कंपनी की यह फैक्ट्री किलाबंद क्षेत्र जैसी होती थी, जिसके अंदर गोदाम, दफ्तर और कंपनी के कर्मचारियों के लिये घर होते थे।

5.3.3 भारत में फ्रांसीसी केंद्रों की स्थापना (Establishment of French Centres in India)

1664 ई. में लुई चौदहवें के समय वित्तमंत्री कोल्बर्ट के प्रयासों से फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई। फ्रांसीसी कंपनी को राज्य द्वारा विशेषाधिकार और वित्तीय संसाधन प्राप्त थे। यह पूर्णतः सरकारी कंपनी थी। यह कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित एवं आर्थिक सहायता पर निर्भर थी। 1668 में फ्रांसीसी फ्रैंकोइस कैरो के नेतृत्व में प्रथम फ्रांसीसी दल भारत आया और सरूत में व्यापारिक केंद्र की स्थापना की। भारत में फ्रांसीसियों द्वारा स्थापित यह प्रथम फैक्ट्री था।

अगले वर्ष 1699 ई. में गोलकुंडा रियासत के सुल्तान से अधिकार पत्र प्राप्त करने के बाद फ्रांसीसियों ने अपनी दूसरी व्यापारिक कोठी मसूलीपट्टनम में स्थापित की थी। 1673 ई. में कंपनी के निदेशक फ्रांसिस मार्टिन ने तंजोर एवं कर्नाटक के गवर्नर शेर खां लोधी से कुछ भूमि प्राप्त करके इस भूमि पर पांडिचेरी नगर की नींव रखी। यही

पांडिचेरी नगर बाद में फ्रांसीसियों की राजधानी बनी। पांडिचेरी में फ्रांसीसियों ने अपने किले बंद बस्ती को 'फोर्ट लुई' का नाम दिया गया था।

1673 में ही बंगाल के नवाब शाइस्ता खाँ द्वारा फ्रांसीसियों को चन्द्रनगर नामक स्थान किराए पर प्राप्त हुआ। इस स्थान पर फ्रांसीसियों ने 'फोर्ट ओरलिएंस' नाम से किलेबंद बस्ती स्थापित की थी। चन्द्रनगर नामक स्थान पर यह कारखाना एवं बस्ती का निर्माण 1690–92 ई. में किया गया था। 1693 ई. में डचों ने फ्रांसीसी बस्ती पांडिचेरी पर अधिकार प्राप्त कर लिया परंतु कुछ ही समय के बाद (लगभग 6 वर्षों के बाद) यह बस्ती फ्रांसीसियों को लौटा दी गई। आगे चलकर फ्रांस की गृह स्थिति बिगड़ने के कारण भारत में भी कंपनी की स्थिति खराब हो गई। इस कारण कंपनी के व्यापार की भी अवनति हो गई और कंपनी को सूरत तथा मसूलीपट्टनम के कारखाने छोड़ने पड़े। 1720 ई. में फ्रांस की गृह स्थिति अच्छी होने पर फिर से कंपनी का संगठन किया गया।

पुनर्संगठित कंपनी ने 1721 ई. में मॉरिशस पर अधिकार कर लिया। यहाँ से शक्ति प्रापत करके उत्साह के साथ कंपनी ने 1725 ई. में भारत के मालाबार तट पर माही और 1739 ई. में कोरोमण्डल तट पर कारीकल में अपनी बस्तियां स्थापित कर लीं। इस प्रकार योग्य फ्रांसीसी गवर्नर डूमा (Duma) एवं डूप्ले (Dupleix) के नेतृत्व में फ्रांसीसी कंपनी उन्नति करते हुये भारत में व्यापारिक बस्तियां स्थापित कर रही थीं। किंतु फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले का भारतीय राज्यों में हस्तक्षेप से इनका अंग्रेजों के साथ संघर्ष स्वाभाविक था। इस संघर्ष में अंग्रेज अंतिम रूप से विजय प्राप्त करके भारत में अपनी शक्ति का विस्तार करने में सफल रहे। 1760 ई. में वांडिवाश युद्ध के द्वारा अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को हराकर उसे पांडिचेरी में ही सिमट कर रहने के लिए मजबूर कर दिया। पांडिचेरी में फ्रांसीसी आजादी के बाद भी बने रहे। देश की आजादी के बाद 1954 ई. में पांडिचेरी को फ्रांसीसियों को मुक्त कराया गया।

5.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

5.4.1 आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष (Anglo_French Conflict)

व्यापारिक व राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा के हौड़ में भारत हाने वाली यूरोपीय कंपनियों में पूर्तगाली व डच विभिन्न कारणों से अंग्रेजों के समक्ष संघर्ष में नहीं टिक सके। ये दोनों कंपनियाँ प्रारंभ में ही परास्त हो गईं। जबकि डेनिस कंपनी 1745 तक अपनी सारी संपत्ति बेचकर भारत से चली गई। इस प्रकार अब व्यापारिक एकाधिकार व प्रभुसत्ता को लेकर भारत में ब्रिटिश और □फ्रेंच कंपनियाँ ही बच गयी थीं। अंतः इन दोनों के बीच इसको लेकर संघर्ष होना स्वाभाविक था। इन प्रतिस्पर्द्धाओं के चलते दोनों कंपनियों के मध्य तीन युद्ध हुए, जिन्हें कर्नाटक युद्ध के नाम से

इतिहास में जाना जाता है। इस युद्ध के दौरान 1760 में अंग्रेजों ने वांडीवाश के युद्ध में फ्रांसीसियों को पराजित कर दिया। इसके बाद फ्रांसीसी पांडिचेरी में ही सिमट कर रह गये।

आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष के क्रम में तीन कर्नाटक युद्ध हुए। यूरोप में फ्रांस व ब्रिटेन एक–दूसरे के विरोधी थे, जिसका प्रभाव भारत में भी पड़ना स्वाभाविक था। प्रथम कर्नाटक युद्ध दोनों के बीच 1746–1748 के बीच लड़ा गया। युद्ध का सर्वप्रथम कारण व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा व राजनीतिक संघर्ष ही था। परंतु प्रथम कर्नाटक युद्ध का एक कारण फ्रांस व ब्रिटेन बीच यूरोप से चल रहे ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार युद्ध भी था।

1740 से ही दोनों देशों के बीच ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार युद्ध चल रहा था। प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746–48) प्रारंभ होने का तात्कालिक कारण अंग्रेज अधिकारी कैप्टन बार्नेट द्वारा फ्रांसीसी जहाजों पर कब्जा कर लेना था। उस समय भारत में पांडिचेरी का फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले था। डूप्ले ने मॉरीशस के फ्रांसीसी गवर्नर ला बूर्डोने की सहायता से मद्रास को जीत लिया। यद्यपि इस संघर्ष में कर्नाटक के नवाब अनवरूद्दीन ने डूप्ले के विरूद्ध अंग्रेजों की सहायता की थी। इस कारण फ्रांसीसियों ने अनवरूदीन के विरूद्ध जंग छेड़ दिया और इसमें फ्रांसीसी विजयी रहे। क्योंकि फ्रांसीसियों उत्तम किस्म के तोपखाने थे। इस विजय से फ्रांसीसियों की महत्वाकांक्षा बढ़ गई और उन्होंने पांडिचेरी के दक्षिण में स्थित अंग्रेजों की एक अन्य बस्ती फोर्ट सेंट डेविड पर अधिकार करने का प्रयास किया। परंतु इसमें उनको सफलता नहीं मिली। आगे चलकर 1748 में यूरोप में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच 'एक्स–ला–शापेल' की संधि के द्वारा यूरोप में युद्ध समाप्त हो गया। फलतः भारत में भी दोनों पक्षों के बीच युद्ध समाप्त हो गया। यद्यपि इस युद्ध का कोई तात्कालिक राजनीतिक प्रभाव भारत पर नहीं पड़ा और न ही दोनों पक्षों को कोई लाभ इससे हुआ फिर भी भारतीय राजाओं की कमजोरियों को प्रकाश में ला दिया। फ्रासीसियों गवर्नर डूप्ले तथा अंग्रेजी सेनापति क्लाइव की महत्वाकांक्षा में वृद्धि हो गई। इसमें साम्राज्य विस्तार की हौड़ मच गयी।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध 1751 से 1755 के बीच लड़ा गया। हैदराबाद तथा कर्नाटक के आंतरिक मामले में दोनों पक्षों द्वारा हस्तक्षेप इसका कारण बना। हैदराबाद व कर्नाटक के उत्तराधिकार के युद्ध में अंग्रेजों व फ्रांसीसियों ने खुलकर भाग लिया। अंग्रेजों ने हैदराबाद में नासिरजंग का तथा कर्नाटक में अनवरूद्दीन का साथ दिया, जबकि फ्रांसीसियों ने कर्नाटक में चंदा साहब का और हैदराबाद में मुजफ्फरजंग का साथ दिया। इस कारण एक बार फिर दोनों यूरोपीय शक्तियां आपस में लड़ पडीं। 1754 में पांडिचेरी की संधि के द्वारा दोनों पक्ष युद्ध विराम पर सहमत हुए। इस संधि के तहत अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों ने भारतीय राजाओं एवं नवाबों के मामले में हस्तक्षेप न करने का वादा किया। इस युद्ध के फलस्वरूप फ्रांसीसी प्रभुत्व को हानि हुई तथा अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ा।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749–54) की समाप्ति पांडिचेरी की संधि से हुई थी। पांडिचेरी की संधि अस्थायी साबित हुई। 1756 में यूरोप में फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के बीच सप्तवर्षीय युद्ध शुरू हो गया। इसका प्रभाव भारत में भी

पड़ा और दोनों के बीच युद्ध का वातावरण निर्मित कर दिया। इस प्रकार तृतीय कर्नाटक युद्ध (1758–63), 1756 में ऑस्ट्रिया तथा इंग्लैंड के बीच प्रशा में शुरू हुए सप्तवर्षीय युद्ध का भी विस्तार था। यूरोप में फ्रांस ऑस्ट्रिया को तथा इंग्लैंड प्रशा को समर्थन दे रहे थे, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव भारत में उपस्थित दोनों शक्तियों के संबंधों पर पड़ा।

फ्रांस की सरकार द्वारा काउंट डी लाली को भारत के संपूर्ण फ्रांसीसी क्षेत्र के सैनिक एवं असैनिक अधिकार प्रदान कर दिया गया था। इससे उत्साहित होकर लाली ने 'फोर्ट सेंट डेविड' पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। यही तृतीय कर्नाटक युद्ध का तात्कालिक कारण बना। यद्यपि लाली ने फोर्ट सेंट डेविड पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया फिर भी तंजौर पर अधिकार करने में वह असफल रहा। लाली ने हैदराबाद के गवर्नर बुस्सी की सहायता से अंग्रेजों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास किया जो आगे चलकर उसकी एक रणनीतिक भूल साबित हुई। अंग्रेज क्लाइव और वाटसन ने अपनी कूटनीति व नौसैनिक क्षमता के बल पर चंद्रनगर को अपने अधिकार में ले लिया।

1760 में अंग्रेजी सेनानायक सर आयरकूट के नेतृत्व में वांडिवाश का युद्ध हुआ, जिसमें फ्रांसीसियों की हार हुई। इस हार ने फ्रांसीसियों के हिम्मत को तोड़ दिया। हेदराबाद के फ्रांसीसी गवर्नर बुस्सी को कैद कर लिया गया और 1761 में अंग्रेजों ने माहे एवं जिंजी समेत पांडिचेरी पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। अंततः तृतीय कर्नाटक युद्ध का अंत सन् 1763 में पेरिस की संधि से हुआ। इस संधि के द्वारा अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को भारत में विजित उनकी सारी फैक्ट्रियाँ इस शर्त पर लौटा दी कि अब वे व्यापार के अतिरिक्त न तो फैक्ट्रियों की कोई किलेबंदी कर सकते थे और न ही कोई सैनिक रख सकते थे। इस प्रकार पैरिस की संधि के द्वारा भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य की डूप्ले द्वारा स्थापित की गयी मजबूत नींव को उखाड़ दिया गया। कर्नाटक युद्धों के बाद फ्रांसीसियों की हार से यह साबित हो गया कि अब भारत पर एकमात्र अंग्रेजी शक्ति ही राज करेगी।

5.4.2 अंग्रेजों की सफलता के कारण (Causes of British Success)

- फ्रांसीसी कंपनी सरकारी सहायता पर आधारित कंपनी थी जबकि ब्रिटिश कंपनी सरकार के नियंत्रण से मुक्त थी। ब्रिटिश कंपनी परिस्थिति के अनुरूप बिना किसी आदेश व इंतजार के निर्णय ले सकती थी।
- ब्रिटिश कंपनी की अपेक्षा फ्रांसीसी कंपनी की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। ब्रिटिश कंपनी का व्यापारिक क्षेत्र विस्तृत था जबकि फ्रांसीसी कंपनी केवल दक्षिण भारत के क्षेत्रों तक ही सीमित थी। अतः मजबूत आर्थिक स्थिति के कारण अंग्रेज अपने युद्धों का भार उठाने में समर्थ थे।
- फ्रांसीसियों की अपेक्षा अंग्रेजों का सैनिक संगठन श्रेष्ठ था। अंग्रेजों की नौसैनिक क्षमता फ्रांसीसियों की तुलना में बहुत मजबूत थी।

- अंग्रेज बड़े दूरदर्शी थे। बड़ी ही योजनाबद्ध तरीके से कार्य करते थे। जबकि फ्रांसीसियों में दूरदर्शिता का अभाव था।
- भारतीय राजाओं एवं नवाबों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप को लेकर अंग्रेज, फ्रांसीसियों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट थे।

5.4.3 फ्रांसीसियों की असफलता के कारण (Annexation of Punjab)

फ्रांसीसियों ने संपूर्ण विश्व में नेपोलियन की अगुवाई में अपनी सामर्थ्यता का परचम लहराया था। भारत में भी फ्रांसीसी डूप्ले के नेतृत्व में साम्राज्य विस्तार की ओर तीव्र गति से बढ़ रहे थे। डूप्ले ने लगातार संघर्ष और अपनी कूटनीतिक सूझ द्वारा भारत में फ्रांसीसियों के अनुकूल जिस वातावरण का निर्माण कर रहा था, उसे लगातार उसके ही अयोग्य अधिकारियों द्वारा प्रतिकूल बनाने का क्रम भी जारी था। 1754 में डूप्ले की वापसी और 1758 में काउंट–डी–लाली को गवर्नर बनाकर भारत भेजना ऐसी कई अदूरदर्शिता पूर्ण निर्णय से फ्रांसीसी व्यापारिक व राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में अंग्रेजों के समक्ष पिछड़ते जा रहे थे। अंततः कर्नाटक युद्ध के द्वारा अंग्रेजों ने फ्रांसीसी शक्ति को परास्त कर दिया। भारत में फ्रांसीसियों की पराजय अथवा असफलता के लिए छोटे एवं बड़े स्तर पर कई कारक उत्तरदायी थे। इनका विवरण निम्न प्रकार है –

1. कंपनी का स्वरूप :– अंग्रेजी व फ्रांसीसी कंपनी के स्वरूप में भारी अंतर था। दोनों कंपनियाँ व्यापार व साम्राज्य विस्तार को लेकर उत्सुक थी। फ्रांसीसी कंपनी सरकार की सहायता पर निर्भर एक सरकारी संस्था थी, जबकि अंग्रेजी कंपनी एक प्राइवेट कंपनी थी। फ्रांसीसी कंपनी स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में असमर्थ थी। इनके कर्मचारियों में लगन एवं निष्ठा की कमी थी। फ्रांसीसी कंपनी को ब्याज एक निश्चित दर पर प्राप्त होता था। इस कारण कर्मचारी कंपनी के कार्यों में अधिक रूचि नहीं लेते थे। ऐसी स्थिति में फ्रांसीसी कंपनी की असफलता स्वाभाविक थी।

2. बंगाल पर अंग्रेजों की विजय :– बंगाल पर अंग्रेजों की विजय से एक ओर जहाँ उन्हें अपार धन एवं जनशक्ति प्राप्त हुई तो दूसरी ओर उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इससे उनके हौसले में वृद्धि हुई। इसका उनके व्यापार एवं राजनीतिक प्रभुत्व के विस्तार में अनुकूल प्रभाव पड़ा। अंग्रेजों की तुलना में फ्रांसीसी एक बहुत ही सीमित क्षेत्र में दक्षिण में कंद्रित थे। बंगाल की विजय के रूप में क्लाइव ने डूप्ले की नीति को विफल कर दिया।

3. आर्थिक व व्यापारिक सुदृढ़ता :– फ्रांसीसियों की तुलना में अंग्रेजों की आर्थिक स्थिति मजबूत थी। युद्ध के काल में भी अंग्रेजों ने अपने व्यापार को कमजोर नहीं पड़ने दिया। इस कारण उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर नहीं हुई।

जबकि फ्रांसीसी इस मामले में पिछड़ते गये। अतः अंग्रेजों की व्यापारिक तथा आर्थिक श्रेष्ठता एक बहुत बड़ा कारण फ्रांसीसियों की असफलता का बना।

4. अंग्रेजों की श्रेष्ठ नौसैनिक शक्ति :– अंग्रेजों की श्रेष्ठ समुद्री शक्ति उनकी फ्रांसीसियों के विरूद्ध निश्चित रूप से विजय का शक्तिशाली कारण सिद्ध हुई।

5. विस्तृत व उपयोगी बस्तियां :– अंग्रेजों की कलकत्ता बंबई व मद्रास की विस्तृत व उपयोगी बस्तियां थीं जबकि फ्रांसीसियों की चंद्रनगर, माही तथा पांडिचेरी की सीमित बस्तियां उपलब्ध थी। इसलिए अंग्रेजों की अपेक्षा कमजोर बस्तियों के कारण भी फ्रांसीसी असफल रहे।

6. फ्रांसीसियों के पास योग्य नेताओं का अभाव था। अंग्रेजों के पास लारेंस, क्लाईव, फोर्ड, सर आयर कूट, पोकाक आदि योग्य नेता युद्ध कौशल व कूटनीति में निपुण थे। इसके विपरीत डूप्ले तथा बुसी को छोड़ कर फ्रांसीसियों का कोई भी अन्य योग्य नेता नहीं था। इस कारण भी फ्रांसीसी असफल रहे।

7. फ्रांसीसी नेताओं में परस्पर सहयोग का अभाव था। वे एक–दूसरे से ईर्ष्या का भाव रखते थे तथा अपने स्वार्थ के लिए अपने देश के हितों का बलिदान कर देते थे। युद्ध के पहले दौर में अंग्रेजों को मद्रास में हराने के बाद डूप्ले तथा ला बौर्दोनायिस में मतभेद उत्पन्न हो गया। इसी प्रकार युद्ध के अंतिम दौर में डि–एक ने लाली का सहयोग नहीं दिया। बुसी तथा लाली में भी मतभेद उत्पन्न हो गया।

8. डूप्ले की फ्रांस वापसी :– फ्रांसीसियों की असफलता का एक मुख्य कारण यह भी था कि फ्रांस की सरकार को भारत की परिस्थितियों का पता नहीं था। अतः फ्रांस सरकार ने गलत निर्णय लेते हुए 1754 ई. में डूप्ले को वापस बुला लिया। डूप्ले के स्थान पर गवर्नर बन कर आये लाली को भारतीय परिवेश की उतनी जानकारी नहीं थी जितनी डूप्ले को थी। अतः यदि वह भारत में कुछ दिनों तक और टिक जाता, तो संभवतः फ्रांसीसियों की स्थिति सुधर जाती।

9. लाली की अदूरदर्शिता :– डूप्ले के स्थान पर आये काउंट–डी–लाली में दूरदर्शिता की नीति का अभाव था। वह क्रोधी स्वभाव का और कटुभाषी था। इस कारण उसके नेतृत्व में अधिकारियों में पूर्ण निष्ठा व सहयोग की भावना में कमी आ गई। अतः लाली की अदूरदर्शितापूर्ण नीति भी फ्रांस की पराजय का एक कारण बना।

10. विलियम पिट की नीति :– इंग्लैंड का युद्धमंत्री विलियम पिट एक कूटनीतिज्ञ था। उसने यूरोप में फ्रांस के विरूद्ध ऐसे अभियान छेड़े, जिनमें उलझने के बाद फ्रांसीसी कंपनी भारत में अपनी स्थिति को नियंत्रण में नहीं रख सका।

11. यूरोपीय राजनीति :– भारत में आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष के क्रम में फ्रांस अनावश्यक रूप से कई देशों के साथ युद्ध में अपने आपको उलझा रखा था। इस कारण भारत में इसकी स्थिति कमजोर होती गयी जबकि इस बीच अंग्रेजों ने भारत में अपनी स्थिति मजबूत कर ली।

12. अंग्रेजी कंपनी के अधिकारी व कर्मचारी परस्पर सहयोग की भावना के साथ कार्य करते थे। उन्होंने इसी एकता के बल पर फ्रांसीसियों को व्यापारिक व राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में पराजित कर दिया और अपनी श्रेष्ठा साबित की।

अंतिम रूप से यह कहा जा सकता है कि भारत में आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष में फ्रांसीसियों की पराजय के कारण आर्थिक, राजनीतिक व सामरिक तीनों की कारक महत्त्वपूर्ण थे। इन सभी कारकों में अंग्रेजी शक्ति फ्रांसीसियों की तुलना में अधिक प्रभावशाली थी।

5.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)

(i) फ्रांसीसी .... में भारत आए।

(ii) फ्रांसीसी कंपनी को .... कंपनी भी कहा जाता था।

(iii) प्रथम फ्रांसीसी फैक्ट्री की स्थापना .... में की गई।

(iv) प्रथम फ्रांसीसी फैक्ट्री की स्थापना 1668 में .... के द्वारा की गई।

(v) पांडिचेरी में फ्रांसीसियों द्वारा .... नामक किला बनवाया गया।

(vi) 1673 में बंगाल के .... नवाब ने फ्रांसीसियों को एक जगह किराए पर दी, जहाँ चंद्रनगर नाम से सुप्रसिद्ध कोठी की स्थापना की गई।

(vii) भारत आने वाला प्रथम पुर्तगाली यात्री .... था।

(viii) प्रथम अंग्रेज दूत .... था जिसने मुगल सम्राट जहाँगीर से भेंट की थी।

(ix) 1717 ई. में .... मुगल सम्राट द्वारा अंग्रेजी कंपनी को व्यापारिक सुविधाओं वाला फरमान मिला था।

(x) 1754 में फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले की वापसी के बाद .... को फ्रांसीसी प्रतिनिधि बनाकर भारत भेजा गया था।

(ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False based Questions)

(i) पुर्तगाली वायसराय अल्बुकर्क ने 1530 में कोचीन की जगह गोवा को पुर्तगालियों की राजधानी बनाया। ( )

(ii) डचों का भारत में अंतिम रूप से पतन 1759 में अंग्रेजों एवं डचों के मध्य 'बेदरा के युद्ध' के बाद हुआ। ( )

(iii) फ्रांसिस्को डी अल्मीडा 1505 से 1509 ई. के बीच भारत में पहला पुर्तगाली वायसराय के रूप में कार्य किया था। ( )

(iv) 1760 ई. में अंग्रेजी सेनानायक सर आयरकूट के नेतृत्व में वांडिवाश का युद्ध हुआ, जिसमें पुर्तगालियों की हार हुई। ( )

(v) व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा व राजनीतिक संघर्ष के चलते अंग्रेजी व फ्रांसीसी कंपनियों के मध्य तीन युद्ध हुए, जिन्हें कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना जाता है। ( )

(vi) फ्रांसीसी गवर्नर काउंट डी लाली के समय में भारत में फ्रांसीसी प्रभुत्व की स्थापना हुई। ( )

(vii) अंग्रेज समर्थित डचों ने 1693 ई. में फ्रांसीसियों से पांडिचेरी ले लिया, परन्तु 1697 ई. में रिजविक की संधि द्वारा इसे वापस लौटा दिया। ( )

(viii) सन् 1664 में फ्रांस के सम्राट लुई चौदहवें के मंत्री कोल्बर्ट के प्रयास से फ्रेंच कंपनी की स्थापना हुई। ( )

(ix) फ्रांसीसी कंपनी एक प्राइवेट कंपनी थी, जबकि अंग्रेजी कंपनी एक सरकारी कंपनी थी। ( )

(x) 1672 ई. में फ्रांसीसियों ने मद्रास (चेन्नई) के निकट सेंटटोमे को जीत लिया परन्तु अगले वर्ष उनका नौसेना अध्यक्ष दी ला गोलकुण्डा के सुल्तान और डचों की सम्मिलित सेना द्वारा पराजित हुआ तथा डचों को सेंट टोमे देने के लिए बाध्य हुआ। ( )

5.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

यूरोपियों का आगमन

पुर्तगाली | डच | अंग्रेज | डेनिश | फ्रांसीसी | स्वीडिश

- भारत में पुर्तगाली सर्वप्रथम आए और सबसे अंत में गए।
- 14 मई, 1498 को भारत पहुँचने वाला प्रथम पुर्तगाली वास्कोडिगामा था।
- पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा उत्तमाशा अंतरीप (केप ऑफ गुड होप) का चक्कर काटते हुए एक गुजराती व्यापारी अब्दुल मजीद की सहायता से भारत के कालीकट (केरल, मालाबार तट) बंदरगाह पर पहुँचा। जहाँ कालीकट के हिंदू शासक जमोरिन ने उसका स्वागत किया।
- पुर्तगालियों ने मसाला व्यापार को ध्यान में रखते हुए भारत में प्रवेश किया और विभिन्न स्थानों पर उत्पादन फैक्ट्री/कारखाने/बस्ती/किले की स्थापना की। यह कारखाने उत्पादन के केन्द्र नहीं थे बल्कि भण्डारगृह थे। यहाँ पर वस्तुओं का संग्रह कर उन्हें यूरोप भेजा जाता था। यह फैक्ट्री किलाबंद क्षेत्र जैसा होती थी। जिसमें गोदाम, कार्यालय तथा व्यापारियों के लिए आवास भी होते थे।
- भारत में पुर्तगालियों का विरोध अरबी व्यापारियों द्वारा किया गया था।
- भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर (वायसराय) फ्रांसिस डी. अल्मीडा था जिसने ब्लू वाटर पॉलिसी (नीला पानी नीति) अर्थात् शांतिपूर्ण व्यापार की नीति चलाई।
- भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क को माना जाता है।
- अल्बुकर्क ने भारत में पुतगाली पुरूषों को भारतीय स्त्रियों के साथ विवाह के लिए प्रोत्साहित किया जिससे कि भारत में पुर्तगाली बस्ती की स्थापना को मजबूत आधार मिल सके।
- 1503 ई. में पुर्तगालियों ने कोचीन में अपनी पहली फैक्ट्री (व्यापारिक केन्द्र) स्थापित की तथा 1505 ई. में कन्नूर में दूसरी फैक्ट्री स्थापित की।
- पुर्तगाली वायसराय नीनो–डी–कुन्हा ने 1530 में गोवा को पुर्तगालियों की राजधानी बनाया।
- 1661 में ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स द्वितीय के साथ पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन का विवाह हुआ और उपहार स्वरूप ब्रिटिश राजकुमार को बॉम्बे प्राप्त हुआ जिसने आगे चलकर 1668 में बॉम्बे ब्रिटिश कंपनी को दे दिया।

➢ पुर्तगालियों का योगदान :–

- भारत में प्रिटिंग प्रेस की स्थापना की।

- तम्बाकू की खेती का प्रचलन शुरू किया।
- यूरोपीय गौधिक स्थापत्य कला का भारत में प्रवेश हुआ।

➤ पुर्तगालियों के पतन का कारण :–

- पुर्तगालियों की इसाईकरण की नीति ने असंतोष पैदा किया फलतः उन्हें स्थानीय सहयोग प्राप्त नहीं हुआ।
- व्यापार के साथ उन्होंने लूटपाट की नीति जारी रखी अतः विरोधी पैदा हुए। वास्तव में पुर्तगालियों ने कार्टेज–आर्मेडा–काफिला पद्धति की शुरूआत की जिसके तहत समुद्री व्यापार के लिएस जहाजों को पुर्तगालियों से परमिट प्राप्त करना होता था। इसे न लेने वाले को दंडित करते हुए उसके समुद्री जहाज को लूट लिया जाता था।
- भारतीय महिलाओं संग वैवाहिक नीति का समाज में विरोध हुआ।
- पुर्तगालियों के बाद डचों का आगमन हुआ। डच, हॉलैंड (वर्तमान नीदरलैंड्स) के निवासी थे।
- 1596 में कॉर्नेलिस डी हाउटमैन केप ऑफ गुड होप होते हुए सुमात्रा तथा बाण्टेन पहुँचने वाला प्रथम डच नागरिक था।
- 1602 में डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की गई।
- डच कंपनी सरकारी कंपनी थी।
- डचों ने बाटविया (इण्डोनेशिया) को अपना मुख्यालय बनाया। भारत स्थित डच कंपनी इसी केन्द्र के प्रति उत्तरदायी थी।
- डचों ने मसालों के स्थान पर भारतीय वस्त्र के निर्यात को ज्यादा महत्त्व दिया।?
- भारत से भारतीय वस्तुओं में वस्त्र के निर्यात को सर्वप्रमुख वस्तु बनाने का श्रेय डचों को दिया जाता है।
- डचों ने भारत में कोरोमण्डल तट से व्यापार को प्रमुखता दी।
- अंततः 1759 में बेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को हराकर भारत से सदा के लिए बाहर कर दिया।
- डेनिश कंपनी डेनमार्क की कंपनी थी, जिसकी स्थापना 1616 ई. में हुई थी।
- डेनिश कंपनी ने ट्रंकोबार (तमिलनाडु) में अपना पहला व्यापारिक केन्द्र बनाया और आगे चलकर अपने सभी केन्द्रों को ब्रिटिश को बेचकर चले गए।

- 1588 में अंग्रेजों ने अपनी नौसैनिक श्रेष्ठता प्रमाणित कर पूर्वी क्षेत्र में व्यापार के लिए कदम बढ़ाया। इसी क्रम में 1599 में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई जिसे आरंभ में 15 वर्षों के लिए पूर्व के साथ व्यापार करने की अनुमति दी गई।
- 1609 ई. में ब्रिटिश सम्राट जेम्स प्रथम ने कंपनी को अनिश्चिताकलीन व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया।
- 1608 में जहाँगीर के शासन काल में केप्टन हॉकिन्स के नेतृत्व में अंग्रेजों के दल ने सूरत में प्रथम व्यापारिक केन्द्र खोलने का निश्चय किया और इसके लिए शासक की अनुमति लेनी चाही जो उस समय नहीं मिली।
- 1615 में इंग्लैंड के सम्राट जेम्स प्रथम का एक दूत सर टॉमस रो जहाँगीर के दरबार में आया।
- सर टॉमस रो ने एक व्यापारिक संधि के द्वारा जहाँगीर से व्यापार करने एवं फैक्ट्रियाँ स्थापित करने का अधिकार पत्र प्राप्त कर लिया।
- सूरत में अंग्रेजों ने प्रथम स्थायी बस्ती की स्थापना की थी।
- दक्षिण भारत में अंग्रेजों ने अपनी प्रथम व्यापारिक कोठी की स्थापना 1611 में मसूलीपट्टनम ने की थी।
- 1623 तक अंग्रेजों ने सूरत, आगरा, अहमदाबाद, मसूलीपट्टनम तथा भड़ौच में अपनी व्यापारिक कोठियाँ स्थापित कर ली थीं।
- अंग्रेज फ्रांसिस डे ने 1639 में चंद्रगिरी के राजा से मद्रास को पट्टे पर प्राप्त किया था। कालांतर में इसी स्थान पर 'फोर्ट सेंट जार्ज' के नाम से किलेबंद कोठी की स्थापना की गयी।
- 1668 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने ब्रिटिश सरकार से बंबई को प्राप्त किया।
- 1698 में बंगाली सूबेदार अजीमुशान ने अंग्रेजों को सुतानती, गोबिंदपुर, कलकत्ता की जमींदारी प्रदान की। इन्हीं सथानों को मिलाकर जॉब चार्नाक ने कलकत्ता में फोर्ट विलियम नाम से किलेबंद कोठी की स्थापना की।
- फोर्ट विलियम कलकत्ता का प्रथम प्रेसीडेंट चार्ल्स आयर था।
- 1717 ई. में मुगल बादशाह फर्रूखशियर ने अंग्रेजों को शाही फरमान प्रदान किया जिसके तहत उन्हें बंगाल में निःशुल्क व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गई।
- अंग्रेजों के बाद 1616 ई. में डेनिश आए।
- डेनिश कंपनी ने 1620 में ट्रैंकोबार में तथा 1676 में सेरामपोट (प. बंगाल) में अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की।
- डेनिश कंपनी भारत में अपने आपको स्थापित करने में असफल रही और 1745 तक अपनी सभी फैक्ट्रियाँ अंग्रेजों को बेचकर चली गई।

- 1664 में फ्रांस के सम्राट लुई 14 वें के समय उसके मंत्री कोल्बर्ट के प्रयास से फ्रांसीसी कंपनी की स्थापना हुई थी।
- फ्रांसीसी कंपनी को राज्य द्वारा विशेषाधिकार और वित्तीय संसाधन प्राप्त थे।
- फ्रांसीसी कंपनी पूर्णतः सरकारी कंपनी थी।
- भारत में प्रथम फ्रांसीसी फैक्ट्री की स्थापना फ्रैंको कैरो द्वारा 1668 में सूरत में की गयी थी।
- भारत में प्रथम फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले था।
- गोलकुंडा रियासत के सुल्तान से अधिकार पत्र प्राप्त करने के बाद 1669 में मसूलीपट्टनम में दूसरी व्यापारिक कोठी स्थापित की गई।
- फ्रांसीसी कंपनी के निदेशक फ्रैंको मार्टिन ने वलिकोंडापुरम के सूबेदार शेर खाँ लोदी से कुछ गाँव प्राप्त किए, जिसे बाद में पांडिचेरी के नाम से जाना गया।
- आगे चलकर पांडिचेरी में फ्रांसीसियों द्वारा 'फोर्ट लुई' के नाम से किला बनवाया गया।
- 1673 में बंगाल के नवाब शाइस्ता खाँ से फ्रांसीसियों ने किराए पर जगह लेकर चंद्रनगर कोठी की स्थापना की।
- आगे चलकर चंद्रनगर में 'फोर्ट ओरलिएंस' नाम से किलानुमा बस्ती की स्थापना की गयी।
- फ्रांसीसियों द्वारा 1721 में मॉरीशस, 1725 में मालाबार में स्थित मांहे एवं 1739 में कारीकल पर अधिकार कर लिया गया।
- राजनीतिक हस्तक्षेप पर आर्थिक लाभ लेने की अवधारणा का सूत्रपात भारत में फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने किया जिसे आगे चलकर अंग्रेजों ने अपनाया।
- व्यापारिक एकाधिकार व राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा को लेकर अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों के मध्य तीन युद्ध हुए जिन्हें कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध के दौरान 1760 में अंग्रेजों ने बांडीवाश के युद्ध में फ्रांसीसियों को पराजित किया।

आंग्ल– फ्रांसीसी संघर्ष कर्नाटक युद्ध

काल	कारण	संधि	परिणाम
I 1746–48 ई.	ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार युद्ध	एक्स–ला शैपल	फ्रांसीसियों की विजय जिससे डूप्ले की महत्त्वाकांक्षा में वृद्धि

		(1748 ई.)	हुई।
II 1749–54 ई.	हैदराबाद तथा कर्नाटक के आंतरिक मामले में विवाद	पांडिचेरी संधि (1754 ई.)	फ्रांसीसी प्रभुत्व को हानि हुई तथा अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ा।
III 1758–63 ई.	सप्तवर्षीय युद्ध से प्रभावित	पेरिस संधि (1763 ई.)	1760 ई. में वांडीवाश युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को निर्णायक रूप से पराजित कर दिया।

➢ फ्रांसीसियों की पराजय का कारण :–

- फ्रांसीसी कंपनी पूर्णतः एक सरकारी कंपनी थी। इस कारण निर्णय लेने में विलंब होता था।
- फ्रांसीसी अधिकारियों में सहयोग एवं समन्वय का अभाव था।
- फ्रांसीसियों की नौ सैनिक क्षमता अंग्रेजों की तुलना में कमजोर थी।
- ब्रिटिश कंपनी को उनकी अपनी सरकार का जितना समर्थन मिला वैसा फ्रांसीसी कंपनी को प्राप्त नहीं हुआ यही कारण है कि ब्रिटिश के साथ संघर्ष में फ्रांसीसी पराजित हुए।
- फ्रांसीसी कंपनी में दूरदर्शिता का अभाव था।

5.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- डेनिश – डेनमार्क देश के वासी।
- स्वीडीश – स्वीडन देश के वासी
- डच – हॉलैंड या नीदरलैंड देश के वासी को डच के नाम से जानते हैं।
- रॉयल – राजशाही?
- भड़ौच – भारत के पश्चिमी तट पर गुजरात में स्थित बंदरगाह।
- लुई – फ्रांस के शासक को लुई से संबोधित करते थे।

- कोरोमण्डल – भारत के पूर्वी तट पर स्थित तमिलनाडु का तट कोरोमण्डल कहलाता है।
- आस्ट्रिया – मध्य यूरोप में स्थित एक स्थल रूद्ध (Landlocked) अर्थात् चारों ओर जमीन से घिरा हुआ देश।
- सेंटटोमे – म्रदास के निकट सेंटटोमे नामक स्थान पर प्रथम कर्नाटक युद्ध लड़ा गया। अतः प्रथम कर्नाटक युद्ध को सेंट टोमे का युद्ध भी कहा जाता है।
- बेदरा – पं. बंगाल में स्थित है। इसी स्थान पर 1759 में अंग्रेजों ने डचों को अंतिम रूप से परास्त करके भारत से बाहर निकाल दिया।
- वांडीवाश – तमिलनाडु में स्थित है। इसी स्थान पर अंग्रेजों ने 1760 में अंतिम रूप से फ्रांसीसियों को पराजित किया था। इसके बाद फ्रांसीसी पांडिचेरी में सिमट कर रह गये थे। पांडिचेरी से फ्रांसीसियों को अंतिम रूप से देश की आजादी के बाद 1954 में निकाला गया था।

5.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) फ्रांसीसियों को वांडिवाश के युद्ध में पराजित करने वाला अंग्रेज सेनानायक था –

(क) सर आयर कूट (ख) राबर्ट क्लाईव

(ग) लारेंस (घ) पोकॉक

(ii) इंग्लैंड तथा फ्रांस के बीच निम्न युद्ध के कारण भारत में अंग्रेजी कंपनी तथा फ्रांसीसी कंपनी में कर्नाटक का तीसरा युद्ध छिड़ गया –

(क) आस्ट्रिया का उत्तराधिकार युद्ध (ख) स्पेन का राजसिंहान युद्ध

(ग) सप्तवर्षीय युद्ध (घ) पुर्तगाल का उत्तराधिकार सम्बन्धी युद्ध

(iii) फ्रांसीसी व्यापारिक कंपनी की स्थापना किस फ्रांसीसी शासक के शासनकाल में हुई थी।

(क) लुई 14 वाँ (ख) लुई 13 वाँ

(ग) लुई 15 वाँ (घ) लुई 16 वाँ

(iv) भारत में फ्रांसीसियों ने अपना सबसे पहला कारखाना निम्न स्थानों में से कहाँ लगाया ?

(क) सूरत (ख) पुलिकट (ग) कोचीन (घ) कासिम बाजार

(v) निम्न यूरोपीय शक्तियों ने भारतीय व्यापार में समय–समय पर प्रवेश किया –

(क) अंग्रेज (ख) डच (ग) फ्रांसीसी (घ) पुर्तगाली

निम्न कूट से उनके प्रवेश का सही तिथिक्रम निर्धारित कीजिये :

(क) 1, 2, 3, 4 (ख) 4, 2, 1, 3

(ग) 3, 4, 2, 1 (घ) 2, 3, 4, 1

(vi) भारत में यूरोपीय शक्तियों के प्रवेश में निम्न में कौन–सा कथन सत्य नहीं है ?

(क) पुर्तगालियों ने 1499 ई. में गोवा पर कब्जा किया था।

(ख) अंग्रेजों ने दक्षिण भारत में अपना पहला कारखाना मसूलीपट्टनम में लगाया।

(ग) पूर्वी भारत में अंग्रेजी कंपनी ने 1633 में उड़ीसा में पहला कारखाना लगाया।

(घ) डूप्ले के नेतृत्व में फ्रांसीसियों ने 1746 ई. में मद्रास पर कब्जा किया था।

(vii) पांडिचेरी (वर्तमान पुदुच्चेरी) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये –

1. पांडिचेरी पर कब्जा करने वाली पहली यूरोपीय शक्ति पुर्तगाली थे।

2. पांडिचेरी पर कब्जा करने वाली दूसरी यूरोपीय शक्ति फ्रांसीसी थे।

3. अंग्रेजों ने कभी पांडिचेरी पर कब्जा नहीं किया।

उपर्युक्त में से कौन–सा/से कथन सत्य है/हैं ?

(क) केवल 1 (ख) 2 और 3 (ग) केवल 3 (घ) 1, 2 और 3

(viii) अंग्रेज समर्थित डचों ने 1693 ई. में फ्रांसीसियों से पांडिचेरी ले लिया, परंतु 1697 ई. में .... की संधि द्वारा इसे वापस लौटा दिया था।

(क) रिजविक की संधि (ख) पेरिस संधि

(ग) एक्स–ला–शैपेल की संधि (घ) पांडिचेरी की संधि

(ix) लंदन में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के गठन के समय भारत का निम्नलिखित में से कौन बादशाह था ?

(क) अकबर (ख) जहाँगीर

(ग) शाहजहाँ (घ) औरंगजेब

(x) कर्नाटक युद्ध किन–किन के मध्य लड़ा गया ?

(क) अंग्रेज व फ्रांसीसी (ख) अंगेज व डच

(ग) अंग्रेज व मराठे (घ) हैदरअली व मराठे

(ख) निबंधात्मक/दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

1. यूरोपीय कंपनियों के बीच संघर्ष का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

(Give a brief account of the struggle among European Companies.)

2. भारत में अंग्रेजी व फ्रांसीसी कंपनियों के आगमन का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

(Give a brief account of the advent of the English and the French in India.)

3. आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष का वर्णन कीजिए।

(Discuss Anglo-French Conflict.)

4. कर्नाटक के तीन युद्धों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

(Give a brief account of the three Carnatic wars.)

5. फ्रांसीसियों की भारत में राजनीतिक सत्ता स्थापित करने में असफलता के क्या–क्या कारण थे ?

(What were the causes of the failure of the French to establish political power in India.)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) डूप्ले (Duplex)

(ii) सेंट टोमे का युद्ध (War of Saint Tome)

(iii) पांडिचेरी की संधि (Trety of Pondicheri)

(iv) बेदरा का युद्ध (Battle of Bedra)

(v) वांडीवाश का युद्ध (Battle of Vandiwash)

(vi) फोर्ट विलियम (Fort William)

(vii) फोर्ट लुई (Fort Lui)

(viii) रिजविक की संधि (Treaty of Rijwick)

(ix) पेरिस की संधि (Treaty of Paris)

(x) कर्नाटक युद्ध (Carnatic Wars)

5.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check Your Progress)

5.5 (क) उत्तर :–

(i) 1664 (ii) सरकारी व्यापारी कंपनी (iii) सूरत (iv) फ्रैंको कैरो

(v) फोर्ट लुई (vi) शाहस्ता खाँ (vii) वास्कोडिगामा (viii) कैप्टन हॉकिंस

(ix) फर्रूखशियर (x) काउंट–डी–लाली

5.5 (ख) उत्तर :–

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) असत्य

(v) सत्य (vi) असत्य (vii) सत्य (viii) सत्य

(ix) असत्य (x) सत्य

5.8 (क) उत्तर :–

(i) क (ii) ग (iii) क (iv) क (v) ख

(vi) क (vii) क (viii) क (ix) क (x) क

5.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- आधुनिक भारत का इतिहास
  स्पेक्ट्रम प्रकाशन, संस्करण – 2021
- भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल 1998
  अरोड़ा अविनाश चन्द्र, प्रदीप पब्लिकेशन, संस्करण – 1998
- भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन
  तृतीय संस्करण
  दृष्टि पब्लिकेशनस
- संक्षिप्त इतिहास (NCERT सार)
  बर्णवाल महेश कुमार
  Cosmos Publication
- आधुनिक भारत का इतिहास
  बी. एल. ग्रोवर
  यशपाल
  एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि.
  संस्करण – 2000

B.A HISTORY PART- IInd YEAR SEMESTER-IIIrd	
COURSE CODE: 201 LESSON NO. 06	AUTOR – MOHAN SINGH BALODA
पलासी एवं बक्सर का युद्ध (Battles of Plassey and Buxar)	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

6.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

6.2 परिचय (Introduction)

6.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

6.3.1 प्लासी का युद्ध (Battle of Plassey)

6.3.2 प्लासी के युद्ध का कारण (Causes of Battle of Plassey)

6.3.3 प्लासी के युद्ध का परिणाम व महत्त्व (Effect and Importance of Battle of Plassey)

6.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

6.4.1 बक्सर का युद्ध (Battle of Buxar)

6.4.2 बक्सर के युद्ध का कारण (Causes of Battle of Buxar)

6.4.3 बक्सर के युद्ध का परिणाम व महत्त्व (Effect and Importance of Battle of Buxar)

6.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

6.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

6.7 संकेत–सूचक (Key-words)

6.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

6.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

6.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

6.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के स्वाध्याय के बाद विद्यार्थी अवगत होंगे :–

- प्लासी के युद्ध की पृष्ठभूमि को समझने में।
- प्लासी के युद्ध की कारणों की व्याख्या करने में।
- प्लासी के युद्ध के परिणाम व महत्त्व पर चर्चा करने में।
- इस महत्त्वपूर्ण बात की व्याख्या करने में कि बक्सर के युद्ध में विजय के बाद ही भारत में वास्तविक रूप से ब्रिटिश प्रभुसत्ता स्थापित हुई।
- बक्सर के युद्ध के कारणों व परिणामों को बताने में।

6.2 परिचय (Introduction) :-

1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद के मुगलवंश के शासक कमजोर साबित हुए। इस कारण मुगल साम्राज्य के विभिन्न प्रांत स्वतंत्र होने लगे। 1740 ई. में अलीवर्दी खां ने अपने आपको बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा का स्वतंत्र नवाब घोषित कर दिया। उसने अपनी योग्यात व कूटनीति के बल पर अंग्रेजों की शक्ति को नियंत्रित रखा। अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना। सिराजुद्दौला का तत्कालीन बंगाल का गवर्नर रॉबर्ट क्लाइन की फूट डालो और राज करो की नीति के कारण शीघ्र ही अंग्रेजों से विवाद हो गया। इस कारण अंग्रेजों और सिराजुदौला की सेनाओं के बीच 23 जून, 1757 को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद से थोड़ी ही दूरी पर स्थित प्लासी नामक स्थान पर लड़ाई हो गई। यह युद्ध प्लासी नामक स्थान पर लड़ी गई, इस कारण इतिहास में इसे प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757) के नाम से जानते हैं।

इस युद्ध में सिराजुद्दौला की सेना में जहां एक ओर मीर मदन, मोहनलाल जैसे देशभक्त थे तो वहीं दूसरी ओर उसका धोखेबाज सेनापति मीरजाफर भी था। अंग्रेज गवर्नर क्लाइव ने मीरजाफर को नवाब बनाने का लोभ देकर युद्ध को जीत लिया। इस प्रकार प्लासी के युद्ध में अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला को बुरी तरह पराजित कर दिया।

इस युद्ध के परिणामस्वरूप अंग्रेज बंगाल में अपने प्रभुत्व की स्थापना की ओर कदम बढ़ा दिया। जो थोड़ी बहुत कमी रह गयी थी उसे बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर 1764) के द्वारा उन्होंने पूरा करके बंगाल पर पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

प्लासी के युद्ध के पश्चात् 1757 ई. में मीरजाफर को बंगाल का नवाब बनाया गया। वह 1760 ई. तक नवाब के रूप में कार्य करता रहा। परंतु इस दौरान मीरजाफर केवल नाममात्र का ही शासक था और राज्य की वास्तविक शक्ति अंग्रेज गवर्नर क्लाइब के हाथ में थी। वास्तव में मीरजाफर को कुछ करने का अधिकार नहीं था। उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई। दूसरी ओर क्लाइब के बाद के अंग्रेज उत्तराधिकारी हॉलवैल तथा वैंसीट्टार्ट (Vansittart) ने मीरजाफर को पद से हटाने का निश्चय किया। उचित समय पाकर वैंसीट्टार्ट ने मीरजाफर के दामाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया तथा मीरजाफर को कलकत्ता में एक पेन्शनर के रूप में रहने के लिए मजबूर कर दिया।

इस प्रकार 1760 ई. में मीर कासिम बंगाल का नवाब बना। वह एक अति योग्य शासक था। उसने नवाब बनते ही राज्य के कुशल प्रबंधक के लिए भ्रष्ट व अयोग्य कर्मचारियों को पद से हटा दिया। सेना का पुनः संगठन किया तथा अपने आपको अंग्रेजों के प्रभाव से मुक्त करने के लिए उसने मुर्शिदाबाद के स्थान पर बिहार स्थित मुंगेर को अपनी राजधानी बना दिया। मीर कासिम ने अंग्रेजों के अनुचित व्यापार को भी बन्द करने के प्रयत्न किये। इस प्रकार के योग्य शासक का अंग्रेजों के हाथों का कठपुतली बन कर रहना संभव नहीं था। ऐसी स्थिति में मीर कासिम का अंग्रेजों के साथ युद्ध स्वाभाविक था। इस कारण 1763 ई. में मीर कासिम का अंग्रेजों के साथ युद्ध हुआ और इसमें उसकी हार हो गई। अंग्रेजों ने एक बार फिर से मीरजाफर को बंगाल का नवाब बना दिया। अंग्रेजों से आहत होकर मीरकासिम ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला व मुगल शासक शाह आलम द्वितीय के साथ मिलकर युद्ध करने की योजना बनाई। इसके परिणामस्वरूप 22 अक्टूबर, 1764 ई. को दोनों पक्षों की सेनाओं का निर्णायक युद्ध हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर भुनरों ने किया था। इस युद्ध में अंग्रेजों ने बंगाल का नवाब मीर कासिम, अवध का नवाब शुजाउ□द्दौला व मुगल शासक शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना को पराजित कर दिया था। इस युद्ध के बाद इलाहाबाद की संधि के द्वारा अंग्रेजों ने बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी का बहुमूल्य अधिकार प्राप्त कर लिया। अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि बक्सर का युद्ध एक प्रकार से प्लासी के युद्ध से भी अधिक महत्त्वपूर्ण था। बक्सर के युद्ध ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डालने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

6.3. अध्याय के मुख्य बिंदु (Main body of the Text)

6.3.1 प्लासी का युद्ध (Battle of Plassey)

प्लासी का युद्ध 23 जून, 1757 को बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला की सेना और रॉबर्ट क्लाइन के नेतृत्व में ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना के बीच हुआ। सिराजुद्दौला की सेना की संख्या लगभग 50,000 थी तथा अंग्रेजों की सेना की संख्या मात्र 3200 थी। इस युद्ध में जहाँ नवाब की ओर से मीर मदन, मोहनलाल जैसे देशभक्त थे वहीं मीर जाफर व राय दुर्लभ जैसे धोखेबाज सेनानायक भी थे। रॉबर्ट क्लाइब ने सेनापति मीर जाफर को नवाब बनाने का लोभ देकर अपनी ओर मिला लिया। इस कारण मीर जाफर एवं राय दुर्लभ अपनी सेनाओं के साथ निष्क्रिय रहे। इस प्रकार युद्ध का परिणाम नियति ने पहले से ही तय कर दिया था। एक तरह से हम यह कह सकते है कि विश्वासघाती सेनानायकों के कारण क्लाइब बिना युद्ध के विजयी रहा। इसके बाद जो कि पहले से निश्चित था मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाया गया।

यद्यपि प्लासी का युद्ध एक मामूली सैनिक झडप के रूप में थी लेकिन इसने भारतीयों के चारित्रिक दुर्बलता को प्रकट कर दिया और अंग्रेज इस बात को समझ गये कि आसानी से फूट डालकर हम अपने साम्राज्य का विस्तार कर सकते हैं। इस युद्ध के बाद होने वाली घटनाओं से इसके भारत के इतिहास में महत्त्व का पता चलता है। यह बात स्पष्ट है कि आर्थिक एवं नैतिक शोषण पर आधारित दासता की शुरूआत भारत में प्लासी का युद्ध के बाद अधिकाधिक रूप से आरंभ हो गई। राजनीतिक रूप से भी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थिति मजबूत हो गई। आगे हम देखते हैं कि बंगाल अंग्रेजों के अधीन हो गया और फिर कभी स्वतंत्र न हो सका। नया नवाब मीरजाफर नाममात्र का नवाब था। वास्तविक शक्ति अंग्रेजों के पास था। वह अपनी रक्षा तथा पद के लिए अंग्रेजों पर निर्भर था।

मीर जाफर क्लाइव की कठपुतली के रूप में जब तक अंग्रेजों की महत्वाकांक्षा को पूरा कर सकने में समर्थ था तब तक पद पर बना रहा। यद्यपि मीर जाफर ने नवाब बनने के लिए अंगंजों की सेवा में सब कुछ दांव पर लगा दिया था तथापि वह क्लाइव की बढ़ती धनलिप्सा की पिपासा को शांत नहीं कर सका। इसके परिणामस्वरूप 1760 ई. में उसे पदच्युत कर उसके जामाता मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया गया। यह परिवर्तन अंग्रेजों को शांतिपूर्वक आसानी से कर दिया। इसीलिए भारतीय इतिहास में इस वर्ष को शांतिपूर्ण क्रांति का वर्ष कहा जाता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्लासी के युद्ध का सामरिक महत्त्व कुछ नहीं था। यह मात्र एक छोटी सी झड़प मात्र थी। इसने अंग्रेजों की कूटनीतिज्ञ दक्षता को प्रकट कर दिया। निश्चित रूप से भारत पर अधिकार प्राप्त करने की कड़ी में यह एक महत्वपूर्ण कारक थी।

6.3.2 प्लासी के युद्ध का कारण (Causes of Battle of Plassey)

23 जून, 1757 ई. को बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला की सेना व रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना के बीच प्लासी नामक स्थान पर एक महत्त्वपूर्ण युद्ध हुआ। इस युद्ध के निम्नलिखित कारण थे :–

(i) अंग्रेजों द्वारा व्यापारिक सुविधाओं का दुरूपयोग– 1717 ई. में अंग्रेजों ने मुगल फरमान की अपनी सुविधा के अनुसार गलत व्याख्या की और दस्तक का गलत उपयोग करने लग गये थे। उन्होंने अपने दस्तक देशी व्यापारियों को बेचने आरंभ कर दिये और इस प्रकार देशी व्यापारी बिना कर दिये ही प्रांत में व्यापार करने लगे। इससे नवाब को आर्थिक हानि हो रही थी। अतः उसने अंग्रेजों के विरूद्ध कदम उठाने का निश्चय कर लिया। अतः व्यापारिक सुविधाओं का अंग्रेजों द्वारा दुरूपयोग प्लासी युद्ध का एक महत्त्वपूर्ण कारण बना।

(ii) अंग्रेजों द्वारा शौकत जंग का पक्ष लेना – सिराजुद्दौला के गद्दी पर बैठते ही उसके चचेरे भाई शौकत जंग जो स्वयं बंगाल का नवाब बनना चाहता था ने उसके विरूद्ध विद्रोह कर दिया। उसके इस कार्य में अंग्रेज उसकी सहायता कर रहे थे। ऐसे में अंग्रेजों के साथ सिराजुद्दौला का युद्ध होना अवश्यंभावी था।

(iii) असंतुष्ट हिन्दुओं के प्रति अंग्रेजों के गठ–जोड़ की नीति – सिराजुद्दौला ने असंतुष्ट हिंदू सरदार तथा अमीर को अंग्रेज अपने साथ मिला रहे थे। अंग्रेजों ने उस समय एक प्रसिद्ध हिंदू जगत सेठ के साथ समझौता कर लिया था तथा एक अन्य हिंदू किशनचन्द को आश्रय दिया। इससे नवाब अंग्रेजों के और भी अधिक विरूद्ध हो गया। अतः यह भी प्लासी युद्ध का एक कारण बना।

(iv) अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता में किलाबंदी – सप्त–वर्षीय युद्ध के शुरू हो जाने से अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियों ने बंगाल में अपनी–अपनी बस्तियों में दुर्ग बनवाने आरंभ कर दिये। नवाब के आदेश के विरूद्ध अंग्रेजों ने कलकत्ता में किलाबंदी की। अतः दोनों में युद्ध अनिवार्य हो गई।

(v) नवाब का कलकत्ता पर अधिकार तथा ब्लैंक होल दुर्घटना को भी प्लासी युद्ध का एक कारण माना जाता है। यद्यपि कई इतिहासकार अब ब्लैक होल की घटना को संदेह की दृष्टि से देखते है और इसे सत्य मानने से इनकार करते हैं।

जून 1756 ई. में नवाब सिराजुद्दौला की सेना ने अंग्रेजों के कासिम बाजार पर अधिकार कर लेने के बाद कलकत्ता पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेजों ने अपने किले की रक्षा करने के लिए इसका विरोध किया, लेकिन वे नवाब की विशाल सेना के सामने टिक न सके। कुछ अन्य अंग्रेज अधिकारियों सहित गवर्नर ड्रेक ने बचाव करते हुए फुल्टा नामक स्थान पर शरण लिया। कलकत्ता नवाब के अधिकार में आ गया।

इतिहास में ऐसा वर्णन मिलता है कि नवाब ने 146 अंग्रेज बन्दियों को फोर्ट विलियम के एक छोटे से कमरे में बन्द कर दिया, जो 18 फीट लम्बा तथा 15 फीट चौड़ा था। ये सब लोग जून की गर्मी में एक राज इस छोटे से कमरे में बंद रहे। अगले दिन प्रातःकाल जब कमरे का द्वार खोला गया तो उनमें से केवल 23 लोग ही जीवित पाये गय। हालवैल इन 23 व्यक्तियों में से एक था जिसने इस घटना का उल्लेख किया था। इतिहास में यह घटना ब्लैक–होल दुर्घटना (Black-Hole Tragedy) के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रकार से कलकत्ता के पतन को प्लासी युद्ध की पूर्व घटनाक्रम के रूप में माना जाता है। अंग्रेज अधिकारियों ने मद्रास से अपनी उस सेना को क्लाइव के नेतृत्व में कलकत्ता भेजा जिसका गठन फ्रांसीसियों से मुकाबले के लिए किया गया था। अंग्रेजों द्वारा 2 जनवरी, 1757 को कलकते पर अधिकार करने के बाद उन्होंने नवाब के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। फलतः नवाब को मजबूर होकर क्लाइव के साथ 9 फरवरी, 1757 को अलीनगर की संधि करनी पड़ी। नवाब द्वारा कलकत्ता को दिया गया नाम अलीनगर था। इस संधि के अनुसार अंग्रेजों ने पुनः फरमान द्वारा प्राप्त अधिकार को प्राप्त कर लिया तथा इसके साथ ही नवाब से क्षतिपूर्ति के रूप में तीन लाख रूपये भी प्राप्त किया। दूसरी ओर क्लाइव कूटनीति के सहारे नवाब से असंतुष्ट अधिकारियों को अपनी ओर मिला रहा था। इसी बीच 1757 में ही अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों से चंद्रनगर को जीत लिया। इस प्रकार अंग्रेजों के इन सब षड्यंत्रकारी कृत्यों से नवाब का क्रोध सीमा से बाहर हो गया जिसकी अंतिम परिणति प्लासी के युद्ध के रूप में हुई।

इस प्रकार अंग्रेजों का कलकत्ता पर पुनः अधिकार, चन्द्रनगर पर अंगेजों का अधिकार, क्लाइव की मीर जाफर से सांठ–गांठ आदि महत्त्वपूर्ण कारणों से प्लासी युद्ध को संभव बनाया।

6.3.3 प्लासी के युद्ध का परिणाम व महत्त्व (Effect and Importance of Battle of Plassey)

23 जून, 1757 ई. के प्लासी के युद्ध में अंग्रेजों की विजय का बंगाल के इतिहास पर विशेष प्रभाव पड़ा। इस युद्ध के द्वारा भारत के इतिहास में एक नये युग का आरंभ हुआ। इस युद्ध के परिणाम व महत्त्व निम्नलिखित थे –

(i) सैनिक दृष्टिकोण से प्लासी का युद्ध एक मामूली झड़प के रूप में था। इस युद्ध में कोई भी खून–खराबा नहीं हुआ। इसके बावजूद राजनीतिक दृष्टि से यह युद्ध भारत के इतिहास में दासता का युग आरंभ करने वाला निर्णायक युद्ध साबित हुआ। इस युद्ध के द्वारा बंगाल में अंग्रेजों की सर्वोच्चता स्थापित हो गई। बंगाल का नया नवाब मीर जाफर अंग्रेजों का कठपुतली बनकर कार्य करने लगा। वास्तव में प्लासी के युद्ध के फलस्वरूप भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव रखी गई। इस प्रकार प्लासी के युद्ध के फलस्वरूप भारत में एक नये युग का आरंभ हुआ।

(ii) अंग्रेजों का बंगाल एवं अंततः संपूर्ण भारत सैनिक ताकत के साथ–साथ फूट डालो एवं राज करो के षड्यंत्र द्वारा अपना अधिकार करना आसान हो गया।

(iii) अंग्रेजों की एक विजय से एक ओर जहाँ इनकी प्रतिष्ठा व आत्मविश्वास में वृद्धि हुई वहीं दूसरी ओर बंगाल के नवाब की स्थिति कमजोर पड़ गई। यह अलग बात है कि यह विजय विश्वासघात या अन्य किसी साधन से प्राप्त हो गई थी।

(iv) इस युद्ध के द्वारा नवाब के प्रशासन की आंतरिक कलह स्पष्ट रूप से प्रकट होने लगी, और विरोधियों द्वारा अंग्रेजों के साथ मिलकर किए गए षड्यंत्र ने अंततः प्रशासन की शक्ति को कमजोर कर दिया।

(v) प्लासी के युद्ध का एक बहुत बड़ा परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी कंपनी के स्वरूप में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया। अब यह केवल व्यापारिक कंपनी नहीं रह गई बल्कि इस युद्ध के बाद यह अवश्य ही एक राजनीतिक शक्ति बन गई। इसने आगामी वर्षों में बंगाल तथा भारत की राजनीति में प्रमुखता से भाग लेना आरम्भ कर दिया और धीरे–धीरे यह भारत में सर्वोच्च शक्ति बन गई।

(vi) प्लासी की विजय से अंग्रेजों को आर्थिक तथा व्यापारिक लाभ भी हुआ। अंग्रेजी कंपनी को नया नवाब मीर जाफर से काफी धन–राशि प्राप्त हुई। क्लाइव तथा कम्पनी के अन्य अधिकारियों को भी बहुत सा धन दिया गया। इसके अलावा अब कम्पनी बिना कर दिये स्वतंत्रापूर्वक समस्त प्रांत में व्यापार कर सकती थी। प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजी कंपनी ने कलकत्ता में अपनी टक्साल स्थापित कर ली तथा अपने सिक्के जारी करने आरंभ कर दिये।

(vii) प्लासी युद्ध के परिणामस्वरूप अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को वित्तीय उपलब्धि के अतिरिक्त फ्रांसीसी और डच कंपनियसों को कमजोर करने में सहायता मिली और बंगाल के व्यापार पर सफलतापूर्वक अपनी इजारेदारी को स्थापित कर लिया।

(viii) अतः प्लासी के युद्ध का एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रभाव यह देखने को मिलता है कि अंग्रेज फ्रांसीसी को पराजित करने में सफल रहे।

6.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

6.4.1 बक्सर का युद्ध (Battle of Buxar)

अंग्रेजों से पराजित होने के बाद मीर कासिम ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला के यहाँ शरण लिया। मीर कासिम अलीवर्दी खां के उत्तराधिकारियों में सबसे योग्य था और अंग्रेजों की चाल भली–भांति समझता था। उसने अपनी

कूटनीति व राजनीतिक कौशल के तहत परिस्थितियों को समझते हुए अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा मुगल सम्राट शाह आलम दोनो से अंग्रेजों के विरूद्ध सहायता मांगी। दोनों ने मीर कासिम के इस योजना को स्वीकार किया। इस प्रकार तीनों की सम्मिलित सेनाओं ने अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध करने की योजना बनाई।

22 अक्टूबर, 1764 ई. को बिहार के बक्सर नामक स्थान पर एक निर्णायक युद्ध हुआ। बक्सर नामक स्थान पर यह युद्ध हुआ, इसलिए इतिहास में यह बक्सर का युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में अंग्रेजों की विजय हुई। मीर कासिम किसी प्रकार जान बचाकर भाग निकला और वर्षों तक जगह–जगह पर ठोकरे खाते हुए अंततः 1777 ई. में बहुत ही बुरी अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई। शुजाउद्दौला व शाहआलम ने अपनी पराजय स्वीकार करते हुए अंग्रेजों के समक्ष आत्म–समर्पण कर दिए। इस प्रकार बक्सर का युद्ध ने उस कार्य को पूर्ण कर दिया जिसे प्लासी का युद्ध ने आरम्भ किया था। इस कारण अंग्रेजों के हित में बक्सर के युद्ध का महत्त्व प्लासी के युद्ध से भी अधिक माना जाता है। अब मीर जाफर बंगाल का नाम मात्र का नवाब था। वास्तविक शक्ति अंग्रेजों के पास थी। बक्सर की विजय से अंग्रेजों की बंगाल में शक्ति अच्छी तरह से मजबूत हो गई। बक्सर के युद्ध के बाद अवध का नवाब शुजाउद्दौला व मुगल सम्राट शाह आलम दोनों को अंग्रेजों ने अपना अधीनस्थ बना लिया। इस युद्ध के बाद 1765 की इलाहाबाद की संधि के द्वारा अंग्रेजों को बिहार, बंगाल व उड़ीसा की दीवानी का अधिकार प्राप्त हो गया। इस प्रकार बक्सर की लड़ाई के माध्यम से अंग्रेजों ने बंगाल पर पूर्ण राजनीतिक नियंत्रण स्थापित कर लिया। इसलिए बक्सर के युद्ध का सैनिक एवं राजनैतिक महत्त्व प्लासी के युद्ध से अधिक था। मुगल सम्राट, बंगाल का नवाब तथा अवध का नवाब तीनों अब पूर्ण रूप से कठपुतली शासक के रूप में रह गये। उन्हें अंग्रेजी सेना के समक्ष अपने बौनेपन का अहसास हो गया था। थोड़ा बहुत विरोध का स्वर मराठों और सिक्खों में सुनाई दिया वह भी समाप्त हो या। निःसंदेह इस युद्ध ने भारतीयों की हवेली पर दासता शब्द लिख दिया जिसे स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद ही मिटाया जा सका।

6.4.2 बक्सर के युद्ध का कारण (Causes of Battle of Buxar)

बक्सर की लड़ाई के निम्नांकित कारण थे :

(i) मीर कासिम की योग्यता उसकी कूटनीतिक क्षमता – मीर जाफर के गद्दी से हटने के बाद 1760 ई. में उसका दामाद मीर कासिम बंगाल का नवाब बना। अति योग्य शासक मीर कासिम नवाब बनते ही शासन–प्रबंध सुधारने के लिए महत्त्वपूर्ण कदम उठाने आरंभ कर दिये। उसने मीर जाफर के समय के भ्रष्ट तथा अयोग्य कर्मचारियों को पद से हटाने आरंभ कर दिये। सैन्य शक्ति को बढ़ाने के लिउ उसने सेना का पुनः संगठन किया। सैनिकों के वेतन को नियमित किया। नवीन शस्त्र तैयार करने के लिए कारखाने खोले गए। राज्य की आर्थिक स्थिति को सुधारने के

लिए नवाब ने कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये। अंग्रेजों के प्रभाव से अपने आप को मुक्त करने के लिए उसने मुर्शिदाबाद के स्थान पर मुंगेर को अपनी राजधानी बनाया। उसने बंगाल तथा बिहार के जमींदारों की शक्ति को बढ़ने से रोका। इस प्रकार एक योग्य शासक मीर कासिम किसी भी प्रकार से अंग्रेजों के हाथों में कठपुतली बन कर नहीं रह सकता था। अतः उसका अंग्रेजों के साथ युद्ध होना अवश्यंभावी था। अतः मीर कासिम की योग्यता भी बक्सर के युद्ध का एक कारण बना।

(ii) अंग्रेजों के अनुचित व्यापार को रोकने का प्रयास – अंग्रेज बिना चुंगी कर दिये ही व्यापार करने के विशेषाधिकार का कई प्रकार से अनुचित प्रयोग कर सूब लाभ उठा रहे थे। उसने बिना चुंगी–कर दिये अंग्रेज कर्मचारियों के निजी व्यापार पर रोक लगा दिया। इतना ही नहीं नवाब ने आंतरिक व्यापार पर सभी करों को हटा दिया। इससे अंग्रेजों को बहुत हानि हुई और वे नवाब पर फिर से चुंगी कर लगाने के लिए दबाव बनाने लगे, लेकिन नवाब ने इन्कार कर दिया। इस कारण दोनों में युद्ध छिड़ दिया।

(iii) मीर कासिम की 1763 ई. में पराजय भी युद्ध का एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणादायी कारक बना। पराजय की निराशा से आहत होकर मीर कासिम ने अंग्रेजों के विरूद्ध अवध के नवाब व मुगल शासक को साथ देने के लिए तैयार कर लिया। इसके बाद 1764 ई. में इन तीनों शक्तियों ने सम्मिलित होकर बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ाई को तैयार हो गये।

(iv) एक बार फिर से मीर जाफर का नवाब बनना भी अक्सर का युद्ध का एक कारण बना। मीर कासिम को पराजि करने से पहले जुलाई 1763 ई. में अंग्रेजों ने मीर जाफर को एक बार फिर से बंगाल का नवाब बना दिया। मीर जाफर के नवाब बनते ही एक बार फिर से अंग्रेजों को वे सभी अधिकार प्राप्त हो गये जिसको मीर कासिम ने समाप्त कर दिया। इससे बंगाल के योग्य शासक मीर कासिम की संप्रभुता को चोट पहुँची, जिसका परिणामस्वरूप बक्सर की लड़ाई (1764) के रूप में सामने आया।

(v) अंग्रेजों के दुर्व्यवहार भी बक्सर युद्ध का एक कारण बना – अंग्रेजों द्वारा नवाब के अधिकारियों के साथ कई प्रकार से गलत व्यवहार किये जा रहे थे। कंपनी के सेवकों द्वारा जन–सामान्य पर भी अत्याचार किये जा रहे थे। इस स्थिति में दोनों के बीच युद्ध होना अवश्यंभावी था।

6.4.3 बक्सर के युद्ध का परिणाम व महत्त्व (Effect and Importance of Battle of Buxar)

बक्सर की लड़ाई के द्वारा अंग्रेजों ने बंगाल पर पूर्ण राजनीतिक नियंत्रण स्थापित कर लिया। वास्तव में अंग्रेजों ने भारत पर अपने साम्राज्य की स्थापना व इसके विस्तार की जो प्रक्रिया प्लासी का युद्ध (1757) में आरंभ किया था,

बक्सर के युद्ध (1764) में इसकी चरम परिणति हुई। इस कारण बक्सर का युद्ध भारत के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण युद्ध के रूप में प्रसिद्ध है। इतिहासकार व विद्वान डॉ. ईश्वरी प्रसाद तथा सूबेदार ने कहा कि, "बक्सर ने उस कार्य को संपूर्ण कर दिया जिसे प्लासी ने आरंभ किया था।" बक्सर के युद्ध (1764) के बाद अंग्रेजों को इलाहाबाद संधि के द्वारा बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा का दीवानी अधिकार प्राप्त हो गया। इस प्रकार अंग्रेज बक्सर के युद्ध के द्वारा अंग्रेज बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा के वास्तविक शासक बन गए। एक अंग्रेज इतिहासकार ने ठीक ही कहा है, "इसने बंगाल में कम्पनी के शासन की जंजीरों को अंतिम रूप से पक्का कर दिया।" बक्सर के युद्ध (1764) ने न केवल बंगाल के अतियोग्य नवाब मीर कासिम का अंत कर दिया, बल्कि अवध के नवाब तथा मुगल शासक को अपने हाथों का खिलौना बना लिया। अब बंगाल का नवाब अंग्रेजों पर आश्रित हो गया। बादशाह अंग्रेजों का पेंशनर हो गया। इससे अंग्रेजों की प्रतिष्ठा बढ़ी। साम्राज्य–विस्तार के लिए उनका उत्साह और भी अधिक बढ़ गया। इस युद्ध के बाद ही हम देखते है कि अंग्रेजों की शक्ति का प्रसार बंगाल के बाहर के प्रदेशों में भी होने लगा।

6.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)

(i) अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद 1756 ई. में .... बंगाल का नवाब बना था।

(ii) बंगाल के .... नवाब ने यूरोपियों की तुलना मधुमक्खियों से करते हुए कहा है कि 'यदि उन्हें न छेड़ा जाय तो वे शहद देंगी और यदि छेडा जाय तो काट–काट कर मार डालेंगी।

(iii) 9 फरवरी, 1757 को अलीनगर की संधि नवाब सिराजुद्दौला को .... के साथ करनी पड़ी थी।

(iv) नवाब सिराजुद्दौला द्वारा कलकत्ता को दिया गया नया नाम .... था।

(v) प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला का धोखेबाज सेनापति .... था।

(vi) प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला की सेना में .... देशभक्त थे।

(vii) 1757 ई. में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों से .... नगर को जीत लिया था।

(viii) प्लासी का युद्ध .... ई. में हुआ था।

(ix) .... ने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानान्तरित किया था।

(x) बंगाल के .... नवाब ने मुंगेर में तोड़दार बंदूकों एवं तोपों के कारखानें की स्थापना की थी।

(ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False based Questions)

(i) प्लासी का युद्ध 1757 ई. में अंग्रेजों तथा बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के बीच हुआ था। ( )

(ii) बक्सर का युद्ध 1764 ई. में हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजों ने बंगाल के नवाब मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा मुगल सम्राट शाहआलम को पराजित किया था। ( )

(iii) प्लासी का युद्ध 1757 में अंग्रेजों की विजय से बंगाल के नवाब मीर कासिम की स्थिति कमजोर पड़ गई थी। ( )

(iv) अंग्रेज गवर्नर रॉबर्ट क्लाइव ने अपनी कूटनीतिक योजना के अंतर्गत सेनापति मीर जाफर, साहूकार जगत सेठ, राय दुर्लभ तथा अमीन चन्द्र से एक षड्यंत्र कर सिराजुद्दौला को हटाने का प्रयत्न किया। ( )

(v) प्लासी के युद्ध (23 जून, 1757) में बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला का धोखेबाज सेनापति मीर मदन था। ( )

(vi) भारत में प्लासी के युद्ध के बाद दासता के उस काल की शुरूआत हुई जिसमें इसका आर्थिक एवं नैतिक शोषण अधिक हुआ। ( )

(vii) क्लाइव की गवर्नरी के दूसरे काल का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य बंगाल में द्वैध (दोहरी) शासन–प्रणाली की स्थापना की थी। ( )

(viii) मीर कासिम तथा कम्पनी के बीच युद्ध का तात्कालिक कारण तो आंतरिक व्यापार था परंतु वास्तविक कारण अंग्रेजों के लिए राजनैतिक महत्त्वाकांक्षाएं थीं। ( )

(ix) बक्सर के युद्ध के बाद क्लाइव ने 12 अगस्त 1765 को मुगल सम्राट शाहआलम से इलाहाबाद में एक संधि की जिसकी शर्तो के अनुसार कम्पनी को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई थी। ( )

(x) क्लाइव ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ 16 अगस्त, 1765 को संधि की जिसे इलाहाबद की दूसरी संधि के रूप में जाना जाता है। ( )

6.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

- अंग्रेजों और सिराजुद्दौला की सेनायें 23 जून, 1757 को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में स्थित प्लासी नामक स्थान पर आमने–सामने हुई थी।

- प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757) में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला का धोखेबाज सेनापति मीरजाफर था।
- प्लासी का युद्ध में नवाब सिराजुद्दौला की सेना में एक तरह जहाँ मीरजाफर जैसा धोखेबाज था तो दूसरी ओर मीर मदान तथा मोहनलाल जैसे देशभक्त भी थे।
- प्लासी के युद्ध के पूर्व ही नवाब का प्रधान सेनापति मीर जाफर तथा दीवान रायदुर्लभ अंग्रेजों से मिल चुके थे। अतः प्लासी का युद्ध एक खुला युद्ध नहीं था, बल्कि एक विश्वासघात था।
- प्लासी के युद्ध में सिराजु□द्दौला की सेना की संख्या लगभग 50,000 थी तथा अंग्रेजों की सेना की संख्या मात्र 3200 थी।
- रॉबर्ट क्लाइव ने षड्यंत्रपूर्वक नवाब से असंतुष्ट लोगों को अपने साथ मिलाकर छलूपर्वक युद्ध में विजय प्राप्त कर लिया।
- अंग्रेजों की इस विजय के बाद दासता के उस काल की शुरूआत हुई जिसमें भारत का आर्थिक एवं नैतिक शोषण अधिकाधिक हुआ।
- ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थिति राजनीतिक रूप से मजबूत हुई।
- प्लासी के युद्ध को भारतीय इतिहास के निर्णायक युद्ध में गिना जाता है, क्योंकि इसने आगामी दो सौ वर्षो के लिए भारत के भविष्य को निर्धारित कर दिया था।
- प्लासी के युद्ध के कारण थे – अंग्रेजों द्वारा व्यापारिक सुविधाओं का दुरूपयोग, अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता में दुर्गों का निर्माण, असंतुष्ट हिंदुओं को संरक्षण देने की अंग्रेजों की नीति, अंग्रेजों की शौकत जंग की सहायता, चन्द्रनगर पर अंग्रेजों का अधिकार, नवाब का कलकत्ता पर अधिकार तथा ब्लैक होल दुर्घटना, क्लाईव की मीर जाफर से सांठ–गांठ आदि।
- स्वतंत्र बंगाल का संस्थापक मुर्शिद कुली खाँ (1713–27 ई.) था।
- मुर्शिद कुली खाँ को औरंगजेब ने बंगाल का दीवान बनाया था।
- बंगाल के नवाबों में अति योग्य शासक अलीवर्दी खां ने अपने आप को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा का स्वतंत्र नवाब 1740 ई. में घोषित कर दिया था।
- अलीवर्दी खाँ नाममात्र के लिए मुगल सम्राट के अधीन था।
- अलीवर्दी खाँ ने यूरोपीय लोगों की तुलना मधुमक्खी के छत्ते से की, जिसका अपने लाभ के लिए शहद के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
- सिराजुद्दौला, अलीवर्दी खाँ का दौहित्र (पुत्री का पुत्र) था।

- अलीवर्दी खाँ ने अपनी सबसे छोटी लड़की का पुत्र सिराजुद्दौला को अपना उत्तराधिकार नियुक्त किया था।
- बंगाल के नवाब के रूप में गद्दी पर बैठने के समय सिराजुद्दौला के तीन प्रमुख शत्रु थे – पूर्णिया का नवाब शौकत जग, उसकी मौसी घसीटी बेगम एवं अंग्रेज अधिकारी।
- सिराजुद्दौला ने अक्टूबर, 1756 ई. में मनिहारी के युद्ध में शौकत जंग को पराजित करके उसकी हत्या कर दी थी।
- 4 जून, 1756 को सिराजुद्दौला ने कासिम बाजार पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया।
- 20 जून, 1756 को सिराजुद्दौला ने फोर्ट विलियम पर अधिकार कर लिया।
- सिराजुद्दौला के फोर्ट विलियम पर अधिकार के बाद गवर्नर ड्रेक, सेनापति मिनिचिन व अन्य अंग्रेज अधिकारियों ने भागकर फुल्टा द्वीप में शरण ली।
- 20 जून, 1756 के ब्लैक होल की घटना में जानकारी देने वाला अंग्रेज अधिकारी जे. जेड. हॉलवेल था।
- ब्लैक होल की घटना कलकत्ता के किले पर आक्रमण के समय हुई थी।
- ब्लैक होल त्रासदी में हॉलवेल के अनुसार नवाब सिराजुद्दौला ने एक छोटी सी काल कोठरी में 146 अंग्रेजों को बंद कर दिया जिसमें केवल 23 ही जिंदा बच सके।
- नवाब सिराजुद्दौला के गद्दी से हटाने के अंग्रेजों के षड्यंत्र में शामिल थे – पूर्णिया के नवाब शौकत जंग, सिराजुद्दौला की मौसी घसीटी बेगम, मीर जाफर, रायदुर्लभ, जगतसेठ, मानिक चंद, खादिम खान एवं अमीचंद।
- अंग्रेजों और दरबारियों द्वारा रचे गए इन षड्यंत्रों में कासिम बाजार के प्रमुख वॉटसन की भूमिका अहम थी।
- 9 फरवरी, 1757 ई. को बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और क्लाइव के बीच अलीनगर की संधि हुई थी।
- अलीनगर की संधि के द्वारा कंपनी के क्षेत्राधिकार व विशेषाधिकार पुनः स्थापित हो गए। इस संधि के द्वारा कम्पनी को अपने अधीन स्थलों को दुर्गीकृत करने एवं सिक्के ढालने की अनुमति प्रदान की गई।
- 13 मार्च, 1757 को क्लाइव व वाटसन ने फ्रांसीसियों से चन्द्रनगर छीन लिया। नवाब ने इसी अलीनगर की संधि का उल्लंघन माना और आगे चलकर यह भी प्लासी का युद्ध का एक कारण बना।
- क्लाइव ने षड्यंत्र के द्वारा प्लासी के युद्ध को युद्ध से पहले ही जीत लिया।
- क्लाइव ने एक धनी व्यापारी अमीनचन्द के माध्यम से नवाब से असंतुष्ट अधिकारी से संघर्ष करके षड्यंत्रपूर्वक अपने पक्ष में कर लिया।

- क्लाइव के षड्यंत्र में नवाब का प्रधान सेनापति मीरजाफर, सेना का एक अन्य अधिकारी यार लतीफ, दीवान राय दुर्लभ और बंगाल के सबसे बड़े बैंकर जगत सेठ शामिल थे।
- प्लासी के युद्ध (23 जून, 1757) के बाद नवाब सिराजुद्दौला भागकर मुर्शिदाबाद चला गया, जहाँ मीरजाफर के पुत्र मीरन ने मुहम्मद बेग द्वारा उसकी हत्या करवा दी।

प्लासी का युद्ध महत्त्व एवं परिणाम –

- अंग्रेजों का बंगाल एवं आगे चलकर अंतिम रूप से संपूर्ण भारत पर साम्राज्य विस्तार करण व अधिकार जमाना आसान हो गया।
- अंग्रेजों की प्रतिष्ठा व सम्मान में वृद्धि हुई, जिसके कारण वे भारतीय साम्राज्य के एकछत्र अधिकारी बन गए।
- बंगाल के लोगों से कम्पनी एवं उसके सेवकों की अवैध धन वसूली आसान हो गया।
- भारत में प्लासी के युद्ध ने अंग्रेजों की राजनैतिक शक्ति को स्थापित तो किया ही, साथ ही भारत में पूंजी का दोहन अर्थात् अंग्रेजों द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था का शोषण प्रारंभ हो गया।
- युद्धोपरांत नवाब बने मीर जाफर ने कंपनी को 24 परगना की जमींदारी प्रदान की। साथ ही, बंगाल, बिहार व उड़ीसा में मुक्त व्यापार की अनुमति प्रदान की।
- प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों ने मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाया।
- मीर जाफर तब तक बंगाल नवाब क्लाइव की कठपुतली के रूप में बना रहा, जब तक अंग्रेजों की महत्वाकांक्षा को पूरा करता रहा।
- 1757 से 1760 ई. तक बंगाल का गवर्नर रहने के बाद क्लाइव 1760 ई. में वापस इंग्लैड चला गया।
- क्लाइव के बाद बंगाल का स्थानापन्न गवर्नर हालवेल रहा।
- हालवेल के बाद वेन्सिटार्ट बंगाल का गवर्नर बना।
- बक्सर की विजय के उपरांत 1765 ई. में क्लाइव को पुनः भारत में अंग्रेजी प्रदेशों का मुख्य सेनापति तथा गवर्नर बनाकर भेजा गया।
- 1760 ई. में मीर जाफर को नवाब की गद्दी से हटाकर उसके जागाता मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया गया।
- मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाए जाने की घटना को गवर्नर वेंसिटार्ट ने '1760 की क्रांति' की संज्ञा दी, क्योंकि इस सत्ता परिवर्तन से अंग्रेजों को कई महत्त्वपूर्ण लाभ हुए।

- 27 सितंबर, 1760 को अंग्रेज गवर्नर हॉलवेल एवं मीर कासिम के बीच एक संधि हुई जिसके आधार पर मीर कासिम ने कम्पनी को बर्दवान, मिदनापुर तथा चटगांव की जमींदारी कंपनी को सौंपी जानी थी।
- अलीवर्दी खाँ के बाद बंगाल के नवाब के पद पर कार्य करने वालों में मीर कासिम सर्वाधिक योग्य था।
- मीर कासिम ने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानान्तरित किया।
- मीर कासिम ने अपनी सेना को यूरोपीय ढंग से गठित करने के लिए मुंगेर में तोड़दार बंदूकों एवं तोपों के कारखानें की स्थापना की।
- मीर कासिम ने अंग्रेजों के प्रभाव से अपने आपको मुक्त करने के लिए राजधानी परिवर्तित किया, सेना का यूरोपीय मॉडल पर पुनर्गठन किया, व वित्तीय भ्रष्टाचार को समाप्त करने का भी प्रयास किया।
- मीर कासिम ने नौकरशाही का भी पुनर्गठन किया और 'दस्तक' के दुरूपयोग पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास भी किया।
- 1763 ई. में नवाब मीर कासिम ने आंतरिक में लगे सभी करों को समाप्त कर दिया।
- करों की समाप्ति से अब अंग्रेजों में विशेषाधिकार समाप्त हो गए।
- इतना ही नहीं इन सबसे आगे बढ़ते हुए मीर कासिम में राजस्व वृद्धि के लिए एक अतिरिक्त कर 'खिजरी जमा' भी शुरू किया जो सभी के लिए था।
- इन सब कारणों से नवाब व मीर कासिम के संबंधों में तनाव आना स्वाभाविक था। परिणामस्वरूप जुलाई 1763 में अंग्रेजों ने मीर कासिम के विरूद्ध औपचारिक युद्ध की घोषणा कर दी तथा मीर जाफर को पुनः बंगाल का नवाब घोषित कर दिया। इस प्रकार बक्सर के युद्ध की पृष्ठभूमि बनी।
- बंगाल से निष्कासित होने के बाद मीर कासिम ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला के पास शरण लेकर वहाँ पहले से शरणार्थी के रूप में रह रहे मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय (अली गौहर) तथा अवध के नवाब से अंग्रेजों के विरूद्ध सहायता की याचना की।
- बंगाल के नवाब मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला व मुगल शासक शाह आलम इन तीनों ने संयुक्त होकर अंग्रेजों के खिलाफ एक समझौता किया, जिसके फलस्वरूप 1764 में बक्सर का युद्ध हुआ।
- बक्सर का युद्ध 22 अक्टूबर, 1764 को बिहार में बक्सर नामक स्थान पर लड़ा गया था।
- बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों की सेना का सफल नेतृत्त्व मुनरो द्वारा किया गया था।
- मीर कासिम की सेना का नेतृत्त्व गुर्गीन खाँ द्वारा किया गया।

- बक्सर के युद्ध में शुजाउद्दौला, मीर कासिम तथा शाहआलम द्वितीय के नेतृत्व वाली सम्मिलित सेना की पराजय हुई।
- बक्सर के युद्ध के बाद मुगल शासक शाहआलम द्वितीय अंग्रेजों की शरण में आ गया।
- अवध का नवाब शुजाउद्दौला कुछ दिनों के विरोध के बाद मजबूर होकर अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।
- बंगाल का नवाब मीर कासिम दिल्ली की ओर भाग गया, जहाँ 1777 में उसकी मृत्यु हो गई।
- बक्सर के युद्ध के बाद अंग्रेज बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा के वास्तविक शासक बन गए।
- बंगाल का नवाब अंग्रेजों पर आश्रित था तथा मुगल बादशाह उसका पेंशनर हो गया, जिससे अंग्रेजों की प्रतिष्ठा बढ़ी।
- प्लासी के युद्ध में अंग्रेजों की जीत सिराजुद्दौला के सेनानायकों के विश्वासघात का परिणाम थी, किंतु बक्सर के युद्ध में अंग्रेज बिना किसी छल–कपट के विजयी हुए थे।
- बक्सर के युद्ध से अंग्रेजों की सैनिक दक्षता एवं हथियारों की श्रेष्ठता का प्रदर्शन हुआ।
- बक्सर के युद्ध में विजय के बाद बंगाल में वास्तविक रूप में अंग्रेजी सत्ता के प्रभुत्व की स्थापना हुई तथा कंपनी एक अखिल भारतीय शक्ति का रूप बनकर उभरा।
- बक्सर के युद्ध के बाद इलाहाबाद का संधि के द्वारा अंग्रेजों ने मुगल शासक व अवध के नवाब पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया।
- इलाहाबाद की प्रथम संधि 12 अगस्त, 1765 को मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय तथा अंग्रेज गवर्नर क्लाइव के बीच हुई थी।
- इलाहाबाद की प्रथम संधि के अनुसार कंपनी को मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय से बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी स्थायी रूप से प्राप्त हुई। इसके बदले अंग्रेजों ने मुगल सम्राट को 26 लाख रूपये वार्षिक पेंशन देना स्वीकार किया।
- इलाहाबाद की प्रथम संधि के तहत ही कंपनी ने अवध के नवाब से कड़ा और इलाहाबाद के जिले लेकर मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय को सौंप दिये।
- इलाहाबाद की द्वितीय संधि 16 अगस्त, 1765 को क्लाइव एवं अवध के नवाब शुजाउद्दौला के बीच हुई थी।
- इलाहाबाद व कड़ा को छोड़कर अवध का शेष क्षेत्र नवाब को वापस कर दिया गया।
- नवाब द्वारा कंपनी को 50 लाख रूपये देना तय किया गया।

- कंपनी द्वारा अवध की सुरक्षा के नाम पर नवाब के खर्च से अंग्रेजी सेना अवध में रखना निश्चित किया गया।
- कंपनी को अवध में बिना कर के स्वतंत्र रूप से व्यापार करने की अनुमति प्राप्त हो गई।

6.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- पृष्ठभूमि – भूमिका
- कूटनीति – विरोधियों को छल या धोख द्वारा परास्त करने की नीति।
- प्लासी – पश्चिम बंगाल में मुर्शिदाबाद जिले के दक्षिण में 22 मील की दूरी पर स्थित एक गाँव।
- समरिक – युद्ध से संबंधित।
- फरमान – अधिकारिक आदेश या आदेश पत्र
- दस्तक – दस्तक 1717 के मुगल शासक फर्रूरवसियर के फरमान द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को दिया गया ट्रेड परमिट था। इसके आधार पर कंपनी सामान्य सीमा शुल्क का भुगतान किए बिना ही बंगाल में व्यापार करने की हकदार थी।
- फोर्ट विलियम – 1698 ई. में अंग्रेजों ने सुतानटी, कोलिकाता एवं गोबिंदपुर नामक स्थान पर फोर्ट विलियम नाम से किला की स्थापना किया था। बाद में यही कलकत्ता नगर कहलाया जिसकी नींव जॉब चार्नाक ने रखी थी।
- दीवानी – आर्थिक या धन संबंधी मामले।
- मुंगेर – गंगा के तट पर स्थित बिहार का एक जिला।

6.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) प्लासी का युद्ध मैदान कहाँ स्थित है ?

(क) बिहार (ख) आंध्र प्रदेश (ग) कर्नाटक (घ) पश्चिम बंगाल

(ii) बक्सर की लड़ाई के समय बंगाल का नवाब कौन था ?

(क) सिराजुद्दौला (ख) मीर जाफर (ग) मीर कासिम (घ) नज्मुद्दौला

(iii) सिराजुद्दौला के विरूद्ध षड्यंत्रकारियों में निम्नलिखित में से कौन–कौन शामिल था ?

(1) रायदुर्लभ (2) अमीचंद (3) जगतसेठ (4) यार लतीफ

कूट :

(क) केवल 2 व 3 (ख) केवल 1, 2 व 3

(ग) केवल 1, 2 व 4 (घ) उपर्युक्त सभी

(iv) किस शासक ने ईस्ट इंडिया कंपनी को दीवानी प्रदान की थी ?

(क) फर्रूखसियर (ख) शाहआलम प्रथम (ग) शाहआलम द्वितीय (घ) शुजाउद्दौला

(v) प्लासी के युद्ध में अंग्रेजों ने बंगाल के किस नवाब को पराजित किया –

(क) मुर्शिद कुली खाँ (ख) अलीवर्दी खाँ

(ग) सिराजुद्दौला (घ) मीर जाफर

(vi) प्लासी के युद्ध के पश्चात् बंगाल का नवाब कौन बना था ?

(क) मीर जाफर (ख) मीर कासिम (ग) शुजाउद्दौला (घ) कोई नहीं

(vii) अंग्रेजों तथा बंगाल के नवाब के बीच प्लासी का युद्ध हुआ –

(क) 1737 ई. में (ख) 1757 ई. में (ग) 1764 ई. में (घ) 1772 ई. में

(viii) बक्सर का युद्ध हुआ –

(क) 1764 ई. में (ख) 1757 ई. में (ग) 1772 ई. में (घ) 1734 ई. में

(ix) बंगाल में ब्रिटिश राज्य का संस्थापक था।

(क) राबर्ट क्लाइव (ख) सर आयर कूट (ग) वारेन हेस्टिंग्ज (घ) वेलेजली

(x) अंगेजों का पेंशनर बनने वाला प्रथम बादशाह कौन था ?

(क) शाहआलम द्वितीय (ख) अकबर द्वितीय (ग) आलमगीर द्वितीय (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(ख) निबंधात्मक / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

1. प्लासी के युद्ध के कारण, घटनायें तथा परिणामों का विस्तार से वर्णन करें।

(Discuss the causes, events and results of the Battle of Plassey.)

2. बक्सर के युद्ध के कारणों व परिणामों का उल्लेख करें।

   (Discuss the causes and results of the Battle of Buxar.)

3. "बक्सर ने प्लासी के कार्य को अंजाम तक पहुंचाया।" इस कथन की व्याख्या करें।

   ("Buxar completed the work of Plassey". Explain)

4. अंग्रेजों ने बंगाल में अपनी शक्ति की स्थापना कैसे की ?

   (How did the British establish their power in Bengal ?)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) प्लासी का युद्ध (Battle of Plassey)

(ii) बक्सर का युद्ध (Battle of Buxar)

(iii) दस्तक (Dastak)

(iv) ब्लैक होल दुर्घटना (Black Hole Tragedy)

(v) राबर्ट क्लाईव (Robert Clive)

(vi) मीर कासिम (Mir Kasim)

(vii) मीर जाफर (Mirjafar)

(viii) 1760 की क्रांति (Revolution of 1760)

(ix) बक्सर के युद्ध का महत्त्व (Significance of the Battle of Buxar)

(x) इलाहाबाद की संधि (Treaty of Ellahabad)

6.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your progress)

6.5 (क) उत्तर– (i) सिराजुद्दौला (ii) अलीवर्दी खाँ (iii) क्लाइव (iv) अलीनगर (v) मीरजाफर (vi) मीर मदान व मोहन लाल (vii) चन्द्र नगर (viii) 1757 (ix) मीर कासिम (x) मीर कासिम

(ख) उत्तर– (i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य (v) असत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii) सत्य (ix) सत्य (x) सत्य

6.8 (क) उत्तर – (i) घ (ii) ख (iii) घ (iv) ग (v) ग (vi) ख (vii) ख (viii) क (ix) क (x) क

6.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- आधुनिक भारत का इतिहास,
  एक नवीन मूल्यांकन (1707 ई. से वर्तमान समय तक)
  बी. एल. ग्रोवर, यशपाल पन्द्रहवाँ संस्करण 2000
  एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, नई दिल्ली – 110055
- आधुनिक भारत का इतिहास
  पूर्णतया संशोधित एवं परिमार्जित संस्करण 2021
  स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि0 नई दिल्ली।
- भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल
  अविनाश चन्द्र अरोड़ा, 1998
  प्रदीप पब्लिकेशन– जालंधर
- भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन
  तृतीय संस्करण
  दृष्टि पब्लिकेशन दिल्ली – 110009

B.A HISTORY PART- IInd YEAR SEMESTER-IIIrd	
COURSE CODE: HIST 201 LESSON NO. 07	AUTOR – MOHAN SINGH BALODA
सहायक संधि व व्यपगत का सिद्धांत या हड़प नीति, पंजाब का विलय (Subsidiary Alliance & Doctrine of Lapse, Annexation of Punjab)	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

7.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

7.2 परिचय (Introduction)

7.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

7.3.1 सहायक संधि प्रणाली (Subsidiary Alliance System)

7.3.2 सहायक संधि से कंपनी को लाभ (Advantages of the Subsidiary Alliance for the British)

7.3.3 सहायक संधि का देशी रियासतों पर प्रभाव (Effect of Subsidiary Alliance of princely States)

7.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

7.4.1 व्यपगत का सिद्धांत या हड़प नीति (Doctrine of Lapse)

7.4.2 हड़प–नीति का क्रियान्वयन व इसकी समीक्षा (Execution of Lapse Policy and its Review)

7.4.3 पंजाब का विलय (Annexation of Punjab)

7.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

7.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

7.7 संकेत–सूचक (Key-words)

7.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

7.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

7.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

7.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- लार्ड वेलेजली की साम्राज्य–विस्तार की सहायक संधि की नीति को समझ सकेंगे।
- सहायक संधि की प्रमुख विशेषताओं को बता सकेंगे।
- सहायक संधि से कंपनी को होने वाले लाभ का वर्णन कर सकेंगे।
- सहायक संधि का देशी रियासतों पर पड़ने वाले प्रभावों को स्पष्ट कर सकेंगे।
- लॉर्ड डलहौजी की हड़प नीति का वर्णन कर सकेंगे।
- हड़प की नीति के द्वारा अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाये गए भारतीय राज्यों के बारे में बता सकेंगे।
- ब्रिटिश साम्राज्य में पंजाब विलय की घटनाओं को समझा सकेंगे।

7.2 परिचय (Introduction) :-

साम्राज्यवादी नीति का प्रबल समर्थक लार्ड वैल्जली 1798 से 1805 ई. के दौरान भारत का गवर्नर जनरल रहा। भारत में ब्रिटिश प्रभुसत्ता की स्थापना व इसके अधिकाधिक विस्तार के लिए इसने सहायक संधि की नीति आरंभ की। यद्यपि भारत में सहायक संधि की नीति आरंभ की। यद्यपि भारत में सहायक संधि का संस्थापक फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले को माना जाता है। परंतु वास्तव में साम्राज्य–विस्तार में सहायक संधि की नीति को सफलतापूर्वक लागू करने वाला गार्ड वैल्जली ही था।

इसने सहायक संधि की नीति को भारतीय राज्यों पर बलपूर्वक आरोपित किया। इससे भारत में अंग्रेजी सत्ता की श्रेष्ठता को स्थापित करने में सहायता मिली। इस प्रणाली ने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और उन्हें भारत का एक विस्तृत श्रेत्र हाथ लगा। इस संधि को स्वीकार करने वाला प्रथम राज्य 1798 ई. में हैदराबाद का निजाम था। आगे चलकर मैसूर, तंजौर, अवध, पेशवा, बरार के भोंसले, सिंधिया,

जोधपुर, जयपुर, मच्छेरी, बूँदी तथा भरतपुर आदि भारतीय राज्यों को वेल्जली ने सहायक संधि स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दिया। लॉर्ड वेलेज्ली के कार्यकाल में पंजाब एवं सिंध को छोड़कर शेष संपूर्ण भारत लगभग कंपनी के अधिकार क्षेत्र में आ गया था।

इसी प्रकार लॉर्ड डलहौजी इससे भी बढ़कर साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का था। लॉर्ड डलहौजी ने अपनी अधिग्रहण की नीति के द्वारा साम्राज्य–विस्तार को चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिया था। वास्तव में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार सबसे अधिक लार्ड डलहौजी के कार्यकाल 1848 से 1856 के दौरान ही हुआ था।

डलहौजी ने साम्राज्य विस्तार के लिए अधिग्रहण की जो नीति अपनाई उसे व्यपगत सिद्धांत या हड़प की नीति (Doctrine of Lapse) के नाम से जानते हैं। उससे अपनी इस नीति को शांतिपूर्ण विलय की नीति का नाम दिया और मुक्त रूप से इसका प्रयोग करते हुए कई भारतीय राज्यों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर दिया। इस सिद्धांत के द्वारा उसने 1848 ई. में सतारा, 1849 ई. में जैतपुर तथा सम्बलपुर, 1850 ई. में बाघट, 1852 ई. में उदयपुर, 1853 ई. में झांसी, 1854 ई. में नागपुर और 1855 ई. में करौली को कंपनी के राज्य में मिला लिया। द्वितीय आंग्ल–सिख युद्ध (1848–49 ई.) डलहौजी के काल में ही हुआ था। इस युद्ध में सिख पराजित हुए और 1849 ई. में संपूर्ण पंजाब का अंग्रेजी साम्राज्य में विलय हो गया।

7.3. अध्याय के मुख्य बिंदु (Main body of the Text)

7.3.1 सहायक संधि प्रणाली (Battle of Plassey)

लॉर्ड वैलेजली सर जॉन शोर के बाद 1798 ई. में भारत का गवर्नर जनरल बनकर आया था। साम्राज्यवादी प्रवृत्ति वाला वैल्जली अपने उद्देश्य को लेकर बिल्कुल स्पष्ट था। वह अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को सर्वोच्च शक्ति के रूप में स्थापित करना चाहता था, उसके प्रदेशों को विस्तारित करना चाहता था और भारत के सभी देशी राज्यों को कंपनी पर निर्भर होने की स्थिति में लाना चाहता था। इसके साथ ही भारतीय रियासतों के मामलों में फ्रांसीसियों की सक्रियता व इनके प्रभावों को समाप्त करके अंग्रेजी सत्ता की श्रेष्ठता को स्थापित करने के लिए अत्यधिक उत्सुक था। इन्हीं लक्ष्यों की पूर्ति के लिए लॉर्ड वैल्जली ने सहायक संधि की नीति को अपनाया। उसने भारतीय राज्यों को अपनी सहायक संधि की नीति के अंतर्गत लाकर कंपनी के राज्य का विस्तार किया तथा फ्रांसीसी प्रभाव को भी समाप्त किया।

यद्यपि सहायक संधि को व्यावहारिक रूप वैल्जली ने ही दिया था, परंतु उसने इसका आविष्कार नहीं किया। भारत में इस प्रणाली की मौजूदगी बहुत पहले से रही थी। संभवतः फ्रासीसी गवर्नर डूप्ले प्रथम यूरोपीय था जिसने अपनी सेना किराए पर भारतीय राजाओं को देकर इस प्रणाली की शुरूआत की थी। उसके बाद क्लाइव से लेकर लगभग

सभी अंग्रेजी गवर्नर जनरलों ने इस प्रणाली को अपनाई थी। किंतु वैल्जली ने इस प्रणाली का प्रयोग विशिष्ट रूप में बड़े पैमाने पर किया। उसने इसका विकास कर अपने संपर्क में आने वाले सभी देशी राजाओं के साथ इसका प्रयोग किया था। इसी कारण से सहायक संधि भारतीय इतिहास में लॉर्ड वैल्जली की सहायक संधि के रूप में प्रसिद्ध है। यद्यपि अंग्रेज गवर्नर जनरल क्लाइव के काल में ही सर्वप्रथम 1765 ई. में अवध के नवाब के साथ सहायक संधि का प्रयोग किया गया था। इस संधि के अंतर्गत अवध के नवाब की सुरक्षा के बदले धन वसूला गया था। परंतु वास्तव में इसकी शुरूआत लार्ड वैल्जली के काल में 1798 में मानी जाती है। सहायक संधि का व्यापक प्रयोग वैल्जली के द्वारा किया गया था।

लार्ड वैल्जली (1798—1805), मैसूर (1799), तंजौर (अक्टूबर, 1799), अवध (नवंबर 1801), पेशवा (दिसंबर 1812), बरार के भोंसले (दिसंबर 1803), सिंधिया (फरवरी 1804) जौधपुर, जयपुर, मच्छेरी, बूँदी तथा भरतपुर।

इस प्रकार बड़े पैमाने पर वैल्जली ने सहायक संधि के द्वारा भारतीय रियासतों को अंग्रेजी प्रभुसत्ता की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया। सहायक संधि को स्वीकार करने वाले भारतीय राज्यों को कंपनी की प्रतिबंधों व शर्तों को माननी होती थी। प्रतिबंधों व शर्तों पर आधारित लार्ड वैल्जली की इस संधि की प्रमुख विशेषता निम्न प्रकार थीं —

- सहायक संधि स्वीकार करने के उपरांत भारती राजाओं की संप्रभुता अब कंपनी पर निर्भर हो गयी थी। वे कंपनी के अनुमति के बिना विदेशी संबंध नहीं रख सकते थे। वे कोई युद्ध नहीं करेंगे तथा अन्य राज्यों से बातचीत कम्पनी को माध्यम बनाकर ही होगी।
- संधि की शर्तों के अनुसार बड़े राज्यों को अपने यहाँ एक ऐसी सेना रखनी होती थी जिसकी कमान अंग्रेज अधिकारियों के हाथ में होती थी। इस सेना के खर्च के लिए भारतीय राज्यों को 'पूर्ण प्रभुसत्ता युक्त' प्रदेश कंपनी को देना होता था। जबकि छोटे राज्यों को सेना रखने के लिए खर्च के रूप में नकद धन देना होता था।
- शर्तानुरूप देशी रियासतें शासन—प्रबंधन के लिए अपनी राजधानी में एक ब्रिटिश रेजिडेंट रखने के लिए मजबूर थी। इस प्रकार भारतीय रियासतों के शासन कार्यों में अंग्रेजों का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप हो गया।
- अंग्रेजों ने बड़ी चालाकी से देशी रियासतों को अपनी गिरफ्त में लेने के लिए संधि के शर्त में यह जोड़ दिया कि भारतीय नरेशों के आंतरिक शासन में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।
- राज्यों की विशेष दिशानिर्देश दिए गए थे कि देशी रियासतों को कंपनी की अनुमति के बिना किसी यूरोपीय व्यक्ति को सेवा में नहीं रख सकते थे।

- कंपनी ने शर्तानुरूप यह आश्वासन भी दिया कि कंपनी राज्यों की प्रत्येक प्रकार के शत्रुओं से रक्षा करेगी।

इस प्रकार लॉर्ड वैल्जली की सहायक संधि के द्वारा भारत का एक विस्तृत क्षेत्र अंग्रेजी राजनीतिक परिधि में आ गया। इसने भारतीय राज्यों को हर तरह से कमजोर करके पंगु बना दिया।

7.3.2 सहायक संधि से कंपनी को लाभ (Advantages of the Subsidiary Alliance for the British)

लॉर्ड वैल्जली 1798 ई. में भारत का गवर्नर जनरल बनकर भारत आया था। उसने भारत में अंग्रेजी शक्ति की सर्वोच्चता व इसके साम्राज्य–विस्तार के लिए बड़े पैमाने पर व्यावहारिक रूप में सहायक–संधि की नीति को अपनाया। अपनी इस नीति के द्वारा उसने देशी रियासतों को कंपनी के अधीनस्थ कर दिया। इससे कंपनी को लाभ–ही–लाभ हुआ। कंपनी को भारत का एक विस्तृत क्षेत्र हाथ लगा। एक प्रकार से इस संधि के कारण देशी राज्यों की संप्रभुसता अंग्रेजी शक्ति के हाथों में आ गई। कंपनी द्वारा संधि की शर्तों के अनुरूप सुरक्षित बनना देशी राज्यों के अस्तित्व की समाप्ति ही साबित हुई। इस प्रकार कंपनी को भारत में अपने साम्राज्य के विस्तार में सहायक संधि से खूब सहायता मिली और सहायक संधि कंपनी के लिए एक वरदान के रूप में सिद्ध हुई। इससे कंपनी को निम्नलिखित लाभ हुए –

- भारत में कंपनी का प्रभुत्व स्थापित हो गया। इससे कंपनी की प्रतिष्ठा व शक्ति में वृद्धि हुई। कंपनी एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में भारत में स्थापित हो गया। कंपनी को अब आगे अपने साम्राज्य को फैलाने में आसानी हो गई। लॉर्ड वैल्जली के कार्यकाल (1798–1805) में सहायक संधि के द्वारा कंपनी के प्रदेश की सीमाएँ भारत के चारों ओर विस्तारित हो गई। भारत के अधिकांश राज्यों ने कंपनी का संरक्षण स्वीकार कर लिया था। 1805 में कंपनी के प्रदेश भारत के पश्चिमी तट के साथ–साथ सिंधु नदी के मुहाने से कन्याकुमारी तक, फिर उत्तर–पूर्व में बंगाल की खाड़ी के साथ–साथ बर्मा की सीमा तक, उत्तरी भारत में कंपनी का राजनीतिक अधिकार बंगाल से सिंध के मरूस्थल और पंजाब तक फैल गया। अवध, नागपुर, ग्वालियर, इन्दौर, बड़ौदा, हैदराबाद, मैसूर, ट्रावनकोर इत्यादि राज्यों ने कंपनी का सरंक्षण स्वीकार कर लिया था। इस प्रकार भारत में कंपनी के प्रभुत्व की स्थापना में सहायक संधि एक वरदान के रूप में साबित हुई।
- सहायक संधि प्रणाली के द्वारा कंपनी भारत में फ्रांसीसी भय व इसके प्रभाव को समाप्त करने में सफल रही। सहायक संधि की शर्त के अनुसार कोई भी यूरोपीय नागरिक कंपनी की अनुमति के बिना किसी संबंधित राज्य में सेवा नहीं कर सकता था। इस प्रकार कंपनी के खिलाफ फ्रांसीसियों द्वारा रची जाने वाली चालों को पूरी तरह से इस संधि के द्वारा समाप्त करने में सहायता मिली।

- सहायक संधि प्रणाली का एक बहुत बड़ा लाभ यह हुआ कि कंपनी को भारतीय राज्यों के खर्च पर एक विशाल सेना की प्राप्ति हुई। इस संबंध में वैल्जली ने स्वयं लिखा था, "अपनी सहायक सेनाएँ हैदराबाद, पूना, गायकवाड़, दौलतराव सिंधिया तथा गोहद के राणा के यहाँ रखने से हम 22,000 व्यक्तियों की एक दक्ष सेना जिसका व्यय विदेशी राज्य दे रहे हैं, विदेशी राज्यों के भीतर अथवा उसकी सीमाओं पर रखने में समर्थ हो गए हैं। यह सेना पूर्णरूपेण लैस है तथा अल्पतम सूचना पर किसी भी दिशा में किसी भी समय लड़ने को प्रस्तुत है। कंपनी के अधिकृत क्षेत्रों की शांति भंग किए बिना अथवा भारत सरकार पर बिना किसी बोझ के इन्हें किसी भी भारतीय राजा के विरूद्ध प्रयोग किया जा सकता है।
- संधि की शर्तानुरूप विदेशी संबंध के लिए भारतीय राज्य पूरी तरह से कंपनी पर निर्भर हो गए थे। इस कारण भारतीय राजाओं के आपसी विवादों में मध्यनस्थ बन गई थी। इस प्रकार सहायक संधि प्रणाली के द्वारा एक तरफ कंपनी जहाँ भारतीय रियासतों को अपने शिकंजे में लाने में सफल रही वहीं अन्य यूरोपीयनों के प्रभावों को भी समाप्त करने में सफल रही।
- संधि की शर्त के अनुसार भारतीय राज्यों को अपनी राजधानी में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट रखने होते थे। इससे आगे चलकर ये इन राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने लगे। इस कारण भारतीय राज्यों को अधीनस्थ बनाना इनके लिए और आसान हो गया।
- सहायक संधि प्रणाली से जुड़े भारतीय राज्य अंग्रेजों के विरूद्ध कोई संघ नहीं बना सकते थे। इस कारण अंग्रेज निर्भयता के साथ अब साम्राज्य विस्तार में बढ़ने में सफल हुए।
- कंपनी का संरक्षण प्राप्त करने के कारण भारतीय राज्य निरस्त्र हो गए। इस प्रकार सहायक संधि प्रणाली साम्राज्य निर्माण के कार्य में एक स्पष्ट किंतु छुपे हुए शत्रु की भूमिका निभाने लगी।
- इस संधि के द्वारा कंपनी का सामरिक महत्त्व के स्थानों पर भी नियंत्रण स्थापित हो गया, क्योंकि संधि के शर्तानुरूप भारतीय राजाओं की राजधानी में कंपनी की सेना रखने होते थे।

इस प्रकार कंपनी को संधि से अधिकाधिक लाभ प्राप्त हुआ। कंपनी को बहुत–सा पूर्ण प्रभुसत्तापूर्ण प्रदेश मिल गया और उसका साम्राज्य फैल गया।

7.3.3 सहायक संधि का देशी रियासतों पर प्रभाव (Effect of Subsidiary Alliance of princely States)

सहायक संधि अंग्रेजों के लिए एक वरदान के रूप में अत्यंत उपयोगी साबित हुई। संधि के शर्तों के अनुरूप देशी राज्य पूरी तरह से कंपनी के हाथों बंध गए थे। उनकी प्रभुसत्ता को कंपनी ने सहायक संधि के द्वारा समाप्त कर दिया था।

वास्तव में इस संधि के द्वारा स्थानीय रियासतों का अस्तित्व उसी दिन समाप्त हो गया जिस दिन वे कंपनी द्वारा सुरक्षित बने अथवा कंपनी उनकी सहायक बनी। बहुत से भारतीय रियासतों ने ब्रिटिश सरकार से संधियां की और वे व्यावहारिक रूप में कंपनी के अधीन आ गए। इसलिए कहा जाता है कि लॉर्ड वैल्जली की सहायक संधि के कारण भारत में ब्रिटिश साम्राज्य बहुत बड़े भाग में फैल गया और ब्रिटिश साम्राज्य का रूप धारण कर लिया। अत सहायक संधि प्रणाली जहाँ एक ओर अंग्रेजी साम्राज्य के लिए लाभदायक सिद्ध हुई, वहीं देशी राज्यों को इस प्रणाली ने अत्यधिक हानि पहुँचाई। सर टॉमस मुनरो ने इस संबंध में ठीक ही कहा कि " देशी रियासतों ने अपनी स्वतंत्रता राष्ट्रीय चरित्र अथवा वह सब जो देश को प्रतिष्ठित बनाते हैं, उन्हें बेचकर सुरक्षा मोल ले ली।" इस संधि से स्थानीय राजाओं का मनोबल कम हो गया जो अंतिम रूप से उनके अस्तित्व के लिए बहुत घातक सिद्ध हुआ।

सहायक संधि से देशी राज्यों को निम्नलिखित हानियां हुई –

1. इस संधि को स्वीकार कर लेने से देशी राज्य की सार्वभौमिक शक्ति लगभग समाप्त हो गई। अब वे नाममात्र के शासक बनकर रह गए। आंतरिक व बाह्य दोनों ही मामलों में अंग्रेजों का हस्तक्षेप बढ़ गया। एक स्वतंत्र राज्य के रूप में अब निर्णय लेने की शक्ति उनके पास नहीं रही। इस प्रकार इन देशी राज्यों का अस्तित्व ही उस संधि के द्वारा खतरे में पड़ गया।

2. संधि को स्वीकार करने वाले राज्य शीघ्र ही दिवालिया हो गए। वे अंग्रेजों के निरंतर बढ़ते धन की मांग को पूरा करने में समर्थ नहीं थे। इस कारण रियासतें कर्ज के बोझ तले दबती चली गई।

3. इस संधि के अनुसार देशी रियासतों को ही सेना का व्यय वहन करना पड़ता था। देशी रियासतें सेना की अत्यधिक व्यय को नहीं उठा पा रही थी। फलत इनकी अर्थव्यवस्था डांवाडोल हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि देशी रियासतों को अपने बहुत बड़े प्रदेश से हाथ धोना पड़ा।

4. सहायक संधि के कारण संरक्षित राज्यों के सैनिक बेरोजगार हो गए, क्योंकि उन्हें सेना रखने का अधिकार नहीं रहा।

5. इस संधि के कारण देशी रियासतों के राजा की प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व की भावना समाप्त हो जाने के कारण वे विलासी एवं अकर्मण्य हो गए। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि संबंधित राज्य अब कंपनी पर निर्भर हो गए। जिससे प्रजा के विद्रोह के भय से भी वे मुक्त हो गये।

6. सहायक संधि को स्वीकार करने वाले राज्यों की अर्थव्यवस्था कमजोर हो गई। इस कारण हस्तशिल्प उद्योग जो उस समय जोरों पर था के पतन में तेजी आई, क्योंकि इन उद्योगों को संरक्षण देने वाले और खरीददार भारतीय शासक इसको संरक्षण देने में असमर्थ हो गए थे।

7. इस संधि का सबसे गंभीर परिणाम यह हुआ कि भारतीय राजाओं की बुद्धिमत्ता, साहस, सैन्य संगठन उनका स्वयं का मनोबल आदि कमजोर हुए। जिसके कारण भारतीय राज्य निरंतर पतन की ओर अग्रसर होते गए।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सहायक संधि का भारतीय रियासतों पर बहुत ही घातक प्रभाव पड़ा। वास्तव में यह राज्य की संप्रभुता को हड़पने वाला दस्तावेज था। इसके अंतर्गत राज्यों को स्वयं अपनी रक्षा करने का, कूटनीतिक संबंध स्थापित करने का, विदेशियों को नियुक्त करने का और यहाँ तक कि अपने पड़ोसियों के साथ हुए विवादों का समाधान करने का अधिकार प्राप्त नहीं था। निःसंदेह यह प्रणाली भारतीय राज्यों के लिये एक मीठा जहर के समान सब कुछ समाप्त कर देने वाली थी।

7.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

7.4.1 व्यपगत का सिद्धांत या हड़प नीति (Doctrine of Lapse)

1848 से 1856 का काल जब लॉर्ड डलहौजी भारत का गवर्नर जनरल रहा भारत के इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण काल माना जाता है। लॉर्ड डलहौजी की यह नीति थी कि जिस प्रकार भी संभव हो सके, ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार किया जाए। उसने युद्धों व कूटनीतियों दोनों के द्वारा भारतीय राज्यों पर अधिकार करके भारत के ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार किया। डलहौजी ने अपने कार्यकाल के दौरान 1848–56 तक इस नीति का प्रयोग किया था। यद्यपि इस नीति का प्रयोग इससे पहले भी मराठों के द्वारा किया जा रहा था और डलहौजी के पूर्व के गवर्नर जनरल भी राज्य विस्तार में इसका प्रयोग कर रहे थे। तथापि बड़े पैमाने पर ब्रिटिश साम्राज्य में राज्यों के विलय की डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स की नीति का प्रयोग डलहौजी के द्वारा ही किया गया। इसलिउ इसे लॉर्ड डलहौजी के व्यपगत का सिद्धांत या शांतिपूर्ण विलय की नीति के नाम से जाना जाता है।

डलहौजी का मानना था कि "झूठे रजवाड़ों (Sham Royalities) और कृत्रिम मध्यस्थ शक्तियों artificial intermediate powers) द्वारा प्रशासन की पुरानी पद्धति से प्रजा की मुसीबतें बढ़ती हैं। इसलिए उसने इसे सभी राज्यों को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया। वास्तव में डलहौजी की स्पष्ट एवं सीधी स्कॉटिश मनोभावना यह चाहती थी कि मुगल सर्वसत्ता (Mugal Sovereignty) के मुखौटे को सदैव के लिए समाप्त कर दिया जाये और जो भारतीय राजा मुगलों के उत्तराधिकारी होने का दम भरते हैं, सदैव के लिए उनका अंत कर दिया जाये।"

डलहौजी के अनुसार भारत में तीन प्रकार की रियासतें थीं –

1. वे रियासतें जो कभी भी सर्वोच्च शक्ति के अधीन नहीं थी और न ही कर देती थीं।

2. वे भारतीय रियासतें जो कभी मुगलों या मराठों के अधीन थीं तथा अब अंग्रेजों के अधीन आ गई थी।

3. वे रियासतें जो अंग्रेजों द्वारा जीवित या पुनर्स्थापित की गई थीं।

डलहौजी कूटनीतिक तरीके से इन रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने के लिए उत्सुक था। इसलिए उसने 1854 में अपनी नीति का पुनरावलोकर करते हुए रियासतों के संबंध में कहा था, "प्रथम श्रेणी की रियासतों के गोद लेने के मामलों में हमें हस्तक्षेप का अधिकार नहीं है। दूसरी श्रेणी के गोद लेने के लिए रियासतों को हमारी अनुमति परमावश्यक है। हम मनाही कर सकते हैं। परंतु प्रायः हम अनुमति दे देंगे। परंतु तीसरी श्रेणी की रियासतों में मेरा विश्वास है कि उत्तराधिकार में गोद लेने की आज्ञा दी ही नहीं जानी चाहिए।"

मुगल साम्राज्य के पतन व मराठा संघ की हार के बाद अब कंपनी ही भारत में सर्वश्रेष्ठ शक्ति के रूप में थी। इसका पूरा फायदा उठाते हुए डलहौजी ने ऐसी सभी रियासतों को अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाने का प्रयास किया, जो उसके अधीन नहीं थीं। इसलिए गवर्नर जनरल बनते ही उसने घोषणा की थी कि भारत के सभी देशी राज्यों का अधिग्रहण अब कुछ ही समय की बात है।

डलहौजी बिल्कुल विपरीत प्रकृति का व्यक्ति था अर्थात् यदि उसे कोई उचित बहाना मिलता तो वह राज्य को अंग्रेजी साम्राज्य में विलय कर लेता। उसकी विलय नीति में शक्ति का प्रयोग व शांतिपूर्ण तरीका का प्रयोग दोनों ही नीति शामिल थी। डलहौजी की नीति का उद्देश्य भारत से ब्रिटेन का निर्यात बढ़ाकर अंग्रेजी शक्ति को मजबूत करने का था। यह तभी संभव था जब यहाँ के देशी राज्यों को ब्रिटिश ताकत के अधीनस्थ बनाया जाए। इसके लिए उसने अधिग्रहण की जिस नीति का सहारा लिया उसे राज्य विलय का सिद्धांत अर्थात् डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स कहते हैं।

राज्य विलय सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी सुरक्षा प्राप्त राज्य के शासक बिना किसी स्वाभाविक उत्तराधिकारी के हो जाए तो उसका राज्य उसके दत्तक उत्तराधिकारी को नहीं सौंपा जाएगा। इसके अतिरिक्त यदि उत्तराधिकारी गोद लेने के विषय में अंग्रेज अधिकारियों की सहमति प्राप्त नहीं कर पाते हैं तो उस राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलास लिया जाएगा। इस प्रकार व्यपगत सिद्धांत के द्वारा ही उसने सतारा, जैतपुर, संभलपुर, बघाट, उदयपुर, झाँसी और नागपुर आदि देशी राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। इतिहासकारों व विचारकों द्वारा लैप्स सिद्धांत के पक्ष व विपक्ष दोनों अर्थों में कई तर्क प्रस्तुत किए गए हैं। इसके पक्ष में पहला तर्क यह प्रस्तुत किया गया है कि डलहौजी के देशी शासकों को धार्मिक रीति–रिवाजों के लिए पुत्र गोद लेने से नहीं रोका था, बल्कि उसने दत्तक पुत्र के संबंध में सत्ता के अधिकार को अस्वीकार किया था।

दूसरा तर्क यह दिया गया कि राजा शासन–प्रबंध व प्रजाहित को अनदेखा कर भोग–विलास में व्यस्त रहते थे। अतः डलहौजी का यह कदम उचित ही था।

तीसरा आधार यह था कि उसने अपनी इस नीति का प्रयोग केवल आश्रित राज्यों पर लागू किया था, जिसे अंग्रेजों के द्वारा ही कायम किया गया था।

डलहौजी के पक्ष में चौथा तर्क यह दिया जाता है कि उसने कोई नई नीति नहीं चलाई, बल्कि परंपरा से चली आ रही नीति को उसने बड़े पैमाने पर प्रयोग किया था। अतः इसके लिए उसे पूर्ण रूप से दोषी ठहराना उचित नहीं है।

पांचवां ठोस तर्क डलहौजी की इस नीति के पक्ष में यह दिया जाता है कि उसने साम्राज्य को मिलाते समय मृत्यु–प्राप्त राजाओं की विधवा रानियों तथा उनके परिवारों का ख्याल रखते हुए उनके निर्वाह के लिए पेन्शन की व्यवस्था की थी।

छठा मजबूत तर्क यह दिया जाता है कि ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा तथा स्थायी नीति के लिए उसका यह कदम उचित था और इस कार्य के लिए ही वह गवर्नर जनरल बनकर आया था।

दूसरी ओर लैप्स सिद्धांत के विरूद्ध में भी तर्क प्रस्तुत किए जाते है। पहला तर्क यह दिया जाता है कि उसने अपनी इस नीति को कठोरता के साथ लागू करके देशी शासकों की धार्मिक भावनाओं पर कुठाराघात किया था।

दूसरा भारतीय परंपरा के अनुसार राज्य राजा का निजी सम्पत्ति होती थी तथा उसके मरने पर यह उत्तराधिकारी के रूप में उसके पुत्र को प्राप्त होता था चाहे वह दत्तक पुत्र ही क्यों न हो। लेकिन डलहौजी ने अपनी इस नीति के द्वारा उनके इस अधिकार को छीन लिया।

इसके विरोध में तीसरा तर्क यह दिया जाता है कि यद्यपि देशी शासक कुशल प्रबंधक तो नहीं थे फिर भी वे प्रजा के बीच लोकप्रिय थे। अंग्रेजों की अपेक्षा अधिक जनप्रिय थे। लेकिन डलहौजी ने अपनी इस नीति के द्वारा जन–इच्छाओं की अवहेलना किया।

चौथा तर्क यह प्रस्तुत किया जाता है कि मराठों व अन्य गवर्नर–जनरलों ने इस सिद्धांत को कठोरता के साथ लागू नहीं किया था। जबकि डलहौजी ने पूर्ण सख्ती से इसे लागू किया था।

पांचवां विपक्ष में मजबूत तर्क यह है कि डलहौजी ने अपनी इस नीति को लागू करने में रियासतों की श्रेणियों को ध्यान में नहीं रखा, बल्कि इसके भेद को समाप्त करके किसी भी प्रकार से राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का प्रयास किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि डलहौजी ने साम्राज्यवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हुए उचित–अनुचित हर तरीके से देशी राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया।

7.4.2 हड़प नीति का क्रियान्वयन व इसकी समीक्षा (Execution of Lapse policy and its Review)

लॉर्ड डलहौजी ने अपनी हड़प–नीति के आधार देशी रियासतों के गोद लेने की प्रथा को अस्वीकार करते हुए इसे अमान्य करार दिया। साम्राज्य विस्तार के अपने उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए उसने देशी राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करने का सिलसिला आरंभ किया। इस क्रम में डलहौजी ने 1848 ई. में सतारा राज्य को अपना शिकार बनाया था। सतारा के राजा अप्पा साहिब के कोई पुत्र नहीं था। उन्होंने अपनी मृत्यु से पूर्व कंपनी के अनुमति के बिना एक पुत्र गोद लिया था। लेकिन उनके दत्तक पुत्र को डलहौजी ने उत्तराधिकार के रूप में मानने सं इंकार कर दिया। डलहौजी ने यह तर्क दिया कि सतारा राज्य लॉर्ड हेस्टिंग्स द्वारा पुनर्स्थापित किया गया था। अतः सतारा के राजा अप्पा साहिब के दत्तक पुत्र को उत्तराधिकार के रूप में मान्यता नहीं दी जा सकती। इस प्रकार डलहौजी की हड़प नीति के तहत ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया गया पहला राज्य सतारा था। इसके बाद 1849 ई. में जैतपुर व संभलपुर राज्य को हड़प–नीति के तहत ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर लिया गया। उड़ीसा के संभलपुर के राजा नारायण सिंह के कोई पुत्र नहीं था और मृत्यु से पूर्व वह कोई दत्तक पुत्र भी नहीं बना सके। इसलिए विधवा रानी ने शासक कार्य को अपने हाथ में ले लिया, लेकिन डलहौजी ने इसे अमान्य करार देते हुए हड़प नीति के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा बना लिया।

उसने 1849 ई. में ही बुंदेलखंड में स्थित जैतपुर को हड़प नीति के आधार पर ब्रिटिश राज्य में मिला लिया। आगे इसी नीति को आधार बनाकर डलहौजी ने बघाट (1850), उदयपुर (1852), झाँसी (1853) तथा नागपुर (1854) का विलय भी ब्रिटिश साम्राज्य में कर लिया।

इसमें कोइ संदेह नहीं है कि लॉर्ड डलहौजी की हड़प नीति से ब्रिटिश साम्राज्य मजबूत एवं संगठित हुआ। भारत में कंपनी की राज्य की सीमाओं का अत्यधिक विस्तार हुआ। साथ ही यह भी सत्य है कि डलहौजी ने साम्राज्य विस्तार की अपनी हड़प–नीति में नैतिकता व नियमों का पालन नहीं किया। उसने न केवल परंपरा को तोड़ा बल्कि अपने बनाये नियमों को भी तोड़ा। इसलिए डलहौजी के इस साम्राज्य विस्तार का नैतिक, न्यायिक व निष्पक्ष रूप से समर्थन नहीं किया जा सकता। भारत में अंग्रेजों के सर्वोच्चता का अधिकार किसी नैतिक या कानूनी शक्ति के बल पर स्थापित न होकर केवल शक्ति के आधार पर प्राप्त किया गया था। इसमें विशेषकर 'डलहौजी' की हड़प नीति अनैतिकता, अत्याचार एवं स्वार्थ से भरी हुई थी।

उसकी इस नीति ने प्रजा में असंतोष की भावना भर दी, जिससे ब्रिटिश विरोधी तत्वों को आंदोलन करने की प्रेरणा मिली। उनका आक्रोश चरम पर पहुँच गया। इसका परिणाम डलहौजी के वापस जाते ही 1857 के विद्रोह के रूप

में देखने को मिला। इतना ही नहीं 1858 में ब्रिटिश सरकार ने देशी रियासतों के प्रति अधीनस्थ संघ की नीति अपनाने को मजबूर हुई थी।

7.4.3 पंजाब का विलय (Annexation of Punjab)

सिखों के दसवें व अंतिम गुरु, गुरु गोबिंद सिंह की हत्या के बाद खालसा दल तथा अन्य सिख सरदारों के एकीकृत हो जाने के कारण सिखों की स्थिति मजबूत हो गयी। भारत में मजबूत मुगल शासन सिख सरदारों के प्रयासों से समाप्त प्राय हो गया। सिखों ने अपने प्रयासों के द्वारा 1773 के अंत तक पंजाब के समस्त मैदानी भाग एवं पूर्व में सहारनपुर से पश्चिम में अटक तथा उत्तर में पहाड़ी भाग से लेकर दक्षिण में मुल्तान तक अपना साम्राज्य विस्तार किया। इस प्रकार सिखों ने एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना करने में सफलता हासिल की। लेकिन एक शासकीय इकाई का उनमें अभाव था। ये छोटे–छोटे राज्य के रूप में बंटे थे। सिखों के अधीन पंजाब के इन छोटे–छोटे राज्यों को मिरल के नाम से जाना जाता था। उस समय एक स्वतंत्र राज्य के रूप में पंजाब बारह मिस्लों में बंटे हुए थे। इन बारह मिस्लों में रणजीत हसंह का सुकरचकिया मिस्ल सबसे प्रसिद्ध था। रणजीत सिंह ने अपनी योग्यता और बुद्धिमत्ता से संपूर्ण सिख मिस्लों को मिलाकर एक संगठित सिख–शक्ति का निर्माण किया। रणजीत सिंह ने अपने पराक्रम के बल पर ने केवल स्थानीय क्षेत्राकं को विजित किया बल्कि इससे आगे बढ़ते हुए डोगराओं, नेपालियों एवं अफगानों के साथ भी संबंध स्थापित किए। 1799 में अफगानिस्तान के शासक जमान शाह ने रणजीत सिंह को लाहौर के प्रांतीय शासक का पद दिया। 1805 ई. तक रणजीत सिंह ने अमृतसर एवं जम्मू पर भी अधिकार कर लिया। इस प्रकार रणजीत सिंह ने पंजाब की राजनीतिक राजधानी लाहौर और धार्मिक राजधानी अमृतसर दोनों पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। उधर नेपोलियन की बढ़ती शक्ति एवं फ्रांस तथा रूस की मित्रता के कारण अंग्रेज अपने आपको उत्तर–पश्चिमी सीमा पर असुरक्षित पा रहे थे। इस कारण अंग्रेजों ने 25 अप्रैल 1809 ई. को रणजीत सिंह के साथ अमृतसर की संधि कर ली। इस संधि के अनुसार सतलुज नदी दोनों राज्यों के बीच की सीमा मान ली गई। 1823 तक रणजीत सिंह और अंग्रेज दोनों अपने–अपने क्षेत्रों में राज्य विस्तार में लगे रहे। अब तक रणजीत सिंह ने अपने राज्य का विस्तार करते हुए 1811 ई. में कांगड़ा तथा मुल्तान को, 1813 ई. में अरक, 1819 ई. में कश्मीर व 1823 ई. में पेशावर को मिला लिया था। इससे आगे बढ़ते हुए रणजीत सिंह सिंध पर भी अपना अधिकार स्थापित करने के लिए आतुर थे, किंतु अंग्रेजों ने कूटनीतिपूर्वक रोके रखा था।

रणजीत सिंह को 1814 ई. में अफगानिस्तान के शासक ने कोहिनूर हीरा भेंट किया था। रणजीत सिंह की सैनिक शक्ति उस समय की अन्य भारतीय शक्ति से अधिक थी, पर वे अंग्रेजों की क्षमता से भी परिचित थे। इसलिए, उसने कभी भी अंग्रेजों से युद्ध की बात नहीं सोची और अंग्रेज भी अपने आपको इससे बचाते रहे। परंतु 1839 ई. में

रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद कोई सुयोग्य उत्तराधिकारी न होने के कारण परिस्थितियां बदल गई। उधर 1843 ई. में अंग्रेजों ने सिंध का अधिग्रहण कर लिया था। इससे उनका मन और अधिक बढ़ गया था। अतः रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद सिख राज्य पंजाब में उत्पन्न कमजोर स्थिति का फायदा उठाने को अंग्रेज उत्सुक थे।

दिसंबर 1845 ई. में अंग्रेजों को इसका मौका मिल गया। तब पंजाब की सेना ने अपने अल्पवयस्क राजा दलीप सिंह और संरक्षिका जिंदान कौर से जबरदस्ती राजाज्ञा लेकर सतलुज, जो कि रणजीत सिंह के समय में सिख व कंपनी–राज्य की सीमा मान ली गई थी, के पार आक्रमण कर दिया। इससे सिख व अंग्रेजों के बीच युद्ध छिड़ गया। इसे 1845–46 का प्रथम आंग्ल–सिख युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध के अंतर्गत अंग्रेजों ने मुदकी, फिरोजशाह, आलीवाल, सुब्बारहान की चार लड़ाइयों में सिखों को बुरी तरह हरा दिया और सिखों को लाहौर की संधि (मार्च, 1846) तथा भैंरोवाल की संधि (दिसंबर, 1846) करने को विवश कर दिया। इन दोनों संधियों के द्वारा अंग्रेजों ने संपूर्ण पंजाब पर अपना अप्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित कर लिया। लाहौर व भैंरोवाल इन दोनों संधियों से सिख अपने आपको अपमानित महसूस कर रहे थे। वे इसे स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। संधि के बाद बहुत से सिख सैनिक सुवामुक्त कर दिये गये थे, जिससे वे बहुत ही अधिक रूष्ट थे। इन सैनिकों ने राजपरिवार के निक्षुब्धों के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरूद्ध षड्यंत्र आरंभ कर दिये। इसी क्रम में अप्रैल 1848 ई. में दो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या भी कर दी गई। इसके फलस्वरूप एक बार फिर से अंग्रेज व सिख युद्ध में आमने–सामने आ गये। इस युद्ध को द्वितीय आंग्ल–सिख युद्ध (1848–49) के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध के अंतर्गत अंग्रेजों ने 21 फरवरी, 1849 को गुजरात युद्ध में सिखों को बुरी तरह से पराजित कर दिया। इस प्रकार अंततः तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने पंजाब राज्य को ब्रिटिश राज्य के अंतर्गत विलय कर लिया।

7.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)

(i) सहायक संधि प्रणाली की दृढ़तापूर्वक स्थापना .... ने की थी।

(ii) वैल्जली का शासन काल .... था।

(iii) अंग्रेजों से पहले .... ने देशी शासकों को धन के बदले में सैनिक सहायता देकर सहायक संधि प्रणाली का आरम्भ किया था।

(iv) लॉर्ड वैल्जली ने सर्वप्रथम 178 ई. और 1800 ई. में .... के साथ सहासक संधि की थी।

(v) वसीन की संधि वैल्जली के समय में 1802 ई. में अंग्रेजों तथा .... के बीच हुई थी।

(vi) पंजाब को भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य में .... ने सम्मिलित किया था।

(vii) लॉर्ड डलहौजी .... ई. में गवर्नर जनरल बनकर भारत आया था।

(viii) लॉर्ड डलहौजी ने अपनी साम्राज्य विस्तार की महत्वकांक्षा के लिए .... सिद्धांत का सहारा लिया था।

(ix) डलहौजी की हड़प नीति का पहला शिकार .... राज्य था।

(x) प्रथम आंग्ल–सिख युद्ध (1845–46) की समाप्ति .... संधि से हुई थी।

(ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False based Questions)

(i) डलहौजी ने भारतीय राज्यों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया था। ( )

(ii) 25 अप्रैल, 1809 ई. को अमृतसर की संधि फ्रांसिसी व महाराजा रणजीत सिंह के बीच हुई थी।
( )

(iii) रणजीत सिंह के समय में पंजाब का सिख राज्य 12 मिस्लों में विभाजित था। ( )

(iv) महाराजा रणजीत सिंह का संबंध सुकरचकिया मिस्ल से था। ( )

(v) महाराजा रणजीत सिंह का एकमात्र वैध पुत्र एवं उत्तराधिकारी, खड़क सिंह, अल्पबुद्धि था और उसके छोटे से शासनकाल के दौरान राजदरबार में गुटबंदी तीव्र हो गई थी। ( )

(vi) प्रथम आंग्ल–सिख युद्ध (1845–46) में तथा द्वितीय आंग्ल–सिख युद्ध (1848–49) में लड़े गये थे। ( )

(vii) सहायक संधि एक प्रकार की मैत्री संधि थी, जिसका प्रयोग 1798–1805 तक भारत के गवर्नर जनरल रहे लॉर्ड विलियम बैंटिक ने भारत के देशी राज्यों के संबंध में किया था। ( )

(viii) संभवतः डूप्ले प्रथम यूरोपीय था, जिसने पहली बार इस संधि का प्रयोग भारत में किया था। बाद में वैल्जली ने इसे व्यापक रूप से अपनाया था। ( )

(ix) अवध का अंतिम नवाब वाजिद अली शाह (1847–56) था। इसके काल में ही 1856 में कुशासन का आरोप लगाकर अवध को ब्रिटिश राज्य में मिला लिया गया था। ( )

(x) डलहौजी ने गवर्नर जनरल के रूप में अपने आठ वर्षों के कार्यकाल (1848–56) के दौरान भारत में ब्रिटिश साम्राज्य में आठ राज्यों का विलय किया गया था। (   )

7.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

- लॉर्ड वैल्जली का कार्यकाल 1798–1805 ई. तक रहा।
- भारत में ब्रिटिश शासन का दूसरा सबसे बड़ा फैलाव लॉर्ड वैल्जली के काल में हुआ था।
- सहायक संधि एक प्रकार की मैत्री संधि थी, जिसका प्रयोग 1798–1805 तक भारत के गवर्नर जनरल रहे लॉर्ड वैल्जली ने भारत के देशी राज्यों के संबंध में किया था।
- अपने राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वैल्जली ने तीन उपायों – 1. सहायक संधि प्रथा 2. खुला युद्ध तथा 3. पहले से अधिक बनाए जा चुके शासकों का क्षेत्र हड़पना का सहारा लिया था।
- सहायक संधि की नीति के तहत किसी सहयोगी भारतीय राज्य के शासक को ब्रिटिश सेना अपने राज्य में रखनी पड़ती थी तथा उसके रख–रखाव के लिए अनुदान देना पड़ता था।
- सहायक संधि के अनुसार देशी रियासतों को शासन–प्रबंध के लिये अपने दरबार में एक ब्रिटिश रेजीडेंट रखना पड़ता था।
- सहायक संधि से जुड़े भारतीय शासक अंग्रेजों की स्वीकृति के बिना किसी और यूरोपीय को अपनी सेवा में नहीं रखेगा तथा गवर्नर जनरल से सलाह किए बिना किसी दूसरे भारतीय शासक से कोई वार्ता नहीं करेगा।
- इसके बदले अंग्रेज उस शासक की दुश्मनों से रक्षा करने का वचन देते थे तथा सहयोगी के आंतरिक मामलों में दखन नहीं देने का वादा करते थे।
- सहायक संधि करने वाले राज्य थे – हैदराबाद (1798 ई.), मैसूर (1799 ई.), तंजौर (1799 ई.), अवध (1801 ई.) पेशवा (दिसंबर 1802 ई.), बरार एवं भौंसले (दिसंबर, 1803 ई.), सिंधिया (1804 ई.) एवं अन्य सहायक संधि करने वाले राज्य जोधपुर, जयपुर, मच्छेड़ी, बूँदी तथा भरतपुर।
- हैदराबाद के निजाम ने सहायक सेनाओं के खर्च के लिए नकद पैसा देने की जगह कंपनी को अपने राज्य का एक भाग दे दिया था।
- इंदौर के होल्करों ने सहायक संधि स्वीकार नहीं की थी।
- भारत में सहायक संधि का प्रयोग वैल्जली से पूर्व फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने किया था।

- सहायक संधि प्रथा के कारण सुरक्षा प्राप्त राज्य की सेनाएँ भंग कर दी गई। लाखों सैनिक और अधिकारी अपनी पैतृक जीविका से वंचित हो गए, जिससे देश में बदहाली और गरीबी की स्थिति उत्पन्न हो गई।
- "वैल्जली ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को भारत के ब्रिटिश साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया। भारत में राजनीतिक शक्तियों में से एक, कंपनी भारत में सर्वोच्च शक्ति बन गई, और पूरे देश को इसके संरक्षित राज्य माना गया। वैल्जली के समय से आगे भारत की रक्षा कंपनी की जिम्मेदारी थी।" कथन इतिहासकार सिडनी जे ओवन का है।
- सहायक संधि प्रणाली के प्रभावों के संबंध में कार्ल मार्क्स ने कहा कि "और स्थानीय राजा, उनका अस्तित्व तो वास्तव में उसी दिन समाप्त हो गया, जिस दिन वे कंपनी द्वारा सुरक्षित बने अथवा कंपनी उनकी सहायक बनी।"
- लॉर्ड डलहौजी 1848 से 1856 तक भारत का गवर्नर जनरल रहा था।
- डलहौजी ने अपनी अधिग्रहण की नीति के द्वारा साम्राज्य विस्तार को चरमोत्कर्ष तक पहुंचा दिया था।
- भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार जितना अधिक डलहौजी के समय में हुआ, उससे अधिक किसी भी अन्य गवर्नर जनरल के काल में नहीं हुआ।
- डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत (Doctrine of Lapse) या अधिग्रहण की नीति जिसे उसने शांतिपूर्ण विलय की नीति का नाम दिया, का मुक्त रूप से प्रयोग करते हुए कई भारतीय राज्यों को ब्रिटिश राज्य में मिला लिया।
- व्यपगत के सिद्धांत (Doctrine of Lapse) द्वारा लॉर्ड डलहौजी ने 1848 ई. में सतारा, 1849 ई. में जैतपुर तथा सम्बलपुर 1850 ई. में बाघट, 1852 ई. में उदयपुर, 1853 ईत्र में झांसी, 1854 ई. में नागपुर और 1855 ई. में करौली को कंपनी के राज्य में मिला लिया।

डलहौजी की हड़प नीति

• अवध (1856)	कुशासन का आरोप
• पंजाब, लोअर वर्मा अर्थात् पीगू प्रदेश, सिक्किम	विलय के अधिकार द्वारा
• सतारा, जैतपुर, सम्भल, बघाट, उदयपुर झांसी, नागपुर	व्यपगत के सिद्धांत द्वारा
• तंजौर व कर्नाटक	नवाबों की उपाधियाँ छीन कर

- दूसरे आंग्ल–बर्मा युद्ध (1852) के बाद डलहौजी ने लोअर बर्मा (Lower Burma) अर्थात् पीगू प्रदेश को जीत लिया था।
- राज्य विलय सिद्धांत के अनुसार – यरि किसी सुरक्षा प्राप्त राज्य के शासक बिना एक स्वाभाविक उत्तराधिकारी के हो जाए तो उसका राज्य उसके दत्तक उत्तराधिकारी को नहीं सौंपा जाएगा। इसके अतिरिक्त यदि उत्तराधिकारी को गोद लेने के विषय में अंग्रेज अधिकारियों की सहमति प्राप्त नहीं होगी तो वह राज्य ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाएगा।
- द्वितीय आंग्ल–सिख युद्ध (1848–49 ई.) डलहौजी के समय में ही हुआ था।
- द्वितीय आंग्ल–सिख युद्ध में सिख पराजित हुए और 1849 ई. में संपूर्ण पंजाब का कंपनी राज्य में विलय हो गया।
- द्वितीय आंग्ल–सिख युद्ध के फलस्वरूप ही सिख राजा दलीप सिंह से अंग्रेजों को कोहिनूर हीरा प्राप्त हुआ था।
- लॉर्ड डलहौजी के समय में पंजाब छोटे–छोटे प्रशासकीय इकाईयों में बंटा था जिसे मिस्ल के नाम से जानते थे।
- पंजाब के सबसे योग्य शासक थे – महाराजा रणजीत सिंह।
- रणजीत सिंह के समय में 12 सिख मिस्ले थीं।
- रणजीत सिंह सुकरचकिया मिस्ल के प्रमुख थे।
- रणजीत सिंह ने अपनी योग्यता और बुद्धिमत्ता से संपूर्ण सिख मिस्लों को मिलाकर एक संगठित सिख–शक्ति का निर्माण किया था।
- पंजाब की राजनीतिक राजधानी लाहौर तथा धार्मिक राजधानी अमृतसर दोनों पर रणजीत सिंह का अधिकार हो गया था।
- अमृतसर की संधि 25 अप्रैल, 180 ई. को अंग्रेजों व रणजीत सिंह के मध्य हुई थी।
- अंग्रेजों की ओर से इस संधि में चार्ल्स मेटकाफ ने भाग लिया था।
- अमृतसर की संधि के अनुसार सतलुज नदी दोनों राज्यों के बीच की सीमा निर्धारित की गई थी।
- डलहौजी ने स्वर्गीय पेशवा के गोद लिए पुत्र नाना साहिब की पेन्शन बन्द कर दी। इसके फलस्वरूप नाना साहिब ने 1857 ई. के विद्रोह में बढ़चढ़ कर भाग लिया।

- डलहौजी ने अवध को कुशासन के कारण भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य में सम्मिलित किया। उस समय अवध का नवाब वाजिद अली शाह था।

7.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- व्यपगत (Lapse) – वंचित, रहित।
- अध्ययनोपरांत– अध्ययन के बाद।
- रियासत – राज्य, अमीरी, वैभव
- साम्राज्यवाद – शक्तिशाली राज्य/राष्ट्र द्वारा किसी राज्य की संप्रभुता को नष्ट करके उस पर राजनीतिक व आर्थिक रूप से अपने अधिकार में ले लेना।
- संप्रभुता – राज्य/राष्ट्र का आंतरिक व बाह्य मामलों में स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता।
- नरेश – राजा
- स्कॉटिश – स्कॉटलैण्ड का रहने वाला, स्कॉटलैण्ड में जन्मा हुआ।
- कूटनीति – गुप्त चाल, छिपी हुई चाल।
- पुनरावलोकन – फिर से अवलोकन करना, पुनः परीक्षण करना।
- विक्षुब्ध – क्षोभ/पीड़ा से भरा हुआ।

7.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) लॉर्ड वैल्जली द्वारा लागू की गई सहायक संधि व्यवस्था के बारे में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन लागू नही होता ?

(क) दूसरों के खर्च पर एक बड़ी सेना बनाए रखना

(ख) भारत को नेपोलियन के खतरे से सुरक्षित रखना

(ग) कंपनी के लिए एक नियत आय का प्रबंधन करना

(घ) भारतीय रियासतों के ऊपर ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित करना।

(ii) सहायक संधि व्यवस्था को स्वीकार करने वाले प्रथम भारतीय देशी शासक कौन थे ?

(क) ग्वालियर के सिंधिया (ख) हैदराबाद के निजाम

(ग) पंजाब के दलीप सिंह (घ) बड़ौदा के गायकवाड़

(iii) सिराजुद्दौला के विरूद्ध षड्यंत्रकारियों में निम्नलिखित में से कौन–कौन शामिल था ?

(1) रायदुर्लभ (2) अमीचंद (3) जगतसेठ (4) यार लतीफ

कूट :

(क) केवल 2 व 3 (ख) केवल 1, 2 व 3

(ग) केवल 1, 2 व 4 (घ) उपर्युक्त सभी

(iv) किस शासक ने ईस्ट इंडिया कंपनी को दीवानी प्रदान की थी ?

(क) फर्रूखसियर (ख) शाहआलम प्रथम (ग) शाहआलम द्वितीय (घ) शुजाउद्दौला

(v) प्लासी के युद्ध में अंग्रेजों ने बंगाल के किस नवाब को पराजित किया –

(क) मुर्शिद कुली खाँ (ख) अलीवर्दी खाँ

(ग) सिराजुद्दौला (घ) मीर जाफर

(vi) प्लासी के युद्ध के पश्चात् बंगाल का नवाब कौन बना था ?

(क) मीर जाफर (ख) मीर कासिम (ग) शुजाउद्दौला (घ) कोई नहीं

(vii) अंग्रेजों तथा बंगाल के नवाब के बीच प्लासी का युद्ध हुआ –

(क) 1737 ई. में (ख) 1757 ई. में (ग) 1764 ई. में (घ) 1772 ई. में

(viii) बक्सर का युद्ध हुआ –

(क) 1764 ई. में (ख) 1757 ई. में (ग) 1772 ई. में (घ) 1734 ई. में

(ix) बंगाल में ब्रिटिश राज्य का संस्थापक था।

(क) राबर्ट क्लाइव (ख) सर आयर कूट (ग) वारेन हेस्टिंग्ज (घ) वेलेजली

(x) अंगेजों का पेंशनर बनने वाला प्रथम बादशाह कौन था ?

(क) शाहआलम द्वितीय (ख) अकबर द्वितीय (ग) आलमगीर द्वितीय (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(ख) निबंधात्मक/दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

1. प्लासी के युद्ध के कारण, घटनायें तथा परिणामों का विस्तार से वर्णन करें।

   (Discuss the causes, events and results of the Battle of Plassey.)

2. बक्सर के युद्ध के कारणों व परिणामों का उल्लेख करें।

   (Discuss the causes and results of the Battle of Buxar.)

3. "बक्सर ने प्लासी के कार्य को अंजाम तक पहुंचाया।" इस कथन की व्याख्या करें।

   ("Buxar completed the work of Plassey". Explain)

4. अंग्रेजों ने बंगाल में अपनी शक्ति की स्थापना कैसे की ?

   (How did the British establish their power in Bengal ?)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) प्लासी का युद्ध (Battle of Plassey)

(ii) बक्सर का युद्ध (Battle of Buxar)

(iii) दस्तक (Dastak)

(iv) ब्लैक होल दुर्घटना (Black Hole Tragedy)

(v) राबर्ट क्लाईव (Robert Clive)

(vi) मीर कासिम (Mir Kasim)

(vii) मीर जाफर (Mirjafar)

(viii) 1760 की क्रांति (Revolution of 1760)

(ix) बक्सर के युद्ध का महत्त्व (Significance of the Battle of Buxar)

(x) इलाहाबाद की संधि (Treaty of Ellahabad)

6.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your progress)

6.5 (क) उत्तर– (i) सिराजुद्दौला (ii) अलीवर्दी खाँ (iii) क्लाइव (iv) अलीनगर (v) मीरजाफर (vi) मीर मदान व मोहन लाल (vii) चन्द्र नगर (viii) 1757 (ix) मीर कासिम (x) मीर कासिम

(ख) उत्तर– (i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य (v) असत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii) सत्य (ix) सत्य (x) सत्य

6.8 (क) उत्तर – (i) घ (ii) ख (iii) घ (iv) ग (v) ग (vi) ख (vii) ख (viii) क (ix) क (x) क

6.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- आधुनिक भारत का इतिहास,
  एक नवीन मूल्यांकन (1707 ई. से वर्तमान समय तक)
  बी. एल. ग्रोवर, यशपाल पन्द्रहवाँ संस्करण 2000
  एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, नई दिल्ली – 110055
- आधुनिक भारत का इतिहास
  पूर्णतया संशोधित एवं परिमार्जित संस्करण 2021
  स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि0 नई दिल्ली।
- भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल
  अविनाश चन्द्र अरोड़ा, 1998
  प्रदीप पब्लिकेशन– जालंधर
- भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन
  तृतीय संस्करण
  दृष्टि पब्लिकेशन दिल्ली – 110009
- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन राजीव अहीर, नई दिल्ली।

B.A HISTORY PART- IInd YEAR SEMESTER-IIIrd	
COURSE CODE: 201 LESSON NO. 08	AUTOR – MOHAN SINGH BALODA
1857 का विद्रोह (Revolt of 1857)	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

8.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

8.2 परिचय (Introduction)

8.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

8.3.1 1857 के विद्रोह की प्रकृति (Nature of revolt of 1857)

8.3.2 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारण (Important Causes of revolt of 1857)

8.3.3 1857 का विद्रोह : प्रारंभ एवं विस्तार (Revolt of 1857 : Origin and Expansion)

8.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

8.4.1 1857 के विद्रोह का दमन (Suppression of revolt of 1857)

8.4.2 1857 के विदोह की असफलता के कारण (Causes of failure of revolt of 1857)

8.4.3 1857 का विद्रोह : परिणाम एवं महत्त्व (Revolt of 1857 : Effect and Importance)

8.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

8.6 सारांश (Summary)

8.7 संकेत–सूचक (Key-words)

8.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

8.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

8.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप निम्न योग्य होंगे :–

8.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी इस योग्य हो जाएंगे :–

- 1857 ई. के विद्रोह के कारण व परिणामों का विस्तार से उल्लेख कर सकेंगे।
- 1857 ई. के विद्रोह के स्वरूपों पर चर्चा करने के लायक बन जायेंगे।
- 1857 ई. के विद्रोह के उद्भव व इसके भारत के विभिन्न हिस्सों में फैलाव को बतला सकेंगे।
- अंग्रेजों द्वारा विद्रोह के दमन के लिए उठाये गये कदमों पर विद्यार्थी चर्चा कर सकेंगे।
- विद्रोह की असफलता के कारणों पर शिक्षार्थी प्रकाश डाल सकेंगे।

8.2 परिचय (Introduction) :-

1600 ई. में स्थापित ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में अपनी साम्राज्यवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए व्यापारिक शोषण की नीति को निरंतर विस्तार करने में लगी थी। भारत में अंग्रेजों की धनलोलुपता की प्रवृति की कोई सीमा नहीं थी। 1757 ई. का पलासी का युद्ध व 1764 ई. के बक्सर के युद्ध के बाद अंग्रेजों को बिहार, बंगाल व उड़ीसा का दीवानी अधिकार प्राप्त हो गया था।

इससे उत्साहित होकर अंग्रेजों ने भारत में खुलकर शोषण करना आरंभ कर दिया। अंग्रेजों के इस शोषण की नीति से भारत के लगभग सभी वर्ग परेशान थे। रियासतों के राजाओं, सैनिकों, जमींदारों, कृषकों, व्यापारियों, ब्रह्मणों व मौलवियों तक सभी वर्गों के लोगों पर शोषण नीति का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। केवल नगरों में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोग जो अपनी जीविका के लिए कंपनी पर निर्भर थे को छोड़कर अन्य सभी कंपनी की इस नीति से असंतुष्ट थे। हिन्दू व मुस्लिम दोनों में इस बात को लेकर भय उत्पन्न हो गया था कि अंग्रेजों के रहते हमारा धर्म, मान–सम्मान, जीवन व संपत्ति कुछ भी सुरक्षित नहीं रहने वाला है। इस कारण भारतीयों का असंतोष समय–समय पर भारत के भिन्न–भिन्न भागों में अलग अलग रूपों में विद्रोह बनकर प्रकट होने लगा। 1757 ई. से 1856 ई. के

बीच पूर्वी, पश्चिमी व दक्षिणी भारत में आंदोलन, विप्लव व सैनिक विद्रोह लगातार होते रहे। इन सब आंदोलनों के पीछे, राजनैतिक, आर्थिक, प्रशासनिक, सामाजिक, धार्मिक नीति अनेक कारण रहे। धीरे–धीरे यह असंतोष बढ़ता गया और 1857 ई. में एक महान क्रांति का रूप ले लिया और अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों तक को हिला दिया।

1857 ई. की इस महान क्राति के समय भारत का गवर्नर जनरल/वायसराय लार्ड कैनिंग था। इस विद्रोह का आरंभ 10 मई 1857 ई. को उत्तर प्रदेश के मेरठ में हुआ था। समय के साथ इस विद्रोह का विस्तार होता गया और यह धीरे–धीरे कानपुर, बरेली, लखनऊ, झांसी, ग्वालियर, दिल्ली, अवध आदि स्थानों पर फैलती गयी। यद्यपि इसकी शुरूआत सैन्य विद्रोह के रूप में हुई परंतु बाद में इसका स्वरूप बदल कर ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध एक जनव्यापी विद्रोह का रूप ले लिया, जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में जाना जाता है। 1857 ई. के इस विद्रोह के संबंध में पूर्व से लेकर पश्चिम तक के इतिहासकारों व विद्वानों ने भिन्न–भिन्न मत प्रकट किए हैं। सिपाही विद्रोह, स्वतंत्रता संग्राम, सामंतवादी प्रतिक्रिया, जनक्रांति, राष्ट्रीय विद्रोह, मुस्लिम षडयंत्र, इसाई धर्म के विरूद्ध एक धर्म युद्ध व यह सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष आदि अलग–अलग मत प्रकट किये गये।

ऐसा नहीं है कि 1857 ई. का यह विद्रोह अचानक भड़क गया, बल्कि इसके पीछे अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक कारण जिम्मेदार रहे हैं।

यद्यपि 1857 ई. के विद्रोह को दमन करने में अंग्रेज सफल रहे और इसमें कई कारणों से भारतीय असफल रहे। असफलता के कारणों में प्रमुख कारण रहे – विद्रोह में सभी वर्गों का शामिल न होना, संगठित विचारधारा का अभाव, एक नेतृत्वकर्त्ता का अभाव, देशी राजाओं का देशद्रोही रूख, संपूर्ण देश में फैलाव न होना, सहायक साधनों का अभाव आदि।

असफलता के बावजूद 1857 के विद्रोह ने भारत में ब्रिटिश शक्ति को हिलाकर रख दिया। विद्रोह के बाद ब्रिटिश शासक को अपनी संरचना और नीतियों में भारी फेर–बदल करना पड़ा। भारतीयों के पक्ष में भी इस क्रांति के कई सकारात्मक परिणाम प्रकट हुए। भारतीयों में आंदोलन को लेकर आत्मबल में वृद्धि हुई। वे राष्ट्रीय एकता से भरकर संगठित होने लगे। उनमें राजनीतिक जागृति आई। स्वतंत्रता आंदोलन को लेकर एक नवीन दृष्टि का जन्म हुआ जिसका भविष्य में बहुत फायदा भारतीयों को मिला।

8.3. अध्याय के मुख्य बिंदु (Main body of the Text)

8.3.1 1857 के विद्रोह की प्रकृति (Nature of revolt 1857)

1857 के विद्रोह की प्रवृति को लेकर विद्वानों व इतिहासकारों ने भिन्न–भिन्न मत प्रकट किए हैं। वे ब्रिटिश इतिहासकार जो स्वाभाविक रूप से साम्राज्य के पक्षपाती थे, उन्होंने इसे केवल सैनिक विद्रोह/ सिपाही विद्रोह की संज्ञा दी है। उनका यह मानना था कि यह विद्रोह केवल सेना तक सीमित था और इसका न कोई नेता था और न ही इसे जन–साधारण का समर्थन प्राप्त हुआ। इन सबके दृष्टिकोण इस घटना के अलावा जन–सामान्य के विभिन्न वर्गों ने भी भागीदारी की। निःसंदेह सिपाहियों/सैनिकों का असंतोष भी इस विद्रोह का एक कारण था।

1857 के इस विद्रोह के संपूर्ण घटनाक्रम पर गंभीरता से विचार करने पर पता चलता है कि यह एक राष्ट्रीयता की भावना से युक्त स्वतंत्रता संघर्ष था, परंतु कुछ अंग्रेज इतिहासकार और उनके चाटुकार समर्थक भारतीय इहिासकारों द्वारा इसे सैनिक विद्रोह के रूप में प्रकट करके इसको उपेक्षित करने की कोशिश की जाती है।

फ्रेड राबर्ट्स, एडवर्ड टॉम्पसन, जी.टी. गैरेट, सर जॉन सीले, जेम्स आउट्रम, विलियम हॉवर्ड रसेल, जी.बी. मैल्लेकसन आदि पाश्चात्य इतिहासकारों के साथ–साथ रमेशचंद्र मजूमदार, सुरेंद्रनाथ सेन, हरिप्रसाद चट्टोपाध्याय, पूरनचंद जोशी आदि भारतीय इतिहासकार भी 1857 के विद्रोह की व्याख्या सैनिकों द्वारा छोटे–छोटे स्तर पर किए गए विद्रोह के रूप में करते हैं।

दूसरी ओर, पंडित जवाहरलाल नेहरू, विनायक दामोदर सावरकर एस.ए.ए. हिलवी, बेंजामिन डिजरैली, जस्टिस मैकार्थी, जॉन ब्रूस नार्टन, विपिन चन्द्र आदि इतिहासकारों ने 1857 के विद्रोह को भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रथम संघर्ष के रूप में माना है। इन सबने 1857 के आंदोलन को जन–जीवन से जुडा हुआ आंदोलन माना है। इसके साथ ही इन सबका मानना था कि यह विप्लव भारत से विदेशी आततायियों को निकालने के उद्देश्य से जुड़ा एक संगठित और सुनियोजित कार्यक्रम था।

यदि 1857 का विद्रोह सिर्फ सैनिक विद्रोह होता, तो उसमें सिर्फ सैनिक ही भाग लेते। परंतु हम यह देखते हैं कि मेरठ से उठी क्रांति की लहर दो दिनों के अंदर ही दिल्ली पहुँच गई। वास्तव में विद्रोह में ग्रामीण और शहरी जनता भी सम्मिलित थी। यह बात सत्य है कि क्रांति की शुरूआत सैनिकों ने की थी। अतः यह स्पष्ट है कि 1857 के संघर्ष में अंसतोष से भरे क्रूद्ध सिपाहियों के साथ–साथ अंग्रेजों के अत्याचार से पीड़ित सामान्य लोगों ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया था। इस कारण, इसे मात्र सैनिक विद्रोह की संज्ञा देना तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता है।

डॉ. के दत्ता ने 1857 के विद्रोह की व्याख्या में कहा कि यह विद्रोह कभी भी स्वरूप में सभी भारतीयों का विद्रोह नहीं था, लेकिन यह स्थानीय, सीमित एवं क्षीण रूप से संगठित था। उनका मानना था कि कुछ असंतुष्ट राजाओं एवं भूमिपतियों ने इस विद्रोह का एक अवसर के रूप में लाभ उठाया, जिनके हित नवीन राजनीतिक व्यवस्था से प्रभावित हुए थे।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में वी.डी. सावरकर ने अपनी पुस्तक 'भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध' में 1857 के विद्रोह की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के सुनियोजित युद्ध के रूप में व्याख्या की। डॉ.एस.एन. सेन ने अपनी पुस्तक अट्ठारह सौ सतावन में विद्रोह को धर्म के लिए शुरू कर किया गया युद्ध माना, जिसका अंत स्वतंत्रता के युद्ध के रूप में हुआ। डॉ. आर.सी. मजूमदार ने 1857 के विद्रोह को न तो प्रथम और न ही राष्ट्रीय विजय माना और न ही स्वतंत्रता का युद्ध। क्योंकि उनका इसके पीछे यह तर्क था कि देश का एक बड़ा हिस्सा इससे अप्रभावित रहा और जन–सामान्य के कई वर्गों ने इसमें भाग नहीं लिया।

मार्क्सवादी इतिहासकारों ने इस विद्रोह को विदेशी और सामंतवादी व्यवस्था के विरूद्ध सैनिक–किसान का संयुक्त लोकतांत्रिक संघर्ष के रूप में बताया है। परंतु यह विचारधारा कहीं से भी उचित प्रतीत नहीं होता, क्योंकि विद्रोह के नेता स्वयं सामंती पृष्ठभूमि के थे।

वास्तव में 1857 के विद्रोह का एक निश्चित वर्गीकरण बहूत ही कठिन है। एल.ई.आर. रीज के अनुसार, "यह धर्मान्धों का ईसाइयों के विरूद्ध युद्ध था।" के विचार किसी भी प्रकार से 1857 के विद्रोह के प्रवृति के संबंध में विचार करने के योग्य भी नहीं है। जबकि अंगेज इतिहासकार डी.आर.होम्ज का यह विचार कि यह तो "बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध था।" पूरी तरह से संकीर्णता एवं जातिभेद के दोष से भरा है।

यद्यपि किसी भी प्रकार से अभी तक 1857 के विद्रोह को स्वतंत्रता के युद्ध के रूप में स्वीकृत्ति नहीं मिली पायी है। फिर भी उसने राष्ट्रवाद एवं साम्राज्यवाद विरोधी भावनाओं का बीजारोपण करने में सफल अवश्य हुआ। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 1857 का विद्रोह ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का भारीयों का एक मजबूत प्रयास एवं संघर्ष था। निःसंदेह स्वतंत्रता की भावना से प्रेरित हिंदू व मुसलमान दोनों संप्रदायों ने सम्मिलित होकर विदेशियों को भारत से निकालने का प्रथम प्रयास 1857 के विद्रोह में किया था। इसने ब्रिटिश साम्राज्य के प्रतित स्थानीय विरोध करने के साहस की भावना को जन्म दिया। यह विद्रोह आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन के लिए एक मील के पत्थर के रूप में मार्ग को दिखाने वाला के रूप में साबित हुआ। इस कारण अंतर्विरोधों के बावजूद 1857 की क्रांति को भारतीय स्वातंत्रय संग्राम का प्रथम उद्घोष कहना सर्वथा युक्तिसंगत है।

8.3.2 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारण (Important Causes of Revolt of 1857)

प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के रूप में प्रसिद्ध 1857 का भारतीय विद्रोह इतिहासकारों व विद्वानों के बीच काफी विवादित रहा है। इस विद्रोह का आरंभ छोटी–मोटी सैनिक झड़पों व आगजनी के रूप में छावनी क्षेत्रों से हुआ था, परंतु धीरे–धीरे यह एक बड़ा रूप ले लिया। यह विद्रोह दो वर्षों तक भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चला। इस विद्रोह ने भारतवर्ष में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर दिया। इसके बाद शासन का दायित्व प्रत्यक्ष रूप से

ब्रिटिश क्राउन के हाथों में आ गया। इस प्रकार पूरे भारत पर ब्रिटिश क्राउन का प्रत्यक्ष शासन आरंभ हो गया। जब हम इस विद्रोह के कारणों पर विचार करते हैं तो पता चलता है कि यह विद्रोह कोई अकस्मात् रूप से भड़का हुआ विद्रोह नहीं था, परंतु इसके पीछे विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक व सैनिक कारण जिम्मेदार थे। इन कारणों का विवरण निम्नलिखित हैं –

(i) राजनैतिक कारण – 1857 के विद्रोह के राजनैतिक कारणों में कंपनी की प्रभावी नियंत्रण, वैलेजली की सहायक संधि की नीति व लॉर्ड डलहौजी की हडप नीति या व्यपगत सिद्धांत (Lapse theory) को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। डलहौजी ने अपनी हड़प नीति के अंतर्गत उत्तराधिकार के रूप में राजा को पुत्र गोद लेने की प्रथा को अमान्य घोषित कर दिया था और पुत्र नहीं होने की स्थिति में राज्य को हड़प लेता था। अतः इसकी हड़प नीति को गोद निषेध प्रथा के नाम से जाना जाता है।

वेलेजली ने सहायक संधि प्रणाली द्वारा भारत में एक विस्तृत क्षेत्र को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया। इस कारण भारतीय राज्य अपनी स्वतंत्रता को गंवाकर असंतोष से भर गये।

इसी प्रकार अपनी हड़प नीति के द्वारा डलहौजी ने सतारा, नागपुर, संभलपुर, झांसी, बरार आदि राज्यों पर अधिकार कर लिया, जिसके फलस्वरूप इन भारतीय राज्यों में अंग्रेजों के खिलाफ अंसतोष व्याप्त हो गया।

हेदराबाद तथा अवध के राज्य को डलहौजी ने कुशासन के आधार पर अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया जबकि इन राज्यों में कुशासन के लिए स्वयं अंग्रेज ही जिम्मेदार थे। अंग्रेजी साम्राज्य ने कूटनीति के द्वारा पंजाब व सिंध का विलय भी कर लिया। कालांतर में ये सभी विद्रोह का एक कारण के रूप में प्रकट हुआ। पेंशनों एवं पदों की समाप्ति से भी अनेक राजाओं में असंतोष व्याप्त था। उदाहरण के लिए डलहौजी ने अपनी नवीन नीति के द्वारा नाना साहब को मिलने वाली पेंशन को बंद करवा दिया था। मुगल सम्राट बहादुरशाह के साथ अंग्रेजों ने अपनमानजनक व्यवहार करना प्रारंभ कर दिया था। कुलीन वर्गीय भारतीय तथा जमींदारों को प्राप्त समस्त विशेषाधिकारों को कंपनी की सत्ता ने छीन लिया। इस प्रकार कंपनी की इस नयी नीति से सभी राजा, कुलीन वर्ग व जमींदार असंतुष्ट थे, और वे किसी ऐसे अवसर की खोज में थे जब पुनः अंग्रेजों को दबाकर अपनी रियासत व अधिकार प्राप्त किये जा सकें। इन राजनीतिक कारणों से उत्पन्न असंतोष की भावना ने 1857 के विद्रोह को प्रकट करने में सहायता की।

(ii) आर्थिक कारण – ईस्ट इंडिया कंपनी ने ऐसी नीति अपनाई जिससे भारत के धन का निष्कासन बड़ी तेजी से इंग्लैण्ड की ओर हुआ। कंपनी की एकतरफा मुक्त व्यापार की नीति के कारण ब्रिटिश व्यापारियों को आयात करने की पूरी छूट मिल गई। परंपरागत तकनीक से बनी हुई भारत की वस्तुएं इसके सामने टिक नहीं सकी और मजबूत

भारतीय हस्तशिल्प व्यापार को इससे भारी क्षति हुई। इस प्रकार अंग्रेजी वस्त्रों के भारत के बाजारों में अधिक मात्रा में आ जाने के कारण यहाँ के कुटीर एवं लघु उद्योग नष्ट हो गये। रेल सेवा के आने से ब्रिटिश व्यापारियों की पहुंच दूर–दराज के गांवों तक हो गई। इस कारण परंपरागत उद्योग–धंधे खासकर कपड़ा उद्योग (कपास व रेशम) नष्ट होने लगे और इसके साथ ही आधुनिक उद्योगों का विकास नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति अत्यधिक संकटपूर्ण हो गई। लार्ड विलियम बैंटिक की नीति के अंतर्गत बहुत सी माफी तथा इनाम की भूमि को छीन लिये गये। जिसके फलस्वरूप अनेक भारतीय जमींदार दरिद्र एवं कंगाल हो गये और इस प्रकार इन प्रकार इन जमींदारों में अंग्रेजी सत्ता के खिलास असंतोष व्याप्त हो गया। कृषि के क्षेत्र में अंग्रेजों की गलत नीति के कारण भारतीय किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई। अंग्रेजों द्वारा स्थापित स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था किसानों के लिए प्रतिकूल साबित हुआ। इस प्रकार इन सभी आर्थिक कारणों से उत्पन्न जन–मानस के अंसतोष की भावना ने विप्लव व विद्रोह का रूप ले लिया।

(iii) सामाजिक कारण – जैसे–जैसे भारत में अंग्रेजी साम्राज्य व विस्तार हो रहा था वैसे–वैसे अंग्रेजों ने भारतीय के साथ अमानवीय व्यवहार करना प्रारंभ कर दिया था। काले और गोरे का भेद साफ–साफ समाज में दिखाई पड़ने लगा था। काली चमड़ी वाले भारतीयों को अंग्रेजों द्वारा गुलाम समझा जाता था। समाज में हर क्षेत्र में अंग्रेज अपने आप को श्रेष्ठ समझते थे। शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजों ने भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति व शिक्षा पद्धति को नकार कर पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति, भाषा व साहित्य के विकास पर अधिक ध्यान दिया। इससे भारत के बौद्धिक वर्ग में अंग्रेजों के प्रति असंतोष की भावना व्याप्त हो गई। इस प्रकार अंग्रेजों की खुद को श्रेष्ठ व भारतीयों को दोयम दर्जे की समझने की सामाजिक भावना ने भारतीयों को क्रांति करने की प्रेरणा प्रदान की।

(iv) धार्मिक कारण – ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल में अंग्रेज धार्मिक दृष्टिकोण से अपने आपको सर्वोच्च मानते हुये भारतीयों का बड़ा तिरस्कार करते थे। इस काल में योग्यता की जगह धर्म को पद का आधार बनाया गया। इसाई धर्म को अपनाने वाले भारतीयों को पदोन्नति से नवाजा जाता था जबकि इसके स्थान पर भारतीय धर्म का पालन करने वाले को सभी प्रकार से अपमानि किया जाता था। इस कारण भारतीय जनमानस के बी अंग्रेजों को लेकर धार्मिक असहिष्णुता उत्पन्न हो गई। अंग्रेज ईसाई धर्म का प्रचार खूब बढ़–चढ़कर कर रहे थे। इसके परिणामस्वरूप भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति धर्मद्रोह की भावना उत्पन्न हो गई और इसने क्रांति व विप्लव को बढ़ावा दिया।

(v) बाहरी घटनाओं का प्रभाव – कुछ बाहरी घटनाओं –प्रथम आंग्ल – अफगान युद्ध (1838–42), पंजाब युद्ध (1845–48), क्रीमीया युद्ध (1854–56) जिसमें अंग्रेजों को भारी हानि हुई थी, से भारतीय जन–मानस से इस भावना

को बल मिला कि अंग्रेजों को हराया जा सकता है। भारतीयों में नवीन आशा व प्रेरणा का संचार हुआ और इस भावना का उन्मूलन हो गया कि अंग्रेज अपनाजेय हैं। इस प्रकार इन बाहरी घटनाओं ने भी भारतीयों को विद्रोह के लिए प्रेरित किया।

(vi) सैनिक असंतोष – 1857 ई. के विद्रोह में सैन्य असंतोष की भूमिका का भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। लार्ड डलहौजी के समय में तीन सैनिक विद्रोह – 1848 ई. में 22 वें एन. आई. का विद्रोह, 1850 ई. में 66 वें एन. आई का विद्रोह और 1852 ई. में 38 वें एन. आई का विद्रोह। मौलाना आज़ाद के अनुसार अवध के विलय ने "सैना में साधारणतः और बंगाल सेना में विशेषतः विद्रोही भावना का प्रारंभ किया .... उन्होंने सहया यह अनुभव किया कि यह शक्ति जो कम्पनी ने उनकी सेवा और बलिदान द्वारा प्राप्त की है, आज उन्हीं के राजा को समाप्त करने के लिए प्रयोग की जा रही है।"

1824 ई. में बैरकपुर में सैनिकों ने समुद्र पार वर्मा में जाकर कार्य करने से मना करने पर 47 वीं रेजिमेन्ट को भंग कर दी गई थी। 1856 ई. में केनिंग द्वारा पारित सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम से सैनिकों में बहुत असंतोष व्याप्त हो गया था। इस अधिनियम के अनुसार बंगाल के सभी सैनिकों को सरकार कहीं भी सेवा देने के लिए भेज सकी थी।

1854 ई. के डाकघर अधिनियम द्वारा सैनिकों की निःशुल्क डाक सुविधा समाप्त कर दी गई।

सैन्य असंतोष के इसी वातावरण में चरबीयुक्त एनफील्ड राइफलों के प्रयोग के आदेश ने आग में घी का कार्य किया और सैनिकों के विद्रोह के लिए तात्कालिक कारण भी सिद्ध हुआ।

8.3.3 1857 का विद्रोह : प्रारंभ एवं विस्तार (Revolt of 1857 : Origin and Expansion)

सैनिकों द्वारा चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग करने से मना करने पर उन पर अनुशासनहीनता का आरोप लगाकर उन्हें दण्डित किया गया। 28 मार्च, 1857 को नए कारतूसों के विरूद्ध आवाज उठाते हुए मंगल पांडे ने बैरकपुर में अपने अधिकारी पर आक्रमण कर उसकी हत्या कर दी। इसके परिणामस्वरूप 34 वीं एन. आई. रेजिमेंन्ट में समाप्त कर दिया गया और मंगल पांडे को 8 अप्रैल, 1857 को फांसी दे दी गई। इस खबर से संपूर्ण देश में असंतोष चरम पर पहुँच गया और क्रांति का वातावरण स्थापित हो गया।

मई, 1857 में मेरठ में 85 सैनिकों ने इन कारतूसों को प्रयोग करने से मना कर दिया। इस अपराध में इन सैनिकों को सैनिक न्यायालय द्वारा दीर्घकालीन कारावास का दण्ड सुनाया। इससे व्यथित होकर 10 मई को सैनिकों ने

खुला विद्रोह कर दिया और अपने अधिकारियों पर गोली चलाई। उत्तेजित सैनिकों ने जेलों को तोड़ना, भारतीय सैनिकों को मुक्त कराना और अंग्रेजों को मारना शुरू कर दिया।

मेरठ में मिली सफलता से उत्साहित सैनिक 11 मई को दिल्ली पहुँचकर अंग्रेजों से लोहा लिया और 12 मई को दिल्ली पर अधिकार कर लिया। इन सैनिकों ने मुगल सम्राट बहादुरशाह को दिल्ली का सम्राट घोषित कर दिया।

दिल्ली में विद्रोह का नेतृत्व बहादुरशाह का सेनापति जफर बख्त खाँ ने किया। इसके बाद शीघ्र ही यह विद्रोह लखनऊ, इलाहाबाद, बरेली, बनारस, बिहार तथा झांसी में फैल गया।

इसके प्रतिकार में अंग्रेजों ने सर्वप्रथम पंजाब से सेना बुलाकर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। 21 सितंबर, 1857 को दिल्ली में विद्रोह का दमन करते हुए अंग्रेज लेफ्टिनेंट हडसन ने धोखे से बहादुरशाह द्वितीय के दो पुत्रों एवं एक पोते को गोली मरवा दी। इस प्रकार 21 सितंबर, 1857 को दिल्ली पर पूरी तरह से एक बार फिर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

लखनऊ में विद्रोह की शुरूआत 4 जून, 1857 को हुई थी। यहाँ विद्रोह का नेतृत्व बेगम हजरत महल कर रही थीं। लखनऊ के विद्रोही सैनिकों द्वारा ब्रिटिश रेजीडेन्सी के घेराव के बाद ब्रिटिश रेजिडेंट हेनरी लारेंस की मृत्यु हो गई। हैवलाक आउट्रम ने विद्रोह को दबाने के लिए पूरा प्रयास किया लेकिन वह सफल नहीं हो सका। अंततः गोरखा रेजिमेंट की सहायता कालिन कैंपवेल ने 1858 में शहर पर अधिकार कर लिया। इसके बावजूद यहाँ सितंबर, 1858 तक विद्रोह का प्रभाव किसी–न–किसी रूप में चलता रहा।

विद्रोहियों ने 5 जून, 1857 को कानपुर को अंग्रेजों से छीन लिया। विद्रोहियों ने यहाँ तात्या टोपे की सहायता से नाना साहब को पेशवा घोषित किया। यहाँ अंग्रेजी सेना ने कैंपवेल के नेतृत्व में 6 सिंतबर, 1857 को पुनः कानपुर को विद्रोहियों से मुक्त करा दिया और अपने कब्जे में ले लिया। तात्या टोपे चुपके से कानपुर से भागकर झांसी पहुँच गये। झांसी में जून, 1857 में विद्रोहियों ने अंग्रेजों से लोहा लिया और रानी लक्ष्मी बाई को वहाँ की शाशिका घोषित कर दिया। रानी लक्ष्मीबाई ने तात्या टोपे की सहायता से यहाँ पर कड़ी शिकस्त की।

उत्साह से भरकर इन दोनों ने ग्वालियर पर भी विद्रोह का झण्डा बुलंद कर दिया और वहाँ के शासक सिंधिया द्वारा विद्रोह में सहायक नहीं हाने पर रानी ने नाना साहब को पेशवा घोषित कर दिया। इस प्रकार झांसी एवं ग्वालियर में रानी लक्ष्मीबाई एवं तात्या टोपे ने साहसपूर्वक अंग्रेजों का सामना किया। यहाँ विद्रोह का दमन अंग्रेजी सेना ह्यूरोज के नेतृत्व में कर रही थी। ह्यूरोज ने 3 अप्रैल, 1858 को झांसी पर तथा जून, 1858 में ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। लक्ष्मीबाई वीर गति को प्राप्त हो गयी। ह्यूरोज ने रानी की वीरता से प्रभावित होकर कहा कि भारतीय क्रांतिकारियों में यह अकेली मर्द है।' बरेली में विद्रोह का नेतृत्व करते हुए खान बहादुर खाँ ने स्वयं को

नवाब घोषित किया। बिहार में जगदीशपुर के जमींदार कुँअर सिंह ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह कर दिया और अंतिम क्षण तक लड़ते रहे।

बिहार में जगदीशपुर के जमींदार कुँअर सिंह ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह कर दिया और अंतिम क्षण तक लड़ते रहे। इस 70 वर्षीय बहादुर जमींदार ने दानापुर से आरा पहुंचने पर सैनिकों को सुदृढ़ नेतृत्व प्रदान किया तथा ब्रिटिश शासन को कड़ी चुनौती दी। जगदीशपुर के विद्रोह को अंग्रेज अधिकारी विलियम टेलर एवं मेजर विसेंट आयर ने दबाया।

फैजाबाद के मौलवी अहमदअल्ला ने अवध में विद्रोहियों को एक मजबूत नेतृत्व प्रदान किया। बरेली व फैजाबाद (अवध क्षेत्र) के विद्रोह को भी जगदीशपुर की तरह अंग्रेज अधिकारी विलियम टेलर एवं मेजर विसेंट आयर ने ही बलपूर्वक दबा दिया। इलाहाबाद व वाराणसी में नियाकत अली ने विद्रोह का नेतृत्व किया, लेकिन अंग्रेज अधिकारी कर्नल नील ने अंग्रेजी सैनिकों की सहायता से बलपूर्वक विद्रोह को दबा दिया। इस प्रकार 1857 का विद्रोह बैरकपुर व मेरठ छावनी से आरंभ होकर लगभग एक वर्ष से अधिक समय तक अलग–अलग स्थानों पर चला तथा जुलाई 1858 तक पूर्णतया शांत हो गया।

8.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

8.4.1 1857 के विद्रोह का दमन (Suppression of revolt of 1857)

1857 के विद्रोह के राष्ट्रव्यापी स्वरूप से अंग्रेजी सरकार घबरा गई। इसके प्रतिकार में अंग्रेजों ने निर्ममतापूर्वक दमन की नीति चलाई। 1857 के विद्रोह के समय अंग्रेजी वायसराय लार्ड कैनिंग था। उसने विद्रोह को दबाने के लिए योग्य अधिकारी के नेतृत्व में बाहर से अंग्रेजी सेनाएं मंगवाई। जनरल नील के नेतृत्व में बनारस व इलाहाबाद में क्रांति पूर्णतः अमानवीय तरीके से कुचल दिया। अंग्रेजी सैनिकों ने क्रांतिकारियों को ही नहीं, बल्कि जनसाधारण का भी कत्ल किया। इतना ही नहीं भारतीयों में भय का वातावरण बनाकर विद्रोह का दमन करने के लिए गांव के गांव लूटे गये और निर्दोषों को भी फांसी की सजा दी गई।

फिरोजपुर, जालंधर, फिल्लौट, अंबाला आदि क्षेत्रों में अंग्रेज अधिकारी एनसन ने रेजिमेंटों को आदेश देकर बड़ी निर्ममतापूर्वक लोगों की हत्या करवाई।

सैनिक नियमों का उल्लंघन करने वाले कैदी सिपाहियों में से अनेकों को तोप के मुंह पर बांधकर उडा दिया गया पंजाब में अंग्रेजी सेना का दमन का अत्यंत घृणित रूप सामने आया, जिसमें सिपाहियों को घेरकर जिंदा जला दिया गया।

अंग्रेजों ने क्रांति का दमन करने में न केवल सैन्य शक्ति का प्रयोग किया, बल्कि प्रलोभन व समझौता के छल बल का प्रयोग भी किया था। इसके तह उन्होंने प्रलोभन देकर बहादुरशाह को गिरफ्तार कर लिया, उसके पुत्रों की हत्या करवा दी, सिखों और मद्रासी सेनिकों को अपने पक्ष में कर लिया। वास्तव में इस क्रांति का रंग व रूप कुछ और ही होता यदि सिख रेजिमेंट इसके दमन में अंग्रेजी सरकार की सहायता नही की होती। अंग्रेजों को क्रांति के दमन में इसलिए भी आसानी हुई, क्योंकि देश के विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग समय में क्रांति ने जोर पकड़ा था।

इस प्रकार अंततः ब्रिटिश शासन ने एक लंबी एवं भयानक संघर्ष के बाद 20 सितंबर 1857 को दिल्ली पर कब्जा कर लिया। दिल्ली की इस घेराबंदी का नेतृत्व करने वाला जॉन निकोलसन अंततः मारा गया। 1858 के अंत तक एक बार फिर से भारत पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

8.4.2 1857 के विद्रोह की असफलता के कारण (Causes of Failure of revolt of 1857)

अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालकर इसको स्वतंत्र करने के जिस उद्देश्य को लेकर क्रांतिकारियों ने 1857 की क्रांति का सूत्रपात किया था, उसमें वे सफल नहीं हो सके। अंग्रेजों ने निर्ममता के साथ क्रांति का दमन करके ऐसी नीति अपनाई जिससे वे अगले 80 वर्षों तक इस देश पर राज करते रहे। इस प्रकार यह क्रांति असफल रहा जिसके कारण निम्नलिखित प्रकार थे –

(1) विद्रोह का कुछ वर्गों तक सीमित होना – इस विद्रोह में भारत के सभी वर्गों ने समान रूप से सहभागिता नहीं की। कुछ ही वर्गों ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया। जमींदारों व तालुकदारों ने विद्रोह को उपेक्षा के भाव से देखा तो महाजनों एवं व्यापारियों ने विद्रोहियों का शोषण करने में कोई कसर नहीं छोड़ा। वे ब्रिटिश संरक्षण में ही अपने आपको अधिक सुरक्षित महसूर करते थे। आधुनिक शिक्षित भारतीयों का वर्ग ब्रिटिश शासन को भारत को आधुनिकता की ओर ले जाने के लिए वरदान के रूप में मानते थे। इसलिए विद्रोह को लेकर शिक्षित वर्ग का रवेया नकारात्मक व उदासी से भरा था।

अधिकतर भारतीय शासकों ने न केवल विद्रोह में शामिल होने से मना कर दिया, बल्कि इन्होंने ब्रिटिश शासन की सक्रिय मदद की। पटियाला के शासक, सिंध एवं अन्य सिख सरदार, कश्मीर के महाराजा, ग्वालियर के सिंधिया और इंदौर के होल्कर विद्रोह में शामिल नहीं हुए। अधिकतर दक्षिण भारत इस आंदोलन से अछूता रहा। इस प्रकार विद्रोह में सभी वर्गों का शामिल न होना भी इस विद्रोह की असफलता का एक कारण बना।

2. संगठित एवं सुनियोजित विचारधारा का न होना – विद्रोह का नेतृत्व करने वाले अलग–अलग समस्याओं एवं राजनीतिक विचारधाराओं से संबंधित थे। उनमें औपनिवेशिक शासन की स्पष्ट समझ का अभाव था। सुसंगत विचारधारा न एक स्पष्ट सामाजिक विकल्प आधारित भविष्योन्मुखी कार्यक्रम का उनके पास सर्वथा अभाव था।

आधुनिक राष्ट्रवाद के बारे में वे लोग अनभिज्ञ थे। यद्यपि इस विद्रोह ने भारतीय लोगों को एक साथ लाने में व देश से जुड़े होने की चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, फिर भी कहीं–न–कहीं एक संगठित एवं एकबद्ध विचारधारा का अभाव विद्रोह की असफलता का एक कारण साबित हुआ।

(3) निर्धारित समय की प्रतीक्षा की कमी – एक योजना के तहत इस क्रांति की राष्ट्रव्यापी शुरूआत के लिए 31 मई, 1857 का दिन निश्चित किया गया था। परंतु उत्तेजना में आकर सैनिकों ने निर्धारित समय से पहले ही 10 मई, 1857 को ही विद्रोह कर दिया। इस कारण क्रांति की योजना अधूरी रह गई। निर्धारित समय का पालन नहीं होने के कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति की शुरूआत अलग–अलग दिनों में हुई। इससे अंग्रेजों को विद्रोह का दमन करना आसान हो गया। वास्तव में यदि सभी क्षेत्रों में योजनाबद्ध तरीके से एक साथ क्रांति की शुरूआत हुई होती तो 1857 के विद्रोह की तस्वीर कुछ और ही होती। अतः निर्धारित समय की प्रतीक्षा की कमी ने भी विद्रोह के असफल होने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(4) देशी राजाओं के देशद्रोही व्यवहार – इस विद्रोह में अनेक देशी राजाओं ने अंग्रेजों की खुलकर सहायता की। अपने राज्य को लेकर चिंतित इन राजाओं में राष्ट्रीय भावना का अभाव था। पटियाला, नाभा, जींद, अफगानिस्तान और नेपाल के राजाओं ने अंग्रेजों को सैनिक सहायता के साथ–साथ आर्थिक सहायता भी दी। इस प्रकार इन राजाओं के देशद्रोही–पूर्ण व्यवहार ने क्रांतिकारियों के मनोबल को कमजोर कर दिया और यह भी असफलता का एक कारण बना।

(5) सहायक साधनों की कमी – भारत की संप्रभुता अंग्रेजों की अधीन थी। इस कारण रेल, डाक, तार, आवागमन एवं संचार के समस्त साधनों पर अंग्रेजों का अधिकार था। उन्होंने इन समस्त साधनों का पूर्ण उपयोग करते हुए सख्ती के साथ विद्रोह को दबाने में किया। दूसरी ओर भारतीय क्रांतिकारियों के पास साधनों का पूर्ण अभाव था। वे शीघ्रता के साथ अपने संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं भेज पा रहे थे। इस कारण अभियान की योजना बनाने व उसके सफल संचालन में वे असमर्थ रहे। अतः सहायक साधनों की कमी भी विद्रोह की असफलता का एक बड़ा कारण सिद्ध हुआ।

(6) सैनिक दुर्बलता – सैनिक दुर्बलता का भी विद्रोह की असफलता में महत्वपूर्ण योगदान रहा। यद्यपि बहादुशाह जफर एवं नाना साहब एक कुशल संगठनकर्ता थे, फिर भी उनमें सैन्य नेतृत्व की क्षमता की कमी थी। इसके विपरीत अंग्रेजों के पास लारेन्स बंधु, निकलसन, हैवलॉक, आउट्रम एवं एड्वर्क्स जैसे कुशल सेनानायक थे। अंग्रेजी सैनिक आधुनिक सैनय सामग्री से युक्त थी, जबकि क्रांतिकारियों के पास अर्थाभाव के कारण आधुनिक शास्त्रास्त्रों की कमी थी।

(7) सैनिक संख्या में अंतर – विद्रोह करने वाले भारतीय सैनिकों की संख्या अंग्रेजी सैनिकों की तुलना में कम थी। इसके अलावा क्रांति का दमन करने के लिए अंग्रेजी सरकार ने बाहर से भी अतिरिक्त सैनिक मंगवा लिए थे और फिर देशी रियासतों के सैनिकों ने भी अंग्रेजों की सहायता की इस कारण भी क्रांतिकारी असफल रहे।

इन सभी कारणों के अलावा विद्रोहियों के पास उचित नेतृत्व का अभाव, विद्रोहियों के पास ठोस लक्ष्य एवं स्पष्ट योजना का अभाव, राष्ट्रीय मानना की कमी आदि ने विद्रोह की असफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

8.4.3 1857 का विद्रोह : परिणाम एवं महत्त्व (Revolt of 1857 : Effect and Importance)

यद्यपि अंग्रेजों ने 1857 के विद्रोह का पूरी तरह से दमन करने में सफल रहे, फिर भी इसने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य को जड़ से हिला दिया। इसके दूरगामी प्रभाव अंग्रेजी साम्राज्य व भारतीय दोनों के दृष्टिकोण से रहे जो निम्नलिखित है –

(1) विद्रोह की समाप्ति के बाद ब्रिटिश संसद ने 1858 ई. के अधिनियम के द्वारा कंपनी के शासन को समाप्त कर दिया और शासन का पूरा अधिकार ब्रिटिश क्राउन या ब्रिटिश संसद के हाथों में आ गया। इस अधिनियम के तहत शासन कार्य चलाने के लिए 15 सदस्यों की मंत्रणा परिषद् की व्यवस्था की गयी। इन 15 सदस्यों में 8 की नियुक्ति सरकार द्वारा करने तथा 7 की कोर्ट ऑफ डाइक्टर्स द्वारा चुनने की व्यवस्था की गई।

2. 1858 के अधिनियम के द्वारा ही गवर्नर जनरल के पद को वायसराय में परिवर्तित कर दिया। इस अधिनियम के तहत भारत का अंतिम गवर्नर जनरल व प्रथम वायसराय लार्ड कैनिंग बना था।

3. 1857 के विद्रोह के बाद साम्राज्य विस्तार की नीति की समाप्ति के साथ आर्थिक शोषण के एक नये युग का आरंभ हुआ।

4. विद्रोह के फलस्वरूप भारतीय जनमानस में सामंतवादियों की छवि देशद्रोहियों की व ग□द्दारों की हो गई, क्योंकि इस वर्ग ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों को सहयोग दिया था। इस प्रकार इस विद्रोह का एक परिणाम यह हुआ कि भारत में सामंतवादी ढाँचा चरमरा गया।

5. इस विद्रोह का एक सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि भारतीयों में राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास हुआ। हिन्दू–मुस्लिम एक होकर अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ एक होकर लड़ने व संघर्ष करने के लिए प्रेरित हुए। जिसका आगे के आंदोलन पर सुंदर प्रभाव देखने को मिलता है।

6. 1857 ई. के विद्रोह के बाद महारानी की घोषणा के अनुसार क्षेत्रों का सीमा विस्तार की नीति समाप्त कर दी गई और स्थानीय राजाओं के अधिकार, गौरव तथा सम्मान का अपने समा नही संरक्षण का विश्वास दिलाया गया। इस प्रकार सामन्तवादी और प्रतिक्रियावादी तत्व साम्राज्यवाद का विशेष कृपापात्र बन गए।

7. इस विद्रोह के फलस्वरूप 1861 में भारतीय जनपद सेवा अधिनियम पारित किया गया। इसके अनुसार प्रत्येक वर्ष लंदन में एक प्रतियोगी परीक्षा आयोजित करने की व्यवस्था की गयी, जिससे संप्रावित जनपद सेवा में भर्ती की जा सके।

8. 1857 के विद्रोह का एक महत्वपूर्ण परिणाम व प्रभाव यह हुआ कि सेना का पुनर्गठन करके यूरोपीय सैनिकों की संख्या को बढ़ाया गया।

क्योंकि इस विद्रोह के लिए अंग्रेज पूर्णतः भारतीय सेना को ही उत्तरदायी मानती थी। इस कारण उच्च सैनिक पदों पर भारतीयों की नियुक्ति को बंद कर दिया गया। तोपखानों को पूर्णरूप से अंग्रेजी सेना के अधिकार में कर दिया गया। इस विद्रोह के बाद सेना में भारतीयों एवं अंग्रेजों का अनुपात 2 : 1 का हो गया। बम्बई और मद्रास में 2 : 5 के अनुपात में सेना रखी गई। उच्च जाति के लोगों में से सैनिकों की भर्ती बंद कर दी गयी।

9. इस विद्रोह के परिणामस्वरूप भारतीयों के प्रशासन में प्रतिनिधित्व के क्षेत्र में थोड़े से प्रयास के अंतर्गत 1861 ई. में भारतीय परिषद् अधिनियम को पारित किया गया।

उपर्युक्त प्रभावों व परिणामों के अतिरिक्त इसाई धर्म के प्रचार–प्रसार में कमी आई, श्वेत जाति की श्रेष्ठता के सिद्धांत को स्थापित किया गया, मुगल साम्राज्य के अस्तित्व को सदा के लिए समाप्त कर दिया गया आदि 1857 के विद्रोह के परिणाम थे।

8.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)

(i) .... के गवर्नर–जनरल के रूप में शासन करने के दौरान ही 1857 ई. की महान क्रांति हुई।

(ii) 1857 ई. के विद्रोह का विधिवत आरंभ 10 मई, 1857 को .... में हुआ।

(iii) 1857 के विद्रोह को .... अंग्रेज इतिहासकार ने पूर्णतया सिपाही विद्रोह के रूप में माना है।

(iv) 1857 के विद्रोह के राजनैतिक कारणों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण हड़प नीति .... गवर्नर जनरल के द्वारा चलाया गया।

(v) डलहौजी ने हैदराबाद तथा अवध को .... के आधार पर अंग्रेजी साम्राज्य के अधीन कर लिया।

(vi) .... ई. के डाकघर अधिनियम से सैनिकों की निःशुल्क डाक सुविधा समाप्त कर दी गयी।

(vii) 28 मार्च, 1857 को .... सैनिक ने बैरकपुर छावनी में अपने अफसरों के विरूद्ध विद्रोह कर दिया था।

(viii) बरेली में 1857 ई. में विद्रोह का नेतृत्व .... के द्वारा किया गया था।

(ix) दिल्ली में 1857 के विद्रोह का दमन करने वाला अंग्रेज सैनिक .... और .... था।

(x) .... ने लक्ष्मीबाई की वीरता से प्रभावित होकर कहा कि 'भारतीय क्रान्तिकारियों में यह अकेली मर्द है।'

(ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False based Questions)

(i) 1861 के भारत सरकार अधिनियम द्वारा कंपनी के शासन को समाप्त कर शासन का दायित्व ब्रिटिश क्राउन को सौंप दिया गया। ( )

(ii) 1857 ई. के विद्रोह का तात्कालिक कारण चरबीयुक्त एनफील्ड राइफलों के प्रयोग का आदेश था। ( )

(iii) 1857 ई. का विद्रोह एक सुनियोजित राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम था। यह मत भारतीय इतिहासकार व क्रांतिकारी वी.डी. साबरकर का है। ( )

(iv) 1857 के विद्रोह पर आधारित 'द ग्रेट रिबेलियन' पुस्तक के लेखक आर.सी. मजूमदार हैं। ( )

(v) 28 मार्च, 1857 को बैरकपुर छावनी के सिपाही मंगल पाण्डे ने चर्बीयुक्त कारतूस के प्रयोग के विरोध में अपने अधिकारी लेफ्टिनेंट बाग एवं सार्जेण्ट ह्यूरसन को गोली मार दी। ( )

(vi) लॉर्ड डलहौजी ने गोद–निषेध नियम का लाभ उठाकर झाँसी के राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। ( )

(vii) 20 सितंबर, 1857 को बहादुरशाह ने हुमायूँ के मकबरे में अंग्रेज अधिकारी कैंपवेल के समक्ष समर्पण कर दिया तथा उन्हें रंगून (बर्मा/क्यानमार) भेज दिया गया। वहीं पर 1862 ई. में बहादुरशाह जफर की मृत्यु हो गई। ( )

(viii) 1857 के विद्रोह का नेतृत्व मेरठ में कदम सिंह ने किया था। ( )

(ix) जगदीशपुर (बिहार) में विद्रोह का नेतृत्व करते हुए कुँवर सिंह का 26 अप्रैल, 1858 में निधन हो गया। ( )

(x) 1857 के विद्रोह के बाद 1858 के भारत सरकार अधिनियम द्वारा कंपनी का शासन समाप्त कर दिया गया। ( )

8.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

- 1857 ई. की महान क्रांति के समय भारत का गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग था।
- 1857 के विद्रोह का विधिवत आरंभ 10 मई, 1857 को मेरठ की 3 एल.सी. अर्थात् तीसरी बंगाल लाइट कैवेलरी के सिपाहियों द्वारा किया गया था।
- परंतु मेरठ से पूर्व 28 मार्च, 1857 को बैरकपुर छावनी के 34 वीं नेटिव इंफ्रेंट्री के सिपाही मंगल पांडे ने चर्बीयुक्त कारतूस के प्रयोग के विरोध में अपने अधिकारी लेफ्टिनेंट बाग एवं ह्यूरसन की हत्या करके विद्रोह की शुरूआत कर दिया था।
- 8 अप्रैल, 1857 को सैनिक अदालत ने मंगल पाण्डे को फाँसी की सजा सुनाई।
- 11, 12 मई, 1857 को दिल्ली में विद्रोह का सैन्य नेतृत्व बहादुरशाह जफर का सेनापति बख्त खाँ ने किया था।
- दिल्ली में विद्रोह को दबाने वाले ब्रिटिश नायक – निकलसन व हडसन थे।
- दिल्ली में 21 सितंबर, 1857 तक अंग्रेजों ने विद्रोह को नियंत्रित कर लिया था।
- 4 जून, 1857 को लखनऊ में विद्रोह का नेतृत्व बेगम हजरत महल के द्वारा किया गया।
- लखनऊ में विद्रोह का दमन करने वाला अंग्रेज था – कैंपबेल।
- 5 जून, 1857 को कानपुर में नाना साहब एवं तात्या टोपे ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया था।
- 6 सितंबर, 1857 तक कानपुर में कैंपबेल के नेतृत्व में विद्रोह को दबा कर नियंत्रण प्राप्त कर लिया था।
- रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में जून, 1857 में झांसी व ग्वालियर में विद्रोह किया गया।
- रानी लक्ष्मीबाई को झांसी व ग्वालियर में विद्रोह को दबाने वाला अंग्रेज नायक ह्यूरोज के खिलाफ तात्या टोपे का साथ मिला।
- 17 जून, 1858 ई. में ग्वालियर के किले में स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुई।

- जनरल ह्यूरोज ने लक्ष्मीबाई की वीरता से प्रभावित होकर कहा कि 'भारतीय क्रान्तिकारियों में यह अकेली मर्द है।'
- 1857 के विद्रोह में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले तात्या टोपे का वास्तविक नाम रामचन्द्र पाण्डुरंग था। ये अंतिम समय तक अंग्रेजों से लड़ते–लड़ते अप्रैल, 1858 में शहीद हो गए।
- रानी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मणिकर्णिका था। झांसी के राजा गंगाधर राव के साथ इनकी शादी होने के बाद इनका नाम महारानी लक्ष्मीबाई पड़ा।
- बरेली में जून, 1857 में विद्रोह का नेतृत्व खान बहादुर खाँ ने किया।
- बरेली में विद्रोह का दमन करने वाला अंग्रेज अधिकारी विंसेट ऑयर था।
- बिहार में विद्रोही सेना का नेतृत्व जगदीशपुर के जमींदार कुँवर सिंह ने किया था।
- कुँवर सिंह ने अपने युद्ध–कौशल और छापामान युद्ध नीति के द्वारा अंग्रेजों का सामना किया था। इनके पश्चात् 26 अप्रैल 1858 को इनकी मृत्यु हो गयी।
- मेरठ में विद्रोह का नेतृत्व कदम सिंह ने किया था।
- मथुरा में विद्रोह का नेतृत्व देवी सिंह ने किया था।
- रेवाड़ी (हरियाणा) में राव तुलाराम ने विद्रोह का नेतृत्व किया था। बीमार होने से काबुल में 8 सितंबर 1862 को इनका निधन हो गया था।
- फैजाबाद में मौलवी अहमदुल्ला ने विद्रोह का नेतृत्व किया था।
- इलाहाबाद में विद्रोह का नेतृत्व करने वाला लियाकत अली था।
- 6 जून, 1857 तक कर्नल नील के नेतृत्व में विद्रोह पर नियंत्रण पा लिया गया।
- 1857 के विद्रोह से संबंधित मत व इतिहासकार –

	मत	इतिहासकार
1.	भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम	वी.डी. सावरकर, अशोक मेहता
2.	राष्ट्रीय विद्रोह	डिजरायली
3.	पूर्णतया सिपाही विद्रोह	सर जॉन लॉरेन्स एवं सीले
4.	अंग्रेजों के विरूद्ध हिंदू एवं	जेम्स आउट्रम, डब्ल्यू टेलर

	मुसलमानों का षड्यंत्र	
5.	बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध	जे. आर. होम्स
6.	धर्मांथों का ईसाइयों के विरूद्ध युद्ध	एल. ई. आर. रीज
7.	तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम न प्रथम, न राष्ट्रीय और न स्वतंत्रता संग्राम	आर. सी. मजूमदार
8.	विद्रोह केवल एक सैनिक विद्रोह था, जिसका तात्कालिक कारण चर्बीयुक्त कारतूस था।	पी. राबर्ट्स
9.	एक सामंतवादी प्रतिक्रिया थी	मिस्टर के.
10.	जनक्रांति थी	डॉ. राम विलास शर्मा
11.	1857 का विद्रोह विदेशी शासन से राष्ट्र को मुक्त कराने का देशभक्तिपूर्ण प्रयास था।	विपिन चन्द्र

- 1857 के विद्रोह पर आधारित प्रमुख पुस्तक

	पुस्तक	लेखक
1.	द ग्रेट रिबेलियन	अशोक मेहता
2.	फर्स्ट वार ऑफ इन्डिपेन्डेन्स	विनायक दामोदर सावरकर (वी.डी. सावरकर)
3.	एट्टीन फिफ्टी सेवन	एस.एन. सेन
4.	सिपॉय क्यूटिनी एंड द रिवोल्ट ऑफ 1857	आर. सी. मजूमदार
5.	कॉलेज ऑफ द इंडियन रिवोल्ट	सर सैयद अहमद खान

- 1857 के विद्रोह के कारण :

आर्थिक कारण – नवीन राजस्व व्यवस्थता के अंतर्गत भारी करारोपण, बेदखली, भारतीय उत्पादों के विरूद्ध भेदभावपूर्ण प्रशुल्क नीति, परंपरागत हस्तशिल्प उद्योग का विनाश आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था को प्रोत्साहन न देना, जिसने कृषक, जमींदार एवं शिल्पकार को दरिद्र बना दिया।

राजनीतिक कारण – लार्ड डलहौजी की हड़प नीति, ब्रिटिश शासन का विदेशीपन, दोषपूर्ण न्याय व्यवस्था एवं प्रशासकीय भ्रष्टाचार, मुगल सम्राट से निंदनीय व्यवहार।

प्रशासनिक कारण – अंग्रेजी की पद्धति के प्रति असंतोष, परंपरागत पद्धति की समाप्ति, उच्च पदों को अंग्रेजों तक सीमित करना, अंग्रेजी को सरकारी भाषा बनाना।

सामाजिक व धार्मिक कारण – प्रजातीय भेदभाव व श्रेष्ठता की भावना, ईसाई मिशनकारियों को प्रोत्साहन, सामाजिक सुधारों के माध्यम से दखल करना, नये नियमों का निर्माण।

सैनिक कारण – सैनिकों के वेतन एवं भत्ते में असमानता भेदभावपूर्ण नीति, मनोवैज्ञानिक व धार्मिक उत्पीड़न।

तात्कालिक कारण – चर्बीयुक्त कारतूसों का प्रयोग।

- 1857 के विद्रोह की असफलता के कारण :–

1. विद्रोह का सीमित स्वरूप
2. उचित व योग्य नेतृत्व का अभाव
3. ठोस लक्ष्य एवं स्पष्ट योजना का अभाव
4. अनुभव, संगठन क्षमता व मिलकर कार्य करने की शक्ति की कमी
5. सैनिक दुर्बलता
6. अच्छे साधन एवं धनाभाव
7. शिक्षित वर्ग की उदासीनता
8. निश्चित उद्देश्य का न होना
9. जन–सामान्य के समर्थन की कमी
10. अंग्रेजों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ एवं कुशल नेतृत्व
11. देशी रियासतों के राजाओं एवं सामंतों का देशद्रोहपूर्ण व रवैया व विश्वासघात

- कानपुर में 5 जून, 1857 को विद्रोह आरंभ हुआ जहाँ विद्रोहियों ने नाना साहब को पेशवा घोषित कर दिया था। नाना साहब पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र थे। उनका वास्तविक नाम धोंधूपत था।

8.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- प्रकृति – वास्तविक रूप, स्वभाव
- अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद
- उद्भव – उत्पत्ति (origin)
- साम्राज्यवाद – ऐसी प्रवृत्ति जिसके अंतर्गत कोई महत्त्वाकांक्षी राष्ट्र अपनी क्षमता व गौरव बढ़ाने के लिए अन्य देशों के प्राकृतिक व मानवीय संशाधनों अपना नियंत्रण कायम कर लेता है।
- सामंतवाद (Feudalism) – राजा या उच्च शासक वर्ग के प्रति स्वामिभक्ति रखने वाले अधीनस्थ शासकों की एक शासन प्रतिक्रिया की नीति को सामंतवाद कहते थे।
- मार्क्सवाद (Marxism) – वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स द्वारा दी गई नीति को मार्क्सवाद के नाम से जानते हैं। इसके अंतर्गत उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व द्वारा वर्गविहीन समाज की स्थापना के विचारधारा को मार्क्सवाद के नाम से जानते हैं।
- धर्माध – बिना सोचे–विचारे व चिंतन अर्थात् बिना विवेक के कट्टरतापूर्ण तरीके से धर्म को अपनाना। अर्थात् अच्छे–बुरे का विचार किये बगैर धर्म को अपनाना।
- पाश्चात्य (Western) – पश्चिम का अर्थात् यूरोप का अर्थात् अंग्रेजों द्वारा अपनायी गयी नीति।

8.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) निम्न में से किन वर्गों ने 1857 के विद्रोह में भाग लिया ?

(1) कृषक (2) पूंजीपति (3) दस्तकार (4) परंपरागत जमींदार (5) विस्थापित राजे

(क) 1, 3, 5 (ख) 1, 3, 4 (ग) 3, 4, 5 (घ) 1, 3, 4,5

(ii) निम्न में से कौन से प्रांत विद्रोह में शामिल नहीं हुए ?

(1) बंगाल (2) मद्रास (3) बंबई (4) मध्य भारत (5) पश्चिमी पंजाब (6) राजपूताना

(क) 1, 2, 3, 5, 6 (ख) 2, 3, 4, 5, 6 (ग) 2, 3, 5, 6 (घ) 2, 4, 5, 6

(iii) 1857 के विद्रोह के पतन के अनेक कारण थे। निम्न में से कौन सत्य है ?

(1) संगठन का अभाव (2) अनुशासन का अभाव (3) जनता का समर्थन (4) उद्देश्य की एकता (5) नेतृत्व का विकेन्द्रित होना (6) परंपरागत हथियारों का इस्तेमाल

(क) 1, 2, 3, 5 (ख) 2, 4, 5, 6 (ग) 1, 2, 5, 6 (घ) 2, 3, 4, 6

(iv) 1857 के विद्रोह का विस्तार कई क्षेत्रों में हुआ। निम्न स्थानों को कालक्रमानुसार सजाइए।

(1) मथुरा (2) कानपुर (3) झांसी (4) बरेली

(क) 1, 2, 3, 4 (ख) 2, 3, 1, 4 (ग) 1, 4, 3, 2 (घ) 1, 4, 2, 3

(v) 1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था ?

(क) लार्ड कैनिंग (ख) डलहौजी (ग) एलनबरो (घ) हेवलॉक

(vi) बहादुरशाह II को किसने गिरफ्तार किया था ?

(क) हेवलॉक (ख) हडसन (ग) कैंपबैल (घ) जनरल नील

(vii) सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।

	सूची I		सूची II
(अ)	नाना साहब	(1)	कानपुर
(ब)	बेगम हजरत महल	(2)	झांसी
(स)	रानी लक्ष्मीबाई	(3)	लखनऊ
(द)	खान बहादुर खाँ	(4)	आरा
(ध)	कुंवर सिंह	(5)	बरेली

	अ	ब	स	द	ध
(क)	1	3	4	5	2

(ख)	1	3	2	5	4
(ग)	1	2	3	5	4
(घ)	4	3	2	1	5

(ix) सूची I (विद्रोह का स्थान) को सूची II (दमन करने वाला ब्रिटिश अधिकारी) से सुमेलित कीजिए।

	सूची I		सूची II
(अ)	दिल्ली	(1)	कॉलिन कैम्पबैल
(ब)	कानपुर	(2)	सर ह्यूरोज
(स)	लखनऊ	(3)	मेजर हैवलॉक
(द)	झांसी	(4)	जॉन निकल्सन
(ध)	इलाहाबाद	(5)	जनरल नील

	अ	ब	स	द	ध
(क)	3	4	2	5	1
(ख)	1	4	2	5	3
(ग)	3	4	2	1	5
(घ)	4	3	1	2	5

(ix) 1857 के संग्राम को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का नाम किसने दिया ?

(क) वी.ए. स्मिथ (ख) पी. ई. रावट्र्स (ग) वी.डी. सावरकर (घ) उपर्युक्त सभी

(x) 1857 की क्रांति पर आधारित पुस्तक 'द ग्रेट रिबेलियन' के लेखक हैं –

(क) अशोक मेहता (ख) एस. एन. सेन (ग) आर. सी. मजूमदार (घ) बी. डी. सावरकर

(ख) निबंधात्मक / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

1. 1857 ई. के भारतीय विद्रोह के स्वरूप की विवेचना कीजिए।

(Discuss the nature of the Indian Rebellion of 1857.)

2. 1857 ई. के विद्रोह के मुख्य कारण तथा परिणाम बताइए।

(Discuss the main causes and results of the revolt of 1857.)

3. क्या 1857 ई. के विद्रोह को प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम कहना उचित है ?

(Is it proper to regard the revolt of 1857 as the First war of Indian Independence?)

4. 1857 के विद्रोह के प्रारंभ व विस्तार का उल्लेख करें।

(Discuss the origin and Expansion of Revolt of 1857.)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) एनफील्ड राइफल (Enfield Rifles)

(ii) अवध का विलय (Annexation of Oudh)

(iii) बहादुरशाह (Bahadur Shah)

(iv) नाना साहिब (Nana Sahib)

(v) रानी लक्ष्मीबाई (Rani Lakshmibai)

(vi) चर्बी वाले कारतूसों का मामला (Greased Cartridges Affair)

(vii) कुंवर सिंह (Kunwar Singh)

(viii) विद्रोह का तात्कालिक कारण (Immediate Cause of Revolt)

(ix) महारानी विक्टोरिया की घोषणा (Queen’s Proclamation)

(x) 1858 ई. का भारत सरकार अधिनियम (Indian government Act of 1858)

8.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your progress)

8.5 (क) उत्तर– (i) लार्ड कैनिंग (ii) मेरठ (iii) सर जॉन लॉरेन्स एवं सीले (iv) लार्ड डलहौजी (v) कुशासन (vi) 1854 (vii) मंगल पाण्डेय (viii) खान बहादुर खाँ (ix) निकलसन एवं हडसन (x) जनरल ह्यूरोज

8.5 (ख) उत्तर– (i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) असत्य (v) सत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii) सत्य (ix) सत्य (x) सत्य

8.8 (क) उत्तर – (i) घ (ii) क (iii) ग (iv) घ (v) क (vi) ख (vii) ख (viii) घ (ix) ग (x) क

8.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- आधुनिक भारत का इतिहास : लेखक – राजीव अहीर (आई. पी. एस.) स्पेक्ट्रम प्रकाशन संस्करण – 2021
- भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल
  अविनाश चन्द्र अरोड़ा, प्रदीप पब्लिकेशन जालंधर संस्करण – 1888
- संक्षिप्त इतिहास NCERT सार
  महेश कुमार वर्णवाल, Cosmos Publication
- यूनीक सामान्य अध्ययन : संपादक – शंकर घोष
  प्रकाशक – प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- सामान्य अध्ययन
  स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन, दिल्ली
- आधुनिक भारत का इतिहास, बी.एल. ग्रोवर, यशपाल 2000
- एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, दिल्ली

<table>
<tr><td colspan="2">B.A HISTORY PART- IInd YEAR SEMESTER-IIIrd</td></tr>
<tr><td>COURSE CODE: 201
LESSON NO. 09</td><td>AUTHOR – MOHAN SINGH BALODA</td></tr>
<tr><td colspan="2">भारत का मानचित्र : 1526 ई० में भारत की राजनैतिक स्थिति, अकबर की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य (1605 ई०), औरंगजेब की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य (1707 ई०)।</td></tr>
</table>

अध्याय संरचना (Structure Lesson)

9.1. अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

9.2 परिचय (Introduction)

9.3 विषय –वस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text)

9.3.1 1526 ई० में भारत की राजनैतिक स्थिति।

9.3.2 छात्र कार्याकलाप

9.3.3 अकबर की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य (1605 ई०)

9.4. विषय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण (Further Main Body of Text)

9.4.1 औरंगजेब की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य (1707 ई०)

9.4.2 औरंगजेब का चरित्र तथा व्यक्तित्व।

9.4.3 औरंगजेब के चरित्र तथा व्यक्तित्व के गुण या विशेषताएँ।

9.4.4 औरंगजेब के चरित्र व व्यक्तित्व के दोष या अवगुण।

9.6 सारांश (संक्षिप्तिका) (Summary)

9.7 सूचक शब्द (Key Words)

9.8 स्वयं मूल्यांकन के लिए प्रश्न (Self Assessment Test)(SAT)

9.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to check your Progress)

9.10 संदर्भ ग्रंथ (सहायक ग्रंथ सूची) (References/Suggested Reading)

9.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives) :-

- जब आप इस अध्याय को समझ पाएंगे तो आप इस योग्य हो जाएंगे (बन जाएंगे)।
- 1526 ई0 में मुगल साम्राज्य की स्थापना के समय भारत की भौगोलिक एवं राजनैतिक स्थिति से विद्यार्थियों को परिचित करवाना।
- इस काल की सामाजिक स्थिति पर चर्चा करना।
- मुगल काल में वास्तुकला, चित्रकला, स्थापत्य कला की जानकारी पाठकों को देना।
- मुगलों के राजनैतिक, प्रशासनिक, धार्मिक प्रभुत्व व हस्तक्षेप का इस काल में भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा, इस पर विद्यार्थियों के बीच चर्चा करना।
- भारतीय सामाजिक क्षेत्र में मुगल काल के बाद भारतीय समाज पर इसका प्रभाव किस रूप से व्याप्त रहा है व आज भी इसके अध्ययन की क्या प्रासंगिकता है। इस से विद्यार्थियों को अवगत करवाना।

9.2 परिचय (Introduction)

बाबर के आक्रमण के समय 1526 ई० में भारत की राजनीतिक दशा अत्यंत सोचनीय थी। उस समय भारत भिन्न – भिन्न छोटे–2 राज्यों में खण्डित था। सभी राज्यों के शासक आपस में लड़ते रहते थे। उस समय भारत में कोई योग्य व शक्तिशाली सम्राट नहीं था। उनमें राष्ट्रीय एकता का अभाव था। डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार, "16वीं शताब्दी की शुरूआत में भारत छोटे–2 राज्यों के एक जमघट के समान था जो किसी भी शक्तिशाली और दृढ़ निश्चयी आक्रमणकारी का आसानी से शिकार बन सकता था।" इस अध्याय में हम विद्यार्थियों को 1526 ई० भारत की राजनीतिक स्थिति को मानचित्र की सहायता से परिचित करवाएंगे ताकि भारत के विभिन्न छोटे–2 राज्यों को अच्छी तरह से जान सकें।

- अकबर का शासन काल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में एक अमिट छाप छोड़ता है। इस अध्याय में पाठकों को अकबर की मृत्यु 1605 ई० के समय मुगल शासन को मानचित्र पर अंकित करके बताया जाएगा ताकि अकबर की मृत्यु के समय भारत की राजनीतिक परिस्थिति को समझा जा सके।

- औरंगजेब की मृत्यु के समय मुगलकालीन साम्राज्य का विस्तार कहां तक फैला हुआ था ? इसको मानचित्र पर दर्शाकर विद्यार्थियों की सूझ–बूझ विकसित की जा सके। औंरगजेब के साम्राज्य का विस्तार –क्षेत्र उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कावेरी नदी तक तथा पूर्व में बंगाल से लेकर उतर–पश्चिम में हिन्दूकुश पर्वत (कन्धार छोड़कर) तक फैला हुआ था। इससे अवगत करवाया जाएगा।

9.3 विषय वस्तु के मुख्य बिन्दु– (Main Body of Text)

9.3.1 सन् 1526 ई० में भारत की राजनैतिक स्थिति

सन् 1526 ई० में बाबर के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक स्थिति अच्छी नहीं थी। देश अनेक छोटे–छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। इनमें से कोई भी एक शक्तिशाली राज्य नहीं था। ये सभी राज्य आपस में लड़ते रहते थे। देश में राष्ट्रीयता की कोई भावना नहीं थी। दिल्ली सल्तनत की केन्द्रीय शक्ति का पतन हो चुका था तथा देश की राजनैतिक एकता एवं स्थिरता स्वपन मात्र बन गई थी। ऐसी राजनैतिक स्थिति का लाभ उठाकर कोई भी विदेशी आक्रमणकारी आसानी से भारत पर विजय प्राप्त कर सकता था। इस प्रकार 1526 ई० में भारत को एक सुदृढ़ साम्राज्य न कहकर राज्यों को समूह कहना अधिक उचित प्रतीत होगा। बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक–ए–बाबरी में उत्तरी भारत के सात राज्यों की चर्चा की है। बाबर के आक्रमण के समय उत्तर तथा दक्षिण भारत के प्रमुख राज्य इस प्रकार थे –

(क) उत्तर भारत

1. दिल्ली राज्य – उत्तरी भारत का सबसे विशाल तथा महत्त्वपूर्ण राज्य दिल्ली अपनी प्राचीन शक्ति एवं वैभवता खो चुका था। क्षेत्रफल की दृष्टि यह राज्य पंजाब से भरो से लेकर पूर्व में बंगाल तक फैला हुआ था परन्तु वास्तव में इसमें दिल्ली के आसपास का ही कुछ क्षेत्र ही था। 1517 ई० से यहाँ इब्राहिम लोधी शासन कर रहा था। वह एक निर्दयी, अत्याचारी तथा शंकालु शासक था। उसके हठी एवं अहंकारी व्यवहार के कारण अधिकांश संबंधी, महत्त्वपूर्ण उच्च अधिकारी तथा अमीर एवं सूबेदार उनसे असन्तुष्ट हो गये थे। अनेक सरदार उसके शासन का अन्त करके अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित करने का स्वप्न देख रहे थे। उसका स्वयं का चाचा आलम खां लोधी उनके विरूद्ध था। पंजाब का सूबेदार दौलत खं लोधी भी उसके विरूद्ध था। वह उसका विनाश करना चाहता था तथा इसलिए उसने बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमन्त्रण दिया था। इस प्रकार आपसी फूट से दिल्ली राज्य बहुत कमजोर हो गया था। बाबरनामा में बाबर ने इब्राहीम लोधी को एक अनुभवहीन, लापरवाह युवक की संबा दी है जो बिना सोचे–समझे, अदूरदर्शितापूर्ण युद्ध मोल लेता था।

2. बंगाल –बंगाल का राज्य दिल्ली से दूर पूर्व में स्थित था। फिरोज तुगलक के समय में ही अलाउद्दीन हुसैनशाह ने (1493–1519 ई०) अपने को सल्तनत से अलग करके स्वतन्त्र राज्य की स्थापना कर ली थी। उसका पुत्र नसरत शाह बाबर की आगमन के समय बंगाल के सिंहासन पर विराजमान था जिसने बाद में बाबर से सन्धि कर ली थी। बाबर ने 'तुजुक–ए–बाबरी' में नुसरत शाह की बड़ी प्रशंसा की है। उसने शासनकाल में बंगाल की जनता सुखी एवं समृद्ध थी।

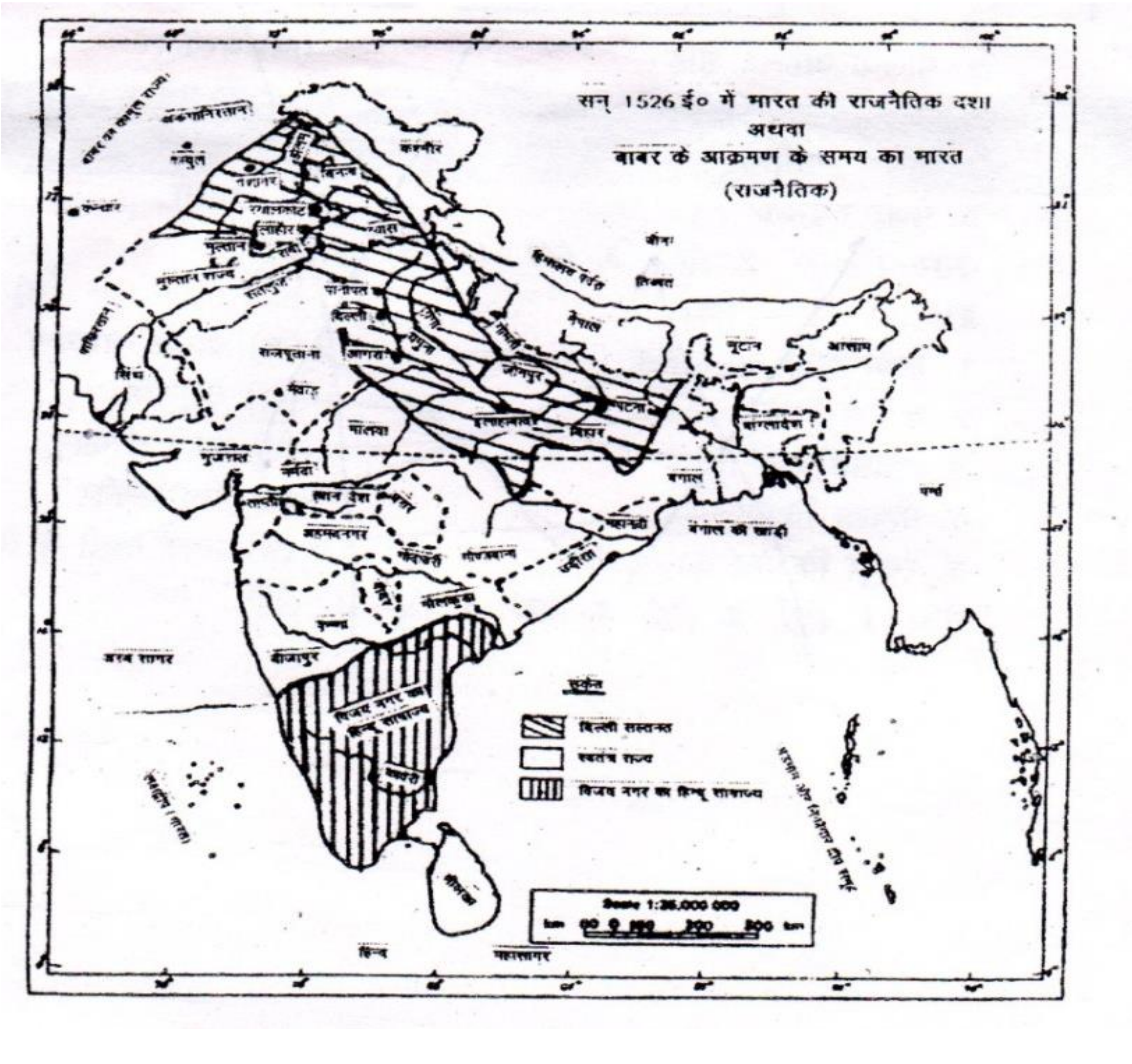

सन् 1526 ई० में भारत की राजनीतिक दशा

लक्ष्मी पब्लिकेशन –भारत का इतिहास (1526–1857) P.C/1-4.

3. पंजाब – यद्यपि पंजाब दिल्ली सल्तनत का अंग था परन्तु वहाँ के सूबेदार दौलत खां लोधी ने इब्राहिम लोधी के अपमानजनक व्यवहार से तंग आकर सल्तनत से अपने संबंध तोड़ लिये थे तथा वह एक स्वतन्त्र शासक की तरह कार्य कर रहा था। ऐसा माना जाता है कि इब्राहिम कि समय यहाँ महमूद द्वितीय शासन कर रहा थो जो एक अत्यन्त अयोग्य शासक था। उसके राज्य की वास्तविक शक्ति उसके राजपूत मन्त्री मेदिनी राय के हाथों में थी। मालवा राजनीतिक उथल–पुथल का केन्द्र था क्योंकि मेवाड के राजपूत राजा तथा गुजरात के शासक मालवा पर आक्रमण करते रहते थे। 1531 ई० में गुजरात के बहादुरशाह ने मालवा को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया।

5. गुजरात – भारत के पश्चिमी भाग में गुजरात का समृद्ध एवं धनी राज्य था। अपनी धन सम्पन्नता के कारण यह मुस्लिम आक्रमणकारियों के आकर्षक का केन्द्र–बिन्दु था। 1525 ई० में महमूद द्वितीय यहाँ का स्वतन्त्र शासक था जिसकी मृत्यु के पश्चात् बहादुरशाह गुजरात का शासक बना। बहादुरशाह एक योग्य एवं महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था। उसने पड़ोसी राज्यों बीदर, खानदेश, अहमदनगर आदि को जीतकर अपने राज्य का विस्तार किया था। उसके समय में गुजरात एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बन गया था।

6. मेवाड़ – दिल्ली सल्तनत के पश्चात् मेवाड़ उत्तरी भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य था। यह राजपूताने के प्रसिद्ध रियासत थी तथा चितौड़ इसकी राजधानी थी। राणा संग्राम सिंह (राणा सांगा) के नेतृत्व में मेवाड़ एक शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा था। वह अपने समय का एक महान् योद्धा था। कर्नल टॉड ने उसे "सैनिक का भग्वावशेष" कहा है। सौ युद्धों में भाग लेने के कारण उसके शरीर में 80 घाव थे। उसकी आकांक्षा दिल्ली साम्राज्य को प्राप्त करने की थी। राजपूताना के अनेक छोटे–छोटे राज्य उसकी सेवा में तैयार रहते थे। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि उसने दिल्ली सल्तनत को कमजोर करवाने के लिए ही बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमन्त्रण दिया था।

7. खानदेश – खानदेश पर 'फारूकी' राजवंश का अधिकार था। यह सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राज्य था क्योंकि मालवा होकर दक्षिण जाने का मार्ग खानदेश होकर जाता था। बाबर के आक्रमण के समय मीरन बहादुर यहाँ का शासक था। दिल्ली से दूर होने के कारण खानदेश का दिल्ली की राजनीति में अधिक प्रभाव नहीं था।

8. बिहार तथा जौनपुर – प्रारंभ में ये दोनों राज्य दिल्ली सल्तनत का अंग थे परन्तु इब्राहीम लोधी के अयोग्य शासनकाल में लोहानी सरदारों ने अपनी शक्ति बढ़ा ली थी तथा वे स्वतन्त्र होने का प्रयास कर रहे थे। दरिया खां

लोहानी जौनपुर का स्वतन्त्र शासक बन गया था तथा उसमें बिहार के कुछ भागों पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली थी।

9. उड़ीसा – बंगाल के दक्षिण पश्चिम में उड़ीसा का हिन्दू राज्य था। यह राज्य भी भारत के अन्य राज्यों की तरह षड्यन्त्रों का अखाडा बना हुआ था। बंगाल की ओर से दक्षिण भारत की तरफ बढ़ने में वह राज्य सरकार का कार्य करता था। 1526 ई० में प्रताप रुद्र यहाँ का शासक था।

10. कश्मीर एवं सिन्ध – कश्मीर तथा सिन्ध के कमजोर राज्यों की गणना भी उत्तर भारत के राज्यों में होती थी। 1526 ई० में कश्मीर में मुहम्मदशाह शासन कर रहा था जो एक निर्बल एवं अयोग्य शासक था। उसकी वास्तविक शक्ति उसके अमीरों के हाथों में थी। उत्तर पश्चिमी भारत में सिन्ध का राज्य महमूद तुगलक के शासन काल में स्वतन्त्र हो गया था। बाबर के आक्रमण के समय यहाँ आरगून वंश के शाह हुसैन का शासन था जो एक योग्य एवं महत्त्वाकांक्षी शासक था।

(ख) दक्षिणी भारत

1526 ई० में दक्षिण भारत भी उत्तर भारत की तरह राजनीतिक अव्यवस्था एवं अराजकता के दलदल में फंसा हुआ था। दक्षिण के दो प्रमुख राज्य बहमनी एवं विजयनगर में आपसी दुश्मनी थी जो सदैव युद्धों में उलझे रहते थे यद्यपि विजयनगर का हिन्दू साम्राज्य काफी शक्तिशाली था परन्तु उत्तर भारत से दूर होने के कारण वह उत्तर की राजनीति में कोई विशेष भूमिका नहीं निभा सकता था। दक्षिण के प्रमुख राज्यों का विवरण इस प्रकार है –

1. बहमनी राज्य – मुहम्मद तुगलक ने शासन काल में 1347 ई० में अलाउद्दीन हसन बहमनशाह ने बहमनी राज्य की स्थापना की थी। अलाउद्दीन के वंशजों ने अपनी विजयों के द्वारा इस राज्य का काफी विस्तार किया था यह राज्य उत्तर में बरार से लेकर दक्षिण में कृष्ण नदी तक फैला हुआ था। अपने सुयोग्य मन्त्री महमूद गंवा के नेतृत्व में बहमनी राज्य ने शक्ति तथा समृद्धि प्राप्त की थी। परन्तु महमूद गंवा की मृत्यु के पश्चात् विभिन्न गुटों की प्रतिद्वन्द्विता के कारण यह राज्य विघटन की तरफ अग्रसर हो चुका था। बाबर के समय तक वह राज्य पाँच स्वतन्त्र मुस्लिम राज्यों में बंट चुका था ये थे – अहमदनगर, बरार, बीदर, बीजापुर तथा गोलकुण्डा। ये पाँचों शिया राज्य थे परन्तु क्षेत्रीय विस्तार को लेकर ये सभी आपस में लड़ते–झगड़ते रहते थे। दिल्ली से अत्यधिक दूर होने के कारण ये राज्य दिल्ली सल्तनत की राजनीति से अलग–थलग थे।

2. विजयनगर साम्राज्य – विजयनगर का साम्राज्य इस समय दक्षिण का सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य था। बाबर ने इस राज्य का विशेष उल्लेख किया है तथा इसे "क्षेत्र एवं सेना की दृष्टि से काफिर नृपतियों में सर्वाधिक शक्तिशाली" कहा है। इस विशेष उल्लेख का अधिकारी था "कृष्णदेवराय"। कृष्णदेवराय के शासनकाल के

विजयनगर राज्य का विस्तार कृष्ण एवं तुंगभद्रा से लेकर दूर दक्षिण तक हुआ था। उसके दरबार में आने वाले पुर्तगाली यात्री डोमिंगो पेज ने विजयनगर राज्य की शक्ति एवं समृद्धि का सजीव विवरण दिया। परन्तु दिल्ली से अधिक दूर होने के कारण उत्तर भारत की राजनीति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं था।

3. पुर्तगाली – भारत के पश्चिमी तट पर 16वी शदी के कुछ पुर्तगाली स्थायी रूप से बस गये थे। यद्यपि इनका उद्देश्य व्यापारिक था परन्तु अपने योग्य नेता अल्बुकर्क नेतृत्व में इन्होंने गोआ पर अधिकार करके अपनी शक्ति को बढ़ा लिया था।

इस प्रकार 1526 ई० में भारत अनेक छोटे–बड़े राज्यों में विभाजित था जिनमें एकता का नितान्त अभाव था। ये राज्य आपस में लड़कर ही अपनी शक्ति को कमजोर बना रहे थे। डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है कि, "16वीं सदी के प्रारंभ में भारत छोटे–छोटे स्वतन्त्र राज्यों का एक जमघट मात्र था जो किसी शक्तिशाली एवं दृढ़निश्चयी आक्रमणकारी का आसानी से शिकार बन सकता था।"

9.3.2 छात्र कार्यकलाप–

1526 ई० के समय में भारत की राजनीतिक स्थिति काफी दयनीय थी। इस पर चर्चा कीजिए।

9.3.3 मुगल साम्राज्य अकबर की मृत्यु के समय (1605 ई०)

मुगल सम्राट अकबर की गणना भारत के ही नहीं अपितु विश्व के महान् सम्राटों में की जाती है। उसके शासन काल में जहाँ एक तरफ राजनीतिक एकता व स्थिरता कायम हुई जिससे कला एवं साहित्य का अद्भुत विकास हुआ वहीं दूसरी तरफ धार्मिक क्षेत्र में हिन्दुओं एवं मुसलमानों के बीच सौहार्दपूर्ण सामंजस्य स्थापित हुआ। उसने शासनकाल में भारत एक 'राष्ट्र' बन सका इसलिए उसे एक 'राष्ट्रीय सम्राट' की पदवी दी जाती है। डॉ० परमात्मा सरन ने लिखा है कि, "अकबर का राज्य एक ऐसा राज्य था जो एक संस्कृति, एक परंपरा और एक राष्ट्र के सिद्धान्त पर आधारित था तथा वह राज्य वास्तव में राष्ट्रीय राज्य था।"

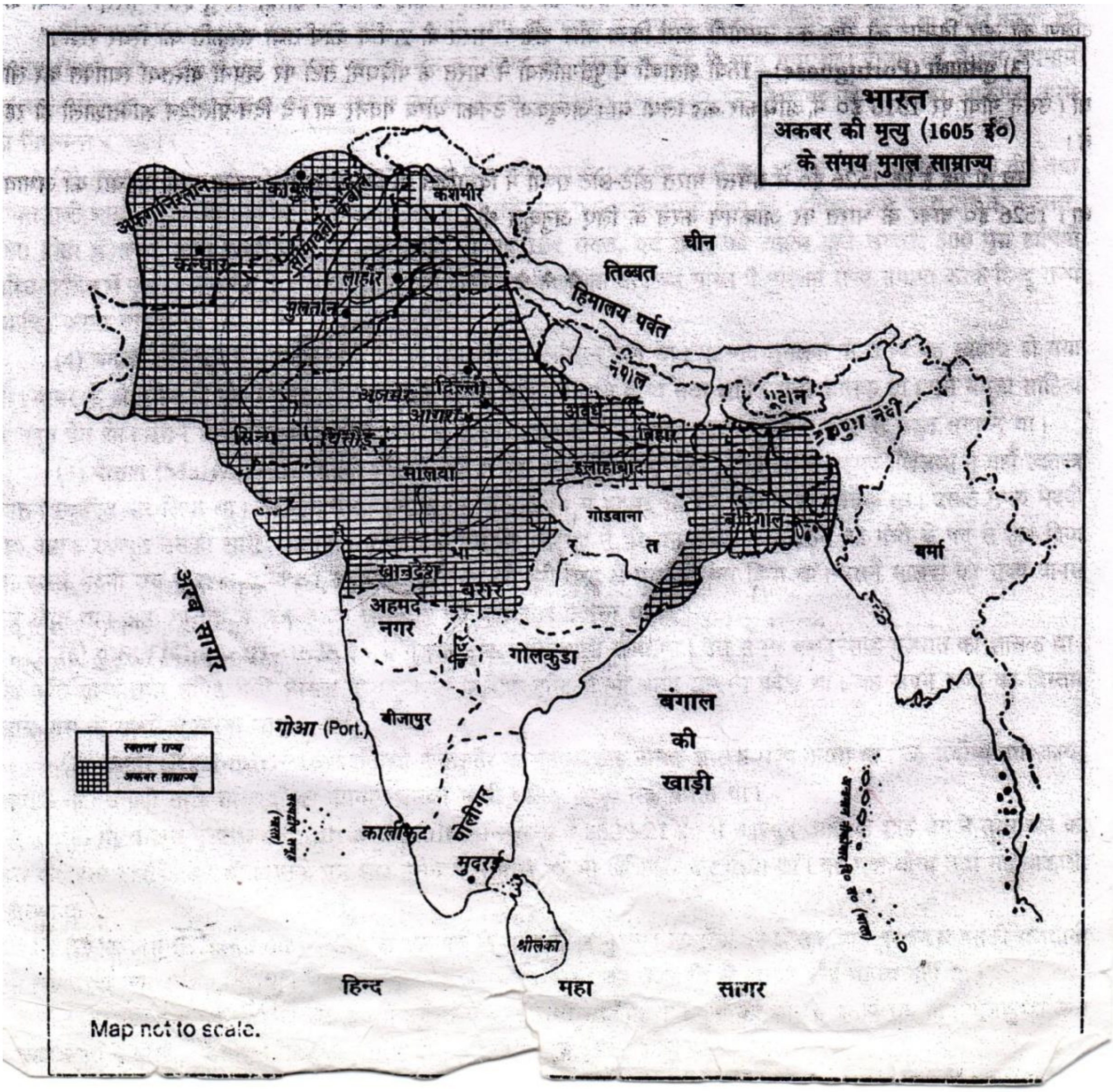

अकबर का शासनकाल भारत के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस काल में न केवल मुगल साम्राज्य का दूर–दराज के क्षेत्रों तक विस्तार हुआ बल्कि कला, शिक्षा तथा साहित्य का भी अद्‌भुत विकास हुआ था। हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् 14 फरवरी, 1556 ई० को अकबर कलानौर नामक स्थान पर गद्दी पर बैठा। डॉ० वी०ए० स्मिथ के अनुसार, "जब अकबर की कलानौर में ताजपोशी की रस्म हुई तो उसके पास वास्तव में कोई राज्य नहीं था।" सिकन्दरशाह सूरी, आदिल शाह, इब्राहिम सूर पुनः अफगान साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। आदिल शाह के मंत्री हेमू ने तो ग्वालियर से आगरा तथा दिल्ली तक के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था।

बंगाल, गुजरात, कश्मीर तथा सिंध आदि प्रदेश भी मुगल साम्राज्य से स्वतन्त्र हो चुके थे। राजस्थान के राजपूत शासक तथा अकबर के सगे सम्बन्धी भी उसके लिए चुनौती बने हुए थे। परन्तु अकबर ने अपनी वीरता, दूरदर्शिता तथा बैरमखां की सहायता से सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली।

(1) पानीपत का दूसरा युद्ध – आदिल शाह के योग्य मन्त्री हेमू ने हुमायूँ की मृत्यु का समाचार सुनते ही 50,000 घुड़सवारों और 500 हाथियों की सेना सहित आगरा तथा दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। उसने आगरा के गवर्नर सिकन्दर खां तथा दिल्ली के गवर्नर तारदी बेग को हराकर आगरा तथा दिल्ली पर अधिकार कर लिया। अकबर तथा बैरमखां उस समय जालन्धर में सिकन्दर सूर का पीछा कर रहे थे। उन्होंने दिल्ली के पतन की सूचना मिलते ही 13 अक्तूबर, 1556 ई० को हेमू के विरुद्ध प्रस्थान किया। 5 नवम्बर, 1556 ई० को दोनों ही सेनाओं में पानीपत के ऐतिहासिक मैदान में युद्ध हुआ। युद्ध के दौरान हेमू की आंख में एक तीर आकर लगा जिससे वह बेहोश होकर युद्ध के मैदान में गिर गया। उसे कैद करके अकबर के सामने पेश किया गया। बैरमखां ने अपनी तलवार से हेमू का वध कर दिया।

(2) दिल्ली, आगरा तथा मेवात पर अधिकार – पानीपत की विजय के पश्चात् अकबर ने 7 नवम्बर, 1556 ई० को दिल्ली तथा आगरा पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् पीर मुहम्मद ने हेमू के पिता को कैद करके मेवात पर अधिकार कर लिया।

(3) लखनऊ, जौनपुर तथा ग्वालियर पर अधिकार – अकबर ने अलीकुली खां को खान–ए–आजम की उपाधि प्रदान करके उसे सम्भल का गवर्नर नियुक्त किया। उसने 1559 ई० में लखनऊ, जौनपुर तथा ग्वालियर पर विजय प्राप्त करके उन्हें मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

(4) उत्तरी भारत की विजयें –

(i) मालवा की विजय –अकबर के समय बाजबहादुर मालवा का शासक था। 1561 ई० में अकबर ने अधम खां तथा पीर मुहम्मद को सेना सहित मालवा पर आक्रमण करने के लिए भेजा। 1562 ई० में मालवा पर मुगलों का अधिकार हो गया।

(ii) आमेर की अधीनता –1562 ई० में अकबर ने अजमेर में मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर यात्रा की। उसी समय आमेर के शासक बिहारीमल ने न केवल अधीनता स्वीकार की बल्कि अपनी पुत्री जोधाबाई का विवाह भी अकबर के साथ कर दिया।

(iii) गोंडवाना की विजय –गोंडवाना में उन दिनों रानी दुर्गावती का शासन था। वह एक योग्य तथा साहसी स्त्री थी। उनके पास 20 हजार घुड़सवार, 100 हाथी तथा काफी संख्या में पैदल सेनास थी। अकबर ने 1564 ई० में आसफ खां के नेतृत्व में सेना गोंडवाना पर आक्रमण करने के लिए भेजी। यद्यपि दुर्गावती ने शत्रुओं का वीरता से मुकाबला किया परन्तु अन्त में मुगलों की विजय हुई।

(iv)चितौड़ पर अधिकार –23 अक्टूबर, 1567 ई० को अकबर ने चितौड़ के दुर्ग की घेराबन्दी कर दी। राजा उदय सिंह राजपूत सरदारों के परामर्श पर किले की रक्षा का भार जयपाल राठौर के हाथों में छोड़कर स्वयं सपरिवार पहाड़ियों में सुरक्षित स्थान पर चला गया। 17 दिसम्बर, 1567 ई० को चित्तौड़ पर अकबर का अधिकार हो गया। कुछ समय पश्चात् राजपूतों ने चित्तौड़ को मुगलों से पुनः मुक्त करा लिया। 1576 ई० में राणा प्रताप तथा अकबर के बीच हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा गया जिसमें राणा बुरी तरह पराजित हुआ।

(v) रणथम्भौर तथा कालिंजर की विजय –अकबर ने 1569 ई० में रणथम्भौर के शासक सुर्जन राय हाडा तथा कालिंजर के शासक रामचन्द्र को हरा कर इन राज्यों को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

(vi)गुजरात की विजय –जुलाई, 1572 ई० को अकबर ने गुजरात की ओर प्रस्थान किया। 5 अक्टूबर, 1573 ई० में मुगलों ने मुजफ्फरशाह को पराजित करके गुजरात पर अधिकार कर लिया।

(vii) बिहार तथा बंगाल की विजय –अकबर ने मुनीम खां को 1574 ई० में बिहार पर विजय प्राप्त करने के लिए भेजा। उसने 1574 ई० में बिहार के कुछ प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था। परन्तु 1575 ई० में उसकी मृत्यु के पश्चात् टोडरमल तथा हुसैन कुकी खानेजहां को बिहार तथा बंगाल की ओर भेजा उन्होंने 1576 ई० में बिहार तथा बंगाल पर अधिकार कर लिया।

(5) उत्तर–पश्चिम भारत की विजय – 1583 ई० में अकबर के सौतेले भाई मिर्जा मुहम्मद हकीम की मृत्यु हो गई अतः उपयुक्त अक्सर देखकर अकबर ने काबुल को मुगल साम्राज्य में मिला लिया। इसके बाद 1595 ई० में कन्धार के सूबेदार मुजफ्फर हुसैन मिर्जा ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। 1586 ई० में अकबर ने कश्मीर के शासक युसुफ शाह तथा 1591 ई० में सिन्ध के शासक मिर्जा जानीबेग को हराकर इन प्रदेशों को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

(6) दक्षिण भारत की विजय – अकबर ने उत्तरी भारत को विजित करने के बाद दक्षिण भारत को जीतने का निर्णय लिया। 1595 ई० में उसने खानदेश, अहमदनगर, बीजापुर तथा गोलकुण्डा के शासकों की अधीनता स्वीकार करने के लिए सन्देश भेजे। खानदेश के शासक अली खां ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। परन्तु दक्षिण भारत

के अन्य शासकों ने ऐसा नहीं किया। अतः अकबर ने 1575 ई० में अहमदनगर की ओर सेना भेजी। अगस्त, 1600 ई० में मुगलों ने अहमदनगर के शासक बहादुर निजामशाह को बन्दी बनाकर ग्वालियर भेज दिया और अहमदनगर पर अधिकार कर लिया। 1601 ई० में मुगलों ने खानदेश पर विजय प्राप्त की।

साम्राज्य विस्तार – अकबर की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में खानदेश तथा अहमदनगर तक तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी से लेकर पश्चिम में अरब सागर तक फैला हुआ था। अकबर के साम्राज्य में 15 प्रान्त थे –

(1) दिल्ली, (2) आगरा, (3) लाहौर, (4) मुल्तान, (5) काबुल, (6) अजमेर, (7) अवध, (8) इलाहाबाद, (9) बंगाल, (10) मालवा, (11) अहमदाबाद, (12) खानदेश, (13) बरार, (14) अहमदनगर (15) गोंडवाना ।

9.4. विषय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण (Further Main Body of the Text):-

9.4.1 औरंगजेब की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य (1707 ई०)

औरंगजेब आलमगीर 21 जुलाई, 1658 ई० को दिल्ली की गद्दी पर बैठा। उसने लगभग 50 वर्ष (1658 ई. से 1707 ई.) तक शासन किया। उसके पिता का नाम शाहजहाँ था। गद्दी पर बैठने के पश्चात् उसने मुगल साम्राज्य का विस्तार सुदूर तक किया। हालांकि उसे उत्तराधिकार में एक विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ था। इसके बावजूद, उसने अपने पूर्वजों की साम्राज्यवादी नीति का पालन किया। उसकी महत्त्वपूर्ण विजयें इस प्रकार थीं –

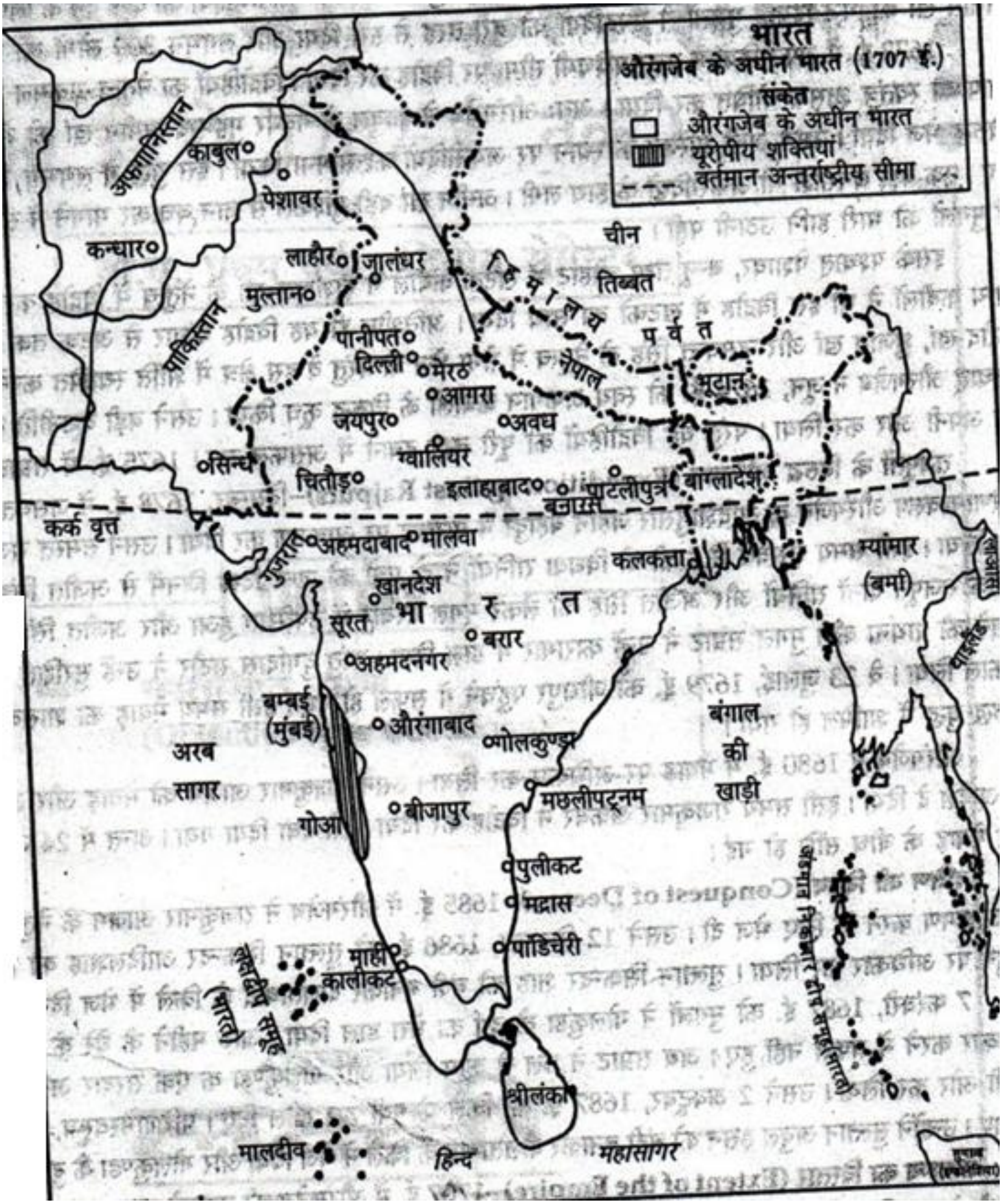
भारत
औरंगजेब के अधीन भारत (1707 ई.)
संकेत
औरंगजेब के अधीन भारत
यूरोपीय शक्तियां
वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सीमा
अफगानिस्तान
काबुल
पेशावर
कन्धार
लाहौर
जालंधर
मुल्तान
पाकिस्तान
चीन
तिब्बत
हिमालय पर्वत
पानीपत
दिल्ली
मेरठ
आगरा
नेपाल
भूटान
जयपुर
अवध
ग्वालियर
सिन्ध
चितौड़
इलाहाबाद
बनारस
पाटलीपुत्र
बांग्लादेश
कर्क वृत्त
गुजरात
अहमदाबाद
मालवा
कलकत्ता
म्यांमार
(बर्मा)
खानदेश
भारत
सूरत
बरार
अहमदनगर
बम्बई
(मुंबई)
औरंगाबाद
गोलकुण्डा
बंगाल की खाड़ी
अरब सागर
मछलीपट्टनम
गोआ
बीजापुर
पुलीकट
मद्रास
पाडिचेरी
माही
कालीकट
लक्षद्वीप समूह (भारत)
अंडमान निकोबार द्वीप समूह (भारत)
श्रीलंका
मालदीव
हिन्द महासागर

- उत्तर–पूर्वी सीमांत प्रदेशों की विजय – गद्दी पर बैठते ही औरंगजेब ने अपने साम्राज्य का विस्तार करने का निश्चय किया। उसने जून, 1660 ई. को मीर जुमला को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया और उसे कूच बिहार में शान्ति व्यवस्था स्थापित करने का आदेश दिया। उसने (मीर जुमला ने) एक विशाल सेना सहित कूच बिहार पर आक्रमण कर दिया। वहाँ का शासक भयभीत होकर भाग गया। मीर जुमला ने कूच बिहार को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

  कूच बिहार की विजय के पश्चात् मीर जुमला ने असम पर आक्रमण कर दिया। उसने शत्रु के कई दुर्गों पर अधिकार कर लिया। इसके उपरांत उसने आहोम राज्य की राजधानी गढ़गाओं पर आक्रमण कर दिया। आहोम शासक जयध्वज ने मुगलों से संधि कर ली। अहोम राजा ने धनराशि, कुछ प्रदेश और अपनी एक पुत्री मुगल सम्राट के पास भेज दी। 13 मार्च, 1663 ई. को मीर जुमला की मृत्यु हो गई। परिणामस्वरूप नए शासक चक्रध्वज ने अपने छीने हुए प्रदेशों पर पुनः अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् मुगल सम्राट ने आहोम राज्य पर अधिकार करने के लिए कई अभियान भेजे परंतु वे सफल नहीं हुए।

  मीर जुमला की मृत्यु के पश्चात् औरंगजेब ने शाहस्ता खां को बंगाल का गवर्नर किया। नये गवर्नर ने चटगांव पर आक्रमण करने के लिए अपने पुत्र उमेद खां और इब्न हुसैन के नेतृत्व में एक शक्तिशाली सेना भेज दी। उन्होंने समुद्री लुटेरों के साथ–साथ चटगांव के शासक को हराकर 1666 ई. में उसके राज्य पर अधिकार कर लिया।

- उत्तर–पश्चिम सीमा के कबीलों का दमन – औरंगजेब के समय सर्वप्रथम 1667 ई० में यूसफजाइयों ने भागू के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। उन्होंने हजारा जिले में मुगलों की सैनिक चौकियों पर अधिकार कर लिया और किसानों से भूमिकर लेना आरंभ कर दिया। अतः मुगल सम्राट ने यूसफजाइयों को दण्ड देने के लिए शमशेर खां और मुहम्मद अमीन खां को भेज दिया। मुगलों ने उपद्रवियों को बुरी तरह से हरा दिया और लगभग 300 लोगों को बंदी बना दिया।

  1672 ई. में अफरीदियों ने उत्तर–पश्चिमी सीमा पर विद्रोह कर दिया। विद्रोहियों का नेतृत्व अकमल खां ने किया। उसने अपने आप को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। अतः औरंगजेब ने काबुल के गवर्नर मुहम्मद अमीन खां को सेना सहित अफरीदियों के विरुद्ध भेज दिया। उसने अली मस्जिद के स्थान पर अफरीदियों का सामना किया। इस युद्ध में लगभग 10000 मुगल सैनिक मारे गए। एक बड़ी धनराशि भी अफरीदियों के हाथ लगी। अमीन खां बड़ी मुश्किल से जान बचाकर भागने में सफल हुआ। इस अभियान में मुगलों को भारी हानि उठानी पड़ी।

इसके पश्चात् पेशावर, बन्नू तथा कोहाट में खटक कबीले ने खुशहाल खां के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। अफरीदियों और अन्य कबीलों ने भी इस विद्रोह में खटकों का साथ दिया। अतिशीघ्र ही यह विद्रोह कंधार से अटक तक फैल गया। औरंगजेब ने फरीद खां, शुजात खां और जसवंत सिंह के नेतृत्व में सेना भेज दी परंतु वे इस क्षेत्र में शांति स्थापित करने में असफल रहे। इसके पश्चात् औरंगजेब ने जून, 1674 ई. को स्वयं अफगान कबीलों के विरुद्ध कूच किया। उसने बड़ी कूटनीति में कुछ अफगान सरदारों को अपनी ओर कर लिया। परंतु वह विद्रोहियों को पूरी तरह दबाने में असफल रहा। 1675 ई. में सम्राट वापस लौट गया।

- राजपूतों के विरुद्ध अभियान –दिसम्बर, 1678 ई. में जसवंत सिंह की मृत्यु हो गई। परिणामस्वरूप औरंगजेब के आदेशानुसार जहान बहादुर ने मारवाड़ पर आक्रमण कर दिया। उसने समस्त राजपूत राज्य पर अधिकार कर लिया। इसी समय जसवंत सिंह की दो विधवा रानियों ने दो पुत्रों को जन्म दिया जिनमें से अजीत सिंह जीवित रहा। दुर्गादास नामक राजपूत दोनों रानियों और अजीत सिंह को लेकर मुगल दरबार में उपस्थित हुआ और अजीत सिंह को मारवाड़ का शासक बनाने की प्रार्थना की। मुगल सम्राट ने उन्हें कारागार में डाल दिया। परंतु दुर्गादास राठौर ने उन्हें सुरक्षित मुगल कार्यभार से बाहर निकाल लिया। वे 23 जुलाई, 1679 ई. को जोधपुर पहुंचने में सफल हो गए। इसी समय मेवाड़ का शासक जयसिंह भी मुगलों के विरुद्ध युद्ध में शामिल हो गया। औरंगजेब ने 1680 ई. में मेवाड़ पर अधिकार कर लिया। उसने राजकुमार आजम को मेवाड़ और अकबर को मारवाड़ जाने का आदेश दे दिया। इसी समय राजकुमार अकबर ने विद्रोह कर दिया जिसे दबा दिया गया। अन्त में 24 जून, 1681 ई. को मुगलों और मेवाड़ के बीच संधि हो गई।

औरंगजेब के अधीन मुगल साम्राज्य का सबसे अधिक विस्तार हुआ तथा इतिहास के आरम्भ से अंग्रेजों की शक्ति के उत्थान तक सबसे विशाल राज्य का निर्माण हुआ। औरंगजेब को अपने पिता शाहजहां से एक विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ था जिसे उसने अपनी विजयों द्वारा और भी अधिक विस्तृत कर दिया।

डॉ० गोपाल प्रसाद, डॉ० जयपाल सिंह, डॉ० दीपिका यादव – भारत का इतिहास (1200 ई० से 1707 ई०) PP. 282–286.

(i) उत्तरी भारत के अभियान – औरंगजेब ने 1667 ई० से 1675 ई० के दौरान उत्तर–पश्चिमी सीमा प्रदेशों में बसे युसफजई, अफरीदों तथा खटक नामक उपद्रवी कबीलों की शक्ति का दमन करने के लिए कई अभियान भेजे। अन्त में वह इन कबीलों की शक्ति को दबाने में सफल रहा। परन्तु इससे साम्राज्य को भारी जन व धन की हानि उठानी पड़ी। कबीलों से हुई पराजय ने मुगलों की सैनिक दुर्बलता को स्पष्ट कर दिया तथा शाही सम्मान को आघात पहुंचाया (औरंगजेब की उत्तर–पश्चिमी सीमा सम्बन्धी नीति का विस्तारपूर्वक वर्णन अध्याय 7 में देखिए)

जैसा कि पिछले भाग में विस्तारपूर्वक बताया गया है, औरंगजेब को 1678 ई० के पश्चात् मेवाड़ तथा मारवाड़ के राजपूत राज्यों के विरुद्ध कई अभियान भेजने पड़े। मेवाड़ ने तो 1681 ई० में सन्धि करके मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली परन्तु मारवाड़ ने दुर्गादास राठौर तथा अजीत सिंह के नेतृत्व में कई वर्षों तक युद्ध जारी रखा और अन्त में स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली।

(ii) दक्षिणी भारत के युद्ध – 1682 ई० से 1707 ई० तक औरंगजेब दक्षिणी भारत में लम्बे एवं विनाशकारी युद्धों में उलझा रहा। सर्वप्रथम उसने बीजापुर तथा गोलकुण्डा के शिया राज्यों को विजय करने के प्रयत्न किए। आरम्भिक असफल प्रयत्नों के पश्चात् उसने अप्रैल 1685 ई० में बीजापुर के विरुद्ध अभियान भेजा तथा शीघ्र ही वह स्वयं भारी सेनास सहित शत्रुओं के विरुद्ध बढ़ा। लगभग 17 मास तक बीजापुर की घेराबन्दी जारी रही। अन्ततः 12 सितम्बर 1686 ई० को मुगलों को दुर्ग जीतने में सफलता प्राप्त हुई। बीजापुर के सुल्तान सिकन्दर आदिलशाह को बन्दी बना कर दौलताबाद के दुर्ग में भेज दिया गया।

साम्राज्य का विस्तार – 1707 ई० में अपनी मृत्यु से पहले औरंगजेब ने विशाल साम्राज्य की स्थापना कर ली थी जो उत्तर में हिमालय पर्वत से लेकर दक्षिण में कावेरी नदी तक तथा पूर्व में बंगाल से लेकर उत्तर–पश्चिम में हिन्दूकुश पर्वत (कन्धार को छोड़ कर) तथा पश्चिमी में अरब सागर तक फैला हुआ था। परन्तु हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि औरंगजेब के शासन–काल के अन्तिम वर्षों में जाटों, राजपूतों तथा मराठों ने विद्रोह कर दिये थे और कुछ समय के पश्चात् उन्होंने अपने–अपने स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये थे। औरंगजेब के विशाल साम्राज्य में 21 प्रान्त थेः दिल्ली, आगरा, काबुल, काश्मीर, लाहौर, मुलतान, अजमेर, अवध, इलाहाबाद, बिहार, बंगाल, सिन्ध, मालवा, अहमदाबाद, उड़ीसा, खानदेश, अहमदनगर, बरार, बीदर, बीजापुर तथा गोलकुण्डा।

9.4.2 औरंगजेब का चरित्र तथा व्यक्तित्व

औरंगजेब के चरित्र तथा व्यक्तित्व के सम्बन्ध में इतिहासकारों ने विरोध मत प्रस्तुत किये हैं। कुछ मुस्लिम लेखकों ने उसके उच्च चरित्र की बहुत प्रशंसा की है और उसे एक आदर्श मुस्लिम शासक माना है। लेनपूल के कथनानुसार, "औरंगजेब अपने पिता की तुलना में हर प्रकार से श्रेष्ठ था – वह अधिक बुद्धिमान मनुष्य, अधिक न्यायप्रिय राजा तथा अधिक दयालु एवं परोपकारी शासक था।"[1] दूसरी ओर कुछ लेखकों ने औरंगजेब को एक क्रूर, कपटी तथा कट्टर मुस्लिम सम्राट बताया है जो शासक तथा राजनीतिज्ञ के रूप में पूर्णतया असफल रहा। डॉ० वी० ए० स्मिथ के विचारानुसार, औरंगजेब के इतिहास में कोई भी ऐसी बात नहीं मिलती जो उसे आगामी पीढ़ियों द्वारा महान् शासक कहलाने के योग्य बनाती हो।"[2] वास्तव में औरंगजेब के चरित्र में कुछ

महान गुण थे जो अन्य शासकों में नहीं थे। इसके साथ–साथ कई अवगुण भी थे। जिसके कारण वह एक सफल शासक नहीं बन पाया।

1. S. Lane-Poole op. Cit., P. 86

2. Dr. V.A. Smith, Oxford University of India, P. 448.

3. Jadunath Sarkar, The Cambridge Histroy of India, Vol. IV, P. 317

4. Dr. A.L. Srivastava, The Mughal Empire, P. 361.

9.4.3 औरंगजेब के चरित्र व व्यक्तित्व के गुण या विशेषताएँ –

औरंगजेब के चरित्र व व्यक्तित्व के गुण या विशेषताएं निम्नलिखित है जो इस प्रकार से है –

(i) बलवान तथा साहसी – औरंगजेब छोटे कद का मनुष्य था। उसका रंग गंदमी था और नाक बड़ी थी। वह शारीरिक रूप में बहुत बलवान था। बाल्यावस्था में ही उसने घुड़सवारी करने, तलवार चलाने तथा निशाना लगाने में निपुणता प्राप्त कर ली थी। उसमें असाधारण साहस एवं वीरता पाई जाती थी।[3] पन्द्रह वर्ष की आयु में उसने एक बिगड़े हुए हाथी का अकेले ही सफलतापूर्वक विरोध करके अपनी शूरवीरता का प्रमाण दिया। वह अपने सब भाइयों से अधिक वीर एवं साहसी था।

(ii) सादा तथा उच्च आचरण वाला – औरंगज़ेब सादे स्वभाव तथा उच्च आचरण वाला व्यक्ति था। वह अपने पूर्वाधिकारियों की तरह भोग–विलास का जीवन व्यतीत नहीं करता था। वह कुरान के नियमों के अनुसार चलता था और अपने चरित्र को शुद्ध रखने का प्रयत्न करता था। उसका भोजन बड़ा सादा होता था और वह मदिरा तथा अन्य नशीली वस्तुओं से घृणा करता था। वह बहुमूल्य भड़कीले वस्त्र भी नहीं पहनता था। उसकी पोशाक साधारण होती थी। वह अन्य समकालीन राजाओं की तरह नाच–गाने का शौक नहीं रखता था। उसने हरम में अत्यधिक संख्या में स्त्रियां भी नहीं रखी हुई थीं। उसकी धर्मपत्नियों की संख्या चार से अधिक नहीं थी, इस बात में भी उसने कुरान के नियम की पालना की। कहा जाता है वह अपने निर्वाह के लिए टोपियां सी कर तथा कुरान की प्रतियां लिखकर धन कमाता था और शाही कोष से अपने लिए खर्च करना पाप समझता था।

(iii) परिश्रमी एवं अनुशासन–प्रिय – औरंगज़ेब एक अत्यन्त परिश्रमी, अनुशासन–प्रिय तथा अथक कार्यशक्ति वाला व्यक्ति था।[4] उसका यह विश्वास था कि सम्राट को कभी सुखप्रिय एवं आलसी नहीं होना चाहिए। अतः वह

प्रातःकाल से लेकर सांयकाल तक राज्य के कार्यों में लगा रहता था। वृद्धावस्था में भी इतना अधिक कार्य करता था कि लोग हैरान रह जाते थे उसकी कार्यशक्ति को देखकर।

(iv) कट्टर सुन्नी मुसलमान – औरंगज़ेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसका इस्लाम तथा उसके नियमों पर दृढ़ विश्वास था। वह प्रतिदिन पाँच बार नमाज प्ड़ता था। युद्ध के समय पर भी कुछ समय निकाल कर नमाज पढ़ता था। नियम के रोजे (व्रत) रखता था।

(v) उच्चकोटि का विद्वान – औरंगजेब अरबी और फारसी भाषाओं का अच्छा ज्ञाता था। उनके पत्रों से प्रमाण मिलता है कि वह फारसी पद्य में निपुण था। तुर्की व हिन्दी भाषा का भी अच्छा ज्ञान था।

9.4.4 औरंगजेब के चरित्र व व्यक्तित्व के दोष (अवगुण) –

औरंगजेब के चरित्र व व्यक्तित्व के निम्नलिखित अवगुण थे जो इस प्रकार से है –

(i) पारिवारिक स्नेह की कमी – औरंगजेब के व्यापार से पता चलता है कि उसके अन्दर पारिवारिक स्नेह का अभाव था उसने अपने रिश्तेदार, पिता, भाईयों, तथा पुत्रों के साथ हमेशा क्रूर व्यवहार रखता थां अपने पिता शाहजहां को राजसिंहासन से उठाकर बन्दीग्रह में अपने भाईयो (दारा तथा मुराद) और अपने तीनों पुत्रों सभी को बन्दी ग्रह में ही रखा।

(ii) सहनशीलता का अभाव – औरंगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। वह गैर –मुसलमानो व हिन्दुओं को घृणा की दृष्टि से देखता था। जजिया कर लगाना व हिन्दु मन्दिरों को तोड़ना उसकी असहनशीलता के प्रमुख उदाहरण हैं।

(iii) सन्देहशील (शक्की स्वभाव) – औरंगजेब ने अपने पुत्रों, संबंधियों तथा मंत्रियों पर विश्वास नहीं करता था और उन्हें संदेह की दृष्टि से देखता था। उसने साम्राज्य के विभिन्न भागों में गुप्तचर छोड़ रखे थे। ताकि मंत्रियों व अन्य कर्मचारियों की समय–समय पर सूचना मिल सके।

(iv) ललित कलाओं में रुचि की कमी – औरंगजेब की भवन निर्माण कला तथा संगीत में कोई रूचि नहीं थी। पूर्व अधिकारियों की तरह उसने कोई सुन्दर भवन का निर्माण न करवाया। संगीत तथा चित्रकला के विकास के लिए कोई कार्य नहीं किया। इसके विपरीत, संगीत तथा चित्रकारों को दरबार से निकाल दिया।

ए०सी० अरोड़ा – भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल PP 141–146.

9.5 प्रगति समीक्षा (Check your progress) :-

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

I. मुगल शासक अकबर की मृत्यु .... ई. में हुई थी।

II. बाबर के आक्रमण के समय 1526 ई. में भारत की राजनैतिक स्थिति .... थी।

III. 16वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत छोटे–छोटे राज्यों का एक .... मात्र था।

IV. औरंगजेब की मृत्यु .... ई. में हुई थी।

V. मुगलों ने खान देश पर विजय प्राप्त की .... ई. में।

VI. अकबर का राज्याभिषेक .... ई. में .... नामक स्थान पर हुआ था।

VII. औरंगजेब ने .... ई. में मेवाड़ पर अधिकार किया था।

VIII. औरंगजेब की मृत्यु के समय उसके साम्राज्य .... प्रान्त थे।

IX. मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब आलमगीर .... ई. को दिल्ली की गद्दी पर बैठा उसने लगभग .... वर्ष तक शासन किया।

X. अकबर के साम्राज्य में प्रान्तों की संख्या .... थी।

9.6 सारांश (Summary):-

- बाबर के समय (1526 ई०) में भारत की राजनीतिक स्थिति काफी कमजोर थी। अनेकों छोटे–2 राज्य थे।
- बाबर के आक्रमण के समय भारत में उत्तर भारत व दक्षिण भारत में बंटा हुआ था।
- उत्तर भारत के राज्य – दिल्ली, बंगाल, पंजाब, मालवा, गुजरात, मेवाड़, खानदेश, बिहार तथा जौनपुर, उड़ीसा, कश्मीर व सिंध।
- दक्षिण भारत के राज्य – बहमनी, विजयनगर, पुर्तगाली।
- डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार, "16वीं शदी के प्रारंभ में भारत छोटे–2 स्वतंत्र राज्यों का एक जमघट मात्र था जो किसी शक्तिशाली एवं दृढ़ निश्चयी आक्रमणकारी का आसानी से शिकार बन सकता था।"
- विश्व के महान् सम्राटों में अकबर की गणना की जाती है। अकबर के शासन काल में भारत एक 'राष्ट्र' बना इसलिए अकबर को 'राष्ट्रीय सम्राट' की पदवी दी जाती है।
- 14 जनवरी 1556 ई0 को पिता हुमायूँ की अचानक मृत्यु के कारण अकबर का राज्याभिषेक 14 फरवरी 1556 ई0 में कलानौर नामक स्थान पर हुआ।

- अकबर के साम्राज्य में प्रान्तों की संख्या 15 थी। 1. दिल्ली 2. आगरा 3. लाहौर 4. मुल्तान 5. काबुल 6. अजमेर 7. अवध 8. हलाहाबाद 9. बिहार 10. बंगाल 11. मालवा 12. अहमदाबाद 13. खानदेश 14. बरार 15. अहमदनगर।
- मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब आलमगीर 21 जुलाई, 1658 ई० को दिल्ली की गद्दी पर बैठा उसने लगभग 50 वर्ष (1658–1701 ई०) तक शासन किया।
- औरंगजेब ने 1680 ई० में मेवाड़ पर अधिकार किया।
- 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु हुई तब उसके साम्राज्य 21 प्रान्त थे। उत्तर में हिमालय पर्वत से लेकर दक्षिण में कावेरी नदी तक और पूर्व में बंगाल से लेकर पश्चिम में अरब सागर तक फैला हुआ था।

9.7 सूचक शब्द (Key-Words) :-

शब्द	अर्थ
○ शंकालु –	शंकी
○ निर्दयी –	दयाहीन
○ प्रतिद्वन्द्विता –	स्पर्धा/कम्पीटिशन
○ विद्यटन –	बटंवारा

9.8 स्वयं मूल्यांकन के लिए प्रश्न (Self Assessment Test)(SAT) :-

❖ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer type Question)s :–

प्र.1 भारत के रेखांकित मानचित्र पर अकबर की मृत्यु के समय (1605) में मुगल साम्राज्य दर्शाइये। उस पर व्याख्यात्मक टिप्पणी भी लिखें।

KUK. 2004, 2006, 2007, 2009, 2012, 2015, MDU 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2011, 2013, 2015 CDLU, SIRSA

प्र.2 भारत के रेखांकित मानचित्र पर 1526 ई० के भारत की राजनीतिक अवस्था दिखाईए तथा एक व्याख्यात्मक टिप्पणी भी लिखिए। MDU. 2015 KUK 2012

प्र.3 भारत के रेखा मानचित्र पर (1605 ई०) के मुगल साम्राज्य को दर्शाए तथा संक्षिप्त व्याख्या भी कीजिए। KUK. 2005

प्र.4 भारत के मानचित्र पर बाबर के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक अवस्था दिखाइए और नोट लिखिए। MDU. 2006, KUK 2005, KUK 2004

प्र.5 भारत के रेखांकित मानचित्र पर मुगल साम्राज्य औरंगजेब की मृत्यु के समय साम्राज्य के विस्तार को अंकित कीजिए। युक्त संगत टिप्पणी भी लिखिए।

9.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to check your Progress):-

(i) 1605 (ii) दयनीय/चितंन का विषय (iii) जमघट (iv) 1707

(v) 1601 (vi) 14 फरवरी, 1556 ई. में, कलानौर

(vii) 1680 (viii) 21 (ix) 21 जुलाई 1658, 50 (x) 15

9.10 सहायक एवं संदर्भ ग्रंथ सूची (References/Suggested Reading)

- मध्यकालीन भारत खंड 2 – डॉ० हरिशचन्द्र वर्मा , हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, नई दिल्ली, 1993।
- अविनाश चन्द्र अरोड़ा (ए०सी० अरोड़ा) –भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल – प्रदीप पब्लिकेशन, अपोजिट शीतला माता मन्दिर, जालन्धर, 1998
- बी० एल० ग्रोवर, अलका महता, यशपाल, – आधुनिक भारत का इतिहास :एक नवीन मूल्यांकन,एस0चंद, नई दिल्ली, 2015।
- J.F. Richards – The Mughal Empire
- डॉ० गोपाल प्रसाद, डॉ० जयपाल सिंह, डॉ0 दीपिका यादव – भारत का इतिहास, लक्ष्मी पब्लिशिंग हाउस, रोहतक,2018।
- डॉ० विनय कुमार सिंह – यूनीक सामान्य अध्ययन
- रामलखन शुक्लास – आधुनिक भारत
- स्पेक्ट्रम (Spectrum) पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन
- केटलबी – आधुनिक भारत का इतिहास
- मध्यकालीन भारत (1000 से 1761 ई0) – विद्याधर महाजन, एस0 चंद, नई दिल्ली।

B.A HISTORY PART- IInd YEAR SEMESTER-IIIrd	
COURSE CODE: 201 LESSON NO. 010	AUTOR – MOHAN SINGH BALODA
1856 तक ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार (Expansion of British up to 1856)	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

10.1 अधिगम उद्‌देश्य (Learning Objective)

10.2 परिचय (Introduction)

10.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

10.3.1 ब्रिटिश शक्ति–विस्तार के महत्त्वपूर्ण कारक (Important Factors of Expansion of British Power)

10.3.2 क्लाइव का द्वैध शासन प्रणाली (Dual system of Government of Clive)

10.3.3 द्वैध शासन प्रणाली : कारण व परिणाम (Dual System of Government : Causes & Effect)

10.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

10.4.1 वारेन हेस्टिंग्स व लॉर्ड कार्नवालिस के सुधार (Reforms of Warren Hustings & Lord is Cornawallis)

10.4.2 वैल्जली की सहायक संधि (Subsidiary Alliance System of Wallesley)

10.4.3 डलहौजी का व्यपगत/हड़प सिद्धांत (Doctrine of Lapse of Dalhousie)

10.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

10.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

10.7 संकेत–सूचक (Key-words)

10.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

10.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

10.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

10.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- भारत में ब्रिटिश शक्ति के विस्तार पर चर्चा कर सकेंगे।
- ब्रिटिश शक्ति के विस्तार के महत्त्वपूर्ण कारकों को शिक्षार्थी बता सकेंगे।
- भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के लिए उत्तरदायी क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स, कार्नवालिस, वेलेजली व डलहौजी के बारे में विद्यार्थी बता सकेंगे।
- क्लाइव के द्वैध शासन की नीति का वर्णन कर सकेंगे।
- लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि पर विद्यार्थी टिप्पणी कर सकेंगे।
- विद्यार्थी डलहौजी के साम्राज्य–निर्माता के रूप में किये गये कार्यों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

10.2 परिचय (Introduction) :-

1599 ई. में पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने के उद्देश्य को लेकर कुछ व्यापारियों ने ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की थी। 1600 ई. में इस कंपनी का भारत में आगमन हुआ। प्रारंभ में इस कंपनी को महारानी एलिजाबेथ प्रथम द्वारा 15 वर्ष के लिए पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने का एकाधिकार पत्र दिया गया था। बाद में 1609 में ब्रिटिश सम्राट जेम्स प्रथम ने कंपनी को अनिश्चितकालीन व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया। इस प्रकार ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी शुरूआती दिनों में पूर्ण रूप से भारत के साथ लाभकारी व्यापार पर ही केंद्रित थी। वह पूर्ण रूप से एक व्यापारिक कंपनी थी। लेकिन आगे चलकर भारत की कमजोर राजनीतिक स्थिति व अंग्रेजी कंपनी की अत्यधिक महत्त्वाकांक्षा ने उसे व्यापार का विस्तार करने के अतिरिक्त राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना करने के

लिए प्रेरित किया। भारतीय राजाओं की कटुता व उनकी आपसी शत्रुता तथा शासन में व्याप्त अराजकता का गलत फायदा उठाकर कंपनी भारत में ब्रिटिश शक्ति का विस्तार करने लगी। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के लिए भारतीय शासकों में कूटनीतिक षड्यंत्रों के द्वारा फूट डालने आरंभ कर दिया। इसका ज्वलंत उदाहरण हमें 1757 के प्लासी के युद्ध में देखने को मिलता है। इसके बाद 1764 के बक्सर के युद्ध के द्वारा अंग्रेजों ने बिहार, बंगाल व उड़ीसा की दीवानी अधिकार प्राप्त कर लिया। बंगाल पर अधिकार के बाद अंग्रेज गवर्नरों ने छल–बल के द्वारा मुगल, मराठे, सिक्ख व अन्य भारतीय देशी राज्यों के शासकों को अपना अधीनस्थ बनाना आरंभ कर दिया। इनमें वेलेजली की सहायक संधि व डलहौजी की हड़प नीति सर्वप्रमुख है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि क्लाइव ने जिस ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डाली उसे वारेन हेस्टिंग्स और कार्नवालिस ने अपने सुधारों के द्वारा स्थायी रूप देने का प्रयास किया। कालांतर में इसे वृहद विस्तार का रूप वेलेजली व डलहौजी ने दिया।

10.3. अध्याय के मुख्य बिंदु (Main body of the Text)

10.3.1 सहायक संधि प्रणाली (Battle of Plassey)

भारत में ब्रिटिश शक्ति का विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण पर इतिहासकारों के वर्ग का अलग–अलग मत है। कुछ इतिहासकार यह मानते हैं कि यह संयोगवश व परिस्थितिजन्य था। जबकि कुछ इतिहासकार यह मानते हैं कि यह अंग्रेजों की एक सुनियोजित रणनीति एवं योजना के तहत धीरे–धीरे साल–दर–साल किये गए कार्य का परिणाम था।

जॉन सीले के नेतृत्व वाले इतिहासकार ब्रिटिश की भारत में साम्राज्य स्थापना व मज़बूती से इसके विस्तार को एक संयोगवश उत्पन्न घटना मानते हैं। उनके अनुसार ब्रिटिश भारत में केवल लाभकारी व्यापार के उद्देश्य से आए थे। भारत के ऊपर अपने प्रभुत्व की स्थापना करना, साम्राज्य–विस्तार व इसको उपनिवेश बनाकर अपने देश की तरक्की में बलात् इसका उपयोग करना उनका कोई उद्देश्य नहीं था।

इतिहासकार ज्यूडिश ब्राउन भी यह मानते हैं कि अलग–अलग समय पर भारत के अलग–अलग हिस्सों में विस्तार के लिए कंपनी द्वारा एक बड़े क्षेत्र के अधिग्रहण हेतु मंतव्य एवं उद्देश्य के सटीक एवं व्यापक कारण बेहद अस्पष्ट हैं। ब्रिटिश शक्ति का विस्तार संयोगवश या उद्देश्यपूर्ण जो भी हो लेकिन यह स्पष्ट है कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना चरणबद्ध तरीके से हुई थी। इसके पीछे बहुत से कारण थे। कंपनी जल्दी–से–जल्दी लाभ कमाना चाहती थी। कंपनी के प्रशासकों की वैयक्तिक महत्वाकांक्षाएँ, लालच इस उद्देश्य में आग में घी की तरह कार्य किया। यूरोप में राजनीतिक घटनाक्रमों के प्रभाव तथा भारत की तात्कालिक परिस्थितियां ने भी कंपनी को

साम्राज्य–विस्तार के लिए प्रेरित किया। इनमें अपनी नीतियों व कार्यों के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अंग्रेज गवर्नरों में क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स, कार्नवालिस, वेलेजली व डलहौजी की भूमिका महत्त्चवूर्ण रही।

इन अंग्रेज गवर्नरों ने तत्कालीन भारतीय परिस्थितियों का लाभ उठाकर भारत में बड़ी चतुराई के साथ ब्रिटिश शक्ति का विस्तार करने में सफल होते गये। भारत में उस समय कोई ऐसी मजबूत केंद्रीय शक्ति नही थी जो इसका मजबूती से विरोध कर सके। इस कारण उस समय की राजनीतिक अस्थिरता इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसीलिए अंग्रेज गवर्नरों द्वारा भारत में शक्ति–विस्तार के संदर्भ में कहा जाता है कि "क्लाइव ने भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव डाली, वारेन हेस्टिंग्स ने उस नींव को मजबूत किया, कार्नवालिस ने इमारत खड़ी करनी प्रारंभ की, वेलेजली ने उस इमारत को पूरा किया और बाद के गवर्नर जनरलों ने उसे अंतिम शक्ल प्रदान की।"

अंग्रेजों के आगमन व इसके भारत पर 150 से भी अधिक वर्षों तक राज करने की संपूर्ण घटनाक्रम पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि उन्होंने भारतीय राजाओं, नवाबों व शासकों के साथ विजय अथवा कूटनीति के उद्देश्य से कई छोटे–बड़े युद्ध किये और 1857 तक अपनी कूटनीति, षड्यंत्रों, रणनीति व युद्धों से संपूर्ण भारत पर अधिकार कर लिया।

निश्चित रूप से अंग्रेजों की स्वयं की साहसपूर्ण योजना का विस्तार में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा, किंतु इन सबसे बढ़कर इसके पीछे एक महत्त्वपूर्ण कारक यह भी था कि उस समय का भारतीय समाज विभिन्न वर्गों, जातियों व संप्रदायों में विभक्त था। इस कारण उनकी वफादारी केवल अपनी जाति एवं क्षेत्र तक सीमित थी। उनकी इस भावना ने उन्हें अंग्रेजों के विरूद्ध एकजुट होने नहीं दिया। इस प्रकार एक–दो नहीं बल्कि बहुत से ऐसे महत्त्वपूर्ण कारक रहे जिनके कारण भारत में ब्रिटिश शक्ति का विस्तार हुआ। इनमें तीन प्रमुख नीतियाँ – क्लाइव की द्वैध शासन की नीति, वेलेजली की सहायक संधि की नीति व डलहौजी की व्यपगत सिद्धांत की नीति विशेष स्थान रखती हैं।

10.3.2 क्लाइव का द्वैध शासन प्रणाली (Dual System of Government of Clive)

23 जून, 1757 ई. को बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला व अंग्रेज गवर्नर क्लाइव के बीच प्लासी का युद्ध हुआ था। इस युद्ध में क्लाइव ने षडयंत्र व कूटनीति के द्वारा नवाब के सेनापति को अपनी ओर मिला लिया। क्लाइव ने उसे नवाब बनाने का लोभ दिया था। इस कारण धोखेबाज सेनापति मीरजाफर युद्ध में उदासीन रहा। देशभक्त मीरमदान व मोहनलाल मारे गए और क्लाइव मामूली झड़प के बाद ही युद्ध को जीत लिया। इस प्रकार बंगाल मीर जाफर की महत्त्वाकांक्षा के कारण अराजकता की ओर अग्रसर हो गया। प्लासी के युद्ध का परिणाम बंगाल विजय

के रूप में सामने आया। लॉर्ड क्लाइव ने आंतरिक संघर्ष का लाभ उठाकर कूटनीतिक षड्यंत्रों से बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को युद्ध में परास्त कर दिया। इस युद्ध के द्वारा बंगाल में और कालांतर में संपूर्ण भारत में दासता का वह दौर आरंभ हुआ जो लगभग 150 से 200 वर्षों तक चला। जिसके अंतर्गत ब्रिटिश शक्ति की स्थापना, उसका विस्तार व सुदृढ़ीकरण योजनाबद्ध तरीके से नीति बनाकर अंग्रेज करते रहे। प्लासी के युद्ध में भारत पर प्रभुत्व स्थाप9ना को लेकर जो कमी रह गयी थी उसे अंग्रेजों ने बक्सर के युद्ध में पूरा किया था। बक्सर का युद्ध 22 अक्टूबर, 1764 ई. को लड़ा गया था। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो ने किया था। बक्सर के युद्ध में अंग्रेजी सेना ने मुगल शासक शाह आलम द्वितीय, बंगाल का नवाब मीर कासिम व अवध का नवाब शुजाउद्दौला की संयुक्त सेना को परास्त कर दिया था। इस प्रकार इस युद्ध के द्वारा अंग्रेज अंतिम रूप से बंगाल में एक मजबूत शक्ति के रूप में स्थापित हो गये थे और बाद में पूरे भारत में अपना विस्तार कर लिया। बक्सर के युद्ध के बाद 12 अगस्त, 1765 ई. के इलाहाबाद की संधि के द्वारा अंग्रेजों को बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हो गई। कालांतर में बंगाल के नवाब नजमुद्दौला से अंग्रेजों को बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी व निजामत अर्थात् सूबेदारी भी प्राप्त हो गई।

भूमिकर वसूल करना व भूमिकर संबंधी मुकदमों का निर्णय करना दीवानी अधिकार के अंतर्गत आता था। इन अधिकारों को अंग्रेजों ने अपने पास रखा था। जबकि सूबेदारी/निजामत का अभिप्राय आंतरिक सुरक्षा, शांति तथा सुव्यवस्था, न्याय–व्यवस्था व फौजदारी मुकदमों कर निर्णय करना आदि होता था। अंग्रेज गवर्नर क्लाइव ने बड़ी चतुराई के साथ समस्त धन–संपति के मामलों को अपने अधिकार में कर रखा था। दीवान कार्यों के लिए अर्थात् भूमिकर वसूलने के लिए कंपनी ने बंगाल में रजा खाँ, बिहार में शिताबराय तथा उड़ीसा में रायदुर्लभ को नियुक्त किया था। इस प्रकार कंपनी दीवानी अधिकार प्राप्त करके अपनी आर्थिक ताकत को बढ़ा रही थी। इस दौरान दीवानी अधिकार को छोड़कर सारी व्यवस्थाएँ नवाब के कर्मचारी पहले की तरह कर रहे थे। अर्थात् आंतरिक शांति, न्याय–व्यवस्था व अन्य फौजदारी मामले सभी नवाब कर्मचारियों के माध्यम से कर रहे थे। राज्य में कोई भी व्यवस्था गड़बड़ हो तो उसकी जिम्मेदारी नवाब की होती थी। इस प्रकार क्लाइव ने बंगाल में एक ही समय में दो प्रकार की शासन व्यवस्थाएँ कायम कर रखी थी। जिसमें अधिकार एवं उत्तरदायित्व दोनों को अलग कर दिया था। एक तरफ अंग्रेज थे जिनके पास अधिकार तो था परंतु कोई दायित्व नहीं था, जबकि दूसरी ओर बंगाल का नवाब था जिसके दायित्व तो थे किंतु अधिकार नहीं था। अतः बंगाल के क्लाइव के नेतृत्व में इस काल में कंपनी बंगाल की वास्तविक शासक के रूप में स्थापित हो गई थी। यद्यपि बंगाल का शासक नवाब ही था और प्रशासन का उत्तरदायित्व भी उसी के हाथों में था, किंतु उसके समस्त अधिकार अंग्रेजों ने छीन लिये थे। अब नवाब एक स्वतंत्र शासक नहीं रह गया था, बल्कि वह कंपनी की कृपा/दया तथा वार्षिक अनुदान पर पूरी तरह से निर्भर हो गया

था। बंगाल में अंग्रेजी शासन को स्थापित करने व इसके विस्तार करने की क्लाइव की इस नीति को द्वैध शासन व्यवस्था के नाम से जानते हैं।

10.3.3 द्वैध शासन प्रणाली : कारण व परिणाम (Dual System of Government : Causes & Effect)

भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव डालने वाला गवर्नर लॉर्ड क्लाइव ही था। वह 1757 से 1760 ई. तक पहली बार भारत में गवर्नर के रूप में कार्य किया था। 1760 ई. में स्वास्थ्य बिगड़ जाने के कारण वह इंग्लैंड लौट गया था। वह दूसरी बार 1765 से 1767 ई. के दौरान भारत का गवर्नर बन कर आया था। इस दौरान क्लाइव का सबसे महत्वपूर्ण कार्य था – बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली की नीति को लागू करना। इसे द्वैध शासन प्रणाली इस कारण से कहते हैं, क्योंकि इसके अनुसार बंगाल में शासन कार्य चलाने में दो शक्तियां कार्य कर रही थीं – एक नवाब की दूसरी कंपनी की। इस व्यवस्था के अंतर्गत शासन–प्रबंध का समस्त कार्य नवाब को संभालना होता था जबकि वास्तविक शक्ति कंपनी के हाथ में थी। भारत में द्वैध शासन–प्रणाली स्थापित करने के पीछे कई कारण थे। इसके मुख्य कारणों का विवरण निम्न प्रकार है –

(1) 1764 के बक्सर–युद्ध में सफल होने के बाद अंग्रेज यदि सत्ता को सीधे अपने हाथों में ले लेती तो उसका वास्तविक साम्राज्यवादी का स्वार्थ जनता के समक्ष प्रकट हो जाता और स्थानीय विद्रोह झड़कने तथा अन्य विदेशी प्रतिद्वंद्वियों के एकजुट होने का अंदेशा था। इस कारण उन्होंने बड़ी चतुराई के साथ नवाब को कठपुतली के रूप में शासक बनाये रखा।

(2) यद्यपि कंपनी को मुगल शासक से दीवानी अधिकार प्राप्त हो गया था और अंग्रेज वास्तविक शासक के रूप में स्थापित हो गये। फिर भी एक योजना के अनुसार अंग्रेज दौहरी शासन की नीति को बनाये रखा ताकि अन्य विदेशी कंपनियाँ उसके इन अधिकारों को चुनौती देते हुए कर देने से मना न कर दे।

(3) स्थानीय स्तर पर शासन कार्यों के प्रबंध के लिए अंग्रेजों के पास पर्याप्त संख्या बल नहीं था। ऐसे में अगर संपूर्ण शासन–व्यवस्था अपने हाथ में लेते तो अव्यवस्था हो सकती थी और ब्रिटिश शक्ति की स्थापना, उसके विस्तार व सुदृढ़ीकरण में बाधा उत्पन्न हो सकती थी। अतः यह भी एक कारण था कि अंग्रेजों ने समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बंगाल में द्वैध शासन की नीति अपनायी।

(4) प्रारंभ में कंपनी का पूरा ध्यान आर्थिक लाभ पर केंद्रित था। इस कारण अंग्रेज सीधे प्रशासनिक उत्तरदायित्व का खतरा मोल लेकर आर्थिक लाभ में कमी या समाप्त करने की स्थिति उत्पन्न होने देना नहीं चाहती थी। अतः दीवानी अधिकार अर्थात् धन–संपत्ति का अधिकार तो अपने हाथ में रखा किंतु अन्य दायित्व के रूप में नवाब को बनाये रखा।

(5) क्लाइव यदि बंगाल की सत्ता अपने हाथ में ले लेता तो ब्रिटिश संसद कंपनी के कार्यों में हस्तक्षेप करते हुए उस पर कठोर नियंत्रण लगा सकती थी। अतः यह भी एक कारण था कि बंगाल में तात्कालिक आवश्यकतानुसार द्वैध शासन की नीति को लागू किया गया था।

(6) कंपनी को प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश का भी भय था। वस्तुतः उन्हें कर देने से बचने के लिए दैध शासन लागू किया गया था।

द्वैध शासन प्रणाली के परिणाम :–

(1) कंपनी के अधिकारियों में दायित्वहीनता का विकास हुआ फलतः कानून व्यवस्था कमजोर हुई जिससे अव्यवस्था फैली।

(2) मनमाने तरीके से राजस्व वसूली से कृषकों की स्थिति दयनीय हुई और कृषि का ह्रास हुआ।

(3) किसानों के शोषण में वृद्धि हुई फलतः उत्पादन में कमी आई और अकाल की स्थिति उत्पन्न हुई।

(4) कंपनी के कर्मचारी निजी व्यापार पर अधिक बल देने लगे। अतः कंपनी के व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

(5) ब्रिटिश कंपनी को इससे प्रशासकीय सुविधा का लाभ प्राप्त हुआ।

(6) द्वैध शासन की नीति से ब्रिटिश कंपनी को बाहरी संघर्ष से बचाव का लाभ भी प्राप्त हुआ।

(7) यदि कंपनी स्वयं प्रशासन चलाती तो उसे इसके लिए कर्मचारी रखने पड़ते और उन्हें वेतन देना पड़ता। अतः द्वैध शासन से कंपनी इन खर्चों से बची रही और उसे आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ।

अतः यह स्पष्ट है कि क्लाइव के द्वैध शासन की नीति से एक तरफ जहाँ कंपनी को अधिकाधिक लाभ प्राप्त हुआ वही दूसरी ओर बंगाल पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। बंगाल में इसका सबसे बड़ा विपरीत प्रभाव उत्तरदायित्व रहित अधिकार और अधिकार रहित उत्तरदायित्व के दूषित वातावरण के रूप में देखने को मिला। शोषण, कुप्रशासन व अराजकता के कारण कृषि का पतन हुआ। उद्योग–धंधे नष्ट प्राय अवस्था को प्राप्त हो गये। अंग्रेजों ने इंग्लैंड में कपड़ा उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए बंगाल के कपड़ा उद्योग को हतोत्साहित किया इस कारण द्वैध शासन की आलोचना करते हुए ब्रिटिश इतिहासकार पर्सीवल स्पीयर ने इसे "खुली व निर्लज्जतापूर्ण लूटपात का युग" बताया। अन्ततः 1772 में वारेन हेस्टिंग्स ने द्वैध शासन की समाप्ति पर बंगाल पर ब्रिटिश सत्ता स्थापित की।

10.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

10.4.1 वारेन हेस्टिंग्स व लॉर्ड कार्नवालिस के सुधार (Reforms of Warren Hastings & Lord Cornawallis)

1772 ई. में वारेन हेस्टिंग्स को बंगाल का गवर्नर बनाया गया। 1773 ई. के रेग्युलेटिंग एक्ट के द्वारा बनाया गया। 1773 ई. के रेग्युलेटिंग एक्ट के द्वारा उसे 1774 ई. में बंगाल का गवर्नर जनरल गनाया गया। वारेन हेस्टिंग्स के सुधारों से ब्रिटिश शक्ति के विस्तार व उसके सुदृढ़ीकरण में सहायता मिली। वारेन हेस्टिंग्स के सुधार –

1. प्रशासनिक सुधार के अंतर्गत सर्वप्रथम उसने बंगाल से द्वैध शासन को समाप्त कर दिया।

2. राजस्व सुधार के अंतर्गत वारेन हेस्टिंग्स ने भारत में सर्वप्रथम बोर्ड ऑफ रेवेन्यु की स्थापना की।

3. न्यायिक सुधार के अंतर्गत प्रत्येक जिले में एक फौजदारी तथा दीवानी अदालतों की स्थापना की।

4. सामाजिक सुधारों के अंतर्गत हेस्टिंग्स ने 1781 ई. में कलकत्ता में मुस्लिम शिक्षा के विकास के लिए प्रथम मदरसा स्थापित किया।

5. भारतीय संस्कृति व परंपरा को समझकर यहाँ पर अपने प्रभुत्व की स्थापना व ब्रिटिश शक्ति व विस्तार के लिए उसने 1784 ईत्र में सर विलियम जोंस के द्वारा एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना करवाया।

6. व्यावसायिक सुधार के अंतर्गत हेस्टिंग्स ने जमींदारों के क्षेत्र में कार्य कर रहे शुल्क गृहों को बंद करवा दिया।

7. इसके समय में ही रेग्युलेटिंग एक्ट के तहत 1774 ईत्र में कलकत्ता में एक उच्च न्यायालयस की स्थापना की गई।

8. वारेन हेस्टिंग्स ने 1774 ई. में पोस्ट मास्टर जनरल के अंतर्गत कलकत्ता जनरल पोस्ट ऑफिस (GPO) की स्थापना की थी।

वारेन हेस्टिंग्स के बाद सर जॉन भैकफ़रसन एक वर्ष (1785–86) के लिए अस्थायी रूप से भारत का गवर्नर जनरल रहा। 1786 से 1793 तक भारत में गवर्नर जनरल के रूप में कार्य करने वाला लार्ड कार्नवालिस को भारत में नागरिक सेवा का जनक माना जाता है।

कार्नवालिस के अनुसार :–

1. न्यायिक सुधारों के अंतर्गत कार्नवालिस ने जिले की समस्त शक्ति कलेक्टर के हाथों में केंद्रित कर दी। पहले से चली आ रही जिला फौजदारी अदालतों को समाप्त करके उसके स्थान पर चार भ्रमण करने वाली अदालतों की स्थापना की।

2. कार्नवालिस ने कानून की विशिष्टता का नियम सर्वप्रथम भारत में प्रारंभ किया था।

3. पुलिस सुधार के अंतर्गत पुलिस कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की और ग्रामीण क्षेत्रों में पुलिस अधिकार प्राप्त जमींदारों को इस अधिकार से वंचित कर दिया।

4. प्रशासनिक सुधार के अंतर्गत कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की गई और व्यक्तिगत व्यापार पर पाबंदी लगा दी गई।

5. कार्नवालिस ने ब्रिटिश शक्ति के विस्तार के लिए प्रशासनिक व्यवस्था का यूरोपीयकरण किया।

10.4.2 वेलेजली की सहायक संधि (Subsidiary Alliance System of Wallesley)

वेलेजली भारत में 1798 से 1805 ई. तक गवर्नर जनरल के रूप में कार्य किया था। उसे सहायक संधि प्रणाली को लागू करने वाले गवर्नर के रूप में भारत में जाना जाता है।

सर्वप्रथम सहायक संधि प्रणाली की अवधारणा फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले ने दक्षिण भारतीय राज्यों के संदर्भ में प्रस्तुत की थी। उसने भारतीय राजाओं को सैनिक सहायता देकर धन प्राप्त करना शुरू किया। इसी अवधारणा को क्लाइव ने अवध के संदर्भ में लागू किया। परंतु वास्तव में सहायक संधि प्रणाली की सैद्धांतिक व विस्तृत व्याख्या ब्रिटिश गवर्नर वेलेजली ने प्रस्तुत की। इसने इसे व्यावहारिक रूप देकर ब्रिटिश शक्ति के विस्तार का महत्त्वपूर्ण साधन बनाया।

वेलेजली के 1798 ई. में आगमन के समय से ही उसका उद्देश्य स्पष्ट था। वह कंपनी को भारत की सर्वोच्च शक्ति बनाने के लिए उत्सुक था। इसके साथ ही देशी रियासतों को अधीनस्थ बनाना भी उसका लक्ष्य था।

वेलेजली के कार्यकाल के दौरान यूरोप में फ्रांसीसी कांति चल रही थी और नेपोलियन के विस्तार से अंग्रेजों को चुनौती मिल रही थी। ऐसी स्थिति में भारतीय शक्तियों विशेषकर मैसूर द्वारा फ्रांसीसियों से गठबंधन करना अंग्रेजों के लिए एक चुनौती थी। अतः ऐसी राजनैतिक प्रणाली की आवश्यकता थी जो भारतीय शक्तियों को ब्रिटिश शत्रुओं से दूर रख सके। इसी क्रम में वेलेजली द्वारा ब्रिटिश शक्ति के विस्तारीकरण व सुदृढ़ीकरण हेतु सहायक संधि प्रणाली लागू की गई।

वेलेजली की इस सहायक संधि प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थी –

1. संधि करने वाले देशी राज्यों में एक ब्रिटिश रेजीडेन्ट अर्थात् प्रतिनिधि रखने का इसमें प्रावधान था।

2. सहायक संधि से जुड़ने वाले राज्य पर आक्रमण की स्थिति में सुरक्षा का दायित्व अंग्रेजी कंपनी की होगी और इसके लिए कंपनी उस राज्य में एक सेना का गठन करेगी जिसका खर्च संबंधित राज्य देगा।

3. इस संधि से जुड़ने वाले राज्य की विदेश नीति अंग्रेजों के नियंत्रण में रहेगी।

4. संबंधित राज्य अंग्रेजों की अनुमति के बिना किसी यूरोपीय अथवा अंग्रेजों के शत्रु राज्य के व्यक्ति को अपनी सेवा में नही रखेगा।

5. कंपनी राज्य के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।

सहायक संधि की नीति की इन विशेषताओं के आधार पर संधि करने वाले प्रमुख राज्य इस प्रकार थे –

1. हैदराबाद (1798) 2. मैसूर (1799) 3. अवध (1801) 4. मराठा (1802)

5. पेशवा (1803) 6. बरार (भोंसले 1803) 7. सिंधिया (ग्वालियर, 1804)

निष्कर्ष :–

सहायक संधि से कंपनी को होने वाले लाभ –

1. इस संधि के द्वारा देशी राज्यों को सैनिक शक्ति से हीन करके एक दूसरे से अलग–थलग कर दिया गया ताकि वे अंग्रेजी कंपनी के विरूद्ध एक जूट होकर कोई गुट नहीं बना सके।

2. कंपनी की सेवाएँ के लिए खर्च की व्यवस्था राज्यों के धन से ही की गई थी जिसका उपयोग भारतीयों के विरूद्ध ही किया जाना था।

3. भारतीय राज्यों से फ्रांसीसियों के प्रभाव समाप्त हो गये। अतः यूरोप से मिलने वाली प्रमुख चुनौती अब समाप्त हो गई।

4. इस सहायक संधि के द्वारा ब्रिटेन में बने मालों (समानों) की बिक्री के लिए उनको एक बड़ा बाजार मिल गया। अतः इसके द्वारा ब्रिटिश औद्योगिकरण को बढ़ावा मिला।

इस संधि से देशी राज्यों को होने वाली हानियां –

1. संबंधित राज्य ब्रिटिश कंपनी पर निर्भर हो गए। अतः प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व की भावना समाप्त हो गई। वास्तव में प्रजा के विद्रोह के भय से अभी तक जो राजा कुछ उत्तरदायित्व महसूस करते थे। अब ब्रिटिश सुरक्षा

कवच प्राप्त होने से जन विद्रोह का भय भी समाप्त हो गया। इस स्थिति में देशी शासक विलासी प्रवृति के हो गये। उनमें अंग्रेजों के विरोध करने की शक्ति बिल्कुल भी नहीं रह गयी।

2. देशी राज्यों की अर्थव्यवस्था सहायक संधि के कारण कमजोर हुई और ये राज्य अब हस्तशिल्प उद्योगों को संरक्षण देने व इसके उत्पादों को खरीददारी दोनों में अक्षम हो गए। इस कारण भारतीय हस्तशिल्प पतन की ओर अग्रसर हो गया और बेराजगारी बढ़ गयी। जिससे कृषि पर बोझ बढ़ गया तथा कृषि भी पिछड़ती चली गयी।

3. संरक्षित राज्यों के सैनिक बेराजगार हो गए, क्योंकि उन्हें सेना रखने का अधिकार नहीं रहा।

4. सहायक संधि के फलस्वरूप भारतीय देशी राजाओं की बुद्धिमता, साहस, सैनय संगठन आदि कमजोर हुए, जिसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय राज्य निरंतर पतन की ओर अग्रसर होते गए।

इस प्रकार वास्तव में सहायक संधि भारतीय देशी राज्यों की संप्रभुता को हथियाने वाला दस्तावेज साबित हुआ। जिसके तहत राज्यों को स्वयं अपनी रक्षा करने का, कूटनीतिक संबंध स्थापित करने का, विदेशियों को नियुक्त करने का और यहाँ तक कि अपने पड़ोसियों के साथ हुए विवादों का समाधान करने का अधिकार प्राप्त नहीं था।

10.4.3 डलहौजी का व्यपगत/हड़प सिद्धांत (Doctrine of Lapse of Dalhousie)

लॉर्ड डलहौजी भारत में 1848 से 1856 तक भारत का गवर्नर जनरल रहा। भारत में एक सक्रिय प्रशासक के रूप में डलहौजी का काल युद्धों व कूटनीतियों द्वारा भारतीय राज्यों पर अधिकार करके ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार करने के रूप में जाना जाता है। डलहौजी की एकमात्र नीति यह थी कि जिस प्रकार भी संभव हो सके, ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार किया जाय। अतः वह अपनी साम्राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा के लिए जो नीति अपनायी उसे व्यपगत या हडप सिद्वांत के नाम से इतिहास में जाना जाता है।

इसके अंतर्गत पैतृक वारिस न होने की स्थिति में सर्वोच्च सत्ता कंपनी द्वारा अपने अधीनस्थ क्षेत्रों को साम्राज्य में मिलाने की नीति डलहौजी ने चलाई। वास्तव में डलहौजी भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवादी विस्तार एवं विलय की नीति को लागू कर रहा था। लंदन स्थित कंपनी के संचालकों ने विस्तार की नीति पर बल देते हुए कहा कि नए करों की प्राप्ति अथवा प्रदेशों को प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं छोड़ना चाहिए। डलहौजी ने इस नीति का पालन करते हुए भारत के ब्रिटिश मानचित्र को बदल दिया। वास्तव में इस समय ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति तथा मुक्त व्यापार की नीति अपने शिखर पर थी। अतः ब्रिटेन में निर्मित वस्तुओं की बिक्री करने के लिए एक बड़े बाजार की आवश्यकता थी तो साथ ही कच्चे माल की प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष नियंत्रण वाले क्षेत्रों की जरूरत थी। इन आवश्यकताओं की पूर्ति डलहौजी ने हड़प नीति के माध्यम से की।

डलहौजी ने राज्यों को हड़पने के लिए गोद निषेध की नीति लागू की। वास्तव में पैतृक वारिस न होने की स्थिति में भारतीय शासक किसी संतान को गोद लेकर अपना उत्तराधिकारी बनाते थे। इसी नीति के संदर्भ में कंपनी ने यह नियम बनाया कि गोद प्रथा के अधिकार को स्वीकार व अस्वीकार करना कंपनी के विवेक पर निर्भर है। अतः डलहौजी ने अपनी हड़प नीति के अंतर्गत गोद निषेध की नीति लागू कर सतारा (1848), जैतपुर व संभलपुर (1849) बघाट (1850), उदयपुर (1852), झाँसी (1853), नागपुर (1854) आदि राज्यों को ब्रिटिश राज्य में मिलाया।

इस नीति का परिणाम यह रहा कि भारत के बड़े क्षेत्र पर अंग्रेजों का प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित हुआ। फलतः कच्चे माल की प्राप्ति और निर्मित वस्तुओं की बिक्री के लिए एक बड़ा क्षेत्र प्राप्त हुआ। इसके तहत डलहौजी ने विधि समस्त तरीके से राज्यों को हड़पने की नीति पर कार्य किया और भारत के ब्रिटिश मानचित्र में इस गति से परिवर्तन लाया जो किसी सैन्य अभियान से संभव नहीं था। यद्यपि इससे साम्राज्य का विस्तार हुआ तथापि इस नीति ने भारतीय शासक व विभिन्न वर्गों को असंतुष्ट किया। इस कारण विद्रोह भी हुआ। 1857 के विद्रोह के संदर्भ में इसे समझा जा सकता है और इस विद्रोह के उपरांत भारत में कंपनी शासन की समाप्ति हुई।

10.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)

(i) बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली .... के द्वारा लागू किया गया था।

(ii) द्वैध शासन प्रणाली को 1772 में .... के द्वारा समाप्त कर दिया गया।

(iii) सहायक संधि को स्वीकार करने वाला प्रथम .... राज्य था।

(iv) सहायक संधि की नीति को सर्वप्रथम .... विदेशी गवर्नर द्वारा भारत में आरंभ किया गया था।

(v) डलहौजी की हड़प नीति का पहला शिकार .... राज्य बना था।

(vi) भारत में नागरिक सेवा का जनक .... को माना जाता है।

(vii) भारत में सर्वप्रथम बोर्ड ऑफ रेवेन्यु की स्थापना .... ने की थी।

(viii) 'उत्तरदायित्व रहित अधिकार और अधिकार रहित उत्तरदायित्व' कथन .... नीति के लिए प्रचलित है।

(ix) भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव डालने वाला .... को माना जाता है।

(x) बंगाल में द्वैध शासन को "खुली व निर्लज्जतापूर्ण लूटपाट का युग" .... ने बताया।

(ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False based Questions)

(i) फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने सर्वप्रथम सहायक संधि की नीति का प्रयोग करते हुए भारतीय राजाओं को सहायता देने और बदले में उनसे धन लेने की शुरूआत की थी, परंतु सहायक संधि को व्यावहारिक रूप वेलेजली ने ही दिया। ( )

(ii) इंदौर के होरकरों ने सहायक संधि स्वीकार नहीं की थी। ( )

(iii) 1848 से 1856 तक लॉर्ड डलहौजी का काल भारत के इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। ( )

(iv) ब्रिटिश शक्ति की नींव रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स को दो बार (1757–1760) और (1765–1767) बंगाल का गवर्नर बनाया गया। ( )

(v) रॉबर्ट क्लाइव ने द्वैध शासन की स्थापना कर बंगाल, बिहार और उड़ीसा में अंग्रेजी शक्ति को सुदृढ़ आधार प्रदान किया ( )

(vi) क्लाइव ने बंगाल में द्वैध शासन प्रबंध की स्थापना को इसलिए महत्त्व दिया था, क्योंकि उस समय बंगाल जैसे विशाल प्रांत का संपूर्ण शासन प्रबंध अपने हाथों में लेने के लिए कंपनी के पास पर्याप्त अधिकारी नहीं थे। ( )

(vii) सहायक संधि की नीति के अंतर्गत वेलेजली ने यह नियम बनाया था कि कंपनी शत्रुओं से राज्य की रक्षा करेगी तथा हर प्रकार के मामलों में आंतरिक मामलों में भी हस्तक्षेप करेगी। ( )

(viii) सहायक संधि सबसे पहले 1798 एवं 1800 में हैदराबाद के निजाम से की गई थी। ( )

(ix) डलहौजी के व्यपगत सिद्धांत का पहला शिकार 1854 में झांसी राज्य बना था। ( )

(x) डलहौजी ने अपने सुविधानुसार भारतीय रियासतों को तीन वर्गों में बांटा था। ( )

7.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

- 23 जून, 1757 प्लासी के युद्ध के फलस्वरूप भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव रखी गई।
- प्लासी के युद्ध में क्लाइव ने आंतरिक संघर्ष का लाभ उठाकर कूटनीतिक षड्यंत्रों से बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को युद्ध में परास्त किया था।

- बक्सर के युद्ध (22 अक्तूबर, 1764) के बाद इलाहाबाद की संधि (12 अगस्त, 1765) के द्वारा अंग्रेजों को बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई थी।
- बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों ने हेक्टर मुनरों के नेतृत्व में बंगाल, अवध व मुगल शासक के संयुक्त सेना को परास्त किया था।
- बक्सर के युद्ध के समय बंगाल का नवाब मीर कासिम था।
- बक्सर के युद्ध 22 अक्तूबर, 1764 के समय अवध का नवाब शुजाउद्दौला था।
- बक्सर के युद्ध के समय मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय था।
- बंगाल के नवाब नज्मुद्दौला से अंग्रेजों को बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी और निजामत (सूबेदारी) प्राप्त हुई थी।
- बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली (1765–72) क्लाइव ने नज्मुद्दौला के समय लागू किया था।
- इस व्यवस्था के तहत् दीवानी अधिकार तो कंपनी के पास था, किंतु प्रशासन चलाने का उत्तरदायित्व नवाब का होता था।
- द्वैध शासन का सबसे गंभीर दोष यह था कि बंगाल में उत्तरदायित्व का खराब वातावरण बन गया था।
- ब्रिटिश इतिहासका पर्सीवल स्पीयर ने द्वैध शासन को "खुली व निर्लज्जतापूर्ण लूटपाट का युग" बताया।
- 1772 में वारेन हेस्टिंग्स ने द्वैध शासन को समाप्त कर दिया।
- लॉर्ड कार्नवालिस को भारत में नागरिक सेवा का जनक माना जाता है।
- वारेन हेस्टिंग्स ने भारत में सर्वप्रथम बोर्ड ऑफ रेवेन्यू की स्थापना की जिसमें कंपनी के राजस्व संग्राहक नियुक्त किये गये।
- वारेन हेस्टिंग्स की न्याय व्यवस्था मुगल प्रणाली पर आधारित थी।
- वारेन हेस्टिंग्स ने जमींदारों से न्यायिक अधिकार छीन लिया।
- वारेन हेस्टिंग्स के समय में ही सर विलियम जोंस द्वारा 1784 ई. में 'द एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की गयी।
- पिट्स इंडिया एक्ट, 1784 के विरोध में इस्तीफा देकर जब वारेन हेस्टिंग्स फरवरी, 1785 में इंग्लैंड पहुँचा तो बर्क द्वारा उसके ऊपर महाभियोग लगाया गया।

- वारेन हेस्टिंग्स पर लगाया गया यह महाभियोग 1788 से 1795 ई. तक चला, परंतु अंत में उसे आरोपों से मुक्त कर दिया गया।
- 1798 ई. में सर जॉन शोर के अहस्त क्षेपवादी युग के बाद लार्ड वेलेजली भारत का गवर्नर जनरल बना जो अपनी सहायक संधि प्रणाली के द्वारा प्रसिद्ध हुआ।
- वेलेजली से पूर्व भारत में फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने भारत में सहायक संधि प्रणाली का प्रयोग किया था।
- सहायक संधि करने वाले राज्य

राज्य	वर्ष
1. हैदराबाद	सितंबर, 1798
2. मैसूर	सितंबर, 1799
3. तंजौर	अक्तूबर, 1799
4. अवध	नवम्बर, 1801
5. पेशवा	दिसंबर, 1801
6. बरार का भोसला	दिसंबर, 1803
7. ग्वालियर का सिंधिया	दिसंबर, 1803

अन्य सहायक संधि वाले राज्य थे – जोधपुर, जयपुर, मच्छेड़ी, बूंदी तथा भरतपुर

- लार्ड वेलेजली ने कलकता में नागरिक सेवा में भर्ती किये गये युवकों को प्रशिक्षित करने के लिए 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना की।
- लॉर्ड वेलेजली ने ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापारिक कंपनी के स्थान पर एक शक्तिशाली राजनैतिक शक्ति के रूप में स्थापित किया।
- 1848 ई. में लार्ड डलहौजी भारत का गवर्नर जनरल बनकर आया था।
- डलहौजी का शासन काल भारतीय आधुनिक इतिहास में एक स्मरणीय काल के रूप में जाना जाता है क्योंकि उसने एक तरफ तो युद्ध व व्यपगत सिद्धांत द्वारा अंग्रेजी साम्राज्य का विस्तार किया वहीं कुछ सुधारात्मक कार्य भी किये।
- डलहौजी ने ही 29 मार्च, 1849 ई. को पंजाब का विलय अंग्रेजी साम्राज्य में किया था।
- डलहौजी के समय में ही 1852 ई. में लोअर बर्मा एवं पीगू का अंग्रेजी साम्राज्य में विलय किया गया।

- डलहौजी के शासन काल को उसके व्यपगत सिद्धांत (Doctrine of Lapse) के कारण अधिक याद किया जाता है।
- डलहौजी द्वारा विलय किये गये राज्य

	राज्य	वर्ष
1.	सतारा	1848
2.	जैतपुर	1849
3.	संभलपुर	1849
4.	बघाट	1850
5.	उदयपुर	1852
6.	झांसी	1853
7.	नागपुर	1854
8.	करौली	1855
9.	अवध	1856

(कुशासन के आरोप में)

- डलहौजी ने अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर 1856 में इसे अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया।
- अंग्रेजी साम्राज्य में अवध के विलय के समय अवध का नवाब वाजिद अली शाह था।
- डलहौजी को भारत में रेलवे का जनक माना जाता है।
- डलहौजी के काल में ही बंबई से थाणे तक प्रथम रेल चलायी गयी थी।
- शिक्षा संबंधी सुधारों के अंतर्गत डलहौजी ने 1854 ई. में बुड डिस्पैच को लागू किया
- वुड डिस्पैच (1854) की योजना के तहत प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा के लिए व्यापक योजना बनायी गयी।
- वुड डिस्पैच (1854) के सुझावों के आधार पर ही भारत में 1857 में सर्वप्रथम कलकत्ता, मद्रास व बंबई में विश्वविद्यालय स्थापित किये गये थे।
- भारत में वुड डिस्पैच (1854) को अंग्रेजी शिक्षा का मेग्नार्काटा के नाम से जाना जाता है।
- डलहौजी ने ही सर्वप्रथम भारत में 1854 ई. में नया पोस्ट ऑफिस एक्ट पास किया।
- डलहौजी ने पृथ्क रूप से भारत में पहली बार सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना की।

- डलहौजी ने 1854 ई. में एक स्वतंत्र विभाग के रूप में 'लोक सेवा विभाग' की स्थापना की।
- डलहौजी को भारत में विद्युत तार की भी शुरूआत करने का श्रेय प्राप्त है।
- इस प्रकार गवर्नर जनरल डलहौजी व्यपगत सिद्धांत के साथ–साथ सुधारात्मक कार्यों के लिए भी प्रसिद्ध हुआ।

10.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद
- कूटनीति – छिपी हुई चाल या गुप्त एजेंडा
- षड्यंत्र – धन–संपत्ति से संबंधित।
- फौजदारी – मार–पीट, लड़ाई–झगड़ा से संबंधित।
- भंतव्य – मकसद
- द्वैध – दौहरी
- क्रांति – आमूल–चूक परिवर्तन

10.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) निम्न में से सहायक संधि स्वीकार नहीं की थी –

(क) हैदराबाद के निजाम ने

(ख) इंदौर के होल्कर ने

(ग) जोधपुर के राजपूत

(घ) मैसूर के शासक

(ii) व्यपगत सिद्धांत का पहला शिकार .... राज्य बना था।

(क) सतारा (ख) झांसी (ग) अवध (घ) नागपुर

(iii) सहायक संधि व्यवस्था को स्वीकार करने वाले प्रथम भारतीय देशी शासक कौन थे?

(क) ग्वालियर के सिंधिया

(ख) हैदराबाद के निजाम

(ग) पंजाब के दलीप सिंह

(घ) बड़ौदा के गायकवाड़

(iv) लॉर्ड वेलेजली द्वारा लागू की गई सहायक संधि व्यवस्था के बारे में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन लागू नहीं होता ?

(क) दूसरों के खर्च पर एक बड़ी सेना बनाए रखना

(ख) भारत को नेपोलियन के खतरे से सुरक्षित रखना

(ग) कंपनी के लिए एक नियत आय का प्रबंध करना

(घ) भारतीय रियासतों के ऊपर ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित करना

(v) द्वैध शासन प्रणाली का प्रारंभ किस वर्ष में हुआ ?

(क) 1765 (ख) 1813 (ग) 1833 (घ) 1853

(vi) भारत में अंग्रेजों की लूट किस महत्त्वपूर्ण घटना के बाद शुरू हो गई थी ?

(क) प्लासी के युद्ध के बाद (ख) बक्सर के युद्ध के बाद

(ग) ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत में व्यापार करने की अनुमति प्राप्त होने के बाद

(घ) 1813 के चार्टर एक्ट के बाद

(vii) डलहौजी ने लैप्स–सिद्धांत द्वारा निम्नलिखित में से कौन–सा राज्य ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य में शामिल नहीं किया :–

(क) सतारा (ख) पंजाब (ग) झासी (घ) नागपुर

(viii) अवध के ब्रिटिश साम्राज्य में विलय के समय वहां का नवाब था –

(क) शुजाउद्दौला (ख) सिराजुद्दौला (ग) वाजिद अलीशाह (घ) आसफउददौला

(ix) सार्वजनिक कार्य विभाग की स्थापना हुई –

(क) कार्नवालिस के समय में

(ख) बैंटिक के समय में

(ग) हार्डिंग के समय में

(घ) डलहौजी के समय में

(x) डलहौजी ने युद्धों द्वारा .... को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया था।

(क) पंजाब व सिंध को

(ख) पंजाब व नागपुर को

(ग) पंजाब तथा पेगू अथवा लोअर बर्मा को

(घ) पंजाब तथा जम्मू–कश्मीर

(ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer based Questions)

1. ब्रिटिश शक्ति–विस्तार के महत्त्वपूर्ण कारकों का वर्णन करें।

(Describe important factors of Expansion of British Power)

2. बंगाल में क्लाइव द्वारा स्थापित की गई द्वैध शासन प्रणाली क्या थी ? इस प्रणाली के गुण–दोष की विवेचना करें।

(What was the Dual System of Government Set up by Clive in Bengal. Discuss in Merits and Demerits)

3. वेलेजली की सहायक संधि का विस्तार से वर्णन करें।

(Explain in details of Subsidiary Alliance of Wallesley)

4. डलहौजी की हड़प नीति का मूल्यांकन करें।

(Examine the Doctrine of Lapse of Dalhousie)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) लैप्स सिद्धांत (Doctrine of Lapse)

(ii) सहायक संधि प्रणाली (Subsidiary Alliance System)

(iii) द्वैध शासन प्रणाली (Dual System of Government)

(iv) क्लाइव (Clive)

(v) डलहौजी (Dallhousie)

(vi) वेलेजली (Wallesely)

(vii) अवध का विलय (Annexation of Oudh)

(viii) पंजाब का विलय (Annexation of Punjab)

(ix) लॉर्ड कार्नवालिस (Lord Cornawallis)

(x) भारत में ब्रिटिश शक्ति का विस्तार (Expansion of British power in India)

10.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

10.5 (क) उत्तर –

(i) क्लाइव (ii) वारेन हेस्टिंग्स (iii) हैदराबाद का निजाम (iv) फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले

(v) सतारा (vi) लॉर्ड कार्नवालिस (vii) वारेन हेस्टिंग्स (viii) द्वैध शासन की नीति

(ix) क्लाइव (x) पर्सीवल स्पीयर

10.5 (ख) उत्तर –

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) असत्य

(v) सत्य (vi) सत्य (vii) असत्य (viii) सत्य

(ix) असत्य (x) सत्य

10.8 (क) उत्तर –

(i) ख (ii) क (iii) ख (iv) ग

(v) क (vi) क (vii) ख (viii) ग

(ix) घ (x) ग

10.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- आधुनिक भारत का इतिहास 2021
  स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि0
  संस्करण – 2021
- भारतीय इतिहास का मुगल तथा ब्रिटिश काल 1998
  अरोड़ा अविनाश चन्द्र, प्रदीप पब्लिकेशन्स, संस्करण – 1998
- भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन
  दृष्टि प्रकाशन
  तृतीय संस्करण
- संक्षिप्त इतिहास : NCERT सार
  महेश कुमार बर्णवाल

  Cosmos Publication

NOTES

NOTES

NOTES

NOTES